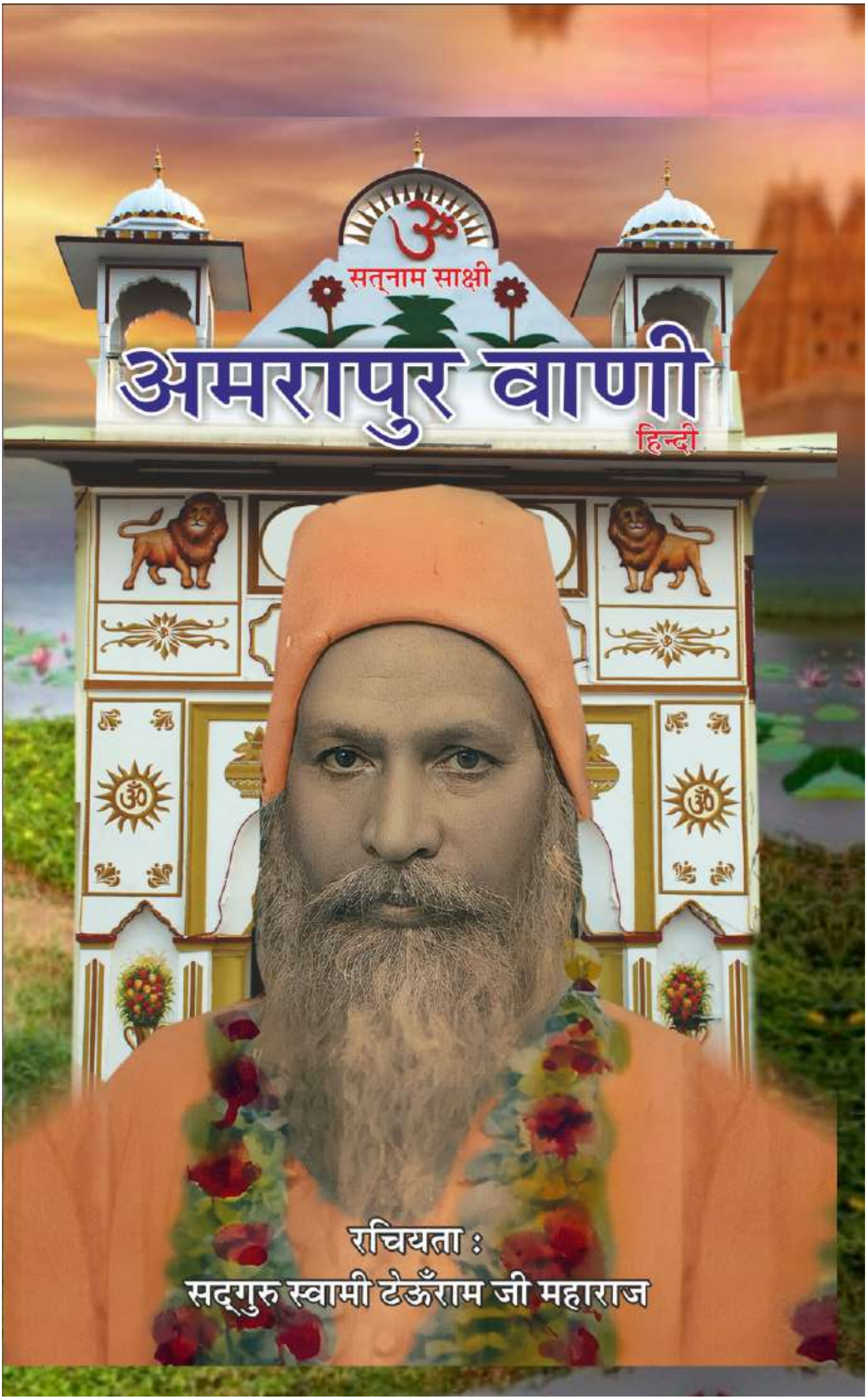
सत्नाम साक्षी
अमरापुर वाणी
हिन्दी
रचियता :
सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज

नमः टेऊँरामाय **नमः सर्वानन्दाय**

सत्नाम साक्षी

श्री अमरापुर वाणी

रचयिता :

श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदायाचार्य सत् श्री पूज्य पाद ब्रह्म निष्ठ

श्री १००८ सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज

प्रकाशक :

श्रीमान् १०८ सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज

व प्रेम प्रकाश मण्डल (ट्रस्ट)

अमरापुर स्थान एम.आई.रोड, जयपुर-३०२ ००१

तृतीयवृत्ति
२०००

सर्वाधिकार सुरक्षित

भेटा १५०/-

चैत्र मेला
१७.४.२०११

❁ प्रार्थना ❁

हे परमपिता समर्थ बाबा ! सच्चिदानंदघन ! परिपूर्ण परमात्मा ब्रह्माण्ड नायक ! सदा सुखदायक ! अविनाशी ! घट घट वासी ! स्वयं प्रकाशी ! सब सुख राशी ! सच्ची सुमति देना । स्वांग की लज्जा रखना । नगर बन में रक्षा कीजे। अभय दान प्रभु सबको दीजे।। देश - परदेश दासों - बच्चों की रक्षा करना। धर्म की लज्जा रखना। अपनी चलती चलाना।। अन्तकाल सुहेली करना। तन-मन-धन वाणी करके। मेरे द्वारा किसी की दिल दुःखी न होवे। सिर धर आयुस करूँ तुम्हारा। परम धर्म ये नाथ हमारा।।

सुत अपराध करत है जेते, जननी चीत न राखत तेते।।
जैसे बालक भाव स्वभावे, लख अपराध कमावे।
कर उपदेश झिण के बहु भान्ती, बहुरि पिता गल लावे।।
सत्गुरु तुम पूरन करो, मेरी यह अरिदास।
कहे टेऊँ मन में कभी, रहे न जग की आस।।
आशवन्दी गुरु तो दरि आई, तुम बिन ठौर न काई।
तूं हरि दाता तूं हरि माता, मेरी आश पुज़ाईं।।
पाइ पलउ मैं पेर पियादी, आयसि हेत मंझाईं।
तन मन धन अरिदास करे मैं, मांगत नामु सनेही।।
नामु तुम्हारा साबुन करिसां, धोसां पाप सभेई।
कहे टेऊँ गुरु लोक तीन में, आवागमन मिटाईं।।

ॐ शांति ! शांति !! शांति !!!

प्राक्कथन

श्री अमरापुर वाणी नामक यह पुस्तक श्री प्रेम प्रकाश मण्डलायाचार्य श्री १००८ सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा रचित श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ का अंश, हिन्दी भजन संग्रह है। इस संग्रह में ९२१ भजन हैं। इस में ब्रह्म ज्ञान, ईश्वर भक्ति, वैराग्य, विरह, प्रेम भक्ति, अष्टांगयोग, सत्संग, सन्त, सद्गुरु-महिमा, सनातन धर्म इत्यादि कई विषयों पर निर्मित अनुभव के भजन हैं जो सुगम संगीत के मधुर धुनों पर बने हुए हैं, जिनको गाने, पढ़ने, सुनने में आध्यात्मिक शान्ति प्राप्त होती है मन प्रभु में विभोर हो जाता है। सद्गुरु महाराज जी की वाणी में गम्भीरता और रस है एवं इसमें ऐसा जादू भरा है जिससे पढ़ने सुनने वालों का मन भगवन् नाम की ओर आकर्षित हो जाता है। अपनी वाणी कवितावाली के १४९ वें छन्द में वे स्वयं कहते हैं:-

कवित :-

मन में गुमान धर कविता बनाय कर,
लोकनि के आगे जोय ऊँचे सुर गावे है।
ऐसी वाणी मदारी के खेल ज्यों न थिर रहे,
कागद के फूल जिमि सुगन्ध न पावे है।
प्रेम में मगन होय बाणी को बनावे जोय,
ऐसी बाणी रस भरी सब मन भावे है।
कहे टेऊँ सुने जोई तांके मन घाव होई,
विवेक वैराग्य देके, जीव को जगावे है।

सद्गुरु महाराज बचपन से ही वैराग्यवान थे। बारह वर्ष की अल्प आयु में ही वे जंगलों, कन्दराओं, श्मशानों और नदी के किनारे जाकर लगातार तीन-तीन चार-चार दिनों तक अकेले भजन करते थे। खाने पीने आदि की परवाह न कर भगवद् भजन में लीन रहते थे। इस प्रकार भजनी जीवन में जो उनके मन में परमात्मा की अनुभूति के प्रेमोद्गार उत्पन्न हुए वे ही भजनों के रूप में आपके सामने प्रस्तुत हैं। ऐसी वाणी परमार्थ की ओर ले जाने में सक्षम है। उनकी वाणी का प्रसार उनके परम शिष्य सद्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज, सद्गुरु स्वामी शान्ति प्रकाश जी महारज, सद्गुरु स्वामी हरिदास राम जी महाराज और श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के अन्य सन्तों ने किया है और आज भी सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज भी यही वाणी गाकर जिज्ञासुओं के मन में नई उमंग उत्पन्न कर उन्हें अज्ञान की नीन्द से जगाकर अपने कर्त्तव्य ओर अग्रसर कर रहे हैं।

ऐसी परम पवित्र वाणी पढ़ने, सुनने, गाने और हृदय में धारण करने योग्य है। जैसा नाम अमरापुर वाणी है वैसे ही यह वाणी अमर पद प्राप्त कराने वाली है। इसके पढ़ने से स्वयं ही ऐसी अनुभूति होती है। अतः हम इसे प्रतिदिन पढ़कर, यादकर, गाकर अपने मन की मैल मिटाकर अपने जीवन का परम लाभ प्राप्त करें।

निवेदक -

प्रेम प्रकाश मण्डल ट्रस्ट

अमरापुर स्थान, जयपुर

ॐ

।। श्री सत्नाम साक्षी।।

श्री अमरापुर वाणी भजन अनुक्रमणिका

भजन	पृष्ठ
मङ्गलाचरण	१
अमरापुर वाणी भजन ९२१	
।। १ राग भैरव भजन १२ ।।	
गुरु दयाल प्रतिपाल	२
भक्ति ज्ञान दान देहि	२
हे दयाल लाल एह	३
प्रभू मेरा माफ करो	३
सत्गुरु दान दे स्वामी दान दे	४
सत्नाम साक्षी बोल	४
क्यों करते हो मेरा मेरा	५
सब का प्रभू है पालनहारा	५
रे नर जागो गुरु पद लागो	६
सत्गुरु स्वामी अन्तर्यामी	६
सोई सन्त सुजाना रे	७
गुरूजी मुझको दर्शन देवो जी	७
।। २ राग रामकली भजन २०।।	
प्रत्यक्ष है परमेश्वर पोषक	८
जगतपती पूरण परमेश्वर	८
सोवत जागत नाम जपीजे	९
अमृत वेले ऊठ जिज्ञासू	९
सत्गुरु के संग गुरुमुख जागी	१०
राम भजन की वेला है	१०
जोई राम मिलावे मुझको	११
आज हृदय में आनन्द होया	११
हरदम हृदय में हरि ध्याओ	१२
सन्तों के सत्संग में जाकर	१२
सत्गुरु कृपा करके मुझको	१३
प्रातकाल में जागी प्यारे	१३
एक नगर मैं अद्भुत देखा	१४
रे मन ज्ञान चक्षू से देखो	१४
यह शिक्षा उर धरना रे मन	१५
वृथा जन्म गंवाया क्यों तुम	१५
किसका कर न गुमाना	१६
साचा जो सन्यासी जानो	१६
साहब तेरे दर पर मेरी	१७
श्रवण देके सुनले साधो	१७
।। ३ राग प्रभाती भजन ३० ।।	
पारब्रह्म है अगम अगोचर	१८
रे मन हरि का स्मरण	१८
प्रातसमय में जागी प्राणी	१९
अमृत वेले गुरुमुख जागी	१९

भजन	पृष्ठ
अमृत वेले अमृत बरसे	२०
श्वास श्वास में गुरुमुख	२०
अमृत वेले उठ जिज्ञासू	२१
आदि शब्द में श्रुति लगाके	२१
रे मन मिल तू अलख पुरुष से	२२
अजब अजायब कुदरत हमको	२२
ब्रह्म ज्ञान बिन कबहूं मनका	२३
परमेश्वर का सुमरण करले	२३
शब्द गुरू का है सुखदाई	२४
जे तुम हरि से मिलना चाहो	२४
मानुष चोला ऊजल मिलिया	२५
जागो जागो मेरे मनुवा	२५
हरि मन्दिर में हरि बिराजे	२६
जिस कारण तुम आया	२६
खोज रहे जिस पारब्रह्म को	२७
गुरु कृपा से जो मुझ मिलिया	२७
साध संगति में अमृत वर्षे	२८
सोऽहम् सोऽहम् स्मरो साधो	२८
अमृत वेले ऊंचे स्वर से	२९
ब्रह्मलोक में ब्रह्म बिराजे	२९
आत्मकांक्षी आत्म के हित	३०
गोबिन्द के गुन गाते गाते	३०
बाहरमुखता को तुम त्यागे	३१
जाग जिज्ञासू जीत हरि जप	३१
अपने अन्तर झाती पाए	३२
दूर देश है जाना तुझको	३२

भजन	पृष्ठ
।। ४ राग आसा भजन ९६।।	
राम मिलन पद्व पाती	३२
गुरु दर्शन को मैं जाता	३३
प्रभू मिलन का यह वेला	३३
करो सन्तों का सङ्गा	३४
अविद्या नींद त्यागो	३४
सत्गुरु शरणी आया	३५
राम नाम गुण गाओ	३५
ब्रह्मज्ञानी ब्रह्मानन्द माहिं	३६
सन्त संग भाग्यवान कोई	३६
मेरी तो विनय सुनो प्रभू	३७
राम दा भजन करो मेरे	३८
माया के अधीन से न	३८
मूण्ढ मनुष्य देह को तो वृथा	३९
ऐसे मेरा मन बसे राम	३९
मन के मारन वाला विरला	४०
प्रभू दे मिलाने वाला साधू	४१
बन्दे हरि गुण क्यों नहीं	४१
जे चाहो कल्यान धरो	४२
मानुष के तन को पाकरके	४२
श्री राम का नाम बड़ा	४३
सुन पण्डित ब्रह्म समाजी	४३
सुन शिष्य हमारी युक्ती	४४
मैं सेव गुरां की पाई	४४
गुरु राखो चरननि पासा	४५

भजन	पृष्ठ	भजन	पृष्ठ
कर मन हरि चरननि की आसा	४५	सन्तों में विश्राम है नित	५८
रे मन अबहीं होय सुजाग	४५	ऊठ करो अभ्यास जिज्ञासू	५९
रे मन जपले हरि का नाम	४६	साधन सुख के साधि	५९
रे मन आत्म का धर ध्यान	४६	माया से भगवान बचाओ	६०
रे मन अमृत वेले जाग	४७	आतम का दीदार है सब	६०
तज झूठा तन अहंकारा	४७	धन सत्गुरु धन सत्गुरु दर्शन	६१
कर ब्रह्म देश दीदारा	४८	पूरण आत्म इक रस है यह	६१
जिहं राम नाम गुण गाया	४८	सत्गुरु परम उदारियां	६२
भज राम नाम सुखधामा	४९	मन सोच सोच सोच अबी	६२
निज आतम राम पछान	४९	तुम टेक टेक टेक मथा	६३
मैं आय पड़ा हूं द्वार	५०	सत्संग संग संग करो	६३
सत्गुरु न बिसारो न बिसारो	५०	कर काज काज काज गुरू	६४
करले बन्दगी करले बन्दगी	५१	मन ज्ञान ज्ञान ज्ञान गहो	६५
नाम हरी का भुला न देना	५१	मन देख देख देख ज़रा	६५
शुभ कर्मों से प्रीती करले	५२	मन जोग जोग जोग करो	६६
ऊठो मुसाफिर जागो	५२	तुम जीत जीत जीत करो	६६
हे सत्गुरु बेड़ा तार तार	५३	मन जाप जाप जाप करो	६७
हो सत् चित् आनन्द रूप	५४	रस पान पान पान करो	६७
प्रेमा भक्ति दे दान	५४	मन शांति शांति शांति गहो	६८
मुक्ति पदार्थ मुक्ति पदार्थ	५४	मन गान गान गान करो	६८
गुरुमुख प्यारा गुरुमुख प्यारा	५५	मन यतन यतन यतन करो	६९
भक्त हरी को भक्त हरी को	५५	इस जग में प्रानी रे	६९
ओम हरी ओम हरी हरी ओम	५६	करले राम नाम गुण गान	७०
जीवन है दिन चार प्राणी	५७	धीरे धीरे प्रेम पंथ में	७०
दो दिन का महिमान है तुम	५७	प्रेम लगाना प्रभू से तुम	७१
अपना आप पछान बन्दे	५८	चालो चालो गुरु मन्दिर को	७१

भजन	पृष्ठ
रे मन मेरे छोड़ ममत को	७२
मानुष चोला दुर्लभ पाया	७३
सुनो सर्वही सज्जन हमारे	७४
सुनो रे साधो सुनो रे सन्तो	७५
सत्गुरु मैंनूं कृपा करके	७६
वो दिन भूल गया	७७
तुम साध संगति जाकर	७७
सत्गुरु स्वामी सृजणहारा	७८
मोहन मिलन को मैं आई	७८
मोहन सखी मन माहीं	७९
साध संगति में आना आना	७९
गुरु की महिमा भारी भारी	७९
समय सफल कर सारा सारा	८०
साक्षी को तुम जानो जानो	८०
मेरे सत्गुरु दीन दयाला	८१
चलिये प्यारे मित्र हमारे	८२
चल री प्यारी श्रुति हमारी	८२
अमृत वेले ओम ओम ओम	८३
प्रात समय यह प्रभू मेरा	८३
प्रात समय में सुनले स्वामी	८४

।। ५ राग विहाग भजन २२ ।।

भजन	पृष्ठ
प्रेम प्याला सत्गुरु वाला राम	८५
प्रीति झूठी है जगत की	८५
संसार के नदी से पार जाना	८६
है सब ब्रह्म पसार प्यारे	८६
सत्संग जग में सार प्यारे	८७
सुमरण में धर ध्यान	८७
अपना आप पछान बन्दे	८८
देखो आत्मराम मनुवा	८८
प्रभू से कर प्यार	८९
ऐ जिज्ञासू ब्रह्म विद्या	८९
निज धर्म में सीस दीजे	९०
ख्वाब है सब ख्वाब है सब	९०
ऐ सियाणा सोच देखो	९१
ऐ प्यारा नाहिं तेरा को संगी	९१
ऐ सज्जन मैं सोच देखा	९२
छोड़ जग के काम झूठे	९२
ऐ जिज्ञासू इस जगत को झूठ	९३
हे स्वामिन् सर्व व्यापक	९३
प्रेम जैसा नाहिं कोई	९४
ओटले हरि नामकी	९४
अगर चाहो मोक्ष को तुम	९५
भाव धारे मीत मेरे	९५

।। ६ राग धनाश्री भजन १२ ।।

भजन	पृष्ठ
मन मोहन की मुरली ऊपर	९६
कृपा करके सत्गुरु मुझको	९६
मोहि मिलिया सुखधाम हरीजन	९६
राम सुमर सुखधाम मेरे मन	९७
सन्तों का कर संग मेरे मन	९७
जागी जप गुरु नाम मेरे मन	९८

भजन	पृष्ठ
राम सुमर सुख मूल मेरे मन	९८
सत्गुरु का हो दास मेरे मन	९९
गोबिन्द को न बिसार मेरे मन	९९
को चाहत कुछ को चाहत	९९
जिस पर सत्गुरु कृपा धारे	१००
आज मेरे घर सन्त पधारे	१००

।। ७ राग टोड़ी भजन २३।।

भजन	पृष्ठ
मन राम शरण नहीं आया	१०१
सदा गोबिन्द के गुन गाओ	१०१
तव जीवन को धिक्कारा	१०२
ऐ जिज्ञासू नाम का कर	१०२
सन्तों सेले ज्ञान आत्म का	१०३
विपत् मेरी दूर करो महराज	१०३
मेरे मन मत कर तन	१०४
मेरे मन स्मरन से लिंव लाइ	१०४
समझ मन झूठा है संसार	१०५
जगत में कीना नहिं उपकार	१०५
मेरे मन मत कर तूं अहंकार	१०६
जगत में सो नर पशू समान	१०६
धर्म बिन जीवन है बेकार	१०६
जाऊँ मैं सत्गुरु पै बलिहार	१०७
प्रेम बिन जीवन निष्फल	१०७
प्रेम बिन रीझत ना भगवान	१०८
करो मन गुरु भक्ती प्रधान	१०८
करो सब जीवों का कल्यान	१०९
मेरे मन करले सौदा सार	१०९
मेरे मन सन्तों का कर संग	११०
मेरे मन हीरा जन्म न हार	११०
मेरे मन चाहो जे कल्यान	१११
स्मर मन सत्नाम साक्षी सार	११२

।। ८ राग भैरवी भजन ९८ ।।

भजन	पृष्ठ
मेरी दिल देवानी दर्शन गुरु	११२
तूं है ब्रह्म रूपा अनादी	११३
सुनो सजन मीता पढ़ो	११३
सुनो वचन प्यारा करो	११४
लगी है जिसीको बिरह	११४
सुनो मीत मेरे वचन	११५
जो मनमुख मति का	११५
जो त्यागे सत्गुरु ओटा	११६
श्री राम बोलो हरे राम	११६
हरी ओम् बोलो हरी ओम	११७
शिवोऽहम् शिवोऽहम्	११७
सचे गुरु की सेवा जिज्ञासू	११८
सत्गुरु जैसा दाता दानी	११९
बोलो प्रेम से प्यारे बाणी	११९
राम जपो दिन रात	१२०
आओ प्रभू इकबार	१२०
उठो जागो यह है बारी	१२१
साजन के विरह माहीं	१२१
सत्गुरु का साज़ सुन्दर	१२१

भजन	पृष्ठ
सत्गुरु आया शब्द सुनाया	१२२
मानुष जन्म पाये करो	१२३
सत्गुरु तुम दर्शन दे	१२३
करले अब हरि का स्मरण	१२४
धारो मन मूरत कृष्ण	१२४
सत्गुरु शिष्य की परीक्षा	१२५
कर्म नवीनों के करने में	१२५
देख देख प्रभू लीला तेरी	१२६
कृपा कर यह मोहि सुनाओ	१२६
पूर्ण गुरु की पूजा कीजे	१२७
परमेश्वर को मन में लागत	१२७
शंकर बोले पार्वती सुन	१२८
सर्व व्यापक सत्चित् आनंद	१३०
सुनो सुनो तुम श्रद्धा धारे	१३०
प्रीतम प्यारे जग में अपना	१३१
करो सत्संग प्रीतम प्यारा	१३२
सुन समझ सज्जन मन मेरा	१३२
तुम वृथा उम्र गंवाई	१३३
रे मन तन का तज अभिमान	१३४
और का और दिखलावे	१३४
उठो नर नींद अविद्या से	१३५
बताकर ज्ञान गुरु मुझको	१३५
यह झूठा हैं संसारा	१३६
हरि प्रबल तेरी माया	१३६
लाल हीरा रत्न मोती है	१३७
गुरु बिना कबहूं न होवे	१३७
काम करना था तुझे जो	१३७
गाओ गाओ तुम मानुष तन	१३८
आओ आओ हे सत्गुरु स्वामी	१३८
आओ आओ सब प्रेमी मिलकर	१३९
प्यारे प्यारे तुम अन्तर देखो	१३९
प्यारे प्यारे मैं दम दम जाऊँ	१४०
आये आये सब मेरे घर में	१४०
सोधे सोधे यह देखा मैंने	१४१
प्यारे प्यारे यह दुनिया सारी	१४१
मन पाप कर्म नहिं करना	१४२
क्यों करते मेरा मेरा	१४२
यह अवसर नाहिं गंवाओ	१४३
मन ऐसा कर्म कमाओ	१४३
तुम साध संगति में आओ	१४४
मैं सत्गुरु पै बलिहारी	१४४
मन किसकी कर न बुराई	१४५
है ऊंची नाम बड़ाई	१४५
मन राम नाम गुन गाओ	१४६
यह झूठा जगत विलासा	१४६
यह साधो शंक हमारी	१४७
मन पीवो प्रेम प्याला	१४७
मन मानो वचन हमारा	१४८
यह अद्भुत खेल अपारा	१४८
अब मेरा हो रखवारा	१४९
तुम मन से उल्टा चलना	१४९
जो गुरु की शरनी जावे	१५०

भजन	पृष्ठ
है संतनि रहति निराली	१५०
मेरा मन है मस्त मवाली	१५१
सन्तों से मिल हरि गुन गाना	१५१
प्रेम भरे पंथ में धीरे धीरे	१५२
हरी नाम है पापनि हारी	१५२
रखवारा है प्रभू मेरा	१५३
करले राम नाम से प्यार	१५३
सदा सत्संग श्रद्धा से करना	१५४
दर आया तेरे सत्गुरु मैं	१५४
मन स्मर ओम निज नाम को	१५४
तुम भजन करो भगवान का	१५५
कर राम चरण की आस रे	१५५
मन राम नाम मुख बोल रे	१५६
सत्गुरु तेरा नाम मुझको	१५६
रे मन मेरा तज निठराई	१५७
मेरे मन तुम राम नाम जप	१५८
सत्गुरु से ले राम नाम जप	१५९
रे मन मेरे धीरज धरना	१६०
भजन हरी का करले प्रानी	१६०
एही मेरा अर्ज़ अघाना	१६१
भजन राम का करले प्यारा	१६१
सत्गुरु कीना कार्य पूरा	१६२
सत्गुरु कीनी पूर्ण आसा	१६२
जोगी हैं अब जावण वाले	१६३
काल नित तेरे सिर नाचे	१६३
प्रभू तेरी शरण लई मैंने	१६४

भजन	पृष्ठ
गोबिन्द के गुन गाते रहो	१६४
।। ९ राग ज़िला भजन ३०।।	
परम प्यारी प्रान अधारी	१६५
गुरुमुख मनमुख दोनों केरे	१६५
सन्तों की यह रीति सनातन	१६६
काहे को तुम चिन्ता करते	१६६
सन्त सचारे हरके प्यारे	१६७
एक अचम्भा हमने देखा	१६७
गगन मण्डल में अजब	१६८
कैसे लिख हरि गाऊं	१६८
मैं डूबत था भवसागर में	१६९
बलवान बनो बुद्धिमान बनो	१६९
हरि स्मरे निज कल्याण करो	१७०
हम गीत सनातन गायेंगे	१७०
जिस काज लिये यह जन्म	१७१
जे सुख को तुम चाहत हो तो	१७१
सब ऊंचे स्वर से बोलो	१७२
हे प्रभू प्यारे प्राण आधारे	१७३
नाम जपो मन एही बारी	१७३
दीन दयाला हरि कृपाला	१७४
वृन्दावन में बीन बजाये	१७४
रे मन प्यारा कर वीचारा	१७५
रे मन देखो कर वीचारा	१७५
ऐसा आत्मराम ध्याया	१७६
खोज रहे जिस परमेश्वर को	१७६

भजन	पृष्ठ	भजन	पृष्ठ
हे परमेश्वर हे जगदीश्वर	१७७	अब बसंत के दिन आये रे	१८९
रे मन मेरे सांझ सवेरे	१७७	मन भगवत की कर भक्ती रे	१९०
ब्रह्म प्यासी जाग जिज्ञासी	१७८	मानुष तन यह सफला कीजे	१९१
ऊधव तेरी मति क्यों मारी	१७८	आई है आई है ऋतु बसंत की	१९१
पुण्य किया ना हरि गुण गाथा	१७९	।। ११ राग तिलंग भजन ९८ ।।	
सत्गुरु मारी शब्द कटारी	१७९	चलिये साधो देश अमर घर	१९२
ना वैराग ना अनुरागा	१८०	दिव्य रूप दर्शन गुरां के	१९२
।। १० राग बसंत भजन २१ ।।		फकीरी है कठिन करनी	१९३
ऋतु ऋतु में है रङ्ग साहब का	१८०	बिना दीदार मोहन के	१९३
सत्गुरु साहब सन्त मिलाया	१८१	देही मन्दिर अती सुन्दर	१९४
बिरह बसन्त मेरे घर आया	१८१	हरी के भजन बिन मानुष	१९४
बसंत की ऋतु है अति सुन्दर	१८२	मिला मानुष जन्म तुझको	१९५
बसंत की ऋतु है सुखदाई	१८२	प्याला प्रेम का चाहो	१९६
साक्षी चेतन बसंत ऋतु से	१५३	अगर तुम इश्क को चाहो	१९६
संतों के संग होरी खेलो	१८३	तुम्हारा रूप है चेतन	१९७
बिरह बसन्त मेरे घर आये	१८४	जगत के काम सब झूठे	१९७
सत्गुरु से तुम नेह लगाओ	१८४	लिखा जो भाग तेरे में	१९८
गुरु का शब्द बसे जिस अंतर	१८५	नयन भरके जहां देखूं	१९८
सत्गुरु ऊपर मैं बलिहारी	१८५	तुमहो भगवन् दीन दयाला	१९९
श्वास श्वास से जप जिज्ञासू	१८६	जग में जानो गुरुमुख सोई	१९९
श्री राम नाम को रटना रे	१८६	प्रभू पावन नाम तुम्हारा	१९९
मन प्रेम हरी से कीजे रे	१८७	सत्गुरु साजन मैंने पाया	२००
इस मानुष तन में जागो रे	१८७	प्रभू लीनी अब ओट तुम्हारी	२००
मन पाप कर्म मत करना रे	१८८	सदा सुखधाम है प्रभू	२००
घर मेरे सत्गुरु आया रे	१८९	साजन सुख है राम भजन में	२०१

भजन	पृष्ठ	भजन	पृष्ठ
साधो राम बसे हरि रंग में	२०१	मानुष जन्म अमोलक पाया	२१४
गुरु का शब्द जान सुखदाई	२०२	मानुष देह अमुल को पाये	२१५
मेरे मन निर्भय हो विचरो	२०२	मानुष जन्म रतन तुम पाया	२१५
साधो मैं हूं केवल राम	२०३	देश छोड़ परदेश में आये	२१५
खोजो आतम सार, तन तेरे	२०३	सांग पहन कर शाहनशाही	२१६
तुमहो ब्रह्म स्वरूप	२०४	इन्द्रियों को शुभ मार्ग लाओ	२१६
स्मरले नाम ईश्वर का	२०४	सत्गुरु पूरे कृपा करके	२१६
सत्गुरु दीन दयाला, कृपाला	२०५	मैं बालक तुम मात पिता गुरू	२१७
सुनले प्रभू प्यारे यह है	२०६	सत्गुरु के अंग जाग जिज्ञासू	२१७
ईश्वर तेरे द्वारे आया हूं	२०६	धर्म की रहति रहे जो गृही	२१७
कैसे ध्याऊँ तुझे कैसे मैं	२०७	आज मेरे उर आनन्द होया	२१८
तुम मानुष देही पाई	२०७	अगम देश में अलख बिराजे	२१८
है आतम रूप तुम्हारा	२०८	काल की नौबत निशिदिन	२१८
यह सब है ब्रह्म पसारा	२०८	सुनले प्यारा वचन हमारा	२१९
मन अपना आप सम्भारो	२०९	जे तुम जग में सुख को	२१९
मन किसकी दिल न दुखाना	२०९	गुरुमुख गुरु की सेव	२१९
मैं गुरु का दर्शन देखा	२१०	सत्गुरु साचे कृपा करके	२२०
मन सब है ठाकुर द्वारा	२१०	मेरी तो है ज़ाति अज़ाती	२२०
प्रभू कैसे होय उद्धारा	२११	बन्दा हरि का भजन करो	२२०
प्रभू मेरा अर्ज़ अघाओ	२११	इश्क अक्ल का झगड़ा भारी	२२१
हो प्रभू अन्तर्यामी	२१२	हरि ने हरिजन मूरत धारी	२२१
क्यों जग से प्रीति लगाते	२१२	सत्गुरु अपनी कृपा करके	२२१
दिल का दाग़ न धोता जावे	२१३	प्रेम प्याला मस्ती वाला	२२२
अपनी मौज बढ़ावन कारन	२१३	प्रभू करूं पुकार	२२२
जो कुछ तुम यह देख रहे हो	२१४	सो योगी परवान	२२३
मानुष देह अमोलक पाई	२१४	सबको मारत काल	२२३

भजन	पृष्ठ
खुद मस्ती के माहिं	२२४
सन्त सज्जन अवतार	२२४
राम भजो सुखधाम भजो	२२५
मेरे मन ध्यान यही धरले	२२५
रहो ना गफ़्लत में गल्तान	२२६
जब जान लिया तो रटना	२२६
जल्दी जा मन आत्म घर में	२२७
से सब स्थल तीर्थ जानो	२२७
उसी देव का कर मन दर्शन	२२८
मेरे मन यह मोह अंधेरा	२२८
मेरे मन शुभ कर्म करो नित	२२८
मेरे मन तुम अहं त्यागो	२२९
कहो गुरू मैं कहां से आया	२२९
सुनले साची बात कहूं तुम	२२९
मेरे मन तुम भोग भोगके	२३०
सत्गुरु ने सत्संग का जगमें	२३०
सत्गुरु दाता दीन दयालू	२३०
मन राजा ने अपने बल से	२३१
गुरु की भक्ती सुगम न जानो	२३१
बंदा हरि हरि नाम उच्चार	२३२
ऐसे सत्गुरु पै कुर्बान	२३२
प्यारे मीठे वचन उचार	२३३
प्यारे करले शुद्ध अहार	२३३
तुम यह विनय सुनो महाराज	२३४
मन तूं राम राम जप राम	२३४
मन तूं लखले अपना आप	२३५

भजन	पृष्ठ
।। १२ राग हुसेनी भजन १८ ।।	
साधो अद्भुत रूप हमारा	२३६
साधो सत्गुरु शब्द सुनाया	२३६
साधो ऐसा रूप हमारा	२३७
मेरे मन राम सुमर अविनाशी	२३७
प्रभुजी मेलहु सन्त सच्चारे	२३८
प्रभुजी करि कृपा जन जानी	२३८
इकही प्रेम प्रभू को भाया	२३९
प्रभु ने अपनी कृपा धारे	२३९
प्रभू जी तुझ बिन और न	२४०
मेरे मन हरि का धरो ध्याना	२४०
साधो सो है राम हमारा	२४१
साधो इस विधि पूजा कीजे	२४१
सत्गुरु मुझको भेद बताओ	२४२
मेरे मन छोड़ मलिन अभिमाना	२४२
मेरे मन राम सुमर सुखदाई	२४३
करले प्रेम प्रभू से प्यारा	२४३
सत्गुरु काटो यम की फासी	२४४
साधो चुप का यह चिमकारा	२४४
।। १३ राग कोह्यारी भजन ५१ ।।	
जब आय वबा इन तन	२४५
यह तन तेरा होसी खाक	२४५
प्रेम ने मुझको बांध लिया	२४६
फिठ पगड़ी जुठ जामा पाकर	२४६
जीवन मुक्ति जगत में देखा	२४७

भजन	पृष्ठ	भजन	पृष्ठ
सत्गुरु मेरा सर्व व्यापक	२४८	भव सागर से पार उतारो	२५९
सत्गुरु अपनी कृपा करके	२४८	सहसें सांग बनाये साजन	२६०
सत्गुरु मेरा अन्तर्यामी	२४९	सत्गुरु से ले योग युक्ति मैं	२६०
कितने भेष धरे तन ऊपर	२४९	अपना आतम रूप पछानो	२६०
सहसें साज़ बजै घट भीतर	२५०	भेष धरन से मुक्ति न होवे	२६१
आत्म चिन्तन निशिदिन	२५०	जन्म जन्म के भाग जगे	२६१
सत् चित् आनन्द सर्व व्यापक	२५१	सुनले सत्गुरु अर्ज़ हमारा	२६२
कारज मात्र काम करो तुम	२५१	अन्तर की जानत भगवाना	२६२
आज हमारे भाग जगे हैं	२५२	अपना चाहो जे कल्याना	२६३
बाज़ीगर इक बाज़ी पाई	२५२	प्रेम प्रभू से करले प्यारे	२६३
मोहन मेरे घर में आये	२५३	करले हरि का भजन सुजाना	२६४
आज मेरे घर सन्त पधारे	२५३	देखा जग में सन्त उदारी	२६४
सत्गुरु मिलिया पड़दा खुलिया	२५४	सुन जिज्ञासू वचन हमारा	२६५
अखण्ड आरती गुरु की कीजे	२५४	हरी का भजन कर भाई	२६५
दर दर फिरता काहिं दिवाना	२५५	हे श्रुती तूं हे वृत्ती तूं	२६६
धन धन जन्म उसी का जग में	२५५	पूर्व का पुण्य जबहीं फलिया	२६६
देह मन्दिर में देव बिराजे	२५६	मन ऊपर विश्वास न करना	२६६
गुरु बिन गति मति ज्ञाति न	२५६	दुनिया है यह अजब कहानी	२६६
मैं को छोड़ सदा सुख पाओ	२५६	रे मन मेरे रोष न कीजे	२६७
सैर करत हैं साधू शूरा	२५७	रे मन मेरा छोड़ पसारो	२६८
मानुष जन्म पवीत्र पाया	२५७	।। १४ राग सोरठ भजन १८ ।।	
अन्तर्मुख को पाए ज्ञाती	२५८	मोहि भूल गया संसार	२६८
हाथ जोड़ गुरुदेव को कीजे	२५८	सफल करले श्वास रे तुम	२६९
गुरु का ज्ञान तोफ का गोला	२५८	धरले हर का ध्यान	२६९
गुरु बिन मानुष शान्ति न	२५९	रे मन अब उठ जाग	२६९
पूरब पुण्य से मिलिया	२५९		

भजन	पृष्ठ
सन्तों का कर संग रे तुम	२७०
धीरे धीरे पग धार	२७०
जप साक्षी सत्नाम रे तेरे	२७०
गीता का सुन ज्ञान रे तेरा	२७१
गुरूजी मुझे अपने चरन	२७१
देवो गुरुदेव मुझे भक्ती	२७२
सत्गुरु मुझ पर कृपा धारो	२७२
राम नाम को जपले प्रानी	२७३
मेरे मन प्रभू से कर प्रीति	२७३
दुनिया के दाम में पड़कर	२७४
करो तुम साध संगति सद्वार	२७४
लेवो सत्गुरु से निज ज्ञान	२७५
लेवो सत्गुरु की तुम ओट	२७५
जपले हरि का नाम	२७६
।। १५ राग खम्भाट भजन २२ ।।	
अजब तमाशा लाया हरि ने	२७६
करता कुदरत वाला मेरा	२७६
प्रबल तेरी माया प्रभू	२७७
मैंनूं मिलिया गुरु दातार	२७८
तुमहो सत् चित आनन्द सार	२७८
मैंनूं दीना आतम सार	२७९
लग गयी इश्क अकुल दी	२७९
सत्गुरु सुन्दर श्याम, मेरे	२८०
बुरे हैं कर्म जे जग में	२८०
अभी तुम चेतले प्राणी	२८१

भजन	पृष्ठ
हरी की गति हरी जाने	२८१
मुझे है प्यास इक तेरी	२८२
मिले जो भाग से कुछ भी	२८२
मस्त खुद मस्ती में मैं हूं	२८३
हरी का भजन नहिं कीना	२८३
अगर ना राम को पाया	२८४
मिलत है कर्म से सुख दुख	२८४
ब्रह्म स्वरूप को जानो अवर	२८५
चौरासी का चक्कर फिरके	२८५
पती से प्रेम का नाता	२८६
ब्रह्म के ज्ञान का डंका	२८६
दुनिया के तरफ ना देखो	२८७
।। १६ राग मारू भजन ७ ।।	
खाक अन्दर घर तेरा	२८७
बन्दे भजन बन्द क्यों करिये	२८८
मत कर तूं अहंकार रे मन	२८८
दो दिन का महिमान, तुम	२८८
जगत मुसाफिर खाना, रे मन	२८९
दूर तुम्हारा देस, अब तो	२८९
अमरापुर निज धाम, अब तो	२९०
।। १७ राग सारंग भजन १३ ।।	
पीवु पीवु करत पपीहे जैसे	२९०
आज मेरे घर भलि तुम आये	२९१
जप राम नाम मन जागी	२९१

भजन	पृष्ठ
सद्गुरु दीन दयाला दरस	२९२
सच्चा संगी है राम समझ	२९२
मेट सके ना कोय, कर्म	२९२
धन धन सत्गुरु देव, अलख	२९३
रिमझिम कर हरवार, बादल	२९४
सुन्दर सावन मास, सफल	२९४
जीव भाव डार डार	२९५
मुसाफिर जाग जाग, हरी मग	२९६
कीजे सन्तनि संग, समझ मन	२९७
नारायण का नाम, स्मर मन	२९७

।। १८ राग पूरब भजन ७ ।।

भजन	पृष्ठ
पूरब देश का मैं हूं वासी	२९८
पूरण सत्गुरु मोहि पिलाई	२९८
पूरण सत्गुरु की सुन शिक्षा	२९८
कृपा कर गुरु मोहि सुनाओ	२९९
सुनिये शिष्य अब ध्यान	२९९
गुरु की कृपा से जिज्ञासू	२९९
प्रेम प्रभू का सत्गुरु के सम	३००

।। १९ राग कामोल भजन ९ ।।

भजन	पृष्ठ
चालो हंसा मानसरोवर	३००
साजन मुझको आन मिलावे	३००
सत्गुरु मुझ पर कृपा करके	३०१
तुम बिन सत्गुरु मेरा जगमें	३०१
मोह नींद में सब जग सोया	३०१
साजन मुझ से आन मिलो	३०२
साजन मुझको छोड़ न जाओ	३०२
गुरुमुख मनमुख हंस काक	३०२
मनुष काहे को तूं आया रे	३०३

।। २० राग कल्याण भजन २३।।

भजन	पृष्ठ
चरन पकड़ गुरु का	३०३
माई मैं सत्गुरु पूरण पाया	३०३
माई मैंनूं सत्गुरु ज्ञान बताया	३०४
माई मैंनूं सत्गुरु शब्द सुनाया	३०४
माई मैंनूं सत्गुरु अलख	३०४
प्यारे सत्गुरु के दर जाइये	३०५
प्यारे सत्संग में चल आइये	३०५
हरि कृपा से सत्गुरु पाया	३०५
करो आरती सत्गुरु चरना	३०६
साक्षी चेतन स्वयं प्रकाशी	३०६
सत्गुरु काटा बन्धन मेरा	३०७
सत्गुरु मेरे घर में आया	३०७
बन्दा अपना काज बनाय	३०८
बन्दा माया से मन मोड़	३०८
बन्दा लाज न तुमको आइ	३०९
बन्दा भूल न पाप कमाइ	३१०
बन्दा मीठी बाणी बोल	३१०
हंसा मानसरोवर जाउ	३११
गुरुमुख गुरु चरने मन लाय	३११
रे मन आतम आनन्द पाय	३१२

भजन	पृष्ठ
अगर चाहो परम मुक्ती	३१२
बुरा है ख्याल नर तेरा	३१३
सत्गुरु कीनी कृपा भारी	३१३
।। २१ राग कंसो भजन १८ ।।	
मिली अब संग सन्तों के	३१४
किये करतूत पशुओं के	३१४
करो कृपा गुरू मुझ पर	३१५
करो सत्संग सन्तों का	३१५
कहे कोई दीवाना है	३१६
लिखा जो लेख पूरब का	३१६
अगर तुम मोक्ष को चाहो	३१७
अगर है आस आनन्द की	३१७
तूं मेरा रखवारा सत्गुरु	३१८
काटो कष्ट हमारा प्रभुजी	३१८
काटो यम की फासी प्रभुजी	३१९
अजब बनाई माया हरि ने	३१९
तुम हो साक्षी चेतन चिद्घन	३१९
सो सुख सत्गुरु कहां बसत	३२०
सार वचन शिष्य सुनले मेरा	३२०
यह संसारा जान असारा	३२१
सन्त पधारे धाम हमारे	३२१
गुरु नाम दिया, सब काम किया	३२२
।। २२ राग पहाड़ी भजन ७४ ।।	
दाता गुरुजी दान देवो	३२२
सत्गुरु बोले सुनरे चेला	३२३
दाता गुरुजी अज अविनाशी	३२३
सत्गुरु बोले सुन रे चेला	३२४
तुमहो चेतन जानन हारा	३२४
मन मोहन गिरधारी, बलिहारी	३२५
सत्गुरु शब्द सुनाओ	३२५
नाम जपो निर्धारी, पाओ	३२५
तुम्हारा हमारा एको रूप	३२६
गुरू है हमारा, प्रभू का पियारा	३२६
करो तुम राम नाम व्यापार	३२७
धरो मन गुरु चरणों का ध्यान	३२७
बन्दे तुम करलो पर उपकार	३२८
भाग भले भाग भले	३२८
श्रद्धा धारे श्रद्धा धारे	३२९
बोल हरी बोल हरी, हरि	३२९
भाग जागे भाग जागे आज	३३०
शरन लेवो शरन लेवो सिया	३३०
मन दर्शन कर अपना	३३१
उपदेश सुनो प्यारे, क्यों	३३१
जो साध संगति चित लावे	३३२
हम द्वार तुम्हारे आये	३३२
शरण ले राम की भाई	३३३
अगर तुम राज़ को मुझपर	३३३
प्रभू तुम दास को दर्शन	३३४
आओ मिलकर सभी प्रेमी	३३४
तूं स्वामी मेरा मैं दास तेरा	३३५

भजन	पृष्ठ
साधो मैं पूजूं सत्नाम को	३३५
साधो पारब्रह्म बेअन्त जी	३३५
राम नाम मुख बोल रे	३३६
बलिहारी मिलिया मुझको	३३७
सुनिये मन मेरा, सुमरण	३३७
आतम का जिहं ध्यान धरा	३३८
स्वास में प्रकाश पेखो	३३८
पूरण धर विश्वास गुरुमुख	३३९
आतम घर के माहिं, रे मन	३३९
धर्म सनातन सार, दिलधर	३४०
देखो अपना आप, सुनले	३४०
करले सर्व का त्याग, रे तुम	३४१
किया न विचारा तुम किस	३४१
हे दीना नाथ दयाल, शरण	३४२
राम नाम जप श्रद्धा से	३४२
ओ मेरे सत्गुरु स्वामी	३४३
तारो रे सत्गुरु तारो, मुझे	३४३
जिसीने मानुष तन दीना	३४४
करो सत्संग सदा, सन्तों के	३४४
मेरी रसना ऊंचे स्वर बोलो	३४५
मेरा सत्गुर परउपकारी है	३४६
जब गोबिन्द के गुन गाओगे	३४६
रह शान्ति में निज क्रान्ति में	३४७
हर हाल में हर काल में	३४७
हर काम में दम दाम में	३४८
बिना हरी नाम के कोई	३४८
सन्तों के दर का दर्बान	३४९
साध संगति के द्वार, शान्ति	३४९
ब्रह्म ज्ञान का दान, सत्गुरु	३५०
मोक्ष मन्दिर का द्वार, मानुष	३५०
भजले बन्दे भगवत को	३५१
राम को सुमरले, संकट	३५१
करो सन्तों का संग, होके	३५२
करो सन्तों का सत्संग	३५३
करता हूं अर्दास, सुनले	३५३
सत्गुरु के हाथ, कुञ्जी	३५३
मेरे मन अब जाग, हरि	३५४
कब होणी मिटंदी नाहीं	३५४
ज्यों सरिता सागर जासी	३५४
राम कथा राम कथा, सुन	३५५
देखो नैन खोलके तुम	३५५
ऊठ मुसाफिर समर साधो	३५६
गुरू अर्ज़ करूं तुझको	३५६
मेरे परम प्रेमी आज, कथा	३५७
मेरे परम स्नेही नेक, कथा	३५७
मेरे परम प्रेमी श्रेष्ठ, ज्ञान	३५८
मेरे उत्तम जिज्ञासी आप	३५९

॥ २३ राग पीला भजन ९१ ॥

भजन	पृष्ठ
दिल को मिलाओ तुम	३६०
दर्शन तेरे की प्रभू	३६०
अमरापुर के योगी आया	३६१

भजन	पृष्ठ	भजन	पृष्ठ
धन धन भाग हमारा	३६१	राम जपो हरवार, रे मन	३७३
तुम राम जपो नर नारी	२६२	जानो अपर अपार, महिमा	३७४
हरि नाम जपो तुम प्यारा	२६२	भगवत की हरवार, प्यारे	३७५
जे दान अभय के दानी	२६३	मन जीते जग जीत	३७५
तुम साध संगति में आओ	२६३	सत्गुरु की सद्वार, प्यारे	३७६
हरी नाम नहिं ध्याया	३६४	जीवन वृथा जान, हरि के	३७६
सन्त सज्जन घर आया	३६४	दीनों को तुम दान, दिल से	३७७
गुरु मूरत मन धारो	३६५	रसना से हरवार, प्यारे	३७७
तुम नाम जपो सुखकारी	३६५	प्रभू दीना नाथ, मेरे	३७८
भोग विषय में भाई, क्यों	३६६	मुझको लागी लोर, गुरु के	३७८
यही जपन की वेरा	३६६	चलिये श्रद्धा धार, प्यारे	३७९
सुन समझ हरीजन प्यारे	३६७	धारे गुण गुणवान	३७९
गोबिन्द के गुन गाइ	३६७	नींद न आवे नैन, गुरु के	३८०
पीले गुरुमुख पीउ, तूं प्रेम	३६७	गुरु आये मम धाम, हमरे	३८०
सत्नाम साक्षी सर्व आधार	३६८	श्रद्धा मन में धार, नवधा	३८१
सियाराम बोलो, राधेश्याम	३६८	करले संगति सार, प्यारे	३८१
तेरी गाफिल आयू सारी	३६९	जाग्या जग्या भाग हमारा	३८२
समझ मना, समझ मना	३६९	जागो जागो हो हुशियारा	३८२
गुरुजी, गुरुजी, गुरुजी	३७०	जै जै सीताराम बोलो	३८३
तूंहीं तूं, तूंहीं तूं, तूंहीं तूं	३७०	जपले हरि का जाप	३८३
लख चौरासी जोनियों का	३७१	जाग मुसाफिर जाग मुसाफिर	३८४
इस जगतर में तुम जानो	३७१	आप पछानो आप पछानो	३८४
यह जन्म अमोलक हीरा	३७२	सत्गुरु मेरा सत्गुर मेरा	३८५
है सन्त गुरू से मिलता	३७२	सत्गुरु मेरे सत्गुरु मेरे	३८५
आज मेरे घर सन्त पधारे	३७३	राम कहो तुम राम कहो तुम	३८६
सत्संग की हमेशा सन्तनि	३७३	कृष्ण कन्हाई बंसी बजाई	३८६

भजन	पृष्ठ
सत्गुरु आया सत्गुरु आया	३८७
मन मेरे निज आनन्द चाहो	३८७
देह मन्दिर में देव बिराजे	३८७
मन मेरा सुख शान्ती चाहो	३८८
मन मेरा खुद मस्ती चाहो	३८८
मन मेरा जो मुक्ती चाहो	३८९
मन मेरा जो हित को चाहो	३८९
बन्धन से जो छूटन चाहो	३९०
मानुष जनम अमोलक पाया	३९०
मन मेरे तुम जग में आकर	३९१
तजो पेट की चिन्ता प्यारा	३९१
धारो दिल में दया को उदारी	३९२
किसने कर्म गति नहिं टारी	३९२
मोहि पार उतार अखेव गुरू	३९३
सुनो शिष्य शब्द सत्य ये	३९४
सत्गुरु साचा ज्ञान सुनादो	३९५
हरि का नाम जपो निष्काम	३९५
सत्गुर अपना नाम जपाओ	३९६
हरि का भजन करो मेरे	३९७
मोहि सन्त मिलिया अवतार	३९७
चलो गुरु द्वार बन्दे	३९८
प्रभू अपनी कृपा धारो	३९८
यह पंथ प्रेम का न्यारा रे	३९९
जोई अराधे ईश, जपे	४००
मन गावो हरी के गुन गावो	४००
मन करले हरी भजन करले	४०१

भजन	पृष्ठ
मन सत्गुरु के द्वारे चलिये	४०१
चालो चालो गुरुमुख सत्गुरु	४०२
मेरा मेरा सत्गुरु ज्ञान भण्डारा	४०३
झूठा झूठा जानो यह जगत	४०३
दीना दीना मैंनूं गुरु प्रेम	४०४
लागे लागे मैंनूं इक राम	४०४
ऊठो ऊठो चोर तेरे नगर	४०५
श्रद्धा से दे कान, हरि की	४०५
मेरी लाज रखो, प्रभू	४०६
निज धर्म धरो, शुभ कर्म	४०६

॥ २४ राग मांझ भजन १७ ॥

भजन	पृष्ठ
ऐ ईश तेरी कुदरत किससे	४०७
सुनो दीनानाथ प्रभू अरज़	४०७
सत्संग में चलो तुम	४०८
सब का भला करो तुम	४०९
भगवान का भजन कर	४०९
साक्षात् इस विश्व को	४१०
वीचार से करो तुम	४१०
भगवान पर हमेशा, विश्वास	४११
भगवान मैं तुम्हारे, मुझमें	४११
भगवान आप जो हैं, सोई	४१२
जागो जागो सन्तों के संग	४१२
करले करले हरी भजन	४१३
मेरे लाला आतम पद में	४१३
प्रभू मुझको अपना दास	४१४

भजन	पृष्ठ	भजन	पृष्ठ
भैया मेरे राम नाम मुख	४१५	बादल अमृत धारा बरसे	४२७
गुरु ज्ञान की गंगा में	४१५	सत्गुरु से तुम जुगती	४२७
मैं हूँ हरी तुम्हारा, तुम	४१६	सत्गुरु ये मुझ भेद	४२७
।। २५ राग जोग भजन ११ ।।		सत्गुरु मिलिया पड़दा	४२८
		देख जगत का रंग न	४२८
जब से अपना आप भुलाया	४१६	ऊठो ऊठो पंछी भागो	४२८
प्रबल है अति हरि की माया	४१७	दीपक पास न जाउ	४२९
सत्गुरु सुन यह अरज़ हमारो	४१७	ऊठो ऊठो भंवरा यांसे	४२९
रे मन मेरा कर होशियारी	४१८	मेरी मति यह मछली	४२९
रे मन मेरा समझ प्यारा	४१८	हाटो हाटो दूर कुरंगा	४३०
ना तुम किसका ना कोई	४१९	ब्रह्मज्ञान सहित ध्यान	४३०
रे मन मेरा भटकत काहीं	४१९	गुरु का शब्द कमाना	४३०
रे मन मेरा सत्संग करिये	४२०	मन में धर सन्तोष	४३१
रे मन मेरा होय निरासा	४२०	मैं हूं शाहनशाह	४३२
आत्म ज्ञान अमी रस	४२१	मैं का सब इसरार	४३२
सत्गुरु सागर के सम जानो	४२१	दाता है इक राम	४३३
जे भव सागर तरना चाहो	४२२	एक तरफ पंथी हो जाउ	४३३
रचना तेरी राम निराली	४२२	मेरे मन अब धीरज धार	४३४
वणिज करन को आया	४२३	भक्ती से रीझे भगवान	४३४
मन मूर्ख क्यों गर्व करत	४२३	श्वासों से सुमरो गुरु नाम	४३५
मेरे मन मेरी मति मानो	४२४	जो कुछ करना करले आज	४३५
मेरे मन नित अपने अन्तर	४२४	स्वप्ने सम है यह संसार	४३६
मेरे मन कर कपट न	४२५	अपना अवगुन आप निहार	४३६
प्रभू मुझ से दूर रहो ना	४२५	माया का है सब विस्तार	४३७
पूरन सत्गुरु देश अगम	४२६	पूर्ण गुरु से ले निज ज्ञान	४३७
गुरु कृपा से आज भयी	४२६	मेरे मन अब जपले राम	४३८

भजन	पृष्ठ	भजन	पृष्ठ
सत्गुरु पै जाऊं कुर्बान	४३८	दीन दयालू भो भगवाना	४५०
पारब्रह्म है तेरे पास	४३९	यह घर तेरा प्रीतम नाहीं	४५०
मन मेरे तूं कर ना शोक	४३९	ऊठ मुसाफिर क्यों तुम सोया	४५१
गुरु पूजन का दिन है आज	४४०	अमरापुर है देश हमारा	४५१
राज़ी होवत तबहीं राम	४४१	आतम धन है अचल हमारा	४५१
मेरे मन जागो रे जागो	४४१	नित आतम का कर दीदारा	४५२
सजनियां भीनी रे भीनी	४४२	भरे जाम जोगी बिरह	४५२
हरीहर बोलो रे बोलो	४४२	अमरापुर निज धाम हमारा	४५२
घमण्डी मान न कर मन में	४४३	साक्षी का मन स्मरण करिये	४५३
घघरिया फूटी रे फूटी	४४३	इस जग में कहु किन सुख	४५३
मन्दिर ये ऊंचा है ऊंचा	४४४	करो मन साक्षी का स्मरण	४५४
बदरिया गाजे रे गाजे	४४४	स्मर मन गुरु का दीया नाम	४५४
हरी मति साची रे साची	४४५	भजन कर भगवत का प्यारा	४५५
हरीजन जागे रे जागे	४४५	सफल कर मानुष तन बन्दा	४५५
हरी मैं तेरा हूं तेरा	४४६	ऐसे सत्गुरु पर बलिहार	४५६
बन्दा सो होगा जो होना	४४६	तुम हो सत्चित् आनन्द रूप	४५६
हरी रस मीठा है मीठा	४४७	हे रसना ! तूं जप हरि नाम	४५७
गुरू मग चालो रे चालो	४४७	तेरा साहब है तुझ माहिं	४५७
वचन गुरु नीका है नीका	४४८	आनन्द की निधि है तुझ	४५८
वचन गुरु मानो रे मानो	४४८	हरि की माया किसे नहिं	४५८
साज ले गावे रे गावे	४४९	जिस को हरि का प्रेम हुआ	४५९
शिष्य गुरु का शब्द कमाओ	४५०	मन जीतन के साधन चार	४५९

श्री टेऊँराम महिमा

१. निश्शोकमानं गतरागद्वेषं, ज्ञानैकसूर्यं जगदेकवन्द्यम्।
अध्यात्मलीनं विनिवृत्तकामं, श्री टेऊँरामं शरणं प्रपद्ये।।
२. यदा हि देशे यवनं प्रकोपात्, सिन्धोस्समीपे बत धर्म हानिम्।।
जनाञ्च सर्वान् व्यथितान् विलक्ष्य श्री टेऊँरामेण धृतोऽवतार:।।
३. सुरक्ष्य धर्मं त्ववतीर्य भूमौ, प्रजासु व्याप्तञ्च विधर्मी धर्मम्।
विनाशाय तं मण्डल मण्डितेन, प्रकाशित: प्रेम प्रकाश मार्ग:।।
४. अष्टांगयोगे च समाहिताय, लोकोपकारे कृतनिश्चयाय।
तद् ब्रह्मतत्वे परिनिष्ठिताय, श्री टेऊँरामाय नम: शिवाय:।।
५. शिष्टैश्च सर्वै: परिपूजिताय, स्वर्गाधिपतयेऽपि नि:स्पृहाय ।
कामादि षड्वर्ग जिताय तस्मै, श्री टेऊँरामाय नम: शिवाय।।
६. योगीन्द्र वृन्दै: परिसेविताय, भक्तार्तिनाशे कृतनिश्चयाय।
सर्वात्म भावे परिनिष्ठताय, श्री टेऊँरामाय नम: शिवाय।।
७. पूर्णेन्दुशोभा परिपूरिताय, शुद्धाय शान्ताय गतस्पृहाय।
भस्मीकृताशेष निबन्धनाय, श्री टेऊँरामाय नम: शिवाय।।
८. भक्तेश्च मार्गस्य निदर्शकाय, प्रेम प्रकाश मण्डलोद्भवाय।
आचार्य वर्याय वशेन्द्रियाय, श्री टेऊँरामाय नम: शिवाय।।

श्री सर्वानन्द महिमा

१. सर्वानन्द प्रदातारं, सर्वानन्द विकासकम।
सर्वानन्दावितारंच सर्वानन्दं नमाम्यहम्।।
२. श्रीमान् श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ, मुकुटालंकार रूपो गुरु:।
योग: क्षेमकर: सुपूज्य चरणौ, रामेण तुल्यो गुणै:।।
संस्थाप्याश्रममुत्तमं जयपुरे, धर्म प्रचारे रत:।
सर्वानन्द यतीश्वरो विजयते, प्रेम प्रकाशे भुवि।।

स्वामी टेऊँराम स्वरूप वर्णन

'टे' त्रिगुण स्वरूपाय, 'ऊँ' निर्गुण निरूपणे।
'टेऊँ' ब्रह्माभिधानाय, नमस्तस्मै नमो नम: ।।

अर्थ :- 'टे' तीन गुणों के जो स्वरूप है, 'ऊँ' जो तीन गुणों से परे निर्गुण निराकार है, ऐसे ब्रह्मस्वरूप सत्गुरु टेऊँरामजी महाराज को हमारा प्रणाम है, प्रणाम है, प्रणाम है।

।। श्री गुरु परमात्मने नमः।।　　हरिः ओ३म्　　।। श्री सत्नाम साक्षिणे नमः।।

ॐ

श्री अमरापुर वाणी

।। मंगलाचरण ।।

दोहाः- सत् चित् आनन्द ब्रह्म इक, निर्गुण निर आकार।।
कह टेऊँ जो होत है, सगुण रूप साकार ।।१।।
तांको मैं वन्दन करूं, जान सर्व का रूप।।
कह टेऊँ सेवत जिसे, सुर नर मुनि जन भूप ।।२।।

सवैयाः आदि न अन्त न जाहिं बखानत, पूरण आत्म सर्व निवासी।
पांच पचीसनि की गम ना तहं, कोष अतीत स्वयं प्रकाशी।
वाक बुद्धि मन पार न पावत, अगम अगोचर है चिद राशी।
टेऊँ कहे त्रिलोक विषे नित, ब्रह्म व्यापक है अविनाशी ।।१।।
आत्म एक अनादि अनन्त जु, सर्व व्यापक सूख निधाना।
वाक बुद्धि मन इन्द्रिय अगोचर, चेतन रूप जु है निर्बाना।
बन्ध न मोक्ष न राग न रोष न, भूत न कोष न वेद बखाना।
टेऊँ कहे गुरु सन्तनि के संग, सो हम आत्म देव पछाना ।।२।।
ध्यान किये नहिं ध्यान में आवत, सो गुरु आत्म ध्यान सु दीना।
जो सुख पा सुख और न चाहत, तां सुख में गुरु लीन सु कीना।
देखन योग्य दिखाय दिया गुरु, आत्म दर्शन में मन भीना।
टेऊँ कहे करहूँ तिहं वन्दन, दे जिहं ज्ञान सु बन्धन छीना ।।३।।

&& › gV²Zm_ gmjr &&

lr A_amnwa dmUr

।। राग भैरव भजन ।। १।।

गुरु दयाल प्रतिपाल प्रभु पार तारो।
प्रभु पार तारो हरी दास मैं तुम्हारो ।। टेक।।
तूं अडोल तूं अबोल तूं अमोल सारो।
तूं अकाल सर्वकाल कठिन काल टारो ।।१।।
सर्व सार तूं सतार अगम तूं अपारो।
निरहंकार निर्विकार नाम दे उबारो ।।२।।
जीव पिण्ड ब्रह्मण्ड सर्व तव पसारो।
परम चण्ड हे अखण्ड नाथ मोहि सुधारो ।।३।।
विश्वपाल तुम गोपाल मैं हूं बाल थारो।
कहे टेऊँ ताप तीन पाप सब निवारो ।।४।।

।। राग भैरव भजन ।। २ ।।

भक्ति ज्ञान दान देहि दीन के दयाल जी।
दीन के दयाल मोहि जान अबुद्ध बाल जी ।। टेक।।
वाम धाम सुत न मंगूं नहीं रतन लाल जी।
अखण्ड अभय दान मंगूं हरो कठिन काल जी ।।१।।
ऋद्धि न मंगूं सिद्धि न मंगूं नहीं मंगूं माल जी।
साध संगति सेव मंगूं तोड़ जगत जाल जी ।।२।।
राज ताज नाहिं मंगूं विषय सुख विशाल जी।
धर्म दया धीर मंगूं करो उर उजाल जी ।।३।।
स्वर्ग सूख नाहिं मंगूं मंगूं पद अकाल जी।
कहत टेऊँ नज़र धरे नाथ कर निहाल जी ।।४।।

।। राग भैरव भजन ।। ३ ।।

हे दयाल लाल एह देहि मोहि दाना।
सर्व दोष दूर करे देहि गुन विज्ञाना ।।टेक।।
सन्त संग राम रंग प्रेम दे प्रधाना।
झूठ कपट तर्क दृष्टि भ्रम भय मिटाना ।।१।।
भाव भक्ति शान्ति सुमति देहि चरण ध्याना।
हर्ष शोक जन्म मरण हरो हरि सुजाना ।।२।।
श्रवण मनन दमन शमन देहि ब्रह्म ज्ञाना।
काम क्रोध लोभ मोह हरो तम अज्ञाना ।।३।।
कहे टेऊँ काल जाल काटले भगवाना।
जोग जुगति मोक्ष मुक्ति देहि कर कल्याना ।।४।।

।। राग भैरव भजन ।। ४ ।।

प्रभू मेरा माफ करो सर्व दोष पाप जी।
दया सिन्धु दूख हरो सुन मेरे विरलाप जी ।। टेक।।
पुण्य गनिका कौन किया, ताहिं निज धाम दिया।
गौतम नारि तार लई हरे ताहिं शाप जी ।।१।।
धने सधने विपत्ति हरी, जगत में तुम विजय करी।
विप्र सुधामे का सर्व काटिया सन्ताप जी ।।२।।
वाल्मीक श्वपच चोर, कियो सकल ऋषिनि मोर।
अजामेल मुक्ति कीया सुनके ताहिं जाप जी ।।३।।
कहे टेऊँ मेरी बेर, कैसे तुम करी देर।
अब तो मुझ दरस देहि पार करो आप जी ।।४।।

।। राग भैरव भजन ।। ५ ।।

सत्गुरु दान दे, स्वामी दान दे ।। टेक ।।

नाम दान दे सत्गुरु साईं और नहीं मुझ आसा।
नाम तुम्हारा तेग धार ज्यों काटे जम की फासा ।।१।।
मैत्री करुणा मुदिता आदिक शान्ति शक्ति पुनि दीजे।
सत्संग शुभमति ज्ञान ध्यान अरु प्रेम भगति मन भीजे ।।२।।
कहता टेऊँ मांगत हूँ यह सत्य धर्म चित्त लागे।
राम नाम में लगन लगे नित भेद भ्रम भय भागे ।।३।।

।। राग भैरव भजन ।। ६ ।।

सत्नाम साक्षी बोल, सत्नाम साक्षी बोल ।। टेक।।

सत् सत्य है नाम जिसी का वेद पुराण यों गावे।
साक्षी सबका साक्षी होके सबहीं बात जनावे ।।१।।
साक्षी ब्रह्म स्वरूप एक है इसमें भेद न कोई।
भेद लखे सो मूर्ख जानो तांकी मुक्ति न होई ।।२।।
सत्नाम साक्षी जो जन सुमरे सर्वानन्द सो पावे।
प्रेम प्रीति से जो आराधे सहज मुक्ति हो जावे ।।३।।
कहता टेऊँ हरि कृपा से यह मन्तर मैं पाया।
जीवों के निस्तारन कारन घर घर में फैलाया ।।४।।

।। राग भैरव भजन ।। ७ ।।

क्यों करते हो मेरा मेरा, जग में कोई नहीं है तेरा ।। टेक।।
सब झूठे जगत के हैं नाते, क्यों तां पर तुम इतराते।
जानो पंछी ज्यों वृक्ष बसेरा ।।१।।
जांको अपना कहत हो प्यारे, अन्त छोड़ जायेंगे सारे।
जब काल ने आयके घेरा ।।२।।
मैं मेरा जिसीने है कीना, जम फास तिसे गल दीना।
यह सन्त जनों ने टेरा ।।३।।
कहे टेऊँ अभी भी संभालो, मैं मेरे को मन से निकालो।
मिटे जनम मरण का फेरा ।।४।।

।। राग भैरव भजन ।। ८ ।।

सब का प्रभू है पालन हारा,
क्यों करते हो चिन्ता प्यारा ।। टेक।।
मात गर्भ करी प्रतिपाला, बाहर स्तन में दूध डाला।
जल थल में भी देत अहारा ।।१।।
अनल पंछी अकाश में फिरता,अजगर कार नहीं कोई करता।
नित तांको भी दे दातारा ।।२।।
देता जिसका अहार है जेता, कीट को पाहन में भी वो देता।
किसको भूख न अब तक मारा ।।३।।
स्वास दिया तो देगा गिरासा, कहे टेऊँ न हो तूं निरासा।
हो निश्चिन्त जप कर्तारा ।।४।।

।। राग भैरव भजन ।। ९ ।।

रे नर जागो, गुरु पद लागो, पकड़ो चोर विकार ।। टेक।।
यह जगत मुसाफिरखाना, तुम दो दिन का महिमाना।
है आखिर तुझको जाना, करिये वेग संभार ।।१।।
जप राम नाम दिन राती, पावो उर अन्तर झाती।
तुम देखो अपनी जाती, गुरु का शब्द उचार ।।२।।
कर साध संगति निर्धारा, पावो शम दम वीचारा।
तुम धारे धर्म अचारा, देखो हरि दीदार ।।३।।
तुम पांच पांच को हरले, उर चार चार को धरले।
कहे टेऊँ हरी सुमरले, जांसे होय उधार ।।४।।

।। राग भैरव भजन ।। १० ।।

सत्‌गुरु स्वामी, अन्तर्यामी, देवो चरणनि ध्यान ।। टेक।।
मैं पापी हूँ अति भारा, पावन तुमहो गुरु प्यारा।
सब पाप करो परिहारा, देके दर्शन दान ।।१।।
यह भवसागर है भारी, तामें डूबत हरवारी।
अब काढो गुरु उपकारी, मुझ पर कर अहसान ।।२।।
तुम स्थिर हो अविनाशी, मैं तो भटकत चौरासी।
गुरु काटो यम की फासी, देके आतम ज्ञान ।।३।।
कहे टेऊँ मैं हूं चेरा, सत्‌गुरु स्वामी तूं मेरा।
मुझको आसरा है तेरा, कृपा कर भगवान ।।४।।

।। राग भैरव भजन ।। ११ ।।

सोई सन्त सुजाना रे, जिन पाया पद निर्बाना रे ।। टेक।।
पांचों पकड़ किया जिन चूरा, सुनिया उर में अनहद तूरा।
देखा अलख निरंजन नूरा, धरके अन्तर ध्याना रे ।।१।।
सत्य असत्य का किया निबेरा, काट्या जिन चौरासी फेरा।
अमरापुर में कीया डेरा, जो निर्भय स्थाना रे ।।२।।
तीन लोक से रहत न्यारा, जीवन मुक्ती परम उदारा।
ज्ञान सूर्य का कर उजियारा, भेद भ्रम जिन भाना रे ।।३।।
अमृत प्याला जिन भर पीया,कालबली को वश कर लीया।
कहे टेऊँ पा आतम पीया, आनन्द माहिं समाना रे ।।४।।

।। राग भैरव भजन ।। १२ ।।

गुरूजी मुझको दर्शन देवो जी ।। टेक ।।
तुम हो सद्‌गुरु सागर के सम मैं हूँ सदृश मीना।
एक पलक भी तुम बिन मेरा जग में होत न जीना ।।१।।
तुम हो सद्‌गरु बादल के सम मेरा मन है मोरा।
तुझको मैं नित ऐसे चाहत जैसे चान्द चकोरा ।।२।।
तुम हो सद्‌गुरु बून्द स्वांती चात्रक सा मन मेरा।
भंवरे को ज्यों फूल भावता त्यों मुझ दर्शन तेरा ।।३।।
कहता टेऊँ तुझ बिन सद्‌गुरु कबहूं धीर न आवे।
रैन दिवस तेरे दर्शन की मुझको प्यास सतावे ।।४।।

।। राग रामकली भजन ।। १ ।। १३।।

प्रत्यक्ष है परमेश्वर पोषक प्रभू पारग्रामी जी ।।टेक।।
सम्पति सागर सर्व स्वरूपा सर्व समाना स्वामी जी।
सर्व स्नेही समर्थ साहिब साक्षी सब सुख धामी जी ।।१।।
नाम निरंजन नर नारायण निरहंकार निष्कामी जी।
नटवर नागर नाथ निसंगा निरालम्ब निरआमी जी ।।२।।
अचल अच्छेदा अटल अभेदा आत्म अन्तर्यामी जी।
अमर अनादी अजर अजाती अगम अगाध अनामी जी।।३।।
पारब्रह्म परमात्म पावन प्रेरक पूर्णकामी जी।
कहे टेऊँ स्मरण पूजन कर करहूं ताहिं नमामी जी ।।४।।

।। राग रामकली भजन ।। २ ।। १४।।

जगतपती पूरण परमेश्वर दे यह मुझको दाना जी ।।टेक।।
कथा श्रवण कर सन्तों के संग करूँ प्रेम रस पाना जी।
मंजुल रूप मनोहर स्वामी आप करो उर थाना जी ।।१।।
शील शौच शुचि संयम सेवा करूँ प्रात स्नाना जी।
सम दम श्रद्धा धीरज धारे करूँ हरी गुन गाना जी।।२।।
उपशम ज्ञान विवेक विज्ञाना देके भ्रम भुलाना जी।
मुक्ती जुगती आत्म शक्ती भक्ती दे प्रधाना जी।।३।।
कहे टेऊँ कर जोड़ पुकारे मेटो गर्व गुमाना जी।
अहं ब्रह्म की निष्ठा देके देवो पद निर्बाना जी।।४।।

।। राग रामकली भजन ।। ३ ।। १५।।

सोवत जागत नाम जपीजे, गुरु चरने चित्त दीजे रे ।। टेक।।
पहला साधन कर गुरु मूरत का अन्त:करण मलीजे रे।
विषयां त्याग होय वैरागी पावन पाठ पढ़ीजे रे ।।१।।
दूजा साधन कर गुरु के वचने ज्ञान गगन में कीजे रे।
सत् असत् का कर वीचारा सार उसी से लीजे रे ।।२।।
तीजा साधन कर गुरु दीपक का तामें ध्यान धरीजे रे।
शम दम श्रद्धा समाधान से इन्द्रियां दमन करीजे रे ।।३।।
चौथा साधन कर गुरु कुदरत का किसको नाहिं कहीजे रे।
ब्रह्म प्रापति बन्ध हानि कर ऐसा मोक्ष गहीजे रे ।।४।।
कहता टेऊँ तीन लोक में निर्भय होय रहीजे रे।
अकड़ कला में अमृत बरसे अमर प्याला पीजे रे ।।५।।

।। राग रामकली भजन ।। ४ ।। १६।।

अमृत वेले ऊठ जिज्ञासू, फेर श्वास की माला रे।। टेक।।
सद्गुरु के मूरत का मन में धरिये ध्यान विशाला रे।
गुरु मन्त्र में सुरति समाओ जग से होय निराला रे।।१।।
नाभ कमल से प्राण उठाये दसम द्वार कर आला रे।
नाद अनाहत बाजत ताहीं सुनिये शब्द रसाला रे।।२।।
नाड़ि कुण्डलिनी को जागाए खोलो अनुभव ताला रे।
कोटि रवी शशि आदि ज्योति का तहं प्रचण्ड उजियाला रे।।३।।
पाप ताप नहिं हर्ष शोक पुनि जहाँ न काल कराला रे।
कहे टेऊँ तहँ चलकर देखो आत्म पुरुष अकाला रे।।४।।

॥ राग रामकली भजन ॥ ५॥ १७॥

सद्‌गुरु के संग गुरुमुख जागी,हरदम हरि गुन गाओ रे ॥ टेक॥
सद्‌गुरु की नित सेवा करके दिल को साफ बनाओ रे।
पूर्ण श्रद्धा से उर अन्तर गुरु के चरण ध्याओ रे ॥१॥
सत्संग सम संतोष विचारा इनसे प्रीति लगाओ रे।
चल कर मोक्ष मन्दिर के माहीं आत्म दर्शन पाओ रे ॥२॥
बैठ अकेला आसन मारे सुरती शब्द मिलाओ रे।
अनन्य अभ्यास करे निशवासर अनुभव ज्योति जगाओ रे॥३॥
कहता टेऊँ गुरु प्रसादे सुन्न में सहज समाओ रे।
मन के फुरने सर्व मिटाये अपने घर में आओ रे ॥४॥

॥ राग रामकली भजन ॥ ६ ॥ १८॥

राम भजन की वेला है यह चेत सवेरे प्रानी रे।
ऊठो गाफिल गफ्लत छोड़ो मोह नीन्द क्यों ठानी रे ॥ टेक॥
पुण्य कर्म से नर तन पाया फिर फिर चारों खानी रे।
हरि स्मरन बिन वृथा खोई ऐसी यह जिन्दगानी रे ॥१॥
जिस माया से मोह बढ़ाके भए अती अभिमानी रे।
वह माया बादल छाया सम इक दिन होगी फानी रे ॥२॥
बालापन खेलन में खोया जोरू संग जवानी रे।
बूढ़ापन तृष्णा चिन्ता में खोया मूण्ढ अज्ञानी रे ॥३॥
कहे टेऊँ अब भोग राग तज हरि सुमरो सुखदानी रे।
जन्म मरण का दूख मिटाके पाओ पद निर्बानी रे ॥४॥

।। राग रामकली भजन ।। ७ ।। १९।।

जोई राम मिलावे मुझको इस अवसर में भाई रे।
तांके ऊपर सर्वस्व वारे पूजूं मैं चित्त लाई रे ।।टेक।।
तांके चरनों की श्रद्धा से सेवा करूँ सदाई रे।
झीड़ पाऊँ सेज बिछाऊँ करहूँ चँवर झुलाई रे ।।१।।
तांकी आज्ञा माहिं चलूँ मैं मेटूं नाहिं रजाई रे।
तन मन धन की भेटा देवौं भूलूं नाहिं भलाई रे।।२।।
राम दरश हित मग देखत हूं रैन दिवस बिललाई रे।
कहे टेऊँ जो दरश करावे तां पर मैं बलि जाई रे।।३।।

।। राग रामकली भजन ।। ८।। २०।।

आज हृदय में आनन्द होया हरि मेरे घर आया जी।। टेक।।
चारों तरफ करे चिटसाली हीरा लाल जड़ाया जी।
अगर चन्दन पुनि कुंगू केसर अतर अंबीर लगाया जी ।।१।।
नरसिंह नौबत मृदंग भेरी बाजा बिगल बजाया जी।
सात सखी से मिलकर मैंने मंगलाचार मनाया जी ।।२।।
आज दिवस कृतार्थ होया सफल भई यह काया जी।
मन मन्दिर में जय जय होयी दूख दर्द सब जाया जी ।।३।।
कहे टेऊँ दर्शन परसन से संसा शोक मिटाया जी।
रैन दिवस मैं रिल मिल तांसे परमानन्द को पाया जी ।।४।।

।। राग रामकली भजन ।। ९ ।। २१।।

हरदम हृदय में हरि ध्याओ झूठा सकल जहाना रे ।। टेक।।
स्वार्थ के ये साथी सारे अन्त काम नहिं आना रे।
मग पन्थी सम जान कुटुम्ब यह वृथा नेह लगाना रे ।।१।।
तेरे देखत केते चल गये रहा न को सुलिताना रे।
इक दिन तुझको भी है जाना किसका यह न ठिकाना रे।।२।।
साथ नहीं कुछ ले आया तुम नहीं साथ ले जाना रे।
मेरा मेरा कहके मूर्ख काहिं करत अभिमाना रे ।।३।।
कहे टेऊँ जा सन्त शरन में चाहत जे कल्याना रे।
साध सँगति बिन कोय न तरिया भाखत वेद पुराना रे ।।४।।

।। राग रामकली भजन ।। १० ।। २२।।

सन्तों के सत्संग में जाकर गोबिन्द के गुन गाओ रे ।। टेक।।
साध संगति की सेवा करके हरि से हेत लगाओ रे।
राम नाम को पल पल सुमरे सकले पाप मिटाओ रे ।।१।।
और भवन सब दुखमय त्यागे अपने घर में आओ रे।
पांच कोष का खोल किवाड़ा आत्म दर्शन पाओ रे ।।२।।
जीव ईश की कटे उपाधी वृती ब्रह्म समाओ रे।
कहता टेऊँ बन्धन तोड़े निर्भय नगर बसाओ रे।।३।।

।। राग रामकली भजन ।। ११ ।। २३।।

सद्गुरु कृपा करके मुझको साची सीख सुनाई रे ।। टेक।।
श्वास श्वास से सुमरन कर मैं आठ पहर लिव लाई रे।
आशा तृष्णा ममता त्यागे मन की मैल मिटाई रे ।।१।।
गुरु मन्त्र से प्रीति लगाए और बात बिसराई रे।
आतम पद में स्थित होकर सहज समाधि लगाई रे ।।२।।
जाग्रत स्वप्न सुषोपति छोड़े तुरिया ताड़ी लाई रे।
निर्भय घर में वासा करके यम की चिन्त चुकाई रे ।।३।।
कहता टेऊँ हृदय भीतर अनुभव ज्योति जगाई रे।
अन्तर बाहर भया उजियाला अविद्या रही न राई रे ।।४।।

।। राग रामकली भजन ।। १२ ।। २४।।

प्रातकाल में जागी प्यारे स्मरो हरि का नामा रे ।। टेक ।।
निद्रा नागिनि आलस शत्रू तांसे हो उपरामा रे।
उठकर राम भजन में लागो तज कर झूठा कामा रे।।१।।
मात गर्भ में वचन किया तुम सुमरूँगा श्री रामा रे।
बाहर आकर भोगों में क्यों भूल गया अंजामा रे।।२।।
मात तात सुत त्रिया के सँग सदा रहत उलझामा रे।
को न छुड़ावै अन्त समय जब काल उतारे चामा रे।।३।।
राम भजन हित तोहि मिला है मनुष जन्म अभिरामा रे।
कहे टेऊँ हरि भजन करे तुम पाओ मुक्ती धामा रे।।४।।

।। राग रामकली भजन ।। १३ ।। २५।।

एक नगर मैं अद्भुत देखा जांकी चाल निराली रे ।। टेक।।
नीर बिना इक सागर देखा जांकी लहर कराली रे।
मच्छ कच्छ मांगर मछली तांमें सरिता जात उछाली रे।।१।।
पुरुष नपुंसक बांझ नारि को जन्मिया पूत सुचाली रे।
रूप न रङ्ग न अङ्ग उसीका सकल सृष्टि विस्ताली रे ।।२।।
बाँझ नपुंसक से सुत उपज्या शोभा जाहिं विशाली रे।
जन्मत मात पिता को मारे सारी सृष्टी घाली रे ।।३।।
बादल बिन तां वर्षा बरसे बिन रवि शशि उजियाली रे।
कहे टेऊँ जो यह पद बूझे सो जन होय सुखाली रे ।।४।।

।। राग रामकली भजन ।। १४ ।। २६।।

रे मन ज्ञान चक्षू से देखो साक्षी सर्व निवासी है ।। टेक।।
अस्ति भाति अरु प्रिय रूप से आतम सब घट वासी है।
नाम रूप जग जीव ईश की कलना सबहीं नाशी है ।।१।।
दूध घृत ज्यों सबके अन्तर व्यापक सो अविनाशी है।
पूरन एक विभू वस्तू वह वेदान्तिनि को भासी है ।।२।।
ब्रह्म अखण्ड अद्वैत अनामय सत् चित् आनन्द राशी है।
कहे टेऊँ सो प्रत्यक्ष जानो साक्षी स्वयं प्रकाशी है ।।३।।

।। राग रामकली भजन ।। १५ ।। २७।।

यह शिक्षा उर धरना रे मन, यह शिक्षा उर धरना रे ।। टेक।।
धीरज धर्म दया को धारे सत्कर्मों को करना रे।
सत्पुरुषों का सत्संग करके आज्ञा माहिं विचरना रे ।।१।।
काम क्रोध मद लोभ मोह पुनि पांच विषय को हरना रे।
कूड़ कपट छल चोरी यारी डाकापन से डरना रे ।।२।।
देह गेह की ममता त्यागे शरन राम की पड़ना रे।
हरी नाम का सुमरन करके भव सागर से तरना रे ।।३।।
सद्गुर से निज ज्ञान पायके ब्रह्मानन्द मन भरना रे।
कहे टेऊँ उस आनन्द माहीं मन बुद्धि अर्पन करना रे ।।४।।

।। राग रामकली भजन ।। १६ ।। २८।।

वृथा जन्म गंवाया क्यों तुम, वृथा जन्म गंवाया रे ।। टेक।।
सेवा सुमरण यज्ञ दान से मानुष तन यह पाया रे।
साध संगति नहिं कबहूँ कीनी दुर्जन का संग भाया रे ।।१।।
पाप कर्म बहु छल वल करके धन को बहुत कमाया रे।
दीन जनों को दान न दीना नहिं खरचा नहिं खाया रे ।।२।।
गंगा आदी तीर्थों में जा फिर फिर जन्म बिताया रे।
आत्म तीर्थ को नहिं परस्या ज्ञान गंग नहिं नाया रे ।।३।।
भाव भक्ति निष्काम कर्म तज काम्य कर्म कमाया रे।
कहता टेऊँ भोग विषय में श्वास अमोल लुटाया रे ।।४।।

।। राग रामकली भजन ।। १७ ।। २९।।

किस का कर न गुमाना रे मन किसका कर न गुमाना रे ।। टेक।।
अंतकाल में इस तन को जब छोड़ चलेगा प्राना रे।
तब ही यह तन चिक्षा ऊपर जल जावत शमशाना रे ।।१।।
धन दौलत भी थिर न रहत है नहिं थिर महल मकाना रे।
मात पिता सुत दारा को तज तोहि अकेला जाना रे ।।२।।
जगत मुसाफिरखाने में तुम दो दिन का महिमाना रे।
आखिर इसको छोड़ चलेंगे तेरा यह न ठिकाना रे ।।३।।
रावण कौरव हरनाकस का रहा न नाम निशाना रे।
कहे टेऊँ तुम तांते हरि जप जांते हो कल्याना रे ।।४।।

।। राग रामकली भजन ।। १८ ।। ३०।।

साचा सो संन्यासी जानो साचा सो संन्यासी रे ।। टेक।।
नाम रूप मय सर्व जगत को, निश्चय जानत नासी रे।
देह गेह धन दारा सुत से, जो नित रहत उदासी रे ।।१।।
काम क्रोध मद लोभ मोह की, काट दई जिहं फासी रे।
आशा तृष्णा विषय वासना, जांकी सर्व विनासी रे ।।२।।
अहंता ममता चिन्ता त्यागे, बना जो ईश उपासी रे।
कहता टेऊँ ब्रह्मात्म लख, पावत सुख अविनासी रे ।।३।।

।। राग रामकली भजन ।। १९ ।। ३१।।

साहब तेरे दर पर मेरी, हरदम तोबहज़ारी है ।।टेक।।
साध संगति में सुनिया जब मैं, प्रभू न्यायकारी है।
तब से मेरे हृदय भीतर, भय उपजी अति भारी है ।।१।।
काम क्रोध मद मोह ममत में, मैंने उम्र गुज़ारी है।
ना जानूं क्या होगा मुझ पर, यह चिन्ता हरवारी है ।।२।।
दावन पालक पाप हरन तुम, महिमा वेद उचारी है।
ऐसा सुनकर शीघ्र मैंने, तेरी ओट निहारी है ।।३।।
पहले के अघ क्षमा कीजे, तुम हरि परम उदारी है।
कहे टेऊँ अब सुमती दीजे, येही विनय हमारी है ।।४।।

।। राग रामकली भजन ।। २० ।। ३२।।

श्रवण देके सुनले साधो, अद्भुत ये इसरारा जी ।।टेक।।
इक चींटी ससुराल चली ले, संग में सखी अपारा जी।
फूंक मार उस रस्ते के सब, दिया उड़ाय पहाड़ा जी ।।१।।
उस चींटी ने नव मन अंजन, पाया नैन मंझारा जी।
ऊँची मंजिल चढ़ कर देखा, नज़र पड़े न अकारा जी ।।२।।
उस चींटी ने कोटी कुंचर, बान्धा निज चरनारा जी।
उन हाथियों को फैंक दिया ले, सागर के उस पारा जी ।।३।।
कहे टेऊँ उस चींटी संग मैं, पाया आनन्द भारा जी।
इस चींटी को सो जन पावे, जो है गुरु का प्यारा जी।।४।।

।। राग प्रभाती भजन ।। १ ।। ३३।।

पारब्रह्म है अगम अगोचर, साक्षी स्वयं प्रकाशी ।। टेक।।
नाना विधि जग माहिं रचाई, अद्भुत जोनि चुरासी।
तामें रहता आप व्यापक, अलख पुरुष अविनाशी ।।१।।
ब्रह्मा विष्णू शंकर गणपति, यती सती संन्यासी।
गाय गाय तिहँ पार न पावत, सर्व मौन रह जासी ।।२।।
कहे टेऊँ सो मंगल दाता, दुःख भञ्जन सुख रासी।
जो तिस ध्यावै मुक्ती पावै, टूटे तां यम फासी ।।३।।

।। राग प्रभाती भजन ।। २ ।। ३४।।

रे मन हरि का सुमरण करले, श्रद्धा मन में धारे।। टेक।।
हरि सुमरन बिन औरे साधन, जन्म मरन नहिं टारे।
हरि सुमरन ही तत्क्षण तुझको, भव सागर से तारे ।।१।।
हरि सुमरन की महिमा भारी, वेद पुरान उचारे।
हरि का सुमरन निशवासर कर, जे सुख चाहो प्यारे ।।२।।
हरि सुमरण से हेत करो तुम, फुरना सर्व निवारे।
हरि सुमरण का अमृत पीकर, पावो मोक्ष द्वारे ।।३।।
हरि सुमरन की वेला है यह, कहते सन्त पुकारे।
कहे टेऊँ हरि सुमरो तांते, मानुष देह मंझारे ।।४।।

।। राग प्रभाती भजन ।। ३ ।। ३५।।

प्रात समय में जागी प्राणी,बोलो मुख से हरि का नाम।। टेक।।
प्रातकाल उठ देव लोक में, सुर गण ध्यान लगाते हैं।
आपस में मिल हरि जस गावें, पीवत भर कर अमृत जाम।।१।।
प्रात समय उठ सन्त सर्व ही, आतम देव ध्याते हैं।
मन चित लीन करे तिस माहीं,देखत सब घट आतम राम।।२।।
कहता टेऊँ प्रातकाल में, जागत को बड़भागी है।
जो जन जागे अमृत चाखे, पूर्ण हो सब तांके काम।।३।।

।। राग प्रभाती भजन ।। ४ ।। ३६।।

अमृत वेले गुरुमुख जागी, गुरु का शब्द कमाओ रे।। टेक।।
पहला पद पूरक से मेले, दूजा मेलो रेचक से।
कुम्भक से फिर हृदय अन्तर, सारा शब्द चलाओ रे।।१।।
पहला पद तुम ब्रह्म पछानो, दूजा मानो आतम को।
उलट सुलट कर सुमरन तांका, पाँचों भेद मिटाओ रे।।२।।
शब्द गुरू का सीप समाना, दो पद दो पुड़ जान तिसे।
अभेद रूपी मोती तामें, अपनी वृत्ति लगाओ रे।।३।।
कहता टेऊँ पूरण गुरु से, सुमरण की विधि ले करके।
अजपा जाप जपे निशवासर, निर्भय नगर बसाओ रे।।४।।

।। राग प्रभाती भजन ।। ५ ।। ३७।।

अमृत वेले अमृत बरसे, पीवो भरकर प्याला रे ।। टेक।।
योगी पूर्ण योग कला से, दसमें ध्यान लगाते हैं।
योगानन्दमय अमृत पीवत, होय मगन मतवाला रे ।।१।।
ज्ञानी पूर्ण ज्ञान कला से, आत्म ध्यान लगाते हैं।
ब्रह्मानन्दमय अमृत पीवत, मार भ्रम को भाला रे ।।२।।
प्रेमी पूर्ण प्रेम कला से, गोविन्द के गुण गाते हैं।
राम नाममय अमृत पीवत, मन को करे उजाला रे ।।३।।
प्रातकाल उठ जैसे ये सब, अमृत रस को पीते हैं।
कहे टेऊँ त्यों तुम भी पीवो, जग से होय निराला रे ।।४।।

।। राग प्रभाती भजन ।। ६ ।। ३८।।

श्वास श्वास में गुरुमुख हरदम,गुरु का शब्द कमाओ रे।। टेक।।
लाल अमुल है उर कोठी में, लगा भ्रम का ताला है।
शब्द कुंजी से खोले तांको, देखो और दिखाओ रे ।।१।।
देह धरणि में है इक कूंआ, आनन्द अमृत तामें है।
शब्द रस्सी से मन घट भरकर,पीवो और पिलाओ रे ।।२।।
बदन बगीचा इन्द्रिय तरुवर, ज्ञान ध्यान फल फूला है।
शब्द लकुट से तांको लेकर,खाओ और खिलाओ रे ।।३।।
जिन जिन गुरु का शब्द सुमरिया, सरिया तिन का काजा है।
कहे टेऊँ तुम गुरु कृपा से, गुरु के शब्द समाओ रे ।।४।।

।। राग प्रभाती भजन ।। ७ ।। ३९।।

अमृत वेले ऊठ जिज्ञासू, आतम का नित ध्यान धरो।। टेक।।
गंगा यमुना काशी आदिक, जग में तीर्थ जेते हैं।
आतम सम ना तीर्थ कोई, तामें नित स्नान करो।।१।।
इन्द्रलोक रवि चन्द्रलोक लौं, लोक ब्रह्मादी जेते हैं।
आतम जैसा लोक न कोई, तामें नित स्थान करो।। २।।
शब्द रूप रस स्पर्श आदी, विषयों के रस जेते हैं।
आतम के सम रस ना कोई, तांका नित ही पान करो।। ३।।
कहे टेऊँ ब्रह्मा शिव विष्णू, आदि देवता जेते हैं।
आतम जैसा देव न कोई, तांका नित गुन गान करो।।४।।

।। राग प्रभाती भजन ।। ८ ।। ४०।।

आदि शब्द में श्रुति लगाके, सुमरण कर हरवार मना।। टेक।।
आदि शब्द है सब का आदी, तामें लाओ सहज समाधी।
जीव ईश की छोड़ उपाधी, चेतन लख इकसार मना ।।१।।
आदि शब्द की हस्ती धारे, जीव चराचर वर्तत सारे।
फूल रहे सब ताहिं सहारे, तां बिन जगत असार मना ।।२।।
आदि शब्द का होत उचारा, सब जीवों के घटहिं मंझारा।
समझे तांको कोई प्यारा, जांको सत् वीचार मना ।।३।।
कहे टेऊँ जो गुरु गम जाने, आदि शब्द को सो पहिचाने।
तुम भी गुरु गम मन में आने, सुमरो तिहं सद्वार मना ।।४।।

।। राग प्रभाती भजन ।। ९ ।। ४१।।

रे मन मिल तू अलख पुरुष से,मिलने का यह वेला रे।। टेक।।
जग के सारे बन्धन तोड़े, विषय वासना से मन मोड़े।
जोग जुगति में मन को जोड़े, करले जन्म सुहेला रे ।।१।।
सदाचार में रहकर निशदिन, बान्धो आसन पदम सिद्धासन।
अन्तर्मुख हो हृदय में सुन, नाद अनाहत हेला रे ।।२।।
इड़ा पिङ्गला उलट सुलट कर,सुषुम्न अन्तर श्रुति शब्द धर।
ध्यान लगाये त्रिकुटी भीतर, देखो अद्‌भुत खेला रे ।।३।।
कहे टेऊँ गुरु शब्द सहारे, वृत्ति चढ़ाओ दसम द्वारे।
निज निर्बीज समाधी धारे, करो ब्रह्म से मेला रे ।।४।।

।। राग प्रभाती भजन ।। १० ।। ४२।।

अजब अजायब कुदरत हमको, सद्‌गुरु देव लखाई।
इस कुदरत को जो जन जाने, सो मेरा गुरु भाई ।। टेक।।
स्वास मास बिन पंछी पिंजरे, देखत रहत उदासी।
फूटे पिंजर नहिं कहँ जावे, अचल रहे अविनासी ।।१।।
एक वृक्ष पर सम दो पंछी, नाम काम भिन्न जांके।
ऊठत समय एक हो जाते, भेद मिटत सब तांके ।।२।।
ऊपर मूल डार है नीचे, तरुवर एक अनूपा।
तामें नित इक पंछी खेलत, धरके तीन स्वरूपा ।।३।।
एक बाग में चार वृक्ष हैं, तां पर पंछी एका।
वृक्ष वृक्ष पर भिन्न-भिन्न वपु धर, करते केल अनेका ।।४।।
कहे टेऊँ बिन पर इक पंछी, आत जात नभ माहीं।
पांच नाम धर पांच काम कर, देखत नैन न ताहीं ।।५।।

।। राग प्रभाती भजन ।। ११ ।। ४३।।

ब्रह्मज्ञान बिन कबहूं मन का, संसा भ्रम न जावत है।। टेक।।
चार वेद पुनि पुराण अठारह, आगम सर्व अध्ययन करे।
भावें बहुविधि कथा सुनावे, तो मन ठौर न पावत है।।१।।
केस बढ़ाय भभूति लगावे, बहुते तन पर भेख धरे।
भावें दर दर अलख जगावे, तो मन शान्ति न आवत है ।।२।।
व्रत नेम कर मन्दिर पूजे, सन्ध्या सुमरण पाठ करे।
भावें तीर्थ दान करे बहु, तो मन सुख ना रावत है।।३।।
घर को तजकर बन में जाकर, भावें तपस्या कठिन करे।
कहे टेऊँ बिन ब्रह्म ज्ञान के, सत्पद मन न समावत है।।४।।

।। राग प्रभाती भजन ।। १२ ।। ४४।।

परमेश्वर का सुमरण करले, श्रद्धा से हरवार मना ।। टेक।।
मानुष तन में जो तुम अपना, चाहत हो निस्तार मना।
तो हरि सुमरण में इक पल भी,अन्तर कभी न डार मना ।।१।।
जो पल जावे हरि सुमरन बिन, सोई जान असार मना।
सो पल सफला जान जिसी में, याद रहे कर्तार मना ।।२।।
पल विसरे पल याद रहे हरि, यह ना सुमरन सार मना।
साचा सुमरण जानो सोई, टूटे ना कब तार मना ।।३।।
सद्गुरु से ले सुमरन युक्ती, स्वासों स्वास उचार मना।
कहता टेऊँ हरि को सुमरे, पाओ मोक्ष द्वार मना ।।४।।

।। राग प्रभाती भजन ।। १३ ।। ४५।।

शब्द गुरू का है सुखदाई, सकले दूख मिटावत है ।। टेक।।
अन्तकाल में आकर जबहीं, यम के दूत डरावत हैं।
शब्द गुरू का याद करन से, निकट नहीं वे आवत हैं ।।१।।
सागर अपने लहरों से जब, बेड़े को कम्पावत है।
शब्द गुरू का याद करन से, बेड़ा सो तर जावत है ।।२।।
घोर झंगल में मारन हित जब, दुश्मन घेरा लावत है।
शब्द गुरू का याद करन से, वैरी सब क्षय पावत है ।।३।।
तांते गुरु का शब्द न भूलो, सन्त सभी समझावत है।
कहता टेऊँ शब्द गुरू का, हरदम लाज बचावत है ।।४।।

।। राग प्रभाती भजन ।। १४ ।। ४६।।

जे तुम हरि से मिलना चाहो, चार शिक्षा ये धारो रे ।। टेक।।
प्रथमे भोजन स्वल्प सादा, सात्विक चिकना पावन हो।
नेम टेम से प्राण रक्षा हित, अपने मुख में डारो रे ।।१।।
दूजा अर्ध रात को उठके, नैन नीन्द से खोल ज़रा।
सावधान हो यत्न करे तुम, आलस गफ्लत टारो रे ।।२।।
तीजा बैठो जाय अकेला, जहाँ न कोई आय सके।
बन पर्वत की कन्दरा हो वा, होवै गङ्ग किनारो रे ।।३।।
चौथा पूर्ण श्रद्धा धारे, सत्गुरु से तुम मन्तर ले।
कहता टेऊँ अर्थ सहित सो, स्वासों स्वास उचारो रे ।।४।।

।। राग प्रभाती भजन ।। १५ ।। ४७।।

मानुष चोला ऊजल मिलिया, तांको दाग़ लगाना ना ।। टेक।।
काम दाग़ है क्रोध दाग़ है, लोभ मोह मद दाग़ बुरे।
इन दाग़ों से पावन तन को, ग़ाफिल गंदा बनाना ना ।।१।।
भेद दाग़ है भ्रम दाग़ है, कूड़ कपट छल दाग़ बुरे।
बड़ा दाग़ है अविद्या केरा, तां संग जीउ मिलाना ना ।।२।।
दुर्जन के संग दाग़ लगत है, तांकी संगति तुरत तजो।
सन्तों के संग दाग़ मिटत है, तांसे प्रेम हटाना ना ।।३।।
दाग़ी नर कब बने न ऊँचा, नीचे गिरता जाता है।
कहे टेऊँ मत दाग़ी हो तुम, यह मम वचन भुलाना ना ।।४।।

।। राग प्रभाती भजन ।। १६ ।। ४८।।

जागो जागो मेरे मनुवा, मोह नींद से जागो रे ।। टेक।।
जमिना नीका फेर जमो ना, मरना नीका फेर मरो ना।
फिर फिर जमिना फिर फिर मरना, पुनरुक्ती को त्यागो रे।।१।।
खाना नीका फिर ना खाना, पीना नीका फिर ना पीना।
फिर फिर खाना फिर फिर पीना, पुनरुक्ती नहिं लागो रे।।२।।
जागन नीका फिर ना जगना, सोना नीका फिर ना सोना।
फिर फिर जगना फिर फिर सोना, पुनरुक्ती से भागो रे ।।३।।
जागत को ना तस्कर लूटे, सोते को ही लूटत है।
कहे टेऊँ तुम निद्रा त्यागे, हरि चरने अनुरागो रे ।।४।।

।। राग प्रभाती भजन ।। १७ ।। ४९।।

हरि मन्दिर में हरी बिराजे, तांका तुम दीदार करो ।। टेक।।
परम मनोहर हरि मन्दिर यह, नितही तेरे साथ रहे।
दूर गमन की नाहिं ज़रूरत, इस पर ही इतिबार करो ।।१।।
अपने रहने कारण हरि ने, जोड़ा सुन्दर मन्दिर ये।
चौरासी में मन्दिर ऐसा, और न को वीचार करो ।।२।।
मानुष तन ही हरि मन्दिर है, महिमा जांकी वेद कहे।
चार पदार्थ का यह केन्द्र, तांका तुम निस्तार करो ।।३।।
कहे टेऊँ जे सुख को चाहो, हरि मन्दिर में हरि देखो।
हरि को स्मरो हरि को सेवो, हरि ही से नित प्यार करो ।।४।।

।। राग प्रभाती भजन ।। १८ ।। ५०।।

जिस कारण तुम आया जग में,कार्य सो अब करना रे ।। टेक।।
परमेश्वर ने नर तन दीना, मानव बनने के लीये।
मर्यादा से मानव बनिये, पशू भाव को हरना रे ।।१।।
दैवी सम्पति के गुण जैसे, वेद पुराणों माहिं लिखे।
क्षमा अहिंसा आदी लक्षण, अपने उर में धरना रे ।।२।।
मनुष देह के पाने से ही, मानव तुम ना हो सकते।
साधन सम्पन्न होकर मानव, सत्‌गुरु शरणी पड़ना रे ।।३।।
हरी जगत पुनि अपने लीये, उपयोगी तुम बन जाओ।
कहे टेऊँ मैं मेरा त्यागे, हरि लख भव से तरना रे ।।४।।

।। राग प्रभाती भजन ।। १९ ।। ५१।।

खोज रहे जिस पारब्रह्म को, सो तूं अपना आप सही।। टेक।।
काहे कारण खोजो हरि को, जल थल झंगल मन्दिरों में।
तेरे से भिन्न और न कोई, स्मर शिवोऽहम् जाप सही।।१।।
सूर्य जैसे रोशन को ही, अहनिशि खोजत गगन अन्दर।
भूल भ्रम में खोजत त्यों तुम, जग का माई बाप सही।।२।।
वामदेव शुकदेव सदाशिव, वसिष्ठ नारद व्यास मुनी।
इत्यादिक सब कहते तुम हैं, नारायण निष्पाप सही।।३।।
वेद शास्त्र पुनि पुराण कहें सब, तुम हो ब्रह्म स्वरूप सदा।
कहे टेऊँ यह निश्चय करिये, मिट जावे सन्ताप सही।।४।।

।। राग प्रभाती भजन ।। २० ।। ५२।।

गुरु कृपा से जो मुझ मिलिया,सो सब खोल सुनाता हूं।। टेक।।
बहुत जन्म से पीते आये, दूध मात की गोदी में।
ऐसी दया करी सत्गुरु ने, दूध नहीं वह पाता हूं ।।१।।
दासोऽहम् का मन्त्र निशदिन, श्रद्धा से मैं रटता था।
सत्गुरु ने दा को हर लीना, अब तो सोऽहम् गाता हूं ।।२।।
चौरासी लख योनियों अन्दर, फिर फिर चक्कर लगाता था।
कर्मों को ही काट दिया गुरु, अब तो कहां न जाता हूं ।।३।।
बहुत जन्म से झगड़ा मेरा, धर्मराज से चलता था।
कहे टेऊँ गुरु रगड़ मिटाई, हरि रंग में अब राता हूं ।।४।।

।। राग प्रभाती भजन ।। २१ ।। ५३।।

साध संगति में अमृत वर्षे, श्रद्धा से तुम पीजे रे ।।टेक।।
साध संगति में वचन सुधा की, साधू वर्षा करते हैं।
चल करके तहं उस अमृत को, पीकर युग युग जीजे रे ।।१।।
पांच भान्ति के अमृत कहिये, तामें चार तो नकली हैं।
पंचम अमृत जग में साचा, तिसका आनन्द लीजे रे ।।२।।
ब्रह्म ज्ञान का अमृत साचा, वेद मुनी बतलाते हैं।
उसी सुधा रस पीने से ही, जन्म मरण दुःख छीजे रे ।।३।।
जिन जिन ने यह अमृत पीया, सत्गुरु से ले पीया है।
कहे टेऊँ जे पीना चाहो, सत्गुरु शरण गहीजे रे ।।४।।

।। राग प्रभाती भजन ।। २२ ।। ५४।।

सोऽहम् सोऽहम् स्मरो साधो,सुरति लगाकर श्वासनि से।। टेक।।
ईड़ा पिंगला सुष्मन अन्दर, स्मरो गुरु का शब्द निरन्तर।
प्राण अपान की युक्ती लेकर,श्वास उठाओ नासनि से ।।१।।
सन्तों का यह गोप्य धन है, जिज्ञासुओं का यह जीवन है।
स्मरत तांको वे निशिदिन हैं, समझ पड़े इतिहासनि से ।।२।।
प्राण अपान की है यह भाषा, सब श्वासों में तांका वासा।
हृदय में सो करत प्रकाशा, समझे को अभ्यासिनि से ।।३।।
कहे टेऊँ जो सोऽहम् स्मरहिं, जन्म मरण दुख तांके निसरहिं।
निर्भय हो सो जग में विचरहिं,अमर लोक के वासिनि से।।४।।

।। राग प्रभाती भजन ।। २३ ।। ५५।।

अमृत वेले ऊंचे स्वर से, स्मरो ओम हरी हरी ।।टेक।।
ओम ईश का नाम उदारा, सिमरो तिसको बारंबारा।
भव सागर से उतरो पारा, सब दुःख जावहिं टरी टरी।।१।।
ओम ईश का नाम अनादी, बीज मन्त्र है आदि जुगादी।
योगी स्मरे लाय समाधी, मुनिजन स्मरे घड़ी घड़ी।।२।।
ओम सोऽहम् से प्रकट जानो, ओम ब्रह्म का वाचक मानो।
ओम मनोहर गीत पछानो, अमृत रस की झड़ी झड़ी।।३।।
कहे टेऊँ यह गुरु मन्त्र है, मन जीतन का तेज तन्त्र है।
हरि मिलने का यह यन्त्र है, देखो पुस्तक पढ़ी पढ़ी।।४।।

।। राग प्रभाती भजन ।। २४ ।। ५६।।

ब्रह्मलोक में ब्रह्म बिराजे, तामें होय प्रापति रे ।।टेक।।
ब्रह्मलोक यह मानुष तन है, जांकी उपमा वेद कहे।
लोक इसी में ब्रह्म मिलत है, बात कही मैं सत् सत् रे।।१।।
चौरासी लख योनियों अन्दर, ब्रह्म दर्श ना होय कहीं।
जैसे पुष्प हिमाचल शिल पर, होवे ना कब उत्पति रे।।२।।
अहं ब्रह्म में ब्रह्म अहं में, ओत प्रोत यह ज्ञान सही।
ऐसे पूर्ण ब्रह्म ज्ञान से, मन की मेटो कल्पित रे।।३।।
कहे टेऊँ जिहं मानुष तन में, ब्रह्मदर्श को पाय लिया।
धन धन जन्म उसी का जानो,धन धन उसकी मति गति रे।।४।।

।। राग प्रभाती भजन ।। २५ ।। ५७।।

आत्मकांक्षी आत्म के हित,आत्म का अभ्यास करो।। टेक।।
जो जन प्रेम लगाकर जिसका, निशिदिन स्मरण करता है।
सोई तांको अवसि मिलत है, ये मन में विश्वास करो।।१।।
देवनदी पुनि श्वासों का ज्यों, चलत अखण्ड प्रवाह सदा।
आत्म का त्यों स्मरण करके, संशय सबहीं नास करो।।२।।
आत्म श्रवण आत्म कीर्तन, आत्म का कर चिन्तन ही।
आत्म हूं मैं इसी भाव से, दूर देह अध्यास करो।।३।।
गुरु को तन मन दक्षिणा देके, आत्म की गम लीजे रे।
कहे टेऊँ तुम स्मरे तांको, आत्म माहिं निवास करो।।४।।

।। राग प्रभाती भजन ।। २६ ।। ५८।।

गोबिन्द के गुण गाते गाते, मन को आनन्द आता है ।। टेक।।
मछली को ज्यों आनन्द आता, सदैव गहरे पानी में।
भूखे को बहु आनन्द आता, ज्यों ज्यों भोजन खाता है ।।१।।
मूज़ी को ज्यों आनन्द आता, माया के बहु जोड़न से।
दानवीर को आनन्द आता, ज्यों ज्यों द्रव्य लुटाता है ।।२।।
कहे टेऊँ रुचि जांकी जांसे, आनन्द उनसे आता है।
भक्तों को त्यों आनन्द आता,ज्यों ज्यों हरिगुण गाता है।।३।।

।। राग प्रभाती भजन ।। २७ ।। ५९।।

बाहरमुखता को तुम त्यागे, अन्तर्मुख हो जाओ रे ।। टेक।।
अन्तर्मुख जो सदा सुखी सो, बाहरमुखिया रहत दुखी।
बाह्य वस्तु को बाहर त्यागे, अन्तर सुरति जमाओ रे ।।१।।
इन्द्रिय घाट पर बैठ युगों से, बाह्य विषय को भोग रहे।
भोगत भोगत तृप्ति भई ना, अब तो अन्तर आओ रे ।।२।।
बाहरमुखता नारी को ज्यों, कलंक बहु लग जाता है।
तैसे बाहरमुख वृत्ती कर, मत तुम दूख उठाओ रे ।।३।।
कहे टेऊँ तन हरि मन्दिर में, बहु विधि बाजे बाजत हैं।
गुरु कृपा से निज वृत्ती को, अहनिशि ताहिं लगाओ रे ।।४।।

।। राग प्रभाती भजन ।। २८ ।। ६०।।

जाग जिज्ञासू जीत हरि जप, जाग जिज्ञासू जीत ।। टेक।।
सत् शब्द सुन श्रवण जागे, हौं मैं संसा दुर्मति भागे।
भागे भ्रम की भीत ।।१।।
जागे नेत्र राम के दर्शन, पेख पेख से होवन प्रसन्न।
राचहिं हरि रंग रीत ।।२।।
जागे रसना हरिगुण उच्चरे, विषय वासना विष रस विसरे।
एक अमीरस पीत ।।३।।
जागे ईड़ा जागे पिंगला, जागे श्रुतां गावे मंगला।
गावे हरि गुण गीत ।।४।।
कहे टेऊँ जो ऐसा जागे, तांको यम का दूख न लागे।
पाये गुरु से प्रीत ।।५।।

।। राग प्रभाती भजन ।। २९ ।। ६१।।

अपने अन्तर झाती पाये, देखो पुरुष अकाल रे मन।। टेक।।
गुरु मूरत में नृत्ती लाओ, गुरु शब्द से श्रुति मिलाओ।
खोलो अनुभव ख्याल रे मन ।।१।।
दसम द्वारे दम दमाये, अमर देव का दर्शन पाये।
तोड़ो जम का जाल रे मन ।।२।।
कहे टेऊँ चल उस घर माहीं, मैं तू काल कर्म जहं नाहीं।
आनन्द पाय विशाल रे मन ।।३।।

।। राग प्रभाती भजन ।। ३० ।। ६२।।

दूर देश है जाना तुझको, ऊठ मुसाफिर करो तयारी।। टेक।।
साथी तेरे गये सवेरे, लागी तुमको निद्रा प्यारी।।१।।
गाफ़िल गफ्लत कर ना इतनी, मंज़िल है अति दूर तुम्हारी।।२।।
जागी अपना समर सम्भालो,अबहीं तुम करके हुशियारी।।३।।
कहे टेऊँ सब सन्त पुकारे, फेर न मिल हैं ऐसी वारी।।४।।

।। राग आसा भजन ।। १ ।। ६३।।

राम मिलन पढ़ पाती, रे तुम पाओ झाती,
मन एकान्ती, होवे शांती ।। टेक।।
ताप क्लेशा पाप मिटाओ, सुनकर सन्तनि बाती ।।१।।
चारों साधन को तुम साधे, ध्यान धरो दिन राती ।।२।।
सद्गुरु से मिल सम सुख पाओ, भेद भ्रम हरे भ्रान्ती ।।३।।
कहे टेऊँ हरि सुमरण करके, लखले अपनी ज़ाती ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। २ ।। ६४।।

गुरु दर्शन को मैं जाता, रे तुम सुनहो ताता,
रहन न पाता, प्रेम सताता ।। टेक।।
बहुत दिनों से बिछुड़ा मुझ से, दिल को दर्द दुखाता ।।१।।
गुरु दर्शन बिन तन मन मेरा, रैन दिवस तड़फाता ।।२।।
जब जब याद पड़त सद्‌गुरु की, नैनों से नीर बहाता ।।३।।
कहता टेऊँ सद्‌गुरु के बिन, और न मोहि सुहाता ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ३ ।। ६५।।

प्रभू मिलन का यह वेला, रे तुम जागो चेला,
जग है खेला, दो दिन मेला ।। टेक।।
सुत दारा बान्धव परिवारा, अन्त समय को दे न सहारा।
जायेंगे आप अकेला ।।१।।
मिथ्या है सब माल खज़ाना, तामें ममता कर न दिवाना।
साथ न चलहिं अधेला ।।२।।
साधसंगति में बैठ सुजाना, नाम जपे कर निज कल्याना।
काल न देवे ठेला ।।३।।
कहे टेऊँ अब कर हुशियारी, फेर मिले ना ऐसी वारी।
सद्‌गुरु के चल गेला ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ४ ।। ६६।।

करो सन्तों का संगा, रे मन लागे रंगा,

होवै चंगा, जैसे गंगा ।। टेक।।

सनक जनक सिद्ध सुर नर ज्ञानी, पाया संग से पद निर्बानी।

गृही हो भावें नंगा।। १।।

मुक्ति मन्दिर के चौ दर्बाना, तामें सत्संग है प्रधाना।

कीजे धार उमंगा।। २।।

चन्दन संग जिमि हो तरु चन्दन,सन्तों संग तिमि खल हो सज्जन।

होवहिं कीट भृङ्गा।। ३।।

सत्संग सुरतरु वेद बतावहिं, कहे टेऊँ सब आश पुजावहिं।

मेटे मस्तक अंगा ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ५ ।। ६७।।

अविद्या नींद त्यागो, रे तुम जल्दी जागो,

भव ते भागो, गुरु पद लागो ।। टेक।।

स्वप्ने सम जानो संसारा, पांच विषय ते होय न्यारा।

मन में धार विरागो ।।१।।

आशा तृष्णा ममता मारे, पांच क्लेश विकार निवारे।

ईश्वर में अनुरागो ।।२।।

मात पिता सुत तीय परिवारा, स्वार्थ के सब जानो प्यारा।

तोड़ो तमना तागो ।।३।।

कहे टेऊँ ले गुरु से ज्ञाना, निज आतम का धरले ध्याना।

परमानन्द रस पागो ।।४।।

॥ राग आसा भजन ॥ ६ ॥ ६८॥

सद्गुरु शरणी आया, रे मैं दर्शन पाया,
पाप मिटाया, आनन्द छाया ॥ टेक॥
दर्शन करके प्रसन्न होया, तन मन के सब संकट खोया।
सुख के माहिं समाया ॥१॥
सद्गुरु वचन सुना मैं जबहीं, भेद भ्रम सब मिटिया तबहीं।
आतम घर में आया ॥२॥
सद्गुरु का जब दर्शन देखा, धर्मराज का चूका लेखा।
जन्म मरण दुःख जाया ॥३॥
कहे टेऊँ भये भाग विशाला, मिलिया सद्गुरु दीन दयाला।
चरण कमल चित्त लाया ॥४॥

॥ राग आसा भजन ॥ ७ ॥ ६९॥

राम नाम गुण गाओ, रे मन देर न लाओ,
सहज समाओ, शान्ती पाओ ॥ टेक॥
जागो तुम गफ्लत को छोड़े, गुरु मन्त्र में चित्त को जोड़े ।
मायिक ख्याल मिटाओ ॥१॥
मानुष जन्म दिया हरि दाते, काहे विषयों माहिं गंवाते।
हरि भज सफल बनाओ ॥२॥
जग के सब तुम बन्धन तोड़े, मोह कुटुम्ब से मन को मोड़े।
भक्ती माहिं लगाओ ॥३॥
कहे टेऊँ वेदनि फरमाया, सत्संग में कर सफली काया।
गुरु की सेव कमाओ ॥४॥

।। राग आसा भजन ।। ८ ।। ७०।।

ब्रह्मज्ञानी ब्रह्मानन्द माहिं झूलन्दे ।। टेक।।

नाम रूप मिथ्या सत् ब्रह्म जानदा,
आपना स्वरूप एक ब्रह्म मानदा।
जगत माहिं स्वयं रूप देख फूलन्दे ।।१।।

शेर ज्यों जगत माहिं अभय डोलते,
अहंब्रह्म अहंब्रह्म बात बोलते।
ब्रह्म भाव की न कभी राह भूलन्दे ।।२।।

कमल फूल ज्यों जगत बीच रहत है,
सदा तोष माहिं मगन कुछ न चहत है।
ज्ञान नशे माहिं मस्त होय घूलन्दे ।।३।।

भेद भ्रम छेद कर्म मेट वासना,
कहत टेऊँ धार सदा ब्रह्म भावना।
राग द्वेष माहिं कभी नाहिं छूलन्दे ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ९ ।। ७१।।

सन्त संग भाग्यवान कोई करन्दा ।। टेक।।

सन्त सभा सज्जन जहां आय जुड़ंदी,
अमृतमय ज्ञान कथा ताहिं टुरंदी।
सन्तनि दा वाक्य सुन भ्रम टरन्दा ।।१।।

गाम सभा राज सभा देव सभा में,
एहा न विचार जेहा सन्त सभा में।
सन्तनि दे संग माहिं रंग चढ़न्दा ।।२।।

इन्द्र लोक विष्णु लोक ब्रह्म लोक में,
एहा सुख नाहिं जेहा सन्त ओक में।
सन्तनि के दर्शन से नैन ठरन्दा ।।३।।
जन्म जन्म केरे यदी कर्म फलन्दे,
सन्त सज्जन नेक तदी आय मिलन्दे।
कहे टेऊँ सन्त संग काज सरन्दा।। ४।।

।। राग आसा भजन ।। १० ।। ७२।।

मेरी तो विनय सुनो प्रभू प्यारे ।। टेक।।
रैन दिवस मन बीच सर्व झुरन्दे,
शोक सिन्धु माहिं सब जांदे लुढ़ंदे।
करुणामय आप करो हमें किनारे।। १।।
काल रूप दुष्ट जन घेर मारंदे,
दशों दिशा आग देके हमें जारंदे।
दया सिन्धू दूर करो कष्ट हमारे ।।२।।
रक्षा करो वेग नहीं लाओ देरियां,
और ओट नाहिं पड़े शरण तेरियां।
तेरे बिना नाहिं कोई दूख निवारे ।।३।।
कहे टेऊँ दोष सब माफ कीजिये,
आप हो दयाल अभय दान दीजिये।
हार पड़े आन अब तेरे द्वारे ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ११ ।। ७३।।

राम दा भजन करो मेरे प्यारे ।। टेक।।

राम दा भजन करे सोई बन्दिया,
राम दे भजन बिन जानो गन्दिया।
राम दा भजन भव पार उतारे ।।१।।

फूल खुशबूइ बिना नहीं मोहन्दा,
मनुष त्यों भजन बिन नहीं सोहन्दा।
राम भजन से ही यश होय अपारे ।।२।।

पापी कर पाप बहु माया जोड़ंदा,
आवे नहिं काम ताहिं अन्त लोड़ंदा।
राम के भजन बिन नर्क सिधारे ।।३।।

मनुष तन पाय जो न भजन करंदा,
कहे टेऊँ अन्त दुखी होय मरंदा।
तांते तुम राम भजो सन्त पुकारे ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। १२ ।। ७४।।

माया के अधीन से न होय बन्दगी ।। टेक।।

लोभ का अधीन नहीं साच बोलन्दा,
क्रोध का अधीन नहीं बात तोलन्दा।
कामी करे नाहिं निज ऊँच ज़िन्दगी ।।१।।

मोह के अधीन को न बोध आवन्दा,
मान का अधीन नहीं ठौर पावन्दा।
अभिमानी नाहिं करे कभी वन्दगी ।।२।।

भेद का अधीन नहीं एक जोवन्दा,

भ्रम का अधीन नहिं सूख सोवन्दा।

मूण्ढ कभी बोले नाहिं बानी छन्दगी ।।३।।

मन का अधीन नहीं फरज़ जानदा,

गरज़ का अधीन नहीं अरज़ मानदा।

कहे टेऊँ दम्भी ले न राह रिन्दगी ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। १३ ।। ७५।।

मूण्ढ मनुष देह को तो वृथा रोलन्दा ।। टेक।।

साध संग माहिं कभी नाहिं आवंदा,

मूण्ढनि के संग दिन रैन धावंदा।

मुख से न कभी राम नाम बोलंदा ।।१।।

पाप की कमाई कर पेट पालंदा,

धर्म की न राह माहिं नेक चालंदा।

आठों याम औरों के ही ऐब खोलंदा ।।२।।

काम क्रोध लोभ मोह माहिं घारंदा,

शील शौच ज्ञान ध्यान नाहिं धारंदा।

कहे टेऊँ साच झूठ नाहिं तोलंदा ।।३।।

।। राग आसा भजन ।। १४ ।। ७६।।

ऐसे मेरा मन वसे राम नाम में ।। टेक।।

बालक का मन जैसे खीर वसन्दा,

मछली का मन जैसे नीर वसन्दा।

भूखे केरा मन जैसे वसे ताम में ।।१।।

सांप केरा मन जैसे वसे मनियां,
कूकर का मन वसे धाम धनियां।
लोभी केरा मन जैसे वसे दाम में ।।२।।
कहे टेऊँ कूञ्ज मन पूत वसन्दा,
कच्छुवों का मन जैसे अण्डे दिसन्दा।
कामी केरा मन जैसे वसे वाम में ।।३।।

।। राग आसा भजन ।। १५ ।। ७७।।

मन के मारन वाला विरला ज्ञानी ।।टेक।।
धातू के मारन वाले देखे बहुतियां,
बूटी के जारन वाले पेखे केतियां।
पंछी के मारन वाले केते कमानी ।।१।।
कान के कटान वाले केते देखिया,
भेख के बनान वाले केते भेखिया।
ध्यान के धारन वाले बहुते ध्यानी ।।२।।
पवन के रोकन वाले बहुत जोगियां,
जग के ठगन वाले बहुत ठोगियां।
वेद के वख्यान वाले बहुत वख्यानी ।।३।।
और सभी कर्म है सुगम धारना,
कहे टेऊँ कठिन एक मन मारना।
जोई मन मारे सोई वीर विज्ञानी ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। १६ ।। ७८।।

प्रभू दे मिलाने वाला साधू संग है ।।टेक।।

जैसे ताल नीर पहले सरित रलंदा,

नदी केरा नीर जाय सिन्धु मिलंदा।

सिन्धु से मिलाने वाला नदी अंग है ।।१।।

जैसे नर पहले जा वज़ीर भेटंदा,

भूप से वज़ीर मेल दुख मेटंदा।

नृप से मिलाने वाला मन्त्री ढंग है ।।२।।

जैसे फूल बीच जाय चींटी बैठंदी,

फूल संग जाय फिर ठाकुर चढ़ंदी।

ठाकुर से मिलाने वाला पुष्प पंग है ।।३।।

कहे टेऊँ तैसे साध संग करले,

साध संग ब्रह्म पाय भेद हरले।

साध संग माहिं चढ़े राम रंग है ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। १७ ।। ७९।।

बन्दे हरि गुण क्यों नहिं गाते,

इकरार कीया इकरार कीया ।।टेक।।

जिहँ तुमको पैदा कीना, नित देवत खाना पीना।

क्यों तांसे प्रेम न पाते ।।१।।

जिहँ देखन लीये नैना, दीये बोलन हित बैना।

क्यों तांसे नेह न लाते ।।२।।

जिहँ दीना जीव प्राना, मन बुद्धि में ज्ञान विज्ञाना।
क्यों तांके रंग न राते ।।३।।
कहे टेऊँ निश्चय मानो, सब दाति हरी की जानो।
क्यों सुरति न ताहिं समाते ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। १८ ।। ८०।।

जे चाहो कल्यान, धरो हरी का ध्यान,
सुनो सुनो ऐ सुजान, प्रभू को भुलाना मत भूलके ।। टेक।।
हरी साथी तेरे आदि अन्त का, मत नाम भुलाओ भगवन्त का।
जपो जपो भगवान, पावो सूख महान ।।१।।
क्यों जग के पड़े हो जंजाल में, कुछ चलते न तेरे नाल में।
यह झूठा है जहान, सच्चा प्रभू पहिचान ।।२।।
सदा साध संगति में जायके, कहे टेऊँ बैठो चित्त लायके।
तजे तन अभिमान, करो हरी गुण गान ।।३।।

।। राग आसा भजन ।। १९ ।। ८१।।

मानुष के तन को पा करके, तुम हरि गुण गाते क्यों नहीं।
सन्तों के संग में जा करके,तन सफल बनाते क्यों नहीं।। टेक।।
यह हीरा अमोलक नर तन है, क्यों कौड़ी बदले गंवाते हो।
विषयों से हटा करके मन को,हरि भजन में लाते क्यों नहीं।।१।।
पापों में पड़ करके तुमने, कितने ही कष्ट उठाये हैं।
अब शान्ती सुख के पाने हित, शुभ कर्म कमाते क्यों नहीं ।।२।।
नित पेट कुटुम्ब के पालन हित, क्यों स्वास अमोल लुटाते हो।
कह टेऊँ आक के फल छोड़े, तुम आम को खाते क्यों नहीं ।।३।।

।। राग आसा भजन ।। २० ।। ८२।।

श्री राम का नाम बड़ा जग में,
तुम उसको भुलाओ ना कभी ।। टेक ।।
जो अपने हित को चाहत हो, तो यह सन्तों का मान कहा।
सब जीव जगत के राम रूप लख, किसको सताओ ना कभी।।१।।
जिन भोगों में सुख मानत हो, वे आखिर दुःख ही देते हैं।
विष रूप विषय में पड़ करके, शुभ समय बिताओ ना कभी।।२।।
जो होय सके तन मन धन से, सब जीवों का उपकार करो।
यह जीवन है पुण्य हेतु मिला, तुम पाप कमाओ ना कभी ।।३।।
निज धर्म सार सब वस्तू से, यों वेद पुराण बताते हैं।
जो कितनी मुश्किल आवे भी, तो धर्म गंवाओ ना कभी ।।४।।
कहे टेऊँ हरि का भजन करो, हरि भजन बिना को सङ्ग नहीं।
यह धार शिक्षा मन माहिं सदा, फिर गर्भ में आओ ना कभी।।५।।

।। राग आसा भजन ।। २१ ।। ८३।।

सुन पण्डित ब्रह्म समाजी, तुम ले शिक्षा सद्गुरु की।। टेक।।
प्रत्यक्ष आतम को ना जानत, पारब्रह्म को दूर पछानत।
बात न सूझत घर की ।।१।।
लहर तरंग चक्कर जल एका, मूर्ख मानत ताहिं अनेका।
ज्ञानी को गम जर की ।।२।।
सिंह अजा संग आप भुलाया, और सिंह निज रूप लखाया।
जाति भुली तिस पर की ।।३।।
कहे टेऊँ जिसको ब्रह्म मानत, सो तूं है यह वेद बखानत।
छोड़ नज़र नारी नर की।। ४।।

।। राग आसा भजन ।। २२ ।। ८४।।

सुन शिष्य हमारी युक्ती,करो इस विधि भगवत भक्ती।। टेक।।
सत् कर्मों का साबुन लाओ, पाप कर्म की मैल मिटाओ।
ऊजल अन्त:करण बनाओ, गुरु पद लाओ नृती ।।१।।
थिर कर बैठो आसन मारे, धारणा ध्यान समाधी धारे।
मन का क्षेप विक्षेप निवारे, शब्द में लाओ श्रुती ।।२।।
ज्ञान डण्डे का मारे सटका, तोड़ो भेद भ्रम का मटका।
मिट जावे सब जम का खटका, लाओ आतम वृती ।।३।।
जो जन करते यह अभ्यासा, अमरापुर सो पावत वासा।
कहे टेऊँ कर सब दु:ख नासा, पावो जीवन मुक्ती ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। २३ ।। ८५।।

मैं सेव गुरां की पाई, सखी देवो मोहि बधाई ।। टेक।।
बहुत जन्म से भटक रही थी, तन मन में अति पीड़ सही थी।
गुरु अपने चरण लगाई ।।१।।
गली गली में फिरत दुखारी, कोय न बूझत बात हमारी।
गुरु अपने पास बिठाई ।।२।।
मात पिता मोहि बहिन न भाई, निबल कुरूप नहीं चतुराई।
गुरु कृपा कर अपनाई ।।३।।
कहे टेऊँ गुरु किया उपकारा, जाऊँ गुरु पै मैं बलिहारा।
जिहं मन की आस पुजाई ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। २४ ।। ८६।।

गुरु राखो चरननि पासा, यह मेरी है अर्दासा ।।टेक।।
पानी भरके लकड़ी लाऊं, झाड़ू दे घर साफ बनाऊँ।
सेवहुं बारह मासा ।।१।।
फूलों की मैं सेज सजाके, तां पर तुमको शयन कराके।
चन्दन का दूं वासा ।।२।।
गंगाजल से चरन पखारूँ, पान करे मैं पाप निवारूँ।
धारूँ उर विश्वासा ।।३।।
कर जोड़े कर कहता टेऊँ, ज्यों तुम चाहो त्यों मैं सेऊँ।
देवो निकट निवासा ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। २५ ।। ८७।।

कर मन हरि चरननि की आसा,इस जग से होय उदासा।। टेक।।
और आसरे जेते जग के, झूठा जान दिलासा ।।१।।
जग झूठा जग के नर झूठे, झूठा तां भरवासा ।।२।।
जगत आसरा जिन जिन लीना,ताहिं पड़ी जम फासा ।।३।।
कहे टेऊँ ले शरण हरी की, जांते हो दु:ख नासा ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। २६ ।। ८८।।

रे मन अबहीं होय सुजाग, गफ्लत का कर त्याग ।।टेक।।
कर्मी ज्यों कर्मनि में जागे, धर्मी धर्म धरन में जागे।
त्यों कर हरि अनुराग ।।१।।

भोगी ज्यों भोगनि में जागे, जोगी जोग करन में जागे।
त्यों हरि के पद लाग ।।२।।
साधक ज्यों साधन में जागे, पाठक पाठ पढ़न में जागे।
त्यों हरि सुमरन जाग ।।३।।
कहे टेऊँ तज नीन्द अविद्या, धारो हृदय आत्म विद्या।
खोलो अपना भाग ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। २७ ।। ८९।।

रे मन जपले हरि का नाम ।। टेक ।।

अमृत वेले उठ कर कीजे, राम भजन का काम ।।१।।
झूठे जग के काम त्यागे, लेवो हरि की शाम ।।२।।
सन्तों के संग निशदिन रहके, प्रेम का पीले जाम ।।३।।
कहे टेऊँ हरि सुमरन करके, पाओ सुख विश्राम ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। २८ ।। ९०।।

रे मन आत्म का धर ध्यान ।। टेक ।।

तन का झूठा भ्रम निवारे, अपने दिल में डुबकी मारे।
देखो श्री भगवान ।।१।।
पांचों की तुम प्रीती हरले, पांचों को निज वश में करले।
गुरु से लेके ज्ञान ।।२।।
बैठ अकेला चिन्तन करिये, मन के सारे फुरने हरिये।
अपना आप पछान ।।३।।
कहे टेऊँ सब संसा तोड़े, निज आत्म में वृत्ती जोड़े।
पाओ पद निर्बान ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। २९ ।। ११।।

रे मन अमृत वेले जाग ।। टेक।।

सद्गुरु सागर के ढिग जाके, ज्ञान ध्यान के मोती लाके।
दूर करो दुर्भाग ।।१।।

तन मन इन्द्रियां थिर कर लेवो, सार शब्द में श्रुती देवो।
भोग विषय से भाग ।।२।।

सन्त समागम में तुम जाओ, अमर कथा सुन पाप मिटाओ।
छोड़ द्वेष औ आग ।।३।।

कहता टेऊँ विलम्ब न कीजे, ब्रह्मानन्द रस अबहीं पीजे।
तृष्णा का कर त्याग ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ३० ।। १२।।

तज झूठा तन अहंकारा, तूं आत्म रूप उदारा ।। टेक।।

जड़ चेतन मय सृष्टी सारी, माया जड़ दुख रूप असारी।
तूं चेतन जाननहारा ।।१।।

जन्म मरण है इस तन केरा, तन से सम्बन्ध नहीं कछु तेरा।
तूं अजर अमर अविकारा ।।२।।

कर्ता भोक्ता आना जाना, अन्तःकरण के जान सुजाना।
तूं अक्रिय अचल अपारा ।।३।।

भूख प्यास है धर्म प्रान के, टेऊँ हर्ष शोक है मन के।
तूं साक्षी सब से न्यारा ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ३१ ।। ९३।।

कर ब्रह्म देश दीदारा, ले ज्ञान गुरू से प्यारा ।।टेक।।
कोटि भूमि जल अग्नि प्रकाशा,
कोटि पवन पुनि कोटि अकाशा।
सब जिससे हो विस्तारा ।।१।।
कोटी ब्रह्मा विष्णू शङ्कर, कोटी रवि शशि सुरपति सुरवर।
ये जामें लय हो सारा ।।२।।
कहे टेऊँ तिहं सो जन देखे, जीव ब्रह्म जो इक कर पेखे।
वो पावत अनन्द अपारा ।।३।।

।। राग आसा भजन ।। ३२ ।। ९४।।

जिहं राम नाम गुण गाया, हरि तांका दूख मिटाया ।। टेक।।
राम नाम प्रह्लाद सुमरिया, ध्यान हरी का ध्रुव ने धरिया।
हरि तिनको दरस दिखाया ।।१।।
अन्त अजामिल राम उचारा, गज ने आधा राम पुकारा।
हरि तांको मुक्ति कराया ।।२।।
राम नाम शबरी ने लीना, प्रेम जटायू हरि से कीना।
हरि तिनको धाम पठाया ।।३।।
कहे टेऊँ तुम भी हरि ध्यावो, हरि सुमरण से सब सुख पावो।
यह करले सफली काया ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ३३ ।। ९५।।

भज राम नाम सुखधामा, इस जग से हो उपरामा ।। टेक।।
मात पिता सुत बान्धव भाई, झूठी सबकी जान सगाई।
नहिं साथ चले निज वामा ।।१।।
माल खज़ाना सेना सारी, भोग पदार्थ महल अटारी।
नहिं साथ चले कछु दामा ।।२।।
बहु चल गये तव आंखों आगे, अब तक जागे तूं न अभागे।
नहिं सुनिया काल दमामा ।।३।।
कहता टेऊँ सुनो प्यारे, वचन अमोलक सन्त उचारे।
हरि भजले तज सब कामा ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ३४ ।। ९६।।

निज आतमराम पछान, मनुष कर काम तूं येही।
ले गुरु से आत्मज्ञान, पाओ पूरन पद निर्बान,
मनुष कर काम तूं येही ।। टेक।।
दो दिन जग में तुम हो मुसाफिर, झूठा तज अभिमाना।
अन्त समय कोई काम न आवे, जांका करत गुमाना।
तज मोह ममत नादान, धरो तुम दिल में हरि का ध्यान ।।१।।
पांच तत्त्व की है यह देही, तामें पंछी प्राना।
उड़ जावे जब प्रान इसी से, तबहीं जरत मसाना।
तुम भजन करो भगवान, और दे हाथों से कछु दान ।।२।।

कहे टेऊँ कर गुज़र गरीबी, त्यागे मान बड़ाई।
दीन दुखियों की सेवा करले, किसकी कर न बुराई।
यह वेदों का फरमान, धार ले हृदय माहिं सुजान ।।३।।

।। राग आसा भजन ।। ३५ ।। ९७।।

मैं आय पड़ा हूँ द्वार, शरण में राखले प्रभू।
तुम दीन बन्धू दातार, करो यह विनय मेरी स्वीकार,
शरण में राखले प्रभू ।। टेक।।
तुम हो सब गुण सम्पन्न स्वामी, मैं हूँ अवगुन खानी।
तेरे दर का मैं भीखारी, तुम हो पूर्ण दानी।
तुम सब जग पालनहार, मुझे है तेरा नित आधार ।।१।।
महिमा तेरी है अति भारी, पार नहीं मैं पाऊँ।
मैं अल्पज्ञ तुम सर्वज्ञ स्वामी, कैसे तव गुन गाऊँ।
तुम हो अलख अपार, नेति नेति कहते वेद पुकार ।।२।।
सर्व ओर से होय निरासा, शरन तुम्हारी आया।
तेरी शरण निर्भय पद देती, संतों ने यह गाया।
कहे टेऊँ करो रखवार, देहि मोहि निर्भय पद निर्धार।।३।।

।। राग आसा भजन ।। ३६ ।। ९८।।

सद्गुरु न बिसारो न बिसारो न बिसारो।
अपना ही दास जान हमें पार उतारो ।। टेक।।
मैं मूंढ अज्ञानी हूं प्रभू दास तुम्हारा,
तुम सर्व कला समर्थ गुरुदेव हमारा।
दुख दर्द सर्व टारो, सर्व टारो, सर्व टारो ।।१।।

भवसिन्धु माहिं डूब रही है मेरी नैया,
गुरुदेव ताहिं पार करो बनके खिवैया।
निज बिरद तुम सम्भारो, तुम सम्भारो, तुम सम्भारो ।।२।।
इस जगत माहिं कोय नहीं मेरा सहारा,
कहे टेऊँ तीन लोक माहिं तेरा अधारा।
तुम अपनी दया धारो, दया धारो, दया धारो ।।३।।

।। राग आसा भजन ।। ३७ ।। ९९।।

करले बन्दगी, करले बन्दगी करले, करले बन्दगी करले।। टेक।।
जिस मनुष ने बन्दगी कीती, तिस हारी बाज़ी जीती।
तुम ध्यान हरी का धरले, बन्दगी करले ।।१।।
बन्दा होय करे ना बन्दगी, तिस व्यर्थ जानो ज़िन्दगी।
ना स्वास अमोलक हरले, बन्दगी करले ।।२।।
कहे टेऊँ अगर सुख चाहो, कर बंदगी सब सुख पाओ।
भव सागर से तुम तरले, बन्दगी करले ।।३।।

।। राग आसा भजन ।। ३८ ।। १००।।

नाम हरी का भुला न देना, जीवन अपना रुला न देना।। टेक।।
मानुष चोला दुर्लभ पाया, राम भजन बिन वृथा जाया।
ऐसा वेला हाथ न आवे, क्यों तुम मूर्ख पाप कमावे।
पाप करे तन गंवा न देना ।।१।।

राम नाम बिन कोय न तेरा, क्यों कहते हो मेरा मेरा।
प्रेम से प्रभू के गुण गाओ, जन्म मरण में फेर न आओ।
प्रेम लगा कर हटा न देना ।।२।।
हलत पलत तेरा हरि साथी, झूठे तन धन घोड़े हाथी।
राम नाम का जाप जपीजे, कहे टेऊँ भव सिन्धु तरीजे।
भव में चित्त को डुला न देना ।।३।।

।। राग आसा भजन ।। ३९ ।। १०१।।

शुभ कर्मों से प्रीती करले, पाप कर्म सब मन के हरले ।।टेक।।
शुभ कर्मों का फल सुखदाई, पाप कर्म का फल दुखदाई।
जो तुम पूर्ण सुख को चाहो, पुण्य कर्म से चीत लगाओ।
ध्यान धर्म का दिल में धरले ।।१।।
पापी पाप प्यार से करता, करने से वह नाहीं डरता।
जब उसके फल को पावत है, दुखी होय के पछतावत है।
तांते पापों से तुम डरले ।।२।।
शुभ कर्मों से शुद्ध मन होवे, शुद्ध मन से हरि दर्शन होवे।
हरि दर्शन बिन शान्ति न आवे, कहे टेऊँ यह सन्त बतावे।
नेक कर्म कर भव से तरले ।।३।।

।। राग आसा भजन ।। ४० ।। १०२।।

ऊठो मुसाफिर जागो दो दिन रहना रे।
गफ्लत नींद त्यागे खोलो तुम नैना रे ।। टेक।।

थोड़े दिन का पाहुन हो क्यों इतना किया पसारा है।
प्रान पंछी जब चले साथ तब कुछ नहिं चलने हारा है।
मोह बढ़ाके दुख क्यों पाओ दिन रैना रे ।।१।।
बड़े बड़े राजा महाराजा छोड़के सब सामान गये।
रावण बाणासुर हरणाकश कुम्भकर्ण बलवान गये।
माया बढ़ाके पाया चित्त में न चैना रे ।।२।।
दूर देश औ राह कठिन है इसका तुम वीचार करो।
कहे टेऊँ शुभ कर्म धर्म का समर ले तुरत तयार करो।
वेद पुराणों का यह मानो तुम कहना रे ।।३।।

।। राग आसा भजन ।। ४१ ।। १०३।।

हे सद्गुरु बेड़ा तार तार तार तेरी शरण हूँ ।।टेक।।
भवसागर में नीर अपारा, प्रभू मिले ना मोहि किनारा।
आप करो भव पार पार पार तेरी शरण हूँ ।।१।।
पग पग में बहु पाप किया मैं, बदियों का सिर भार लिया मैं।
पाप करो परिहार हार हार तेरी शरण हूँ ।।२।।
धर्म दया कुछ कर्म ना कीना, जप तप पूजा दान न दीना।
नाहिं करी शुभ कार कार कार तेरी शरण हूँ ।।३।।
कहे टेऊँ मैं हूं अपराधी, एक निमख नहिं भक्ती साधी।
अपनी कृपा धार धार धार तेरी शरण हूँ ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ४२ ।। १०४।।

हो सत् चित आनन्द रूप रूप रूप ना तूं जीव है ।। टेक।।

तुम हो ब्रह्म अचल अविनाशी, सर्व व्यापक स्वयं प्रकाशी।

वेद कहत तव ऊप ऊप ऊप ना तूं जीव है ।।१।।

तुम हो पावन पुरुष निसङ्गा, पाप पुण्य का लगे न रंगा।

तुझमें छाय न धूप धूप धूप ना तूं जीव है ।।२।।

तुमहो सब जग का आधारा, सबसे मिलिया सबसे न्यारा।

भूपों के हो भूप भूप भूप ना तूं जीव है ।।३।।

कहे टेऊँ यह निश्चय जानो, अपने को तुम चेतन मानो।

हरो भ्रम तम कूप कूप कूप ना तूं जीव है ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ४३ ।। १०५।।

प्रेमा भक्ति दे दान दान दान प्रभू अरज़ है ।। टेक।।

प्रेम भक्ति में मन यह फूले, तव गुन गावत तन यह भूले।

धरूँ तुम्हारा ध्यान ध्यान ध्यान प्रभू अरज़ है ।।१।।

प्रेम तेरे में निशदिन रोवां, नैन नीर से तन मन धोवां।

करूँ प्रेम रस पान पान पान प्रभू अरज़ है ।।२।।

कहे टेऊँ हरि कृपा कीजे, प्रेम भक्ति का प्याला दीजे।

हरो क्रोध मद मान मान मान प्रभू अरज़ है ।।३।।

।। राग आसा भजन ।। ४४ ।। १०६।।

मुक्ति पदार्थ मुक्ति पदार्थ गुरु से मांगो रे।

अविद्या की नर नींद त्यागे जल्दी जागो रे ।। टेक ।।

नाम रूप जग मिथ्या जानो, अस्ति भाति प्रिय आत्म मानो।
रैन दिवस तुम आतम पद में धर अनुरागो रे ।।१।।
अपने मन में उपशम धरिये, भोग विषय से हरदम डरिये।
अन्ध कूप जग महा भयानक से तुम भागो रे ।।२।।
शम दम श्रद्धा धार सुजाना, समाधान उपराम ध्याना।
तितिक्षा को तुम हरदम धारो कभी न त्यागो रे ।।३।।
कहे टेऊँ कर मोक्ष आशा, भव भोगनि से होय निराशा।
गुरु चरणों में भाव भक्ति से गुरुमुख लागो रे ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ४५ ।। १०७।।

गुरुमुख प्यारा गुरुमुख प्यारा नाम उचारो रे।
सन्तों का संग करके अपना जन्म सुधारो रे ।।टेक।।
दुष्ट पुरुषों का संग त्यागो, सत्पुरुषों से कर अनुरागो।
तांकी बानी श्रद्धा से तुम हृदय धारो रे ।।१।।
पांच ठगों से न आप ठगाओ, गुरु चरनों में चीत लगाओ।
खोटे संकल्प विकल्प सारे मन के टारो रे ।।२।।
कहे टेऊँ गुरु नाम सुमरिये, भवसागर से पारि उतरिये।
जन्म मरण का भारी दुख जो ताहिं निवारो रे ।।३।।

।। राग आसा भजन ।। ४६ ।। १०८।।

भक्त हरी को भक्त हरी को लागत प्यारे जी।
भक्तों की हरि ज़ाति न देखे, आप उबारे जी ।।टेक।।

भक्त प्रह्लाद विभीषण दोए, निशिचर कुल में उत्पन्न होए।
ऐसे भी हरि भवसागर से पार उतारे जी ।।१।।
बाल्मीक दो भील चण्डाला, दोनों को हरि किया निहाला।
अजामेल पापी के हरि ने पाप निवारे जी ।।२।।
कबीर जुलाहा सइना नाई, जाट धन्ना सधना कासाई।
नामा छीपा पुनि रविदासा हरि ने तारे जी ।।३।।
कहे टेऊँ हरि कर्म न पेखत, निज भक्तों के दोष न देखत।
चारों युग में निज भक्तों के काज संवारे जी ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ४७ ।। १०९।।

ओम हरी ओम हरी, हरी ओम बोल।
ओम बिना और न बोलो, हरी ओम बोल ।।टेक।।
ओम मूल वेदों का मंत्र, ओम वश करने का जन्त्र।
अन्तर बाहर ओम व्यापक हृदय माहीं तोल ।।१।।
ओम गणपति सूर्य चन्द्र है, ओम शक्ती हरि शंकर है।
ओम निर्गुण सगुण रूप है देखो शास्त्र खोल ।।२।।
ओम आतम ब्रह्म अनादी, एक जान कट भेद उपाधी।
ज्ञान ध्यान विज्ञान स्वरूपा जानो ओम अमोल ।।३।।
ओम अक्षर को सुमरे जोई, मन वांछित फल पावे सोई।
कहता टेऊँ ओम जाप से पाओ धाम अडोल ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ४८ ।। ११०।।

जीवन है दिन चार प्रानी, जीवन है दिन चार ।।टेक।।
ऊठत बैठत हरि गुन गाओ, साध संगति की टहल कमाओ।
भूल न बुरी संगति में जाओ, साची करले कार ।।१।।
सर्व जनों से प्रेम बढ़ाओ, भूल न वैरु किसी से पाओ।
रंचक किसकी दिल न दुखाओ, दया सर्व पर धार ।।२।।
सब जीवों का हित ही कीजे, अवगुन को तज गुन को लीजे।
कटुक वचन किसको न कहीजे, मीठे वचन उच्चार ।।३।।
कहे टेऊँ कछु मान न करिये, पाप कर्म से हरदम डरिये।
पूरे गुरु की शरनी पड़िये, जांसे होय उधार ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ४९ ।। १११।।

दो दिन का महिमान है तुम दो दिन का महिमान ।।टेक।।
सैर करन हित तेरा आना, होया है फिर होगा जाना।
यह नहिं तेरा देश सुजाना, काहे करत गुमान ।।१।।
पंछी कर तरु रैन बसेरा, उड़ जाते ज्यों होत सवेरा।
त्यों छिन पल है रहना तेरा, जपले श्रीभगवान ।।२।।
बात अल्प पर बहुता लड़ना, आयु अल्प में ममता धरना।
दूर सफर नहिं त्यारी करना, यह तेरा अज्ञान ।।३।।
कहे टेऊँ थिर रहना नाहीं, क्यों तुम ममत धरत मन माहीं।
सन्तों की अब पकड़े बाहीं, अपना कर कल्यान ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ५० ।। ११२।।

अपना आप पछान बन्दे अपना आप पछान ।।टेक।।

अपने आप पछाने बाझौं कबहुं न हो कल्यान।
आप पछाने से पावेगा पूर्ण पद निर्बान ।।१।।

ब्रह्म नेष्ठी श्रोत्री गुरु से पूछो आत्म ज्ञान।
महा वाक्य ले मनन करे तुम निश्चय करो सुजान ।।२।।

सद्गुरु बिन निज ज्ञान न होवे कहे टेऊँ सत् मान।
ज्ञान बिना नहिं मुक्ती होवे कहते वेद पुरान ।।३।।

।। राग आसा भजन ।। ५१ ।। ११३।।

सन्तों में विश्राम है नित, सन्तों में विश्राम ।।टेक।।

सन्तों के संग में सुख जैसा, वैकुण्ठ में भी सुख ना तैसा।
आनन्ददायी धाम न ऐसा, तांकी ले तुम शाम ।।१।।

सन्तों में नित प्रेम बिराजे, प्रेम जहां तहँ राम बिराजे।
राम जहां तहँ शान्ति बिराजे, शान्ती तहँ आराम ।।२।।

दुनिया की है जलनि न जामें, भोग विषय की अग्नि न वामें।
तापों की पुनि तपति न तामें, आनन्द आठों याम ।।३।।

कहता टेऊँ सत्संग कीजे, सन्तजनों की शरनी लीजे।
जन्म मरन का सब दुख छीजे, पाओ पूरन धाम ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ५२ ।। ११४।।

ऊठ करो अभ्यास जिज्ञासू, ऊठ करो अभ्यास ।।टेक।।
पद्मासन सिद्ध आसन लाए, बैठ अकेला ध्यान लगाए।
सार शब्द में सुरति समाए, सफला करले श्वास ।।१।।
नाभी से तुम प्रान उठाए, हृदय में तांको ठहराए।
ऊपर को फिर ताहिं चलाए, दसमें करिये वास ।।२।।
घट घट में है शब्द उच्चारा, जामें बाजत साज़ अपारा।
तहँ सुनता को गुरुमुख प्यारा, जांके मन विश्वास ।।३।।
कहे टेऊँ गुरु शिक्षा धारे, सुमरन कर दिन रैन उदारे।
आत्म अमृत पीकर प्यारे, मेटो जम का त्रास ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ५३ ।। ११५।।

साधन सुख के साधि जिज्ञासू,साधन सुख के साधि ।। टेक।।
अमृत वेले जागी जागी, गुरु चरनों में लागी लागी।
भोग विषय से भागी भागी, ईश्वर को आराधि ।।१।।
किस्मत पर ना धरिये धरिये, परम पुरुषार्थ करिये करिये।
पाप मती को हरिये हरिये, मन की छोड़ उपाधि ।।२।।
हरि मार्ग में हालो हालो, बैठ रहो ना चालो चालो।
काम क्रोध को टालो टालो, वृथा कर न विषाद ।।३।।
श्रेष्ठ गुणों को सजले सजले, दुष्कर्मों को तजले तजले।
साध संगति को भजले भजले, जान जगत को बाध ।।४।।
कहे टेऊँ बन्ध तोड़े तोड़े, माया से मन मोड़े मोड़े।
जीव आत्म से जोड़े जोड़े, लावो सहज समाधि ।।५।।

।। राग आसा भजन ।। ५४ ।। ११६।।

माया से भगवान बचाओ, माया से भगवान ।।टेक।।
प्रभू तेरी प्रबल माया, मोहे जिसने सुर नरराया।
अर्जुन जैसे भक्त भुलाया, और बड़े बलवान ।।१।।
माया भारी जाल बिछाया, जामें सारे जीव फसाया।
नारद का मुख विकट बनाया, मोहे बहु विद्वान ।।२।।
तेरी शरण हरी जो आवे, माया से सोई तर जावे।
कबहूं तिसको नाहिं भुलावे, गीता का प्रमान ।।३।।
कहे टेऊँ कर जोड़ पुकारे, मैं भी आया शरण तुम्हारे।
रक्षा कर हरि करुणा धारे, लगे न माया बान ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ५५ ।। ११७।।

आतम का दीदार है सब, आतम का दीदार ।। टेक।।
नाम रूप सब आतम जानो, रंचक इसमें शङ्क न आनो।
आतम ते भिन्न कछु न पछानो, आतम मय संसार ।।१।।
आतम धरणी आतम घट है, आतम सूत्र आतम पट है।
आतम बाज़ी आतम नट है, आतम अग्नि अङ्गार ।।२।।
आतम है ठाकुर पूजारी, आतम है दाता भीखारी।
आतम नर है आतम नारी, सब आतम आकार ।।३।।
कहे टेऊँ गुरु शरणी जाओ, आतम दृष्टी तांसे पाओ।
भेद हरे सुख सहज समाओ, पाओ मोक्ष द्वार ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ५६ ।। ११८।।

धन सद्‌गुरु धन सद्‌गुरु दर्शन, धन सद्‌गुरु का ज्ञान।
जिसीसे मोह मिटे अज्ञान ।। टेक।।

पावन है सद्‌गुरु की सेवा सर्व सुखों की खान,
मिटावे तन मन का अभिमान।
श्रद्धा उर में धारे जोई सेव करे निर्मान,
सदा सो पावे जग सन्मान ।।१।।
पावन गुरु के चरण कमल का धारत जोई ध्यान,
बने सो पूरण पुरुष महान।
अनुभव वाणी बोले मुख से मौज माहिं मस्तान,
रहे सो ब्रह्मानन्द ग़ल्तान ।।२।।
पावन है उपदेश गुरू का सुमरे जो बुद्धिमान,
तिसीको प्रत्यक्ष हो भगवान।
तीन लोक में निर्भय विचरे साक्षी हो सुल्तान,
करे सो करोड़ों का कल्यान ।।३।।
कहे टेऊँ सब देवों में गुरुदेव परम प्रधान,
जिसीका मानत सब फरमान।
सद्‌गुरु सम दाता नहिं कोई कहते वेद पुरान,
करूँ मैं तां पर शिर कुर्बान ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ५७ ।। ११९।।

पूरण आतम इक रस है यह, चेतन चिद् आकास ।। टेक।।
अजर अमर अविनासी जांको काल करे नहिं नास।
मन बुद्धि वाणी इन्द्रिय अगोचर साक्षी स्वयं प्रकास ।।१।।

अस्ति भाति प्रिय रूप से सोई सब घट करत निवास।
दूध माहिं ज्यों घृत व्यापक पुष्प मधे ज्यों वास ।।२।।
पाप ताप से रहित सदा सो आनन्द घन की रास।
तीन देह गुण तीन अतीता हृदय करत हुलास ।।३।।
कहे टेऊँ ले गुरु से युक्ती कीजे अनन्य अभ्यास।
पांच कोष का पड़दा तोड़े देखो ब्रह्म विलास ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ५८ ।। १२०।।

सद्गुरु परम उदारियां,
मैं वारी जावां देवो जी अपना दीदारियां ।। टेक।।
दूर देश से संगति आई, दर्शन खातिर बहु तड़फाई।
खोलो अपना किवाड़ियां ।।१।।
अवगुण हमरे चीत न धारो, दर्शन दे सब दोष निवारो।
आये शरण तिहारियां ।।२।।
कहे टेऊँ अब कृपा कीजे, सद्गुरु अपना दर्शन दीजे।
दूर करो दुख भारियां ।।३।।

।। राग आसा भजन ।। ५९ ।। १२१।।

मन सोच सोच सोच अबी,
दुर्लभ अवसर पाया तुमने फेर मिले यह नाहिं कबी ।। टेक।।
बहुत जन्म के पीछे प्यारा, पाया मानुष जन्म उदारा।
सुमरोगे जब सत्कर्तारा, सफला होगा जन्म तबी ।।१।।

लाख कोटि जो देवो धन को, नहिं पावोगे ऐसे तन को।
खोय न वृथा इस जीवन को, चाहत हित को आप जबी ।।२।।
गया समय फिर हाथ न आवत, भावें कितना भी पछुतावत।
क्यों नहिं मूर्ख हरिगुन गावत, छोड़ जगत के काम सबी।।३।।
और जोनि हरि मिलहिं न भाई, कहे टेऊँ सत्य बात सुनाई।
इस तन में कर नेक कमाई, देखो आतम राम छबी ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ६० ।। १२२।।

तुम टेक टेक टेक मथा।

मात पिता गुरु सन्त चरण में,श्रद्धा से नित टेक मथा ।। टेक।।
शाम सवेरे श्रद्धा धारे, नाय बड़ों को मस्तक प्यारे।
अपने सिर के पाप निवारे, पाओ मोक्ष धाम पथा ।।१।।
भीष्म को जब सीस निवाया, धर्मपुत्र वर जय का पाया।
मौत न मारकण्डे ढिग आया, पुराणों में है एह कथा ।।२।।
चरण बड़ों के जो सिर नावे, सङ्कट तांके निकट न आवे।
आयू यश बल विद्या पावे, तुम भी पाओ ताहिं तथा ।।३।।
कहे टेऊँ गुरु सन्तों आगे, सिर नावे जो मान त्यागे।
तांसे यम भी डर कर भागे, देख सिंह को मृग यथा ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ६१ ।। १२३।।

सत् संग संग संग करो।

भारत खण्ड में नर तन पाया, सन्तों का सत्संग करो ।। टेक।।

सत्संग का यह अर्थ समझले, सत् वस्तू में प्रीती धरले।
भोगों की आसक्ती हरले, निर्मल अपना अंग करो ।।१।।
साध संगति में बैठ प्यारे, सत् शास्त्र का वचन विचारे।
स्वास स्वास हरि नाम उच्चारे, पाप ताप सब भंग करो ।।२।।
और जोनि सत्संग न होवहिं, अविद्या की निद्रा तुम सोवहिं।
इस तन में सत्संग दुख खोवहिं, तां हित उर में उमंग करो।।३।।
कहे टेऊँ जो सत्संग आवे, निश्चय सोई फल को पावे।
सत्संग ना कब निष्फल जावे, याद यही प्रसंग करो ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ६२ ।। १२४।।

कर काज काज काज गुरू।

मुझको अपना नाम दान दे, कर ले पूरण काज गुरू ।। टेक।।
हरदम मुझको ऊँची मति दे, राम नाम में पूरण रति दे।
निर्मल सन्तों की संगति दे, मया करे महाराज गुरू ।।१।।
मन मेरा हरि नाम ध्यावे, मुख मेरा हरि के गुन गावे।
बुद्धि में हरि का भाणा भावे, कर कृपा यह आज गुरू ।।२।।
भोग विषय से करे निराला, सत्गुरु देवो प्रेम प्याला।
हृदय में कर ज्ञान उजाला, दे आत्म स्वराज गुरू ।।३।।
कहे टेऊँ गुरु करुणा धारी, सुन लीजे यह विनय हमारी।
आदि अन्त मध्य कर रखवारी, राखो मेरी लाज गुरू ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ६३ ।। १२५।।

मान ज्ञान ज्ञान ज्ञान गहो।

श्रद्धा धारे पूर्ण गुरु से, निज आत्म का ज्ञान गहो ।। टेक।।

ज्ञान बिना नर है अज्ञानी, अज्ञानी नर पशू समानी।
भ्रमत है सो चारों खानी, तांते ना अज्ञान गहो ।।१।।

ज्ञान बिना ना होवे मुक्ती, ज्ञान बिना ना युक्ती उक्ती।
ज्ञान बिना नहिं शक्ती भक्ती, ये शास्त्र प्रमान गहो ।।२।।

ज्ञान बिना है जीवन वृथा, अन्न खावन जल पीवन वृथा।
लेवन देवन सेवन वृथा, तांते ब्रह्म विज्ञान गहो ।।३।।

कहे टेऊँ क्यों संकट सहता, जाता भव जल में क्यों बहता।
ज्ञान बिना मन सुख ना लहता, तांते ज्ञान सुजान गहो।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ६४ ।। १२६।।

मन देख देख देख ज़रा।

नैन खोल के दिल दर्पन में, दर्शन अपना देख ज़रा ।। टेक।।

पहले सत्कर्मों को करले, दिल दर्पन के मल को हरले।
पीछे तामें वृत्ती धरले, दृष्टि पड़े अवरेख ज़रा ।।१।।

निश्चल करके दिल दर्पन को, तामें देखो निज दर्शन को।
गुरु संग थिर कर दर्पन मन को, मारे मंत्र मेख ज़रा ।।२।।

कस्तूरी ज्यों मृग के अन्तर, ढूण्ढत बाहर मूण्ढ निरन्तर।
तैसे आनन्द तेरे भीतर, अन्तर्मुख हो पेख ज़रा ।।३।।

निरावरण करके दिल दर्पन, कहे टेऊँ देखो निज दर्शन।
दर्शन करके होवो प्रसन्न, मेटो जम का लेख ज़रा ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ६५ ।। १२७।।

मन जोग जोग जोग करो।

पारब्रह्म परमेश्वर से तुम, शीघ्र अपना जोग करो ।। टेक।।
जोग जगत के जान असारा, मोह फास में डालन हारा।
देंगे तुमको दूख अपारा, तांसे वेग वियोग करो ।।१।।
गुरु मूरत में निरति मिलाये, सार शब्द में श्रुति समाये।
आतम ज्ञान में विरति लगाये, अन्त:करण अरोग करो ।।२।।
मोह ममत का तागा तोड़े, चित्त वृत्ती को हरि से जोड़े।
दुष्टजनों की संगति छोड़े, सन्तों से संयोग करो ।।३।।
पारब्रह्म है कारण तेरो, उलट आप में तांको हेरो।
कहे टेऊँ कर निज घर डेरो, ब्रह्मानन्द का भोग करो ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ६६ ।। १२८।।

तुम जीत जीत जीत करो।

पूरण गुरु से मन्त्र लेकर, मन दुश्मन पर जीत करो ।। टेक।।
पवन अश्व है मन असवारा, तांको रोको हृदय मंझारा।
पीछे मन वश होय तुम्हारा, प्राणायाम से प्रीत करो ।।१।।
प्राणों रूपी लकड़ा गारे, ऊँचे नीचे चाढ़ उतारे।
भूत रूप मन का बल हारे, अपने को निर्भीत करो ।।२।।
कहे टेऊँ मन जीते जोई, तांको दूख न व्यापे कोई।
तुम भी जीते सुख पा सोई, गुरु वचने प्रतीत करो ।।३।।

।। राग आसा भजन ।। ६७ ।। १२९।।

मन जाप जाप जाप करो।

राम नाम का जाप करे तुम, जन्म जन्म के पाप हरो ।। टेक।।
राम नाम की निर्मल बानी, राम नाम है सब सुखदानी।
राम नाम को सुमरे प्रानी, तन मन के सन्ताप जरो ।।१।।
राम नाम है परम पवीतर, राम नाम है गुरु का मन्तर।
राम नाम को जपे निरन्तर, भव सागर से आप तरो ।।२।।
राम नाम है माणिक मोती, राम नाम की घट घट जोती।
राम नाम बिन गति नहिं होती, भावें तन पर छाप धरो ।।३।।
कहे टेऊँ मति गुरु से लीजे, राम नाम का सुमरण कीजे।
जन्म मरण के बन्धन छीजे, निसंग होय निस्ताप चरो ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ६८ ।। १३०।।

रस पान पान पान करो।

अन्तर्मुख अभ्यास करे तुम, आतम का रस पान करो ।। टेक।।
अन्तर्मुख हो गोता मारे, निज घर में निज वृत्ती धारे।
फुरनों से मन को निर्वारे, छिन छिन में सावधान करो ।।१।।
गगन मण्डल में कूप निराला, अमृत है तिस माहिं रसाला।
भर भर पीके अमर प्याला, तांका दिल में ध्यान करो ।।२।।
स्वास स्वास में शब्द बिराजे, सब घट सोय अनाहत बाजे।
ताहिं सुनत सिर काल न गाजे, गुरु संग तिहं पहिचान करो।।३।।
नैन नगर से वृत्ति उठाये, सत्य लोक में ताहिं टिकाये।
कहे टेऊँ सब दूख मिटाये, अमरापुर स्थान करो ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ६९ ।। १३१।।

मन शान्ति शान्ति शान्ति गहो।

कलना में बहु जन्म गंवाया, अब तो पूरण शान्ति गहो।। टेक।।
संकल्प विकल्प मलिन त्यागो, आतम चिन्तन में नित लागो।
जीव भाव से भय कर भागो, ब्रह्म भाव निर्भ्रान्ति गहो।।१।।
अविद्या से मिल जगत पसारा, रचिया तुमने बारम्बारा।
अब तो लय कर सब विस्तारा,अफुर भवन इस भान्ति गहो।।२।।
अपने घर से भूल अजाना, जग में स्वांग धरे तुम नाना।
पशु पंछी कब भये इन्साना, अब तो अपनी क्रान्ति गहो।।३।।
कहता टेऊँ सुन मन मेरे, जग में तुमने बहु दुख हेरे।
अब तो स्थित हो निज डेरे, पूरण गुरु की पान्ति गहो।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ७० ।। १३२।।

मन गान गान गान करो।

भाव भक्ति को मन में धारे,गोविन्द के गुन गान करो ।। टेक।।
नाम तजे जो विषय चितारे, मृतक सोई जान प्यारे।
सो जीवित जो नाम उचारे, तांते तुम हरि ध्यान करो ।।१।।
भोग आश जो मन में धारे, होय दुखी सो नर्क मंझारे।
तांते भोग की आश निवारे, याद सदा भगवान करो ।।२।।
भोग विषय में उलझ अजाना, मनुष जनम को नाहिं गंवाना।
समय गये होगा पछताना, अब हरि सुमरन दान करो ।।३।।
जो करना इस तन में करले, कहे टेऊँ सत्नाम सुमरले।
सत्गुरु चरने सिर को धरले, अपना तुम कल्यान करो ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ७१ ।। १३३।।

मन यतन यतन यतन करो।

निज आतम के दर्शन कारन, निशिवासर अति यतन करो ।। टेक।।
ब्रह्मज्ञान आतम दर्शावे, ज्ञान वही गुरुदेव बतावे।
सत्गुरु श्रद्धा देख सुनावे, श्रवन गुरु के वचन करो ।।१।।
ब्रह्मातम को देखन हारा, सत् शास्त्रों को जानन हारा।
ऐसे गुरु के संग प्यारा, सफला नर तन रतन करो ।।२।।
और यतन जे जगत मंझारे, भव सागर में भेजनहारे।
कहे टेऊँ निज रूप निहारे, जन्म मरण दुख भञ्जन करो ।।३।।

।। राग आसा भजन ।। ७२ ।। १३४।।

इस जग में प्रानी रे, तुम दो दिन है महिमान।

इक दिन जाना है दुनिया से, निश्चय करके जान ।। टेक।।
यह दुनिया है मुसाफिरखाना, इसमें किसका नाहिं ठिकाना रे।
चल चल गये पुनि चल चल जाते, रहे न को इन्सान ।।१।।
नदी नाव का यह जग मेला, जान मदारी का यह खेला रे।
आया किनारा टूटा तमाशा, करे न को पहिचान ।।२।।
एक पेड़ पै पंछी आके, रात को बैठे रिमझिम लाके रे।
भया सवेरा सब उड़ जावे, त्यों जग का प्रमान ।।३।।
इस जग से ना नेह लगाओ, छोड़ो ममता हरि गुण गाओ रे।
कहे टेऊँ है साचा साथी, तेरा इक भगवान ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ७३ ।। १३५।।

करले राम नाम गुण गान, जिससे तेरा हो कल्यान, प्रेमी प्यारा।
ओ पाओ प्रेमा भक्ती और आनन्द अपारा ।। टेक।।
मनुष जन्म का लाभ यही है गोबिन्द के गुण गाओ।
भोग विषय से चीत हटाके हरी चरण में लाओ।
यह है वेदों का फरमान, सुनलो देके दोनों कान ।।१।।
साध संगति से मिलकर गाओ राम नाम गुण भाई।
अविद्या आलस छोड़े बोलो हरी नाम सुखदाई।
लेकर गुरु से निर्मल ज्ञान, पाओ पूर्ण पद निर्बान ।।२।।
सब साधन का मूल यही है प्रेम से हरि गुन गाना।
और पदार्थ भूल जाय तो हरि को नाहिं भुलाना।
करते सन्त यही वख्यान, कहता टेऊँ जप भगवान ।।३।।

।। राग आसा भजन ।। ७४ ।। १३६।।

धीरे धीरे प्रेम पन्थ में गुरुमुख पांव बढ़ाना।
मगर बीच में एक पलक भी काहूं बैठ न जाना ।।टेक।।
प्रेम पन्थ की कठिन चढ़ाई, झीना रस्ता बहु चिकनाई।
सम्भल सम्भल के पांव धरो तुम, ऊँचा हरि स्थाना ।।१।।
बैठने वाले बैठ ही जाते, चलने वाले मक्सद पाते।
चलते चलना बैठ न रहना, तुम भी मक्सद पाना।।२।।
प्रेम पंथ चल कर इक वारी, पीछे हटना बहुत खुवारी।
सब कुछ सहना कुछ ना कहना, नाता तोड़ निभाना।।३।।
प्रेम पंथ में देना ही देना, लेने का कब नाम न लेना।
तन मन दीजे माण न कीजे, कहे टेऊँ धर ध्याना ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ७५ ।। १३७।।

प्रेम लगाना प्रभू से तुम जे चाहो कल्याना।
दुनिया के झंझट को तजके गोबिन्द के गुन गाना ।। टेक।।
और नशे सब झूठे ही जानो, प्रेम नशे को सत् पहिचानो।
प्रेम जाम को पीकर जग में, हो जाओ मस्ताना ।।१।।
प्रेम मार्ग में जिस पग दीया, उसने जन्म सफल कर लीया।
प्रेम शमा पर तन अर्पन कर, ज्यों करता परवाना ।।२।।
प्रेम पदार्थ हरि को भावे, प्रेम से मन वश में हो जावे।
प्रभू पाने के लीये तुम, हो जा प्रेम दिवाना ।।३।।
प्रेम से जो हरि के गुन गावे, तिस जन को प्रभू अपनावे।
कहे टेऊँ तुम मन मन्दिर में, प्रेम की ज्योति जगाना ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ७६ ।। १३८।।

चालो चालो गुरु मन्दिर को, श्रद्धा मन में धारे।
दर्शन गुरु का चलकर करले, दो नैनों से प्यारे ।। टेक।।
वैकुण्ठ के सम गुरु का मन्दिर, परम मनोहर जान तूं।
नारायण गुरुदेव बिराजे, मंगलमय पहिचान तूं।
तीन बार परिक्रमा देवो, मङ्गल होय तुम्हारे ।।१।।
गुरु का मन्दिर बन्द होत नहिं, खुला रहत हरवार है।
जब जावो तब दरसन पावो, बैठा गुरु निर्वार है।
पांव पांव का यज्ञ समाना, सत्गुरु दे फल सारे ।।२।।

प्रातकाल पुनि अस्त काल में, गुरु को कर प्रणाम तूं।
हाथों से गुरु सेवा करले, मुख से जप गुरु नाम तूं।
श्रवण से सुन गुरु की बानी, तीनों ताप निवारे ।।३।।
कहे टेऊँ नित हृदय अन्दर, सत्गुरु को आराधि तूं।
गुरु कृपा से उभय लोक के, कारज सगले साधि तूं।
सत्गुरु जैसा दीन दयालू, और न जगत मंझारे ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ७७ ।। १३९।।

रे मन मेरे छोड़ ममत को, झूठा यह संसार है।
जैसे पानी मारूथल का, तैसे जगत असार है ।। टेक।।
थोड़ा सा जब हो प्रकाशा, थोड़ा सा अंधकार हो।
प्रत्यक्ष हो ना रूप रज्जू का, वृत्ती इदमाकार हो।
भ्रम सर्प का तबहीं पड़ता, ज्ञानियों का वीचार है ।।१।।
वृत्ती में आरूढ़ स्वामी, अविद्या है तिस पास में।
जानत ना जब वृत्ति रज्जू को, क्षोभ होत है तास में।
तब अहि भासत ज्ञान समेता, साक्षी भ्रम निवार है ।।२।।
अविद्या का परिणाम जगत यह, चेतन से विपरीत है।
नाम रूप जग मिथ्या सारा, भासत मध्य में मीत है।
प्रातीभासिक सत्ता जगत की, पल पल पलटनहार है।।३।।
जांके जाने से जग नासे, बिन जाने प्रतीति हो।
कहे टेऊँ सो जाने तिसको, जांकी गुरु में प्रीति हो।
गुरु कृपा से ब्रह्म पछानो, जग का जो आधार है।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ७८ ।। १४०।।

मानुष चोला दुर्लभ पाया, भजन करो भगवान का।
भजन हरी का निशदिन करना,
ये कर्त्तव्य इन्सान का, कहते सन्त हैं ।।टेक।।
तेज बिना ज्यों अग्नी सूनी, रवि सूना प्रकाश बिना।
चान्द बिना ज्यों यामिनि सूनी, सूना फूल सुवास बिना।
नीर बिना ज्यों सरिता सूनी, तन सूना ज्यों श्वास बिना।
भजन बिना त्यों नर तन सूना, कहना वेद पुरान का ।।१।।
बादल बिन ज्यों नीर मिले ना, बोल सके ना बैन बिना।
धर्म बिना ज्यों स्वर्ग मिले ना, देख सके ना नैन बिना।
पाप बिना ज्यों नरक मिले ना, थिर ना होवे ऐन बिना।
भजन बिना त्यों कोय न पावे, आत्म पद कल्यान का।।२।।
सर्व धर्म में सार धर्म इक, हरी भजन को जानो रे।
सब मित्रों में मित्र सचा तुम, हरी भजन को मानो रे।
सब शास्त्रों का सार सही तुम, हरी भजन पहिचानो रे।
हरी भजन ही कारण है इक, ज्ञान ध्यान विज्ञान का ।।३।।
कहे टेऊँ हरि भजन करे जो, तीनों लोक सुधारे सो।
आप सहित अपने कुल तारे, तारे पुरुष अपारे सो।
भगवत से जो बेमुख रहता, मानुष जन्म बिगाड़े सो।
हरी भजन बिन जन्म लेत वह, गर्दभ शूकर श्वान का।।४।।

॥ राग आसा भजन ॥ ७९ ॥ १४१॥

सुनो सर्व ही सजन हमारे, वचन कहूँ दुइ सार रे।
इक आत्म का रूप पछानो,
दूजा कर उपकार रे, कहते सन्त हैं ॥टेक॥
मानुष तन का लक्ष्य यही है, जाने अपना आप सदा।
भेद भ्रम सब संसा मेटे, कर गुरु मन्त्र जाप सदा।
ब्रह्म रूप निज आत्म को लख, हरले तीनों ताप सदा।
ब्रह्मानन्द में लीन करे मन, झूठा तज अहंकार रे ॥१॥
मानुष का यह मनुषपना है, करले पर उपकार सदा।
भूखे को अन्न भोजन देना, प्यासे को जल धार सदा।
रोगी को कछु औषधि देना, अतिथी को सत्कार सदा।
सब जीवों की सेव करे नित, हरि मय लख संसार रे ॥२॥
जन्म पाय निज आतम का जिन, प्रत्यक्ष ना दीदार किया।
दया युक्त हो जीव किसी का, कबहूं ना उपकार किया।
धिक् धिक् ऐसे जीवन को है, मानुष तन बेकार किया।
खाना पीना वृथा तिनका, भूमी पर वे भार रे ॥३॥
कहे टेऊँ है अब भी अवसर, संत शरण में वास करो।
ब्रह्म ज्ञान ले गुरु पूरे से, अविद्या सकल विनाश करो।
देवी गुन का हृदय अन्दर, पूर्ण तुम प्रकाश करो।
निष्कामी निर्मानी होके, सेव करो सद्वार रे ॥४॥

।। राग आसा भजन ।। ८० ।। १४२।।

सुनो रे साधो सुनो रे सन्तो देखा मैं इसरार जी,
जो जन इस का मर्म पछाने तां पर मैं बलिहार जी,
कहते साच हैं ।। टेक।।

अद्भुत वृक्ष अनोखा जामें छोटी मोटी शाख घनी।
मूल गगन है जांकी टहनी इधर उधर बहु लाख तनी।
तांके मेवे बहुत रसाले खावत क्षुधा खाक बनी।
ऐसे तरुवर की छाया को चाहत देव उदार जी ।।१।।

एक भवन दो सुरभी देखी इक छोटी इक आली है।
छोटी का रङ्ग धवल मनोहर मोटी रंग की काली है।
छोटी का है दूध रसीला पीवत उत्तम मराली है।
दूध बड़ी का पीवन वाला भ्रमत बारम्बार जी ।।२।।

पुरुष अरूपी सुन्न से गिरिया नभपुत्री तां झपट लिया।
चतुर भांति के वस्तर पहने एक एक ने ताहिं दिया।
पीछे बन गये रूप अनेका देख देख खुश होय जिया।
ब्रह्म पुत्र वह पुरुष बताकर दिखलाया निज सार जी ।।३।।

एक महल अति अद्भुत ऊँचा नैन बिना सो दृष्टि पड़े।
कैसे बनिया किसहिं बनाया अन्त न आवत वेद ररे।
भीतर जावे लौट न आवे नागा को प्रवेश करे।
कहे टेऊँ सो नागा होवे गुरु कृपा जिहँ धार जी ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ८१ ।। १४३।।

सद्‌गुरु मैंनूं कृपा करके दिखलाया इसरार जी।
आंखों देखा भूलत नाहीं याद रहत हरवार जी,
धन्य धन्य गुरुदेव ।। टेक।।
इक दिन मुड़दों की नगरी में मुझको ले गुरुदेव गये।
ब्रह्मपुत्र की मुरली सुनकर सारे मुड़दे ज़िन्दह भये।
कबरों से उठ बाहर आये नाचन में मन खूब दये।
नाचत नाचत उड़ गये नभ में बन गये अफुर अकार जी ।।१।।
एक दिवस शुभ रम्य बगीचा दिखलाने गुरुदेव चले।
सुगन्ध प्यासे वहां और भी आकर बैठे पुरुष भले।
पवन वेग के छूने से ही सबके गिर गये सीस तले।
और सीस धर ताहिं जिलाया लूटत आनन्द सार जी ।।२।।
एक दिवस गुरु भारी बन को बड़े ज़ोर से फूंक दयी।
भिन्न भिन्न वृक्षों की बहु पंक्ती जल कर भस्मी भूत भयी।
उस भस्मी में एक अनोखी जगमग ज्योती देख लयी।
देखत देखत उस ज्योती में मिल गयी भस्म अम्बार जी।।३।।
कहे टेऊँ गुर डोरी लेके सूर चान्द को बान्ध लिया।
महा अचल की ऊँच शिखर पर तिनहूँ को ठहराय दिया।
बादल बिन वहँ अमृत बरसे रज रज मुख रे ताहिं पिया।
पी पीकर गुरु मोहि पिलाया अमर भया निरधार जी ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ८२ ।। १४४।।

वो दिन भूल गया, वो दिन भूल गया ।।टेक।।

जिस दिन मात गर्भ में सोया,
पांव ऊपर सिर नीचे होया, तब तो तुम बहुता रोया ।।१।।
वहां प्रभू को पुकारा,
काढो मुझे कर्तारा, जपूंगा नाम तुम्हारा ।।२।।
हरि ने तुमको सब कुछ दीना,
धन वस्त्र गृह खाना पीना, माया में भये लवलीना ।।३।।
राम नाम को भुलाया,
तबहीं दुख को पाया, कहे टेऊँ जनम गँवाया ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ८३ ।। १४५।।

तुम साध संगति जाकर, हरिनाम को ध्याओ रे,
जीवन सफल बनाओ रे।। टेक।।

सन्तों के वचन सुनकर मन में करो विचारा।
वैराग उर में धारे जग से करो किनारा।
विषयों से मन हटाके, हृदय हरी बसाओ रे ।।१।।
पापों को छोड़ के तुम शुभ कर्म कर प्यारा।
माया से दूर रहके अपना करो उद्धारा।
गुरु शब्द की हृदय में, ज्योती अमर जगाओ रे ।।२।।
श्रद्धा धरे सन्तों की सेवा करो सदाई।
कहे टेऊँ ज्ञान लेके दिल की हरो दुआई।
संसा सकल मिटाके, सुख शान्ति में समाओ रे ।।३।।

।। राग आसा भजन ।। ८४ ।। १४६।।

सत्गुरु स्वामी सिरजनहारा।
देवो सदा मोहि गंग किनारा ।।टेक।।

सन्तों का संग होवे, कथा प्रसंग होवे।
मन में उमंग होवे, चिन्ता परिहारा ।।१।।

रहने को झाड़ी होवे, आगे फुलवाड़ी होवे।
चन्द्र उज्यारी होवे, गिरि का निज़ारा ।।२।।

महा एकान्ती होवे, मन में शान्ती होवे।
स्मरण ज़ाती होवे, ओम उच्चारा ।।३।।

जानो मुझ अपना चेरा, हृदय में करलो डेरा।
कहे टेऊँ काटो मेरा, मोह विकारा ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ८५ ।। १४७।।

मोहन मिलन को मैं आई, रे सुन ऊधव भाई,
और न जाई, शाम दुहाई ।।टेक।।

हम सब सखियां रोय रही थी, देख तुझे उठ धाई ।।१।।
मोहन मेरा क्यों नहीं आये, काहे को प्रीति लगाई ।।२।।
बहुत दिनों से देखा नाहीं, ना किस ख़बर सुनाई ।।३।।
कब आवेगा वृन्दावन में, शाम सुन्दर सुखदाई ।।४।।
कहे टेऊँ अब साच सुनाओ, क्या मथुरा जाय बसाई ।।५।।

।। राग आसा भजन ।। ८६ ।। १४८।।

मोहन सखी मन माहीं, री तुम देखत नाहीं,
आंखों माहीं, पड़ गई झाईं ।। टेक।।
बाहर क्यों तुम ढूंढ रही हो, मिलहैं और न ठाहीं ।।१।।
हम तुम सब में खेल रहा जो, निशिदिन स्मरो ताहीं ।।२।।
सब घट साक्षी चेतन कृष्ण, तव उस भेद न आहीं ।।३।।
कहे टेऊँ तुम योग कमाओ, पड़ कर गुरु की पाहीं ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ८७ ।। १४९।।

साध संगति में आना आना, आके हरि गुन गाना ।। टेक।।
साध संगति में आने वाले, बन जाते हैं भागां वाले।
अपने भाग बनाना ।।१।।
साध संगति में मोती हीरे, मिलते हैं पर धीरे धीरे।
मन में धीरज लाना ।।२।।
साध संगति में जे नित आते, मन वाञ्छित फल सेई पाते।
नेमी नेम निभाना ।।३।।
साध संगति में अमृत वर्षे, कहे टेऊँ पी गुरुमुख हर्षे।
पीकर शोक हटाना ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ८८ ।। १५०।।

गुरु की महिमा भारी भारी, वेद कहत हैं चारी ।। टेक।।
मन्तर यन्तर तन्तर जेते, गुरु बिन निष्फल जानो तेते।
गुरु मन्तर भय हारी ।।१।।

जप तप तीर्थ व्रत अपारे, गुरु बिन जानो निष्फल सारे।
गुरु संगति गुणकारी ।।२।।
वेद शास्त्र को पढ़े पढ़ावे, गुरु बिन मन को शान्ति न आवे।
गुरु विद्या ग़म टारी ।।३।।
बल बुद्धि यश जय मुक्ति बड़ाई, कहे टेऊँ सब गुरु ते पाई।
गुरु है परम भण्डारी ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ८९ ।। १५१।।

समय सफल कर सारा सारा, हरि स्मरो हरिवारा ।। टेक।।
मनुष जन्म का समय अमोलक, इनके सम ना मोती माणिक।
सन्तनि एह उच्चारा ।।१।।
द्रव्य गया तो कछु ना होया, गई तन्दुरुस्ती तां कछु खोया।
समय गये सब हारा ।।२।।
गया समय फिर हाथ न आवे, कोई कितना भी बल लावे।
तांते जप कर्तारा ।।३।।
समय बिताओगे तुम जैसे, टेऊँ बन जाओगे तैसे।
करले श्रेष्ठ अचारा ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ९० ।। १५२।।

साक्षी को तुम जानो जानो, सब घट में पहिचानो ।। टेक।।
पर को निज को जानत जो है, जाननहारा साक्षी सो है।
चेतन रूप पछानो ।।१।।

पर को निज को जो ना जाने, तांको जड़मय ज्ञानी माने।
मन में ना तिस आनो ।।२।।
प्रतिबिम्बित शुद्ध वृत्ती जोई, बिम्ब चेतन को जानत सोई।
सूर नयन ज्यों मानो ।।३।।
कहे टेऊँ गुरु ज्ञान गहीजे, साक्षी को निज रूप लखीजे।
भेद भ्रम को भानो ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ११ ।। १५३।।

मेरे सत्गुरु दीन दयाला, दे दर्शन गुरु गोपाला।
तेरे दर्शन कारण मेरा, मनुवा है मतवाला रे ।। टेक।।
चातक जैसे चाहे हरदम, स्वान्ति बूंद मुख पड़ने को।
चकुवा चकुवी चाहत जैसे, रवि के दर्शन करने को।
तैसे सत्गुरु तुम को चाहूं, जैसे धन कङ्गाला रे ।।१।।
मछली जैसे जल को चाहत, भौंरा चाहत पुष्पनि को।
भूखा जैसे अन्न को चाहे, प्रेमी चाहत सन्तनि को।
तैसे सत्गुरु तुमको चाहूं, ज्यों सरवरहिं मराला रे ।।२।।
कामिनि जैसे कन्तहिं चाहे, देह अध्यासी जीवन को।
बालक जैसे पय को चाहे, सुर ज्यों अमृत पीवन को।
तैसे सत्गुरु तुम को चाहूं, ज्यों भूमिहिं भूपाला रे ।।३।।
उमड़ उमड़ कर सागर उछले, जैसे शशि के मिलने को।
कहे टेऊँ त्यों मनुवा चाहे, सत्गुरु तुम से रलने को।
ये ही आशा पूर्ण करले, कर कृपा कृपाला रे ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ९२ ।। १५४।।

चलिये प्यारे मित्र हमारे, सन्तों के सत्संग में।
दुनिया के सब ख्याल हटाकर,चित्त लाओ प्रसंग में ।। टेक।।
ऊंचे स्वर से सन्त बुलावें, आओ प्रेमी कथा सुनावें।
कथा सुनाकर प्रेम जगाकर, मेलें अपने संग में ।।१।।
समय भया सत्संग करन का, सन्त वचन मन माहिं धरन का।
देर न कीजे हरि रस पीजे, रंग जाओ हरि रंग में ।।२।।
आप चलो सत्संग मंझारे, साथ सम्बन्धी लेकर सारे।
रिलमिल गाओ आनन्द पाओ, नाय ज्ञान की गंग में।।३।।
कहे टेऊँ सत्संगति करके, ब्रह्म भाव को हृदय भरके।
भ्रम निवारो जन्म सुधारो, अंग अंग भरे उमंग में ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ९३ ।। १५५।।

चल री प्यारी श्रुति हमारी अपने पिय के पासे।
धनी तुम्हारा रूप उदारा बसे सदा आकासे ।। टेक।।
छोड़ जिसम को ऊपर जाना, एक थान पर नफ्स टिकाना।
पकड़ धुनी को महा गुनी को, पहुंचोगी हरि वासे ।।१।।
स्मरण करते छोड़ पसारा, शब्द रस्सी का ले आधारा।
बेग़मपुर को चलना धुर को, जहाँ न काल विनासे ।।२।।
ध्यान कला से मन ठहराना,ख्याल दुनिया के निकट न लाना।
देख निज़ारे अद्‌भुत भारे, अन्तर पुञ्ज प्रकासे ।।३।।
टेऊँ गुरु यह भेद बतावे, गुरु बिन और न को बतलावे।
गुरु की चरनी लागो शरनी, कार्य होवहिं रासे ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ९४ ।। १५६।।

अमृत वेले ओम ओम ओम रटले ।।टेक।।

ब्रह्मा विष्णू शंकर आदी ओम से उपजे।
वेद शास्त्र पुराण सारे ओम से निपजे।
ओम से सारी सृष्टी भई पुस्तक पढ़ले ।।१।।

तीन मात्रा ओम में है शास्त्र सुनाते।
अकार उकार मकार अर्ध बिन्दु बताते।
ओम ईश का नाम अनादी हृदय डटले ।।२।।

चारों वस्था सफली होवे ओम उच्चारे।
चारों पद्वी होय प्राप्त ओम विचारे।
चतुर भान्ति से ओम स्मरे बाज़ी खटले ।।३।।

ओम मुनियों का गुप्त खज़ाना मूल मन्त्र है।
कहे टेऊँ ये मन जीतन का तेज़ तन्त्र है।
गुरु द्वारे ओम जपे यम फासी कटले ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ९५ ।। १५७।।

प्रात समय यह प्रभू मेरा अर्ज़ अघाओ ।। टेक।।

प्रभू तुझको लागे जेई सन्त प्यारे।
वेद शास्त्र पुराण जिनके गीत उच्चारे।
ऐसे सन्त जनों का मुझसे मेल मिलाओ ।।१।।

प्रभू तेरी याद रहे तेरा चिन्तन हो।
महिमा तेरी सुनता रहूं तेरा दर्शन हो।
श्वास श्वास से अपना प्रभू नाम जपाओ ।।२।।

मुमोक्षिनि को मोक्ष दीजे ज्ञान ज्ञानियों को।
कर्म दीजे कर्मिनि को पुनि ध्यान ध्यानियों को।
मेरी तो हरि निज चरणों में प्रीति बढ़ाओ ।।३।।
कर्म कराओ मुझसे सो जो भावे आपको।
रहे न मेरे जीवन में कुछ अंश पाप को।
कहे टेऊँ हरि अवगुण मेटे कण्ठ लगाओ ।।४।।

।। राग आसा भजन ।। ९६ ।। १५८।।

प्रात समय में सुनले स्वामी अर्ज़ हमारा।
जन्म मरण के बन्धन काटो प्रभू प्यारा ।। टेक।।
कर्म जाल में फस कर मैंने कोटि जन्म पाये।
अन्डज जेरज स्वेतज उत्भुज जूणिन में आये।
भ्रमत भ्रमत तामें देखे कष्ट करारा ।।१।।
याद करे उन कष्टों को मन कम्पत है मेरा।
और भरोसा छोड़ आसरा लीया हरि तेरा।
चौरासी से मोहि बचाओ करुणा भण्डारा ।।२।।
अपने बल से छूट सकूं ना कर्मों के फंद से।
कृपा करके बन्धन काटे मेलो निज पद से।
तुम हो सर्वज्ञ समर्थ साहब आनन्द अगारा ।।३।।
कहे टेऊँ मैं और कहूं क्या मालुम सब तुझको।
कर्मों रूपी सागर से तुम पार करो मुझको।
दीन दयालू दया करे दे मुझको सहारा ।।४।।

।। राग विहाग भजन ।। १ ।। १५९।।

प्रेम प्याला सत्गुरु वाला, राम रसाला पीया जी भरके।। टेक।।
तन मन भेट धरा गुरु आगे, दुविधा दूर भेद सब भागे।
विषय वासना विष रस त्यागे,भया उजाला जीया जी मरके।।१।।
पीवत पंगु भया मन मेरा, भूल गया सब मेरा तेरा।
मिट गया सब काल का फेरा,खुल गया ताला पीया जी घर के।।२।।
जीव ईश की गयी उपाधी, हट गयी सब वाद विवादी।
लाई पूरण ब्रह्म समाधी, भया सुखाला सोऽहम् सुमरके ।।३।।
कहे टेऊँ इस काया भीतर, लागी वृत्ती आतम अन्तर।
ज्ञान नशे गुम हो मस्ती तर, भया निहाला नियाज़ करके ।।४।।

।। राग विहाग भजन ।। २ ।। १६०।।

प्रीति झूठी है जगत की, समुझ धारे देख सयाना।
साथ संगी ना चले को, है अकेला तोहि जाना ।। टेक।।
देख धन परिवार को तुम गर्व मन में बहु किया।
कहत हो सब हैं हमारे नाहिं तेरा को सुजाना ।।१।।
शाह सिकन्दर रहन खातिर जतन बहु जग में किये।
वह भी गये कर हाथ खाली ये टिकन का नहिं ठिकाना।।२।।
ऊठ जल्दी वणिज करले भाव भक्ती ज्ञान का।
ले न दे को तोहि आगे नहिं वहां है को दुकाना।।३।।
सन्त समझाते सदा तुम जाग अविद्या नींद से।
कहत टेऊँ जे चहो सुख तन मलिन का तज गुमाना।।४।।

।। राग विहाग भजन ।। ३ ।। १६१।।

संसार के नदी से पार जाना है ज़रूर।
इस जन्म मरन चक्कर को मिटाना है ज़रूर ।। टेक।।
यह मनुष जन्म जगत में जिस ईश ने दिया।
उस ईश के नित नेम से गुन गाना है ज़रूर ।।१।।
दुरिसंग से मन मोड़ जोड़ संत संग में।
निज ज्ञान ध्यान प्रेम को मन लाना है ज़रूर ।।२।।
हर श्वास श्वास सुमर सुमर सोऽहम् नाम को।
सत् पारब्रह्म ईश दरस पाना है ज़रूर ।।३।।
कहे टेऊँ गुरु के शरन जाय ज्ञान पायके।
निज आत्मा निर्बान में समाना है ज़रूर ।।४।।

।। राग विहाग भजन ।। ४ ।। १६२।।

है सब ब्रह्म पसार प्यारे,देखो अनुभव अखियां खोले।। टेक।।
आप बगीचा आप क्यारी, आप भँवर हो करत गुञ्जारी।
आप बना गुलज़ार प्यारे, आप वृक्ष बन पँछी बोले ।।१।।
आप बना अज विष्णू शंकर, आप नृप हो प्रजा किङ्कर।
आप सगुण साकार प्यारे, आपहिं निर्गुण चेतन चोले ।।२।।
आप मदारी आपहिं बाजी, आपहिं सगली सृष्टी साजी।
आपहिं देखनहार प्यारे, आप स्थिर है आपहिं डोले ।।३।।
कहे टेऊँ जिस गुरु समझाया, हरि रंग में तिस दर्शन पाया।
आपहिं ज्ञान भण्डार प्यारे, आप अज्ञानी भ्रमे भोले ।।४।।

।। राग विहाग भजन ।। ५ ।। १६३।।

सत्संग जग में सार प्यारे,सत्संग बिन नहिं हो निस्तारा।। टेक।।
सत्संग करके नीच सुधर गये, भवसागर से पार उतर गये।
नाम तिनी निरवार प्यारे, पाया है जिन पद निर्धारा ।।१।।
सत्संग सुरतरु गंग पछानो, कामधेनु चिंतामणि जानो।
कारज देत संवार प्यारे, पाप पुंज को कर परिहारा ।।२।।
सत्संग सूर्य सम प्रकाशत, ज्ञान किरणों से तिमिर विनाशत।
आनन्द देत अपार प्यारे, चन्दन चन्द ते शीतल भारा ।।३।।
कहता टेऊँ सत्संग करके, संत वचन को उर में धरके।
अपना करो उद्धार प्यारे, सत्संग है मुक्ती का द्वारा ।।४।।

।। राग विहाग भजन ।। ६ ।। १६४।।

सुमरण में धर ध्यान प्यारे, अन्तर्मुख हो वृत्ति लगाओ।। टेक।।
सुमरण कर घट में दिन राती, प्राणायाम से हो एकान्ती।
योग की युक्ती जान प्यारे,मूल कमल को खूब दबाओ।।१।।
नाभ कमल से श्वास उठाये, तामें सोऽहं शब्द मिलाये।
कर हृदय सावधान प्यारे, नाद अनाहत ताहिं बजाओ ।।२।।
कण्ठ कमल में कर वीचारा, पाओ सुषुम्न में सुख सारा।
त्रिकुटी में कर थान प्यारे, ज्योति निरंजन तहां जगाओ।।३।।
कहे टेऊँ गुरु युक्ति विचारे, गुरुमुख चलिये दशम द्वारे।
पाये पद निर्बान प्यारे, जन्म मरण का दूख मिटाओ।।४।।

।। राग विहाग भजन ।। ७ ।। १६५।।

अपना आप पछान बन्दे, आदि रूप है जोय तुम्हारा।। टेक।।
आतम इक रस ब्रह्म अतोला, अनन्त आनन्द अखण्ड अडोल।
साक्षी सब घट जान बन्दे, सो है तेरा रूप उदारा ।।१।।
स्थूल सूक्ष्म कारण त्रेई, जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति जेई।
ये सब जड़ पहिचान बन्दे, तूं है चेतन जानन हारा ।।२।।
माया अविद्या सम्बन्ध उपाधी, जीव ईश पुनि भेद अनादी।
ये सब कल्पित जान बन्दे, तूं है इन सबका आधारा ।।३।।
कहे टेऊँ यह निश्चय कीजे, ब्रह्म भाव उर माहिं गहीजे।
तन का तज अभिमान बन्दे, झूठा है यह सब आकारा ।।४।।

।। राग विहाग भजन ।। ८ ।। १६६।।

देखो आत्म राम मनुवा, अपने हृदय माहिं प्यारा।। टेक।।
सत्कर्मों से मैल मिटाये, विक्षेप हर हरि भक्ति कमाए।
ले गुरु ज्ञान की माम मनुवा, दूर करो अज्ञान अन्धारा ।।१।।
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तीनों, मिथ्या जड़ परिणामी चीनो।
कर तुर्या विश्राम मनुवा, चेतन का जामें चिमकारा ।।२।।
आनन्द रूप सदा अविनाशी, साक्षी चेतन स्वयं प्रकाशी।
पाओ सोई धाम मनुवा, कहे टेऊँ जो सर्व अधारा ।।३।।

।। राग विहाग भजन ।। ९ ।। १६७।।

प्रभू से कर प्यार, झूठे धन का गुमान छोड़े ।।टेक।।
रावण हठ माया का कीना, अन्त समय कछु साथ न लीना।
माया दुख भण्डार, जन्म न हारो माया जोड़े ।।१।।
गर्व गञ्जों का कारून कीया, मरती बार नहीं कछु लीया।
लोक करत फिटकार, घोर नरक में सो दुख लोड़े ।।२।।
सिकन्दर ने माया बहु जोड़ी, महल मकाना सैन करोड़ी।
खाली हाथ पसार, चलिया चढ़ सो काठ के घोड़े ।।३।।
माया से जो प्रीति लगावे, कहे टेऊँ सो नरकें जावे।
राम सुमर हरबार, दुनिया का सब नाता तोड़े ।।४।।

।। राग विहाग भजन ।। १० ।। १६८।।

ऐ जिज्ञासू ब्रह्म विद्या निज हृदय में धारिये।
लोक आशा को त्यागे ब्रह्म को वीचारिये ।।टेक।।
देह हूँ वा जीव हूँ मैं मन बुद्धी वा प्रान हूँ।
ब्रह्म विद्या से अविद्या जनित संसा जारिये ।।१।।
ब्रह्म व्यापक विश्व माहीं है सदा आकाश ज्यों।
आप उस से नाहिं न्यारे अहं ब्रह्म उचारिये ।।२।।
ब्रह्म थे तुम ब्रह्म है अब जीव भ्रान्ती छोड़दे।
अन्त आदी बीज है सत् पत्र शाखा वारिये ।।३।।
कहत टेऊँ वाच्य त्यागे लक्ष्य में मन जोड़दे।
ब्रह्म साक्षी एकरस तूं भेद भ्रान्ती टारिये ।।४।।

।। राग विहाग भजन ।। ११ ।। १६९।।

निज धर्म में सीस दीजे ना करो इन्कार जी।
धर्म के युद्ध में सदा तुम वीर हो हुशियार जी ।। टेक।।
जल्द जाओ वीर उठकर धर्म के आवाज़ पर।
शीश तन मन आपना कर धर्म पर बलिहार जी ।।१।।
देख संकट धर्म से तुम पांव पीछे ना हटो।
धर्म रक्षा हेत अपना पतंग ज्यों सिर वार जी ।।२।।
धर्म हित देखो हरिश्चन्द बेचा निज परिवार को।
शिवि दधीची ज्यों धर्म हित देह अपनी डार जी ।।३।।
कहत टेऊँ धर्म का प्रचार घर घर में करो।
लोक औ परलोक पाओ शान सुख सत्कार जी ।।४।।

।। राग विहाग भजन ।। १२ ।। १७०।।

खुवाब है सब खुवाब है सब खुवाब है संसार जी।
झूठ है सब झूठ है सब झूठ है जिनसार जी ।। टेक।।
दूखमय सब दूखमय सब दूखमय परिवार जी।
कूच है सब कूच है सब कूच है घरबार जी ।।१।।
छोड़दे नर छोड़दे नर छोड़दे दुखदार जी।
खोजले नर खोजले नर खोजले सुख सार जी ।।२।।
जाउ तूं नर जाउ तूं नर जाउ सन्त द्वार जी।
ज्ञान की सुन ज्ञान की सुन ज्ञान की गुफ़्तार जी ।।३।।
पायले नर पायले नर पायले गुणहार जी।
कहत टेऊँ कहत टेऊँ कहत टेऊँ पुकार जी ।।४।।

।। राग विहाग भजन ।। १३ ।। १७१।।

ए सियाणा सोच देखो नाहिं तव संसार जी।
जगत में ममता करे क्यों जन्म जाते हार जी ।।टेक।।
धरनि पानी अग्नि वायू व्योम है कर्तार का।
इन तत्वों से जो बना तन सो किमि होय तिहार जी ।।१।।
आपसे पहले जगत था है अभी होगा पिछे।
ना बनाया आपने कछु क्यों बनत हकदार जी ।।२।।
पुत्र जाया महल माया सब पदार्थ ईश के।
गर्भ से कछु ले न आया क्यों करत अहंकार जी ।।३।।
कहत टेऊँ सोचले नर कछु न तेरा है यहाँ।
चार दिन महिमान हो तुम क्यों करत तकरार जी ।।४।।

।। राग विहाग भजन ।। १४ ।। १७२।।

ए प्यारा नाहिं तेरा को संगी संसार में।
जन्म वृथा क्यों गंवाते मोह माया जार में ।।टेक।।
धन कमावन हेत जो तुम दूर देशन जात हो।
सो जहाँ का तहं रहे ना चलत चलती बार में ।।१।।
रैन दिन जिस नारि को तुम प्यार करते बहुत हो।
मरन पीछे ना चले संग बैठ रोवत द्वार में ।।२।।
मोह कर जिस कुटुम्ब को तुम जन्म सारा पालते।
मरन पीछे आग दे वो छोड़ देत उजार में ।।३।।
कहत टेऊँ सोच देखो कछु चले ना साथ तो।
धर्म धर हरि नाम जप जो नाव हो भव धार में ।।४।।

।। राग विहाग भजन ।। १५ ।। १७३।।

ए सज्जन मैं सोच देखा मतलबी परिवार है।
साफ तुझको कहत हूँ यह कपट का व्यवहार है ।।टेक।।
भजन सत्संग से हटाए काम घर के लावते।
अन्त वेले यों कहे सब राम तव रखवार है ।।१।।
सूख सम्पति के समय में प्यार जे तुझ से करे।
विपति में वे मित्र तुमको देत ना आधार है ।।२।।
प्यार जोबन में करत है पुत्र दारा मीत जे।
वृद्धपन को देख घर से तुरत तोहि निकार है ।।३।।
कहत टेऊँ तोड़ नाता कपट वाले कुटुम्ब का।
प्रीति कर कर्तार से आधार जो हरवार है ।।४।।

।। राग विहाग भजन ।। १६ ।। १७४।।

छोड़ जग के काम झूठे धर हरी का ध्यान जी।
प्रेम अमृत का प्याला पी करो गुन गान जी ।।टेक।।
पांच तत्व के देह का तुम छोड़दे अभिमान जी।
इस जगत में आपको तुम जानले महिमान जी ।।१।।
राज मन्दिर बाग सुन्दर तख़्त अरु तूलान जी।
कोटि लश्कर सर्व शस्त्र छोड़ गये सुल्तान जी ।।२।।
कहत टेऊँ मुक्ति चाहो सीख मेरी मान जी।
साध संगति बैठ के नित जप श्री भगवान जी ।।३।।

।। राग विहाग भजन ।। १७ ।। १७५।।

ए जिज्ञासू इस जगत को झूठ करके जान तूं।
साथ तेरे ना चले कुछ एह निश्चय मान तूं।।टेक।।
जिस कुटुम्ब परिवार को तुम आपना कर जानिया।
अन्त में वे छोड़ देंगे, देख धरके ध्यान तूं ।।१।।
कंस सिकंदर आदि बहुते भूप भूमी पर भये।
हाथ खाली कर चले सब देख पढ़के पुरान तूं ।।२।।
छोड़ सब को लेहु सौदा भक्ति शुभ गुण ज्ञान का।
संग तेरे ये चलेंगे जान सत् प्रमान तूं ।।३।।
कहत टेऊँ जाग जल्दी छोड़ अविद्या नींद को।
शरण ले गुरुदेव की नित पाय पद निर्बान तूं ।।४।।

।। राग विहाग भजन ।। १८ ।। १७६।।

हे स्वामिन् सर्व व्यापक तुम सर्व आधार हो।
दीन बन्धू ज्ञान सिन्धू महिर के भण्डार हो ।।टेक।।
सर्व सृष्टी के रचानेहार तुम कर्तार हो।
पालना करके सर्व का फिर करत संहार हो ।।१।।
जगत के व्यवहार का तुम एक ही संचार हो।
अन्त तेरा को न जानत आप अपरम्पार हो ।।२।।
कहत टेऊँ ओट मेरी तुम हरी हरबार हो।
नैन चाहत हैं हमारे आप का दीदार हो ।।३।।

।। राग विहाग भजन ।। १९ ।। १७७।।

प्रेम जैसा नाहिं कोई, प्रेम सबका सार है ।। टेक।।

मनुष वा हैवान राक्षस प्रेत पंछी देवता।
प्रेम सब हैरान कीये, वेद पुराण पुकार है ।।१।।
बहुत आकिल इलम वाले चतुर पण्डित धीर जे।
प्रेम सब परेशान कीये, फिरत ज्यों मतवार है ।।२।।
कहत टेऊँ प्रेम आगे ज़ोर किसका ना चले।
प्रेम सबको बान्ध लेता, प्रेम जग आधार है ।।३।।

।। राग विहाग भजन ।। २० ।। १७८।।

ओट ले हरिनाम की जो सर्व का रखवार जी ।। टेक।।

भक्तजन प्रह्लाद को जब बाप दुख देने लगा।
राम के आधार से तब, तां भया जयकार जी।।१।।
जब दु:शासन द्रोपदा तन नगन करने को लगा।
श्याम शरणी से भये तब, ताहिं चीर अपार जी।।२।।
बाज़ तरु पर बधिक नीचे तीतर बैठा बीच में।
सांप से दोनों मरे लव, बचा हरि आधार जी।।३।।
राम की जिन ओट लीनी दूख ना तिन पाइया।
कहत टेऊँ लोक तीनों, तां करत सत्कार जी।।४।।

।। राग विहाग भजन ।। २१ ।। १७९।।

अगर चाहो मोक्ष को तुम प्रेम गुरु से पावना ।। टेक।।
राख वृत्ति विवेक माहीं श्रुति शब्दे जोड़िये।
नृत्ति गुरु मूर्ति में राखो चरण चित्त में ध्यावना ।।१।।
मान आज्ञा पग उठाओ हाथ से सेवा करो।
ज्ञान गुरु का धार हृदय वाच से गुण गावना ।।२।।
श्वास से गुरु नाम लीजे धन लुटाओ सेव में।
कान से गुरु बैन सुनिये पकड़ गुरु की दावना ।।३।।
कहत टेऊँ सकल वस्तू भेट दे गुरुदेव को।
मनुष गुरु को नाहिं मानो राख हरि की भावना ।।४।।

।। राग विहाग भजन ।। २२ ।। १८०।।

भाव धारे मीत मेरे सन्त द्वारे जावना ।। टेक।।
सिन्धु सत्संग मार डुबकी, शुक्ति ले सत् शब्द की।
अर्थ मोती को निकाले, हार हृदय पावना ।।१।।
बाग़ सत्संग माहिं तरु सम सन्त सारे हैं फले।
प्रेम कर से तां हिलाके, वचन फल ले खावना ।।२।।
साध संग सुर धाम सम है सन्त सुरवर ताहिं में।
ज्ञान अमृत पी उन्हों संग, ब्रह्म आनन्द रावना ।।३।।
कहत टेऊँ साध संग का वेद यश नित गावते।
जीव को निज ब्रह्म कर हैं, सन्त संग सम बावना ।।४।।

।। राग धनाश्री भजन ।। १ ।। १८१।।

मन मोहन की मुरली ऊपर,जाऊँ मैं बलिहार सखीरी ।। टेक।।
सुन सुन सुरतां भयी सुहागिन, पाया अनन्द अपार सखीरी।।१।।
मात पिता धन धाम कुटुम्ब की, भूल गयी सब सार सखीरी।।२।।
देवी देव सब सेव करत हैं, सन्तों का आधार सखीरी।।३।।
कहे टेऊँ मन मोहन मुरली, बाज रही निर्धार सखीरी।।४।।

।। राग धनाश्री भजन ।। २ ।। १८२।।

कृपा करके सत्गुरु मुझको दीना दर्शन दान सखीरी ।। टेक।।
जन्म जन्म के भाग जगे हैं, आये घर भगवान सखीरी।।१।।
आज दर्द दुख दूर भये सब, भया कुशल कल्यान सखीरी।।२।।
आज उपाधी भ्रान्ति गयी सब, उपजा निर्मल ज्ञान सखीरी।।३।।
कहे टेऊँ मैं सत्गुरु ऊपर, वारौं तन मन प्रान सखीरी।।४।।

।। राग धनाश्री भजन ।। ३ ।। १८३।।

मोहि मिलिया सुखधाम हरीजन, निर्वैरी निष्काम हरीजन ।। टेक।।
गंगा सम जे निर्मल रहते, पाप ताप सब मन के दहते।
सुमरे हरि का नाम हरीजन ।।१।।
तरुवर जैसे सहकर तितिक्षा, सब जीवों की करहैं रक्षा।
करते पूरण काम हरीजन ।।२।।
अन्तर बाहर रहत चन्दन ज्यों, निशदिन गर्जत बरसत घन ज्यों।
हरत हृदय की घाम हरीजन ।।३।।
कहता टेऊँ सम वीचारी, शील सन्तोषी परम उदारी।
सूरत सुन्दर श्याम हरीजन ।।४।।

।। राग धनाश्री भजन ।। ४ ।। १८४।।

राम सुमर सुखधाम मेरे मन।

होवैं पूर्ण काम मेरे मन ।। टेक।।

मात पिता सुत मित अर्धंगी, अन्त काल में होय न संगी।

सब कहते जप राम मेरे मन ।।१।।

राम नाम जप केते उधरे, नामा सधना सैना सुधरे।

पाया उर आराम मेरे मन ।।२।।

राम नाम रसना से रटले, जम की फासी ज्ञान से कटले।

रहिये नित निष्काम मेरे मन ।।३।।

कहे टेऊँ सो है त्रिकाली, हर्ता कर्ता अगम अकाली।

सब घट देखो श्याम मेरे मन ।।४।।

।। राग धनाश्री भजन ।। ५ ।। १८५।।

सन्तों का कर संग मेरे मन, सन्तों का कर संग।। टेक।।

संतों के संग कर वीचारा, जान जगत का झूठ पसारा।

आतम ब्रह्म अभंग मेरे मन ।।१।।

सन्तों संग पी प्रेम प्याला, आठों याम रहो मतिवाला।

निर्भय होय निसंग मेरे मन ।।२।।

सन्तों संग हरि नाम उच्चारो, पाप ताप सन्ताप निवारो।

लगे न यम का डंग मेरे मन ।।३।।

सन्तों से ले ज्ञान विज्ञाना, कहे टेऊँ कट भ्रम अज्ञाना।

लावो आत्म रंग मेरे मन ।।४।।

।। राग धनाश्री भजन ।। ६ ।। १८६।।

जागी जप गुरु नाम मेरे मन, जागी जप गुरु नाम ।। टेक।।
गफ़्लत को तज नाम सुमरले, गुरु मूरत को हृदय धरले।
छोड़ कल्पना काम मेरे मन ।।१।।
श्वास श्वास से सुमरण करिये, जन्म मरण के दुख को हरिये।
पाओ आदी धाम मेरे मन ।।२।।
काल व्याल का डर नहिं जामें, सुमरण कर तुम पहुंचो तामें।
जो है सुन्दर गाम मेरे मन ।।३।।
आदि पुरुष से सुरति मिलाओ, कहता टेऊँ आप भुलाओ।
पाओ नित विश्राम मेरे मन ।।४।।

।। राग धनाश्री भजन ।। ७ ।। १८७।।

राम सुमर सुख मूल मेरे मन, राम सुमर सुख मूल।। टेक।।
जिस प्रभू ने नर तन दीना, तिस प्रभू का नाम न लीना।
भारी कीनी भूल मेरे मन ।।१।।
झूठी काया झूठी माया, तांसे तुम क्यों नेह लगाया।
अन्त सहेंगे शूल मेरे मन ।।२।।
जो हरि तेरा अन्त सहाई, प्रीति उसी से ना तुम पाई।
रहे विषय रस फूल मेरे मन ।।३।।
कहे टेऊँ जे सुख को चाहो, हरदम राम नाम गुण गाओ।
प्रेम हिण्डोले झूल मेरे मन ।।४।।

।। राग धनाश्री भजन ।। ८ ।। १८८।।

सद्गुरु का हो दास मेरे मन, सद्गुरु का हो दास ।। टेक।।
इधर उधर का छोड़ भटकना, गुरु चरणे कर वास मेरे मन।।१।।
गुरु आज्ञा से काम करो सब, धारे उर विश्वास मेरे मन ।।२।।
श्रद्धा से गुरु मन्त्र लेके, तांका कर अभ्यास मेरे मन ।।३।।
कहे टेऊँ गुरु कृपा से सब, कारज होवहिं रास मेरे मन ।।४।।

।। राग धनाश्री भजन ।। ९ ।। १८९।।

गोविन्द को न बिसार मेरे मन,गोविन्द को न बिसार।। टेक।।
ऊठत बैठत सोवत जागत, हरि का नाम उच्चार मेरे मन।।१।।
काया माया तरुवर छाया, तांका ममत निवार मेरे मन।।२।।
राम नाम का सुमरण करके, अपना जन्म सुधार मेरे मन।।३।।
कहे टेऊँ इक निमख न भूलो, हरि सुमरो हरबार मेरे मन।।४।।

।। राग धनाश्री भजन ।। १० ।। १९०।।

को चाहत कुछ को चाहत कुछ,
हरिजन चाहत हरि सुमरन को ।। टेक।।
गुरुमुख चाहत गुरु का दर्शन, यात्री चाहत गंगा परसन।
तपसी चाहत हरदम वन को ।।१।।
नेमी चाहत नेम निभाना, प्रेमी चाहत प्रेम बढ़ाना।
धर्मी चाहत पालन पन को ।।२।।

दानी चाहत करलूं दाना, मानी चाहत होवे माना।
लोभी नर नित चाहत धन को ।।३।।
कहे टेऊँ तिय चाहत कन्ता, सन्त सेवी चाहत है सन्ता।
भूखा हरदम चाहत अन्न को ।।४।।

।। राग धनाश्री भजन ।। ११ ।। १९१।।

जिस पर सत्गुरु कृपा धारे, सो सुमरे हरि नाम प्यारे।। टेक।।
जिसको सत्गुरु शिक्षा दे सो, सेव करत निष्काम ।।१।।
जिसको सत्गुरु प्रेम पिलावे, सो भर पीवत जाम ।।२।।
जिसको सत्गुरु अलख लखावे, पावत सो सुख धाम ।।३।।
कहे टेऊँ जिस सत्गुरु मिलिया, पूरण भये तिस काम ।।४।।

।। राग धनाश्री भजन ।। १२ ।। १९२।।

आज मेरे घर सन्त पधारे, मोहि मिले भगवान सखीरी ।। टेक।।
पर उपकारी धीरज धारी, पूर्ण पुरुष सुजान सखीरी ।।१।।
निष्कामी निर्मोही निर्मल, निर्द्रोही निर्मान सखीरी ।।२।।
सहनशील समदर्शी शीतल, सर्व सुखों की खान सखीरी।।३।।
कहे टेऊँ कृपा कर आये, ज्ञानवान गुणवान सखीरी ।।४।।

।। राग टोड़ी भजन ।। १ ।। १९३।।

मन राम शरण नहीं आया रे, तुम वृथा जन्म गंवाया रे ।। टेक।।
मात गर्भ इकरार किया जो, मूरख वचन बिसार दिया सो।
नाम हरी का नाहिं लिया तो, माया भरम भुलाया रे ।।१।।
यौवन माहिं बहुत मद कीना, दीननि को तुमने दुख दीना।
भोग विषय के रस में भीना, नारी संग लिपटाया रे ।।२।।
बूढ़ापन में तृष्णा जागी, माया की मन ममता लागी।
जारे तुमको चिन्ता आगी, कम्पन लागी काया रे ।।३।।
कहता टेऊँ सुन मन मेरा, जग में साथी ना को तेरा।
पूरण गुरु का होकर चेरा, करले श्वास सजाया रे ।।४।।

।। राग टोड़ी भजन ।। २ ।। १९४।।

सदा गोविन्द के गुण गाओ रे,
हरि का नाम हृदय में ध्याओ रे ।। टेक।।
झूठे जग में ममता करके अपने को न फसाओ रे।
भोग जगत के रोग जानके तांसे चीत हटाओ रे ।।१।।
स्वार्थ का परिवार सभोई तांसे ना मन लाओ रे।
स्वार्थ बिन हैं सन्त सनेही तिनसे नेह लगाओ रे ।।२।।
कहता टेऊँ अवगुन त्यागे सबसे सार उठाओ रे।
ऊठत बैठत सोवत जागत नाम जपे सुख पाओ रे ।।३।।

।। राग टोड़ी भजन ।। ३ ।। १९५।।

तव जीवन को धिक्कारा हरि के भजन बिना ।। टेक।।
बालापन खेलन में खोया कब हँसिके कब रोयके।
सार असार की समझ गंवाई, मूण्ढमती तुम होयके।
यौवन में सुन्दर नारी, अति लागी तुझको प्यारी।
दुख मात पिता को दीना, पुनि कीना पाप अपारा ।।१।।
बूढ़ापन के माहिं तेरा भया निर्बल शरीर जी।
आंख न देखे कान सुने नहिं दान्त गये अकसीर जी।
तब तृष्णा लागी धन की, नहिं ममता मेटी मन की।
आय चिन्ता रोग सताया, मन मोह लगा अति भारा ।।२।।
तीन अवस्था वृथा हारी किया न कछु वीचार जी।
झूठ कपट धोखेबाज़ी का सिर पर धारा भार जी।
अब काल निकट है आया, कहे टेऊँ ना हरि ध्याया।
कछु पुरुषार्थ नहिं कीना, यह जन्म गंवाया सारा ।।३।।

।। राग टोड़ी भजन ।। ४ ।। १९६।।

ए जिज्ञासू नाम का कर जाप तूं।
पाय मन आराम मेटे ताप तूं ।। टेक।।
त्याग माया मोह ममता मान को,
दान तीर्थ व्रत से हर पाप तूं ।।१।।
ना बढ़ाओ वैर विरोध विषाद को,
इस जगत में है मुसाफिर आप तूं ।।२।।

को नहीं किसका संगी संसार में,
जान झूठे सुत त्रिया माँ बाप तूं ।।३।।
कहत टेऊँ पाय आत्म ज्ञान को,
मेट भ्रान्ती भेद संशय साप तूं ।।४।।

।। राग टोड़ी भजन ।। ५ ।। १९७।।

सन्तों से ले ज्ञान, आत्म का धरले ध्यान।
तब तेरा होवे कल्यान ।। टेक।।
श्रद्धा से जा सन्त द्वारे, सेवा करिये प्रेम से प्यारे।
मान तजे हो जा निर्मान ।।१।।
सन्तों जैसा और न दाता, सन्त जगत के हैं पित माता।
दूख कटे दे सूख महान ।।२।।
सन्त हरी इक रूप पछानो, तामें भेद न रंचक मानो।
वो निर्गुन ये सगुण पछान ।।३।।
सन्तों का संग है सुखदाई, कहे टेऊँ हो अन्त सहाई।
तांसे मिल करो हरिगुन गान ।।४।।

।। राग टोड़ी भजन ।। ६ ।। १९८।।

विपति मेरी दूर करो महराज ।। टेक।।
भूप हरिश्चन्द धर्म के कारण दीना सर्व समाज।
काट कष्ट तिहँ दर्शन दीया होया जय आवाज़ ।।१।।
दुर्योधन जब द्रोपदा को करत नगन मध्य राज।
सहस्र वस्त्र दे तब तांकी राखी सभा में लाज ।।२।।

बच्चे बिल्ली के रखे आँव में कुम्हारी के काज।
नरसिंह हो हरनाकश मारा पत राखी पहलाज ।।३।।
कहे टेऊँ कर जोड़ पुकारे सुनो ग़रीबनिवाज।
प्रत्यक्ष अपना दर्शन दीजे पाऊँ सुख स्वराज ।।४।।

।। राग टोड़ी भजन ।। ७ ।। १९९।।

मेरे मन मत कर तन अभिमान।
पांच तत्व का तन यह क्षणभङ्ग इक दिन जरत मसान।। टेक।।
तन अभिमान हरनाकश कीना कहलाया भगवान।
नरसिंह रूप धरे हरि तिसका तुरत निकाला प्रान ।।१।।
तन अभिमान लङ्कपति कीना कहलाया बलवान।
राम उसीका शीश उड़ाया रहा न नाम निशान ।।२।।
तन अभिमान दुर्योधन कीना कहलाया सुल्तान।
भीम गदा से मारा तांको टूटा सब मद मान ।।३।।
हस्ती उनकी नाहिं रही जिन कीया गर्व गुमान।
कहे टेऊँ तुम तांते उर में धार ग़रीबी ज्ञान ।।४।।

।। राग टोड़ी भजन ।। ८ ।। २००।।

मेरे मन सुमरन से लिंव लाइ।
तृष्णा त्यागे थिर कर आसन इत उत चित न डुलाइ ।। टेक।।
गुरु की मूरत धारे उर में फुरना सर्व हटाइ।
श्वास श्वास से सुमरन करले वृथा नाहिं गंवाइ ।।१।।
ऊठत बैठत सोवत जागत गुरु का शब्द कमाइ।
कहे टेऊँ अन्तर्मुख होके साक्षी माहिं समाइ ।।२।।

।। राग टोड़ी भजन ।। ९ ।। २०१।।

समझ मन झूठा है संसार।

मृग तृष्णा का जल ज्यों मिथ्या तैसे जगत असार ।। टेक।।

मात पिता सुत त्रिया आदी झूठा सब परिवार।

भूल न इससे प्रीति लगाओ तोड़ मोह का जार ।।१।।

काल दमामा शिर पर बाजे सुनता क्यों न गँवार।

इक दिन तुमको आय अचानक मार करे मुड़दार ।।२।।

गाफ़िल गफ्लत नीन्द त्यागे जल्दी हो हुशियार।

कहे टेऊँ जप राम नाम को पावो मोक्ष द्वार ।।३।।

।। राग टोड़ी भजन ।। १० ।। २०२।।

जगत में कीना नहिं उपकार।

निशदिन पेट भरन हित तुमने कर्म किये बदकार ।। टेक।।

आसा तृष्णा के वश होके कीने पाप अपार।

नेक कर्म तुम एक न कीना पड़ा लोभ के लार ।।१।।

मानुष तन दुर्लभ यह तुमने दिया भोग में डार।

दीन जनों को सुख ना दीया तांते तोहि धिक्कार ।।२।।

दया धर्म बिन तेरा जीवन सारा है बेकार।

कहे टेऊँ अब भी कछु करले जांते होय उद्धार ।।३।।

।। राग टोड़ी भजन ।। ११ ।। २०३।।

मेरे मन मत कर तूं अहंकार।

सुन्दर देही देख न भूलो इक दिन होवे छार ।। टेक।।

नर अभिमानी महा अज्ञानी रहत सदा गेंवार।

अपने को अति ऊँचा मानत करते पाप अपार ।।१।।

धन जोबन का मान त्यागे क्षमा गरीबी धार।

कहे टेऊँ सुख माहिं गरीबी कहते सन्त पुकार ।।२।।

।। राग टोड़ी भजन ।। १२ ।। २०४।।

जगत में सो नर पशू समान।

वृथा खोवत मनुष जन्म जो करके तन अभिमान ।। टेक।।

व्यर्थ वाद विवाद करे जो सुने कथा नहिं कान।

साध संगति से मिल कर कबहूं करे न हरिगुन गान ।।१।।

निशदिन पेट भरन के हित जो करता पाप महान।

मोह ममत में फस कर जोई करे और की हान ।।२।।

परमेश्वर का दिल में जोई धरत न कबहूं ध्यान।

कहे टेऊँ गुरु शरनी पड़ कर करत न निज कल्यान ।।३।।

।। राग टोड़ी भजन ।। १३ ।। २०५।।

धर्म बिन जीवन है बेकार।

धर्म विमुख नर नरके जावत कहते वेद पुकार ।। टेक।।

क्षमा ग़रीबी त्यागे जो नर करत क्रोध अहंकार।

दया छोड़ दीनन को दुख दे तांको है फटकार ।।१।।

साचा मीठा नहिं बोलत जो कड़वे असत् उच्चार।
मन इन्द्रियों को जीत सके नहिं तांका जनम असार ।।२।।
दान देत नहिं शुभ पात्र जो राखत धन से प्यार।
त्याग शील जो करत उपाधी जग में ताहिं धिकार ।।३।।
पवित्रता बिन रहत अशुद्ध जो तृष्णा मन में धार।
कहे टेऊँ सो शान्ति न पावे भटकत बारम्बार ।।४।।

।। राग टोड़ी भजन ।। १४ ।। २०६।।

जाऊँ मैं सद्गुरु पै बलिहार।
मोहि भृङ्ग सम कीया जिसने शब्द सुनाये सार ।।टेक।।
मोह नींद से मोहि जगाया सद्गुरु देव पुकार।
ज्ञान नैन तब खुले हमारे गया स्वप्न संसार ।।१।।
कूकर सम मैं काच महल में भौंकत भेद पसार।
कर कृपा गुरु ज्ञान बताया भूला भ्रम विकार ।।२।।
अन्ध कूप जग में मैं पड़कर पाया दूख अपार।
तांसे सद्गुरु मोहि निकाला अपनी कृपा धार ।।३।।
कहे टेऊँ केहर सम मुझसे भूला निज आकार।
तोड़ भ्रम गुरु आप लखाया तांको करूं जुहार ।।४।।

।। राग टोड़ी भजन ।। १५ ।। २०७।।

प्रेम बिन जीवन निष्फल जान।
ऋषी मुनी सब सन्त कहत यह शास्त्र वेद पुरान ।।टेक।।
प्रेम बिना है निष्फल जप तप तीर्थ व्रत स्नान।
कर्म धर्म यज्ञ योग प्रेम बिन वृथा संयम दान ।।१।।

प्रेम बिना है निष्फल जग में खान पान पहरान।
जाति पाति कुल भेष पन्थ सब वृथा महल मकान ।।२।।
प्रेम बिना है निष्फल पढ़ना पूजा अर्चन ध्यान।
श्रवण सुमरन कथा कीर्तन वृथा सब गुण ज्ञान ।।३।।
प्रेम बिना सब साधन फीके जीना मृतक मान।
कहे टेऊँ तांते मन में इक प्रेम धार प्रधान ।।४।।

।। राग टोड़ी भजन ।। १६ ।। २०८।।

प्रेम बिन रीझत ना भगवान।
प्रेम करे जिन हरि को पाया तिनका करूँ बयान ।।टेक।।
प्रेम करे गुह ने रघुवर से पाया बहु सन्मान।
शबरी ने हरि दर्शन कीना मुक्त जटायू मान ।।१।।
प्रेम विभीषण हरि से करके पाया राज महान।
जामवन्त नल नील उधर गये अंगद पुनि हनुमान ।।२।।
प्रेम सुधामे हरि से कीया कंचन हुआ मकान।
गोपिनि कृष्ण को वश कीना प्रेम करे प्रधान ।।३।।
कहे टेऊँ हरि प्रेम से मिलता नहिं मिलता विधि आन।
तांते प्रेम करो प्रभू से तजकर मान गुमान ।।४।।

।। राग टोड़ी भजन ।। १७ ।। २०९।।

करो मन गुरु भक्ती प्रधान।
गुरु भक्ती की महिमा कहते शास्त्र सन्त सुजान ।।टेक।।
पूरण श्रद्धा गुरु में धारे सेव करो तज मान।
पाद पद्म पर दण्डवत करके लीजे आतम ज्ञान ।।१।।

तर्क तजे विश्वास धरे उर मानो गुरु फरमान।
गुरु ऊपर तुम सर्वस्व वारे तन मन धन दे दान ।।२।।
पारब्रह्म का रूप समझ कर धरले गुरु का ध्यान।
कहता टेऊँ इस विधि तेरा निश्चय हो कल्यान ।।३।।

।। राग टोड़ी भजन ।। १८ ।। २१०।।

करो सब जीवों का कल्यान।
दीन दयालू अरज़ हमारा सुनिये देकर कान ।। टेक।।
महा भयानक देख समय को डरपत सकल जहान।
कृपा कर सब जीवों को तुम देवो निर्भय दान ।।१।।
भव सागर के घोर चक्कर में भरमत जीव अजान।
चरण कमल की नाव चढ़ाकर पार करो भगवान ।।२।।
सङ्कट मोचन भव दुख भञ्जन तेरा नाम सुजान।
दूख हरो सब जीवन के तुम अपना बिरद पछान ।।३।।
कहे टेऊँ कर जोड़ अरिदासा महिर करे महिरबान।
सब जीवन को देवो प्रभू शान्ति सुमति गुण ज्ञान ।।४।।

।। राग टोड़ी भजन ।। १९ ।। २११।।

मेरे मन करले सौदा सार।
देश छोड़ परदेश में आये लीजे नाम व्यापार ।। टेक।।
सम दम श्रद्धा उपशम तितिक्षा धर सन्तोष विचार।
तन मन धन वाणी से करले दीनों पर उपकार ।।१।।

मैत्री करुणा मुदिता उपेक्षा चारों हृदय धार।
नवधा भक्ती नौका में चढ़ भव जल उतरो पार ।।२।।
ध्यान धारणा लाय समाधी देखो दिव्य दीदार।
ज्ञान विज्ञान वैराग्य धरे तुम पाओ सूख अपार ।।३।।
कहे टेऊँ यह साचा सौदा मिलता सन्त द्वार।
प्रेम भाव का पैसा देके अबहीं लेहु उदार ।।४।।

।। राग टोड़ी भजन ।। २० ।। २१२।।

मेरे मन सन्तों का कर संग।
सन्त स्वरूप हरी का जानो निर्मल जांके अंग ।।टेक।।
सन्त सज्जन दे सत् उपदेशा करत कुमति को भंग।
शम दम आदी साधन देके लावत आत्म रंग ।।१।।
सन्त जनों के मुख से हरदम सुनो प्रेम प्रसंग।
तांका मनन निदिध्यासन करके पाओ धाम उत्तंग ।।२।।
सन्तों का सत्संग जगत में करत कीट को भृङ्ग।
मैले मन को निर्मल करते जैसे पावन गंग ।।३।।
कहे टेऊँ कर संग सन्तों का उर में धार उमंग।
सन्तों की कृपा से कबहूं काल न मारे डंग ।।४।।

।। राग टोड़ी भजन ।। २१ ।। २१३।।

मेरे मन हीरा जन्म न हार।
मानुष देही दुर्लभ तुझको मिले न बारम्बार ।।टेक।।

लख चौरासी जोनिन का है मानुष तन सरदार।
पूरब पुण्य ते यह तन पाया तांका कर निस्तार ।।१।।
मोह नींद से जल्दी जागो गफ्लत छोड़ गंवार।
सोय सोय बहु जन्म गंवाये अब जागन की बार ।।२।।
देह नगर में चोर फिरत हैं काम क्रोध अहंकार।
ज्ञान खड्ग से मारे तिनको अपना करो उधार ।।३।।
सन्तों का संग निशदिन करके वेद वाक्य वीचार।
कहता टेऊँ इस विधि प्यारे अपना जन्म सुधार ।।४।।

।। राग टोड़ी भजन ।। २२ ।। २१४।।

मेरे मन चाहो जे कल्यान।
सन्तों से नित श्रवण कीजे सद् उपदेश सुजान ।। टेक।।
नौधा भक्ती ज्ञान साधन में पहला श्रवण जान।
तां बिन योग न भक्ती होवे ना हो ज्ञान विज्ञान ।।१।।
भूप परीक्षित श्रवण कीना श्रीमद्भागवत पुरान।
काल सांप के भय को मेटे पाया पद प्रधान ।।२।।
कथा श्रवण हित पृथु ने मांगा हरि से सहसदश कान।
पार्वती ने श्रवण कीना शिव से ज्ञान महान ।।३।।
सुना सूत से ऋषियों ने भी पुराणों का वख्यान।
कृष्ण से गीता सुन अर्जुन होया अति बलवान ।।४।।
जिसने जग में जो कछु पाया श्रवण से पहिचान।
कहे टेऊँ श्रद्धा से तुम भी सुनलो गुरु से ज्ञान ।।५।।

।। राग टोड़ी भजन ।। २३ ।। २१५।।

स्मर मन सत्नाम साक्षी सार।
सत्नाम साक्षी गुरु से लाखी, करके मन वीचार ।। टेक।।
सत्नाम साक्षी का मंत्र है, बन्धन काटन हार।
दया करे गुरु देवे जिसको, तिसका होय उद्धार।।१।।
सत्नाम साक्षी हृदय धारो, पाओ शान्ति भण्डार।
अर्थ सहित तुम जान इसी को, पाओ मोक्ष द्वार।।२।।
सत् तो सत् है नाम निरोगी, साक्षी चिद् आकार।
ब्रह्म स्वरूपी सत्नाम साक्षी, सब जग का आधार।।३।।
कहे टेऊँ जप सत्नाम साक्षी, निशिवासर हरबार।
इस मंत्र के जाप करन से, टूटे जम का जार।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। १ ।। २१६।।

मेरी दिल देवानी दर्शन गुरु प्यासी।
बिना देख दीपक पतंग ज्यों उदासी ।। टेक।।
ज्यों वाम कामी, चहत दाम दामी।
अनल गगन ठामी, मछी नीर वासी ।।१।।
संसारी ज्यों सुत कर, करे आश दर दर।
भँवर फूल ऊपर, गऊ बछड़े पासी ।।२।।
ज्यों कंत नारी, शस्त्र सूर धारी।
दवा दोख्य प्यारी, चन्दन अहि निवासी ।।३।।
चकवी पीव पावे, सिपी स्वान्ति धावे।
मुक्ता हंस खावे, जोगीजन अभ्यासी ।।४।।

ज्यों घन को मोरा, प्रिय चन्द चकोरा।
त्यों गुरु की लोरा, टेऊँ उर में आसी ।।५।।

।। राग भैरवी भजन ।। २ ।। २१७।।

तूं है ब्रह्म रूपा, अनादी अपारा।
अखण्ड तूं अनूपा, कहत वेद चारा ।।टेक।।
न तूं ध्येय ध्याना, न तूं ज्ञेय ज्ञाना।
न तूं इन्द्रिय प्राना, मिला नाहिं न्यारा ।।१।।
न तूं कर्म करता, न तूं धर्म धरता।
न जमता न मरता, न तूं अंग अकारा ।।२।।
नहीं आदि तेरी, नहीं अन्त हेरी।
नहीं मित्र वैरी, न तूं तम उज्यारा ।।३।।
न तूं मूण्ढ ज्ञानी, न तूं भिक्षुक दानी।
कहे टेऊँ बानी, नहीं तो मँझारा ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ३ ।। २१८।।

सुनो सज्जन मीता, पढ़ो ज्ञान गीता।
जन्म जात बीता, अमुल श्वास सारे ।।टेक।।
धर्म शील धारो, हरी हर उच्चारो।
ममत मोह टारो, चलो चारु चारे ।।१।।
करो सफल चोला, समय यह अमोला।
बनो मीत गोला, गुरू के द्वारे ।।२।।
वचन गुरु ध्याओ, सुरति को समाओ।
कहे टेऊँ पावो, मुक्ति धाम प्यारे ।।३।।

।। राग भैरवी भजन ।। ४ ।। २१९।।

सुनो वचन प्यारा, करो मन विचारा।
यहां तूं मुसाफिर, नहीं रहन हारा ।। टेक।।
महल ये मकाना, दुनिया का खज़ाना।
तुझे छोड़ जाना, पड़ेगा पसारा ।।१।।
मोह नीन्द सोया, मरम तो न होया।
अमुल जन्म खोया, सुन्दर एह सारा ।।२।।
करत अशुभ काजा, नहीं तोहि लाजा।
बजत काल बाजा, सुनत ना गँवारा ।।३।।
अगर कुशल चाहो, हरी शरन जाओ।
कहे टेऊँ पाओ, दरस हरि उदारा ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ५ ।। २२०।।

लगी है जिसीको बिरह की कटारी।
दई काट तिसने ममत मोह जारी ।। टेक।।
हरे भोग आसा, रहत सो उदासा।
करे ब्रह्म वासा, पाए शान्ति भारी ।।१।।
तजे सर्व नाता, हरी रंग राता।
मधुर गीत गाता, मगन खुद खुमारी ।।२।।
कभी रोय हसता, कभी झँगल बसता।
कहूँ नाहिं फसता, चले चाल न्यारी ।।३।।
जगत झूठ जानी, तजे लाभ हानी।
टेऊँ सो सैलानी, रहे उम्र सारी ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ६ ।। २२१।।

सुनो मीत मेरे वचन सूखकारी।
तजे मोह निद्रा करो अब तयारी ।। टेक।।
पकड़ चरन गुरु का, जपो नाम हरि का।
तजे ममत घर का, रहो निर्विकारी ।।१।।
हरे भेद भ्रान्ती, धरो चीत शान्ती।
लखे ब्रह्म क्रान्ती, कटो मोह जारी ।।२।।
ब्रह्म ध्यान धरिये, भरम पांच हरिये।
कहे टेऊँ तरिये, जगत सिन्धु भारी ।।३।।

।। राग भैरवी भजन ।। ७ ।। २२२।।

जो मनमुख मति का खोटा, सो नितहीं खावत चोटा ।। टेक।।
पढ़े पढ़ावे जोड़े कविता, सन्त गुरू से प्रेम न करता।
पावत है सो टोटा ।।१।।
सहसे नारि करे शृंगारा, शोभा पाय न बिन भर्तारा।
भोगत दुख सा कोटा ।।२।।
मनमुख का मन शान्ति न पावे, भावें ब्रह्मा आ समझावे।
ज्यों कूप का लोटा ।।३।।
मनमुख बन का गर्दभ जानो, मालिक बिन वो दुखिया मानो।
खेत चरे सह सोटा ।।४।।
कहता टेऊँ तीन लोक में, मनमुख दुखिया हर्ष शोक में,
बिन सद्गुरु के ओटा ।।५।।

।। राग भैरवी भजन ।। ८ ।। २२३।।

जो त्यागे सत्गुरु ओटा, सो बेमुख बेहद खोटा ।।टेक।।
गुरु पूरे को पिठ जो देवे, विष्ठा का सो कीड़ा होवे।
काल पकड़ तिस चोटा ।।१।।
गनिका का चित ज्यों थिर नाहीं,बेमुख भटके त्यों भव माहीं।
मान आपको मोटा ।।२।।
बेमुख का मन भूण्ड समाना, सुगन्धी छोड़ करे मल पाना।
पापों की ले पोटा ।।३।।
कहे टेऊँ सुख चाहो प्यारा, बेमुख से नित करो किनारा।
वेद देत यह वोटा ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ९ ।। २२४।।

श्रीराम बोलो हरे राम बोलो,
सदा प्रेम से तुम श्रीराम बोलो ।।टेक।।
श्रीराम का नाम संकट हरे, श्रीराम सब काज पूरण करे।
श्रीराम सुमरे अधम बहु तरे,
जपे राम तुम भी करो सफल चोलो ।।१।।
श्रीराम का नाम पल पल रटो, जपे नाम बन्धन जगत के कटो।
चलो राम मग में न पीछे हटो,
विषय के रसों में जन्म नाहिं रोलो ।।२।।
कहे टेऊँ जोई जपे राम को, नहीं जात सोई नर्क धाम को।
लहे लोक परलोक आराम को,
रही जग में पाए अभय पद अडोलो ।।३।।

।। राग भैरवी भजन ।। १० ।। २२५।।

हरी ओम् बोलो, हरी ओम् बोलो।
सदा तुम प्यारा, हरी ओम् बोलो ।।टेक।।
जगत का अधारा हरी ओम् है, सर्व का सहारा हरी ओम् है।
मुक्ति का द्वारा हरी ओम् है,
सर्व से न्यारा हरी ओम् बोलो ।।१।।
पवन में स्पर्शता हरी ओम् है, अग्नि में उष्णता हरी ओम् है।
सलिल में शीतलता हरी ओम् है,
विश्व का अकारा हरी ओम् बोलो ।।२।।
वेदों का भी मंत्र हरी ओम् है,गीता के भी अन्तर हरी ओम् है।
जोगिन का भी जंत्र हरी ओम् है,
निर्मल निर्विकारा हरी ओम् बोलो ।।३।।
कहे टेऊँ अनादी हरी ओम् है,निर्गुण निर उपाधी हरी ओम् है।
सन्तों की समाधी हरी ओम् है,
सुखों का भण्डारा हरी ओम् बोलो ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ११ ।। २२६।।

शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं बोलो,
सदा तुम जिज्ञासू शिवोऽहं बोलो ।।टेक।।
विश्व में व्यापक परम रूप तूं,
इन्द्रियों से अगोचर अगम रूप तूं।
सही सत् चिदानंद ब्रह्म रूप तूं,
भ्रम में भुली ना जीवोऽहं बोलो ।।१।।

अग्नि ना जरावे अजर रूप तूं,

पवन ना उड़ावे अचर रूप तूं।

मृत्यु ना नसावे अमर रूप तूं,

मिली देह से ना देहोऽहं बोलो ।।२।।

सर्व से परे सर्व आधार तूं,

सर्व रूप निर्गुन निराकार तूं।

कहे टेऊँ निश्चे निरहंकार तूं,

द्वन्द्व में पड़ी ना दासोऽहं बोलो ।।३।।

।। राग भैरवी भजन ।। १२ ।। २२७।।

सच्चे गुरु की सेवा जिज्ञासू करो,

करे सेव तांकी तुरत भव तरो ।। टेक।।

भली भान्ति जाने अर्थ वेद को, लखे एक आत्म हरे भेद को।

हने पांच भ्रान्ती कटे खेद को,

ऐसे सद्‌गुरू के शरन में पड़ो ।।१।।

ब्रह्म का यथार्थ कथे ज्ञान जो, किसी का करे नाहिं अपमान जो।

इच्छा बिन सदा दे अभय दान जो,

सुनी ज्ञान तिसका भ्रम सब हरो ।।२।।

कहे टेऊँ मुक्ती जे चाहो सदा, अभेदी गुरू को ध्याओ सदा।

ब्रह्म आत्मानंद पाओ सदा,

हरे द्वन्द्व स्वच्छन्द निर्भय चरो ।।३।।

।। राग भैरवी भजन ।। १३ ।। २२८।।

सद्‌गुरु जैसा दाता दानी कोई और नहीं,
सद्‌गुरु जैसा ब्रह्मज्ञानी कोई और नहीं ।।टेक।।
और शाह सब कूड़ा काचा, साचा सद्‌गुरु दे धन साचा।
सद्‌गुरु जैसा शाह गुणखानी कोई और नहीं ।।१।।
सद्‌गुरु ऐसा ध्यान लगाता, देख इन्द्र तांको डर पाता।
सद्‌गुरु जैसा अविचल ध्यानी कोई और नहीं ।।२।।
सद्‌गुरु चढ़के ज्ञान विमाना, सैर करत बेगम स्थाना।
सद्‌गुरु जैसा जग सैलानी कोई और नहीं ।।३।।
सद्‌गुरु सोऽहं तीर चलाता, कहे टेऊँ मन मार गिराता।
सद्‌गुरु जैसा वीर विज्ञानी कोई और नहीं ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। १४ ।। २२९।।

बोलो प्रेम से प्यारे, बाणी राम की।
कभी भूलो ना उदारे, बाणी राम की ।।टेक।।
राम नाम की बाणी प्यारी, ध्रुव भक्त प्रह्लाद उचारी।
सब दुश्मन दूख विडारे, बाणी राम की ।।१।।
राम नाम की बाणी बोलो, भव सागर में कभी न डोलो।
तेरी लावे नाव किनारे, बाणी राम की ।।२।।
राम नाम की बाणी सुन्दर, धारो अपने हृदय अन्दर।
तेरे मन की मैल निवारे, बाणी राम की ।।३।।
राम नाम की अमृत बाणी, सर्व सुखों की है यह खाणी।
कहे टेऊँ विपदा टारे, बाणी राम की ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। १५ ।। २३०।।

राम जपो दिन रात, पाओ कुशलात, यही लाभ जीवन का।। टेक।।
राम भजन हित हरि ने दीया सुन्दर मानुष चोला।
देवी देवता चाहत हैं नित ऐसा जन्म अमोला।
छोड़ो दुनिया की बात, राम कह तात ।।१।।
सब साधन का मूल राम है जानो निश्चय भाई।
जिसने जाप जपा है हरि का उसने मुक्ती पाई।
मन की मेटे भ्रान्त, पाओ तुम शान्त ।।२।।
कहे टेऊँ तुम राम नाम से पूरण प्रीति लगाओ।
राम नाम को गाय गायके आनन्द माहिं समाओ।
उठ जागो प्रभात, लेवो हरि दात ।।३।।

।। राग भैरवी भजन ।। १६ ।। २३१।।

आओ प्रभू इक बार, देवो दीदार, तेरे बिन चैन नहीं ।। टेक।।
तेरे दरस बिन मनुवा मेरा रैन दिवस तरसाता।
एक घड़ी भी धीर न धरता रोता और चिल्लाता।
राह रहे हैं निहार, करे इन्तज़ार ।।१।।
छोड़ गये क्यों साजन मुझको अब तो दरस दिखाओ।
मेरी भूल को क्षमा करके अपने चरण लगाओ।
रो रो करूँ मैं पुकार सुनो करतार ।।२।।
कहे टेऊँ हरि तुम बिन मुझको नैनें नींद न आवे।
तेरा दर्शन चाहत हूँ मैं और न मोहि सुहावे।
मिलिये प्राण आधार, पड़ा हूँ द्वार ।।३।।

।। राग भैरवी भजन ।। १७ ।। २३२।।

उठो जागो यह है बारी, राम भजन की राम भजन की।। टेक।।

सोय सोय बहु जन्म बिताये, कबहुँ न गोबिन्द के गुण गाये।

तज गफ़लत कर होशियारी ।।१।।

और कर्म से हो न उद्धारा, राम भजन भव तारणहारा।

जप तांते हरि सुखकारी ।।२।।

राम भजन सब साधन मूला, कहे टेऊँ हरि इन अनुकूला।

यह बाणी वेद उच्चारी ।।३।।

।। राग भैरवी भजन ।। १८ ।। २३३।।

साजन के विरह माहीं लूटा मैं बाग सारा ।। टेक।।

आशा का त्याग कीया, तृष्णा को तर्क दीया।

खोजन लगा सु पीया, गुरु शब्द ले सहारा ।।१।।

दिन रात इन्तज़ारी, दिल को नहीं करारी।

दुनिया लगे न प्यारी, नैनें बहाऊं धारा ।।२।।

विरहा अग्नि में जरके, संसा विकार हरके।

पावन अक्षर सुमरके, पाऊं परम प्यारा ।।३।।

ज्यों नीर बिगर मीना, तैसे हमार जीना।

भावे न खान पीना, कहे टेऊँ कर पुकारा ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। १९ ।। २३४।।

सद्गुरु का साज सुन्दर मैंने अन्दर बजाया।

आवाज़ वो अलस्ती सुनके बदन भुलाया ।। टेक।।

नाभी बजे नगारा, फैला जिसम मंझारा।
हृदय कमल विचारा, फिर कण्ठ माहिं आया ।।१।।
पिङ्गला इड़ा चलाये, सुषुम्न सहज समाये।
त्रिभणा में ध्यान लाये, दीपक तहां जगाया ।।२।।
अनहद नाद बाजे, गगन मण्डल में गाजे।
सुनकर सुन्दर आवाज़े, डर काल का मिटाया ।।३।।
कहे टेऊँ डुबकी मारे, पहुँचा दसम द्वारे।
रमके सु ऋणूंकारे, बेग़म नक्षर बसाया ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। २० ।। २३५।।

ऋद्गुरु आया शब्द सुनाया, हृदय अन्दर, दीप जलाया ।। टेक ।।
गुरुदेव दीया, प्रेम जाम पीया,
अंग संग राम रंग, हरी गुण गाया ।।१।।
शब्द पढ़ाया, गुहज भेव पाया,
एक ही अनेक होय, रंग को रचाया ।।२।।
आनन्द स्वरूपा, लखाया अनूपा,
पाप ताप दाप शाप, सकल रोग जाया ।।३।।
कहे टेऊँ गुरु, कृपा कीनी,
भ्रम कर्म भेद छेद, सहज घर समाया ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। २१ ।। २३६।।

मानुष जन्म पाये, करो शुभ कारियां।
धारो धर्म के अँग, जे खट चारियां ।।टेक।।
दया को धारो प्रानी, क्षमा की राखो खानी।
बोलो नित मीठी बानी, दे ना गारियां ।।१।।
लेवो तुम हरि का नामा, देवो दीनों को दामा।
कीजे नित पर के कामा, परम उदारियां ।।२।।
भ्रमों की मटकी फोड़ो, भोगों से मन को मोड़ो।
सन्तों से जीउ जोड़ो, तजे जग यारियां ।।३।।
आशा चिन्ता को त्यागो, तोड़े तृष्णा को तागो।
कहे टेऊँ जल्दी जागो, नींद से प्यारियां ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। २२ ।। २३७।।

सद्गुरु तुम दर्शन दे, दर्शन दे, दर्शन दे ।।टेक।।
नीर बिना ज्यों मीन रहत दुखी,
चन्द्र बिना ज्यों कञ्ज चन्द्रमुखी।
त्यों तुम बिन ना मैं रहत सुखी ।।१।।
दीप से पतंग की ज्यों प्रीति जगी,
चन्द से चकोर की ज्यों प्रीति लगी।
त्यों मैं तुम्हारे हूँ प्रेम में पगी ।।२।।
ज्यों मोर की घन से प्रीति बनी,
ज्यों निशदिन चाहत सर्प मनी।
कहे टेऊँ त्यों तेरी प्यास घनी ।।३।।

।। राग भैरवी भजन ।। २३ ।। २३८।।

करले अब हरि का सुमरण करले तूं,
धरले मन ध्यान प्रभू का धरले तूं ।। टेक।।

यह वेला जान सुहेला, फिर होय न ऐसा मेला।
कर सन्त गुरू की सेवा, श्रद्धा से बनकर चेला।
भक्ति भाव भरले तूं ।।१।।

माया की ममता छोड़ो, तुम मोह कुटुम्ब का तोड़ो।
सब जग के भोग त्यागे, जीउ जगतपती से जोड़ो।
पाप को हरले तूं ।।२।।

उठ ग़ाफ़िल ग़फ्लत तजले, कहे टेऊँ हरि को भजले।
तृष्णा और तमना टारे, मन को सन्तोष से रजले।
इसी विधि तरले तूं ।।३।।

।। राग भैरवी भजन ।। २४ ।। २३९।।

धारो मन मूरत कृष्ण काले की,
गोवर्धनधारी मुरली वाले की ।। टेक।।

जांके कुण्डलों की छबि भारी, मोर मुकुट की झलक न्यारी।
उर माल बैजन्ती धारी, मोहनी मूरत लागे प्यारी।
जगत उजियाले की ।।१।।

जांके नूपर छम छम बाजे, देख रूप चन्द्रमा लाजे।
मुरली की सुन आवाजे, तज काम गोपियां भाजे।
ब्रज रखवाले की ।।२।।

कटि काछनी सुन्दर सोहे, पीताम्बर मन को मोहे।
यह ध्यान पाप सब खोये, कहे टेऊँ मैल को धोये।
नाथ नन्दलाले की ।।३।।

।। राग भैरवी भजन ।। २५ ।। २४०।।

सत्गुरु शिष्य की परीक्षा लेके पीछे ज्ञान बताता है ।। टेक।।
बालक बारह मास विद्या को भावें पढ़ कर रास करे।
तो भी पण्डित परीक्षा लेकर ऊँचा पद दिलवाता है ।।१।।
नौकर चाहे निशदिन नीके काम करे सब मालिक के।
फिर भी स्वामी परीक्षा लेकर पूञ्जीदार बनाता है ।।२।।
तैसे सेवक सद्गुरु की नित चाहे सेवा बहुत करे।
कहे टेऊँ तो भी गुरु परखे पूर्ण ब्रह्म लखाता है ।।३।।

।। राग भैरवी भजन ।। २६ ।। २४१।।

कर्म नवीनों के करने में, तेरा है अधिकार बन्दा ।। टेक।।
कर्मों के फल भोगन कारण, और शरीर अपार बन्दा।
कर्म करन हित तुमने पाया, मानुष जन्म उदार बन्दा ।।१।।
कर्म करन बिन रह न सके को, सब जग कर्म अधार बन्दा।
तीन गुणों की हलचल से नित, कर्म करत संसार बन्दा ।।२।।
मन बुद्धि इन्द्रिय दीनी तुमको, कृपा कर कर्तार बन्दा।
तांते कर्म करो तुम पावन, वर्ण धर्म अनुसार बन्दा ।।३।।
कहे टेऊँ निष्काम कर्म कर, फल की आस निवार बन्दा।
पाप कर्म की ओर न जाओ, गीता ज्ञान विचार बन्दा ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। २७ ।। २४२।।

देख देख प्रभु लीला तेरी, डरती जान हमारी है ।।टेक।।
काल जोय नर राजा बन कर, राज करत था मुल्कों का।
आज वही नर बान्दी बन कर, रोता ज़ारोंज़ारी है ।।१।।
काल जोय नर दाता बन कर, दान देत था दीनों को।
आज वही नर इक दाने हित, दर दर फिरत भिखारी है ।।२।।
काल जोय नर सैर करन हित, हाथी घोड़े चढ़ता था।
आज वही नर नँगे पांवों, चलता धूप मँझारी है ।।३।।
कहे टेऊँ हरि तेरे आगे,किसका जोर न चलता है।
दीन दयालू दया करो तुम, मैं ली शरन तुम्हारी है ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। २८ ।। २४३।।

कृपा कर यह मोहि सुनाओ, सद्गुरु देव स्वामी।
कहं रहता है कैसे मिलता, प्रभू अन्तर्यामी ।।टेक।।
उत्तर इसी का सावधान हो सुन हे शिष्य सुचाली।
ज्यों मेंदी के पात पात में रहती है नित लाली।
तेल तिलों में घृत दूध में मीठा ईख रसाली।
त्यों घट घट में रम रहिया है पूरण पारग्रामी ।।१।।
कहे टेऊँ जो प्रेम सचे से जहँ जहँ सुमरन करता।
तहँ तहँ प्रकट हो कर तिसको दर्शन दे दुख हरता।
भाव भक्ति का भगवत भूखा और न मन में धरता।
तांते प्रेम करो तुम हरि से जग की छोड़ गुलामी ।।२।।

।। राग भैरवी भजन ।। २९ ।। २४४।।

पूर्ण गुरु की पूजा कीजे श्रद्धा मन में धारे।
गुरु पूजा का उत्तम दिवस ये आज समझले प्यारे ।। टेक ।।
कंचन का इक उत्तम सिंहासन मोती जटित बनाये।
अपने गुरु को भाव भक्ति से तां पर तुम बैठाये।
माणिक मोती कंचन रूपा वस्त्र भेंट चढ़ाये।
चन्दन चरचे फूल चढ़ाओ आरती ताहिं उतारे ।।१।।
पारब्रह्म का रूप जानके सत्गुरु को नित पूजो।
मात पिता आदी सब जग से सत्गुरु उत्तम सूझो।
मन बुद्धि पांचों इन्द्रियों से तुम गुरु बिन और न बूझो।
हाथ जोड़ के शीश निवाओ सत्गुरु के चरनारे ।।२।।
ब्रह्मा विष्णू शंकर रवि शशि देव गुरू गुन जाने।
भूत प्रेत पशु पंछी दानव मानव गुरु को माने।
पर्वत लोहा सर्प बिच्छूहा चलत गुरू प्रमाने।
मन्त्र यन्त्र तन्त्र जग में गुरु को मानत सारे ।।३।।
कहे टेऊँ जो सत्गुरु पूजे तां पर मैं बलिहारी।
जिहँ गुरु पूजा तिहँ सब पूजे गुरु में सृष्टी सारी।
चार पदार्थ पावत सहजे सद्गुरु का पूजारी।
गुरु कृपा से गुरुमुख पावत आनन्द जगत मँझारे।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ३० ।। २४५।।

परमेश्वर को मन में लागत प्रेमा भक्ती प्यारी।
जाति पाति कुल रूप दाम पर रीझत ना बनवारी ।। टेक।।

जीव जिसी में प्रेमा भक्ती सो प्रभू को प्यारा।
भक्ति हीन भलि ब्राह्मण होवे लागत हरि को खारा।
भक्ती वाला भलि चण्डाला भावत सो कर्तारा।
केवल निज भक्ती पर प्रसन्न होते हरि हितकारी ।।१।।
भवसागर के तरने हित बहु साधन वेद बखाने।
सबते प्रेमा भक्ती ऊँची कहते सन्त सयाने।
प्रेम भक्ति में लागत है जो तांको हरि सन्माने।
तांते सर्व ओट तज करले प्रेम भक्ति हरबारी ।।२।।
सत्युग त्रेता द्वापुर युग में तप यज्ञ पूजा गाई।
कलियुग में इक प्रेमा भक्ती भगवत के मन भाई।
अन साधन से जो फल मिलता सो दे भक्ती सदाई।
तीन लोक में प्रेम भक्ति सम और न को सुखकारी ।।३।।
कहता टेऊँ तांते हरि की प्रेमा भक्ति कीजे।
प्रेम भक्ति के करने की तुम गुरु से युक्ती लीजे।
मानुष तन को पाकर जग में प्रेम भक्ति रस पीजे।
प्रेम भक्ति बिन जीवन वृथा जानो जगत मंझारी ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ३१ ।। २४६।।

शंकर बोले पार्वती सुन अमर कथा सुखदानी।
जांके श्रवण से कट जावे कठिन काल की कानी ।। टेक।।
चन्द्र कला के विमल छटा से शोभत था बन सारा।
शान्ति धुनी से गूंज रहा था अद्भुत रैन निज़ारा।
हिमाचल की कन्दरा बैठे गौरी शंकर प्यारा।
अमर कथा अब मोहि सुनाओ कहने लगी भवानी ।।१।।

धन्य धन्य मति गिरिजा तेरी अमर कथा रुचि धारी।
देवों को भी दुर्लभ मिलती अमर कथा यह प्यारी।
अमर कथा यह अमर बनावे काटे ममता जारी।
अमर कथा के कहने वाला जग में को गुरु ज्ञानी ।।२।।
अमर आत्मा देह अनात्म आत्म रूप तुम्हारा।
आत्म दृष्टा देह दृश्य है आत्म सब से न्यारा।
जाग्रत स्वपन सुषोप्ति का इक आत्म है आधारा।
इन्द्रिय अगोचर आत्म है जिहँ मन बुद्धि लखे न बानी ।।३।।
ब्रह्म आत्मा स्थित है नित अपने महिमा माहीं।
बन्ध मोक्ष ते असंग आत्मा आत जात कहँ नाहीं।
पांच भूत प्रकृती सारी स्पर्श करत न ताहीं।
अगम अरूप अनूप अनादी वेदनि गति नहिं जानी ।।४।।
गाथा सुनते पार्वती को आ गई निद्रा वाहीं।
सावधान हो हूं हूं करके तोते सुन लई ताहीं।
मर्म न जाना महादेव था मस्त मौज के माहीं।
शंकर पूछा गिरिजा बोली मैं निद्रा उरझानी ।।५।।
कहे टेऊँ शुक गाथा सुनली भेद शम्भू ने पाया।
तोते के तब मारन कारन डण्डा ले उठ धाया।
उड़के तोता वेद व्यास के त्रिया वदन समाया।
व्यास वचन सुन तोते को तज चले शंभू सैलानी ।।६।।

॥ राग भैरवी भजन ॥ ३२ ॥ २४७॥

सर्व व्यापक सत् चित् आनन्द साक्षी रूप तुम्हारा।
घट घट वासी स्वयं प्रकाशी तुमहो अगम अपारा ॥टेक॥
तीन देह है महल तुम्हारा तुमहो इनका स्वामी।
पांच कोष का प्रेरक तुम हो असंग अन्तर्यामी।
नाम रूप का तुम आधारा अखण्ड अरूप अनामी।
सब घट माहीं खेलत हो तुम सबसे होय न्यारा ॥१॥
जैसे सिंह अजा के संग से अपना आप भुलाया।
तैसे इन्द्रियों के संग से तुम निज स्वरूप गँवाया।
अब तो अपना रूप निहारो छूटे भ्रम सबाया।
वचन हमारा सुन कर करले अहं ब्रह्म गजकारा ॥२॥
देखो अपना रूप अनादी अनुभव ज्योति जगाके।
जीव ईश का भेद निवारो ब्रह्म ज्ञान को पाके।
कहे टेऊँ परमानन्द पावो ब्रह्म भवन में जाके।
जहाँ काल की भय कछु नाहीं ना है यह संसारा ॥३॥

॥ राग भैरवी भजन ॥ ३३ ॥ २४८॥

सुनो सुनो तुम श्रद्धा धारे सन्तजनों की बानी।
जिसके श्रवण करने से हो भेद भ्रम की हानी ॥टेक॥
संतजनों की बाणी पवित्र मन की मैल मिटावे।
कर्म धर्म की राह बताकर स्वर्ग धाम पहुँचावे।
प्रेम सहित जो श्रवण करता तांका दूख नसावे।
परमेश्वर का प्रेम बढ़ावे पिला प्रेम का पानी ॥१॥

यह बाणी दे साची शिक्षा शील संयम सिखलाती।
जप तप व्रत नेम संध्यादिक सेवा माहिं लगाती।
शम दम ज्ञान ध्यान वैरागा समता माहिं समाती।
जीव ब्रह्म को एक लखा कर देवे पद निर्बानी ।।२।।
कहे टेऊँ सन्तों की बाणी हृदय में तुम धारो।
उस पर अमल करे तुम हरदम अपना जन्म सुधारो।
पूरण शान्ती पद को पाकर आवागमन निवारो।
इस बाणी को नाहिं भुलाओ ये है अमृत खानी ।।३।।

।। राग भैरवी भजन ।। ३४ ।। २४९।।

प्रीतम प्यारे जग में अपना चाहो जे कल्याना।
साध संगति से प्रीती करले सुमरो श्री भगवाना ।।टेक।।
बहुत जनम के पीछे तुम ने मानुष चोला पाया है।
ऐसा वेला फेर न आवे क्यों तुम मुफ़्त गंवाया है।
सोवत जागत सर्वकाल में धरो प्रभू का ध्याना ।।१।।
मतलब के सब मीत जानले सुख में सब मिल आते हैं।
दुख में कोई साथ न देता पीछे सब हट जाते हैं।
सुख दुख में है साहिब साथी यों कह वेद पुराना ।।२।।
सुमरन जैसा साधन कोई कलूकाल में नाहीं।
तांते मिलकर हरि गुन गावो साध संगति के माहीं।
कहे टेऊँ जग जाल काटके पावो पद निर्बाना ।।३।।

।। राग भैरवी भजन ।। ३५ ।। २५०।।

करो सत्संग प्रीतम प्यारा, बिन सत्संग नहिं निस्तारा।। टेक।।
धर श्रद्धा सत्संग कीजे, सुन शिक्षा कुमति हरीजे।
भर प्रेम प्याला पीजे।
करे तुम सेव, पावो निज भेव, देखो हरिदेव,अनन्त अपारा।।१।।
सत्संग जहाज समाना, ले नाम की टिकट सयाना।
चढ़ भव सिन्धु से तर जाना।
गुरू कपितान, करे बुद्धिमान, पाय कल्यान, कटो जम जारा ।।२।।
बहु नीच करे सत्संगा, भये जग में ऊँच उतंगा।
ज्यों जल गंग मिल हो गंगा।
रही निःसंग, करे सत्संग, लाये हरि रंग, पावो फल चारा ।।३।।
सत्संग को जान प्रयागा, जो नावे सो बड़भागा।
कहे टेऊँ कर अनुरागा।
कटे कुल पाप, सर्व सन्ताप, लखे निज आप, लहो सुख सारा।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ३६ ।। २५१।।

सुन समझ सज्जन मन मेरा, है जागन की यह वेरा ।। टेक।।
धरे गुरु चरणों का ध्याना, हरे तन मन का अभिमाना।
पाय पूरण पद निर्बाना।
रही निष्काम, सुमर गुरु नाम, लहो सुखधाम,
कटे जम फेरा ।।१।।

पाए अपने उर में झाती, कर अपने को इस्बाती,

हर पांचों भेद भ्रान्ती।

धरे हरि ध्यान, गही गुरु ज्ञान, कटे अज्ञान,

पाओ निज डेरा ।।२।।

कहे टेऊँ गुरु प्रसादी, लाय अन्तर सहज समाधी,

तज झूठी जगत उपाधी।

जपे गुरु जाप, लखे निज आप, हरो संताप,

तुरत तन केरा ।।३।।

।। राग भैरवी भजन ।। ३७ ।। २५२।।

तुम वृथा उम्र गंवाई, हरि भजन न कीना भाई ।। टेक।।

मात गर्भ में प्रतिज्ञा कीनी ताहिं दिया बिसराई।

माया के तुम रस में पड़कर नहिं जपिया रघुराई ।।१।।

पहले बाल अवस्था सारी खेलन माहिं बिताई।

मूण्ढ रहा पुनि कुछ ना चेता नहिं हरि भक्ति कमाई ।।२।।

यौवन में तुम मद के माते भोगों से रति लाई।

लागी निशदिन नारी प्यारी नहिं हरि कीर्ति गाई ।।३।।

बूढ़ापन में आशा तृष्णा ममता बहुत बढ़ाई।

पराधीन हो दुख को पाया नहिं हरि से लिंव लाई ।।४।।

तीन अवस्था वृथा खोई मन में शान्ति न पाई।

कहे टेऊँ अब भी तुम चेतो ले हरि की शरणाई ।।५।।

।। राग भैरवी भजन ।। ३८ ।। २५३।।

रे मन तन का तज अभिमान।

तन अभिमानी महा अज्ञानी पावत नरक निदान ।। टेक।।

पांच भूत का तन यह तेरे रहने का स्थान।

अहं बुद्धि तुम इसमें धारे भूला क्यों नादान ।।१।।

खट रस भोजन इस तन संग में दुर्गन्ध होय महान।

देख तिसे तुम करत ग्लानी प्रत्यक्ष यह प्रमान ।।२।।

हाड़ मांस और मल का थैला चाम लपेटे जान।

सर्व द्वार से मैला निकसे किस पर करत गुमान ।।३।।

कहे टेऊँ जो इस तन भीतर साक्षी पुरुष सुजान।

गुरु कृपा से ताहिं पछानो लेकर आतम ज्ञान ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ३९ ।। २५४।।

और का और दिखलावे, यही माया यही अविद्या ।। टेक।।

बदन उपजा तत्वों से जो, तत्वों का रूप है सोई।

उसी तन अहं बुद्धि लावे, यही माया यही अविद्या ।।१।।

बना जो जगत माया से, असत् स्वरूप है तांते।

तिसे सत् रूप दरसावे, यही माया यही अविद्या ।।२।।

ब्रह्म का अंश है जीवा, ब्रह्म का रूप है तांते।

कहे टेऊँ भिन्न बतलावे, यही माया यही अविद्या ।।३।।

।। राग भैरवी भजन ।। ४० ।। २५५।।

उठो नर नींद अविद्या से, भजन भगवान का करना।
तजे सब आस इस जगकी, ध्यान इक ईश का धरना।। टेक।।
मिली तुझको मनुष देही, हरी के भजन हित प्यारा।
भुलाओ ना कभी हरि को, पकड़ले ताहिं के चरना ।।१।।
सर्व को काल संहारे, समझले तूं सजन मन में।
निडर हो पाप मत करले, सदा तुम काल से डरना ।।२।।
जिन्हों से प्रीति तुम पाई, सँगी नहिं अन्त वे होंगे।
तजे नाता कुटुंब कुल का, प्रभू के शरन में पड़ना ।।३।।
कहे टेऊँ बन्धन तोड़े, करो नित सङ्ग सन्तों का।
हरे अभिमान तन धन का, हृदय में भाव को भरना ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ४१ ।। २५६।।

बताकर ज्ञान गुरु मुझको, भ्रम संसा मिटाया है।
ब्रह्म की ज्योति का दर्शन, सर्व घट में दिखाया है ।। टेक।।
दौड़ता था हमारा मन, रैन दिन भोग विषयों में।
शब्द अभ्यास दे सत्गुरु, अचल मन को बनाया है ।।१।।
नाना प्रकार अविद्या से, जगत को देखता था मैं।
ब्रह्म का ज्ञान गुरु देके, ब्रह्म एको लखाया है ।।२।।
भ्रम कर जीव को पहले, ब्रह्म से अलग जानत था।
दया कर भेद गुरु तोड़े, ब्रह्म से जीव मिलाया है ।।३।।
कहे टेऊँ गुरू ऊपर, करूँ तन मन निछावर मैं।
जिसी ने द्वन्द्व दुख काटे, महा आनन्द समाया है ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ४२ ।। २५७।।

यह झूठा है संसारा, क्यों लपटे ताहिं गंवारा ।।टेक।।
ज्यों धात्री सुतनि सुनाया, अनहोता प्रसंग गाया।
तां सुन सुन सुत हर्षाया, ना तरु सर नगरी दारा ।।१।।
जिमि चाकर घट सिर चाया, बहु मन में ठाठ बनाया।
खुश होके सीस हिलाया, घट गिरते रोया भारा ।।२।।
ज्यों मंगता इक दिन सोया, सोते ही स्वपना जोया।
बहु सम्पति राज अलोया, जब जागे फिर पेनारा ।।३।।
ज्यों सर्प रज्जू में भासे, पुनि रजत सीप प्रकासे।
जग तैसे ब्रह्म विभासे, यह वेदों का वीचारा ।।४।।
जग सारा कल्पित मानो, सत् आतम को पहिचानो।
कहे टेऊँ आतम जानो, तज कल्पित जगत असारा ।।५।।

।। राग भैरवी भजन ।। ४३ ।। २५८।।

हरि प्रबल तेरी माया, जिहं सब जग को भरमाया ।।टेक।।
जे जोग कला से उड़ते, जा नभ में तप को करते।
कब पांव तले नहिं धरते, तिनको भी भूमि गिराया ।।१।।
जे वेदों को पढ़ गाते, सब भिन्न भिन्न कर समझाते।
को शंक न करने पाते, तिनको भी मूण्ढ बनाया ।।२।।
जिन कीना झंगल वासा, पुनि पाया भेष संन्यासा।
कछु जग की रही न आसा, तिनको भी मोह लगाया ।।३।।
कहे टेऊँ मैं भी डरता, कछु धीर न हृदय धरता।
इक तुम हो रक्षा करता, भज शरण तुम्हारी आया ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ४४ ।। २५९।।

लाल हीरा रत्न मोती है गुरां के पास रे।
जो जिज्ञासू लेन चाहे सो बने गुरु दास रे ।। टेक ।।
महल माया कुटुम्ब काया की तजे जो आस रे।
मोह ममता लोभ लालच जो करे सब नास रे ।।१।।
लोक पुनि परलोक सुख से रहत जोय निरास रे।
त्याग भोगों को रहे जो जगत माहिं उदास रे ।।२।।
वेद लोक व कुल लजा की काटले जो फास रे।
कहत टेऊँ पाय सोई ज्ञान गुण की रास रे ।।३।।

।। राग भैरवी भजन ।। ४५ ।। २६०।।

गुरु बिना कबहूँ न होवे जीव का कल्यान जी।
वेद शास्त्र पुरान पढ़ भावें करे वख्यान जी ।। टेक।।
गुरु बिना दर दर फिरे नर पाय ना सन्मान जी।
गुरु बिना जो मनुष है सो जान शूकर श्वान जी ।।१।।
गुरु बिना मुक्ती न होवे गुरु बिना नहिं ध्यान जी।
गुरु बिना होवे न कबहूं आत्मा का ज्ञान जी ।।२।।
कहत टेऊँ ले शरन गुरुदेव की तज मान जी।
गुरु बिना कोई न तरता कहत सन्त सुजान जी ।।३।।

।। राग भैरवी भजन ।। ४६ ।। २६१।।

काम करना था तुझे जो आयके संसार में।
आप उसको भूल गये फस मोह माया जार में ।। टेक।।

राम ने निज रूप दीना आपको कृपा करे।
ताहिं वृथा तुम गँवाया जगत के व्यवहार में ।।१।।
कर्म करके धर्म धरके पार तरना था तुझे।
आप उल्टे पाप करके बह गये भव धार में ।।२।।
संत गुरु के संग में रह आप लखना था तुझे।
आप उल्टा खोय दीना रूप निज अहंकार में ।।३।।
कहत टेऊँ सोच मन में समय अब भी ना गया।
साध संग हरि नाम जप कर तन सफल उपकार में ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ४७ ।। २६२।।

गाओ गाओ तुम मानुष तन में गोविन्द के नित गीत।। टेक।।
मानुष देही हरि भक्ती में सफल करो तुम मीत।
झूठा नाता जग का तोड़े राखो हरि से प्रीत ।।१।।
सत्पुरुषों के वचनों में तुम पूरन कर प्रतीत।
सत् शास्त्र की शिक्षा सुनकर चलो धर्म की नीत ।।२।।
गुरु के चरन कमल में करले स्थित अपना चीत।
गुरु मन्त्र का सुमरण करके मन दुश्मन को जीत ।।३।।
ब्रह्म ज्ञान को उर में धारे हरो भ्रम की भीत।
कहे टेऊँ परमानन्द पाओ जग से होय अतीत ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ४८ ।। २६३।।

आवो आवो हे सद्गुरु स्वामी रहो हमारे पास ।। टेक।।
इक क्षण दूर न होवो मुझसे नैनें करो निवास।
मन मन्दिर यह अति सुन्दर है तामें करिये वास ।।१।।

दो कर जोड़ करूँ तुम आगे वन्दन अरु अर्दास।
तन मन धन से सेवा करहूं सेवक बन कर ख़ास ।।२।।
प्रेम भक्ति का पेग पिलाए काटो जम की फास।
निर्मल अपना नाम जपाओ सत्गुरु बारह मास ।।३।।
कहे टेऊँ यह विनय सुनीजे पूरन करिये आस।
दर्शन दे सब दूख हरो तुम हे सत्गुरु सुखरास ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ४९ ।। २६४।।

आवो आवो सब प्रेमी मिलकर करो सदा सत्संग।।टेक।।
सत्संग सुरतरु सम सब फल दे कीजे धार उमँग।
पाप ताप संताप नसावे लावे आत्म रंग ।।१।।
नीच ऊँच नर केते तर गये सुन संतनि प्रसंग।
तुम भी तीन लजा को तोड़े सत्संग करो निसंग ।।२।।
सदा जगत में दुख देता है मूंढ पुरुष का संग।
तांको तज सन्तों के संग से यह मन जीत कुरंग ।।३।।
कहता टेऊँ सन्तों का संग मेटे मस्तक अँग।
सन्तों के सत्संग से करले भेद भ्रान्ती भंग ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ५० ।। २६५।।

प्यारे प्यारे तुम अन्तर देखो आत्म का दीदार ।।टेक।।
दैवी सम्पति चारों साधन धारो निज मन माहिं।
गुरु मन्त्र का सुमरन करके खोलो दसम द्वार ।।१।।
श्रवण मनन करे निदिध्यासन तत्त्वमसी को शोध।
प्रत्यक्ष आत्म दर्शन पाए हरो मलिन अहंकार ।।२।।

कंचन भूषण सूत वसन पुनि माटी बरतन जान।
अस्ति भाति प्रिय ब्रह्म रूप है नाना जग आकार ।।३।।
कहे टेऊँ तुम द्वैत मिटाओ सत्गुरु के प्रसाद।
जीव ब्रह्म इक रूप पछानो धारे उर वीचार ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ५१ ।। २६६।।

प्यारे प्यारे मैं दम दम जाऊँ सद्गुरु पै कुर्बान ।। टेक।।
पहले मूण्ढ अज्ञानी था मैं कोई न आदर देत।
सद्गुरु के प्रसादे अब तो सुर नर दे सन्मान ।।१।।
सद्गुरु मुझको ज्ञान सुनाके द्वैत किया सब दूर।
चींटी कुंचर सबके माहीं दिखलाया भगवान ।।२।।
भोगों रूपी कीचड़ में मैं पड़ा रात दिन था।
अब मोहि सद्गुरु ब्रह्मानन्द में किया मगन मस्तान ।।३।।
क्रोध अग्नि में हिरदा मेरा हरदम जलता था।
कहे टेऊँ गुरु शान्ती दीनी देके आतम ज्ञान ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ५२ ।। २६७।।

आये आये अब मेरे घर में साधू सद्गुरु राम ।। टेक।।
सन्तों से मैं सद्गुरु पाया सद्गुरु से श्रीराम।
राम दरस से मुक्ती पाई तीनों को प्रणाम ।।१।।
दर्शन करके प्रसन्न होया दर्द भये सब दूर।
तन मन शीतल भया हमारा पाया मन आराम ।।२।।
सन्त वचन सुन पाप गये सब उपजा आतम ज्ञान।
कहे टेऊँ सब संसा मेटे पाया पूरण धाम ।।३।।

।। राग भैरवी भजन ।। ५३ ।। २६८।।

सोधे सोधे यह देखा मैंने दुखमय है संसार ।।टेक।।
तीन लोक को देखा मैंने माया का विस्तार।
शान्ती सुख ना इसमें देखा देखे द्वन्द्व अपार ।।१।।
मात पिता भाई सुत दारा देखा कुल परिवार।
साचा सुख ना किस में देखा सब मतलब का प्यार ।।२।।
तन रोगी मन भोगी देखा धन भी दुख आगार।
शब्द रूप रस स्पर्श आदी देखा नरक द्वार ।।३।।
आनन्दमय इक आत्म देखा करके सत् वीचार।
कहे टेऊँ तिस सुमरन कर मैं पाया शान्ति भण्डार ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ५४ ।। २६९।।

प्यारे प्यारे यह दुनिया सारी मुसाफ़िरखाना जान ।।टेक।।
जगत मुसाफ़िरखाने में सब दो दिन के महिमान।
हरदम कोई रह न सकत है यह निश्चय कर मान ।।१।।
मोह ममत ना राखो किससे झूठा जग पहिचान।
ले आया नहीं ले जावोगे धन संपति सामान ।।२।।
कुल कुटुम्ब भी ना है तेरा जांका करत गुमान।
अन्तकाल में नाहिं छुड़ावत जबहीं जम ले प्रान ।।३।।
रावन जैसे चले गये बहु वीर धीर बलवान।
कहता टेऊँ थिर न रहे को बिना एक भगवान ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ५५ ।। २७०।।

मन पाप कर्म नहिं करना, हरी का नाम सुमरना ।।टेक।।
पाप कर्म का फल दुख होगा, तांसे हरदम डरना।
पुण्य कर्म का फल सुख होगा, यह निश्चय उर धरना ।।१।।
ऐसा कर्म करो ना जांसे, लेखा होवे भरना।
साध संगति की सेवा करके, सर्व दूख को हरना ।।२।।
तन धन का अभिमान त्यागे, जीते जग में मरना।
नाम हरी का हरदम सुमरे, भवसागर से तरना ।।३।।
तीन लज्जा को तोड़े जल्दी, जाओ गुरु की शरना।
कहे टेऊँ ले आतम ज्ञाना, जीवन मुक्ति विचरना ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ५६ ।। २७१।।

क्यों करते मेरा मेरा, है जग में ना कुछ तेरा ।।टेक।।
मात गर्भ से जब तुम निकले, साथ नहीं कुछ लाये।
तन छूटे कुछ साथ चले ना, खाली करत बखेरा ।।१।।
नदी नाव ज्यों लोग कुटुम्ब का, पाव पलक है मेला।
प्रात भये सब उड़ जाये ज्यों, पंछी बिरछ बसेरा ।।२।।
रावण कंस हरनाकस दारा, छोड़ा धन परिवारा।
हाथ झाड़ गये सिकन्दर कारून, काल आय जब घेरा ।।३।।
मैं मेरा जिन जग में कीया, पाया तिहं दुख भारी।
कहे टेऊँ मैं मेरा तज तुम, साहब सुमर सवेरा ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ५७ ।। २७२।।

यह अवसर नाहिं गंवाओ, तुम राम भजन चित्त लाओ ।। टेक।।
तरुवर भी अवसर में फूले, अवसर रवि शशि ऊगे।
तैसे तुम भी इस अवसर में, गोविन्द के गुन गाओ ।।१।।
और पदार्थ फिर फिर मिलता, मिले न फिर यह चोला।
तांते तुम मानुष चोले में, हरि का नाम ध्याओ ।।२।।
भूत काल का सोच न कीजे, भविष्यत् को भी छोड़ो।
वर्तमान में राग द्वेष बिन, पावन कर्म कमाओ ।।३।।
कहे टेऊँ जे निज हित चाहो, कदर समय का करले।
भाग बड़े यह अवसर पाया, तांको सफल बनाओ ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ५८ ।। २७३।।

मन ऐसा कर्म कमाओ, जांसे मुक्ती पाओ ।। टेक।।
पाप करन से दूख मिलत बहु, पापी कहे सब कोई।
शूकर कूकर जोनी पावत, तांसे तुम हट जाओ।।१।।
कर्म सकामी से सुख सम्पति, कीरति जग में होवे।
मगर काल की फास न टूटे, तामें चीत न लाओ।।२।।
कर्म अकामी से बुद्धि निर्मल, होवे आतम ज्ञाना।
सर्व वासना क्षय हो जांसे, तांसे नेह लगाओ।।३।।
अहंता ममता तजकर हरदम, कर्म अकामी करिये।
कहे टेऊँ हरि अर्पण करके, सहजे ब्रह्म समाओ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ५९ ।। २७४।।

तुम साध संगत में आओ, नीच संग ना जाओ ।। टेक।।
साध संग है सब ते ऊँचा, तामें प्रेम बढ़ाओ।
नीचन का संग है अति नीचा, तांसे चीत न लाओ ।।१।।
साध संग है मुक्ती मार्ग, तां मिल मुक्ती पाओ।
नीच संग बन्धन में बान्धे, ताहिं न आप फसाओ ।।२।।
मूरख का संग भूल न कीजे, जे तुम हित को चाहो।
कहता टेऊँ साध संगति मैं, बैठ हरी गुन गाओ ।।३।।

।। राग भैरवी भजन ।। ६० ।। २७५।।

मैं सद्गुरु पै बलिहारी, जिहँ अविद्या मन की टारी ।। टेक।।
जिस ठाकुर के दर्शन कारन, बहु तीर्थ मैं परसे।
सो ठाकुर गुरुदेव दिखाया, अपने घटहिं मँझारी ।।१।।
मन बुद्धि वाणी लखे न जांको, वेद पार ना पावे।
घट घट माहिं लखाया सो गुरु, करके ज्ञान उज्यारी ।।२।।
बहुत जन्म में कर्म कमाया, जम का लेख न चूका।
सत्गुरु दे वैराग विवेका, जम की चिन्त निवारी ।।३।।
कहता टेऊँ तीन लोक में, सत्गुरु सम ना कोई।
जिसने कृपा करके मेरी, जग में पैज सँवारी ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ६१ ।। २७६।।

मन किसकी कर न बुराई, सब से करो भलाई ।। टेक।।
बुरे करन से होत बुराई, भला कभी ना होवे।
ज्यों विष पी को अमर रहे ना, सन्तनि साख सुनाई ।।१।।
भले करन से होत भलाई, बुरा न कबहूं होवे।
ज्यों अमृत से मरत न कोई, बात रामायण गाई ।।२।।
बुरे करन में पहले सुख है, पीछे हो दुख भारी।
करे बुराई दुर्योधन ने, अपनी जड़ कटवाई ।।३।।
भले करन में पहले दुख है, पीछे अति सुख होवे।
कहता टेऊँ करे भलाई, धर्मपुत्र जय पाई ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ६२ ।। २७७।।

है ऊँची नाम बड़ाई, मुख से कही न जाई ।। टेक।।
बालमीक मग पथिकों को था, लूट लूट कर खाता।
तिहं भी उल्टा राम राम रट, तीन काल गम पाई ।।१।।
देव चले सबहीं जब मिल कर, विश्व को फेरा देने।
राम प्रदक्षिणा से ऋषि नारद, गणपति पूज कराई ।।२।।
अर्ध राम के लेने से ही, गज के बन्धन छूटे।
अन्त अजामिल रामनाम जप, जम की रार मिटाई ।।३।।
कहे टेऊँ हरिनाम प्रतापे, नीच ऊँच भये केते।
नामदेव रविदास कबीरा, सधना सैना नाई ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ६३ ।। २७८।।

मन राम नाम गुन गाओ, परमानन्द को पाओ ।। टेक।।

राम नाम है अमुल औषधी, गुरू वैद्य से लीजे।
सँयम से वह सेवन करके, ममता रोग मिटाओ ।।१।।
रामनाम है अमृत मीठा, देव गुरू से लीजे।
पल पल उस अमृत को पीकर, जीवन अमर बनाओ ।।२।।
राम नाम है बाण अमोघा, गुरु शंकर से लीजे।
काम क्रोध मद वैरी मारे, निर्भय नगर बसाओ।।३।।
राम नाम है लाल अमोलक, गुरु सराफ से लीजे।
कहे टेऊँ दुख दरिद्रता हर, सुख के माहिं समाओ ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ६४ ।। २७९।।

यह झूठा जगत विलासा, कहते आवे हासा ।। टेक।।

ससे सींग का धनुष उठाके, पूत नपूंसक चलिया।
बांझ पूत से झगड़ा करके, लीना राज अकासा ।।१।।
बादल केरी मधुर मिठाई, पड़ी गगन के कोठे।
खाने कारण चींटी चाली, शिर पर ले कैलासा ।।२।।
मुड़दों की इक मण्डली सुन्दर, अर्ध गगन में नाचे।
देख देख तिहँ अन्धा हर्षे, मूक कहत इतिहासा ।।३।।
कहे टेऊँ गुरुदेव लखाया, रूप जगत का ऐसा।
ज्ञान दृष्टि से ब्रह्म प्रकाशे, अविद्या से जग भासा ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ६५ ।। २८०।।

यह साधो शंक हमारी, उत्तर देहि विचारी ।।टेक।।

एक नारि के तीन पुत्र हैं, ताँकी बहु कन्याएँ।
आपस में नित झगड़ा करती, किसकी हो जयकारी ।।१।।
पुरुष नपूंसक नारि बांझ को, उभय रूप सुत जमिया।
हाथ पांव बिन कहो कौन जो, जीते सृष्टी सारी ।।२।।
एक पुरुष को बहुत कुटुम्ब है, तीन लोक में छाए।
कहे टेऊँ सुत कौन उसीमें, जिहं निज जाति संहारी ।।३।।

।। राग भैरवी भजन ।। ६६ ।। २८१।।

मन पीवो प्रेम प्याला, छोड़े जग जंजाला ।।टेक।।

इस प्याले को सुर नर मुनिजन, खोज खोज कर हारे।
गुरु कृपा बिन किसे न मिलता, भावें हो भूपाला ।।१।।
और प्याला सर्व त्यागो, कालकूट सम जानी।
प्रेम सुधारस अतिशय मीठा, पीकर होय निहाला।।२।।
सर्व रसों को इकठा करके, सार खींच तिहं लीजे।
प्रेम सुधा सम होय न तो भी, जैसे आक रसाला ।।३।।
कहे टेऊँ यह प्रेम प्याला, पीवत को बड़भागी।
जो पीवत सो राम रंग में, सदा रहत मतवाला ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ६७ ।। २८२।।

मन मानो वचन हमारा, है चेतन रूप तुम्हारा ।।टेक।।
तेरा कारण सत् चेतन है, वेद ने यही उच्चारा।
कारण कार्य एक रूप ज्यों, माटी घट विस्तारा ।।१।।
सम जाती का सहज अभेदा, जानो ये निर्धारा।
चेतन अरु तेरी इक ज़ाती, ज्यों अग्नी चिंगारा ।।२।।
चेतन में तूं कल्पित है यह, शास्त्र का वीचारा।
कल्पित की नहिं अलग सत्ता जिमि, रजत शुक्ति आकारा ।।३।।
कहे टेऊँ क्यों भेद मती कर, दूख सहत शिर भारा।
सत्गुरु से ले ब्रह्म ज्ञाना, हरिये भेद विकारा ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ६८ ।। २८३।।

यह अद्‌भुत खेल अपारा, कोय न पावत पारा ।। टेक।।
कैसे ब्रह्मा विष्णू बनिया, कैसे यह संसारा।
छांचतत्व गुण तीन मिलत यह, कैसे बना पसारा ।।१।।
कैसे धरनी जल पर स्थित, जल का कौन अधारा।
कैसे तरंग उठे सागर में, अग्नी ताहिं मँझारा ।।२।।
कैसे रवि शशि गगन मंडल में, चलत फिरत निर्धारा।
कैसे बादल भीतर दामिनि, करती है चमकारा ।।३।।
कहे टेऊँ इक बिन्दु से कैसे, बनिया अंग अकारा।
जिसने खेल रचाया है सो, जानत जाननहारा ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ६९ ।। २८४।।

अब मेरा हो रखवारा, प्रभू सुनो पुकारा ।।टेक।।
दीन दयालू अति कृपालू, पावन नाम तुम्हारा।
मैंने ओट गही इक तेरी, अपना जान सहारा ।।१।।
स्वार्थ के हैं साथी सारे, मात पिता सुत दारा।
तांको छोड़ स्वामी तेरा, लीना मैं आधारा ।।२।।
डूबत हूं मैं भव सागर के, तीक्ष्ण वेग मँझारा।
भगवन् मेरी भुजा पकड़ के, कीजे भव से पारा ।।३।।
कहे टेऊँ यह विनय सुनीजे, दुख भँजन दातारा।
कृपा करके मुझको दीजे, निर्भय पद निर्धारा ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ७० ।। २८५।।

तुम मन से उल्टा चलना, राम रँग में रलना ।।टेक।।
मन का कहना कभी न मानो, दुर्मति उसकी दलना।
पूरन आत्म पद को पाए, काटो मन की कलना ।।१।।
मन तो चाहत झूठ कपट पुनि, छल से सबको छलना।
तुम तो साचा सरल भाव धर, पापों से तिहँ पलिना ।।२।।
मन तो चाहत राजमहल सुख, सुन्दर सेजा पलना।
तुम तो झंगल करे निवासा, आसा उसकी मलना ।।३।।
कहे टेऊँ मन चाहत है नित, जगत अग्नि में जलना।
ब्रह्म सिन्धु में ताहिं डुबाके, तप्त तिसी की टलना ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ७१ ।। २८६।।

जो गुरु की शरनी जावे, परमानन्द सो पावे ।।टेक।।
गुरु बिन शान्त कभी नहिं आवहिं, ऐसे वेद बतावे।
चाहे जप तप तीरथ करले, चाहे जोग कमावे ।।१।।
सत्गुरु के संग हरदम रह जो, ममता मोह मिटावे।
सार शब्द का सुमरन कर सो, निज स्वरूप समावे ।।२।।
सत्गुरु साचा ब्रह्मज्ञानी, संशय भ्रम नसावे।
काचे गुरु ते भ्रम न भागे, फिर फिर जोनी आवे ।।३।।
कहे टेऊँ जो पूरन गुरु के, चरने ध्यान लगावे।
निज आतम की लखिया ले सो, अनुभव ज्योति जगावे ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ७२ ।। २८७।।

है सन्तनि रहति निराली, जग से उल्टी चाली ।।टेक।।
साधू अरु संसारी दोनों, देखन में इक जैसे।
कर्म भाव में अन्तर बहुता, साची बात सुनाली ।।१।।
कोयल कौए का रंग एका, जानत है जग सारा।
कौवा कड़वी बोली बोलत, कोयल करत रसाली ।।२।।
भंवर भूण्ड का एक रूप है, जानत सकल जहाना।
भूण्ड मैल को खावे अहनिश, भ्रमर पुष्प पराली ।।३।।
हंसे बगुले की इक सूरत, प्रसिद्ध है जग माहीं।
बगुला मछली को नित खावे, मोती चुगत मराली ।।४।।
त्यों संतों अरु संसारियों में, भेद वेद ने भाखा।
कहे टेऊँ संसारी दुखिया, साधू रहत सुखाली ।।५।।

।। राग भैरवी भजन ।। ७३ ।। २८८।।

मेरा मन है मस्त मवाली, जांकी मति मतिवाली ।। टेक।।
हृदय रूपी कूण्डे अन्दर, भांग जगत की पाके।
विवेक के दण्डे से रगड़े, गोली ठीक बनाली ।।१।।
प्रेम हरी का पानी पाकर, तांको पतला कीना।
बुद्धि साफे से छान छानके, जड़ता फोग निकाली ।।२।।
स्वासन रूपी साफ प्याला, सार तत्व से भरके।
रिल मिल साथिन से मैं पीया, वृत्ती भयी निराली ।।३।।
अहं ब्रह्म के घोर नशे में, मस्त रहूं दिन राती।
कहे टेऊँ गुरु कृपा करके, चिन्ता सकल चुकाली ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ७४ ।। २८९।।

सन्तों से मिल हरि गुन गाना, जांसे हो कल्याना।
प्रेम भाव से गाय हरी गुन, भव सिन्धु से तर जाना ।। टेक।।
भवसागर से पार करत है हरि कीर्तन की नौका।
सब कर्मों से हरि कीर्तन को ऊँचा भक्तों ने माना ।।१।।
रिल मिल जहँ हरि कीर्तन करते तहँ मैं रहूँ सदाई।
नारद से यह कहा विष्णु ने पढ़कर देख पुराना ।।२।।
तुलसीदास शुक सूरश्याम ने हरि कीर्तन को गाया।
कबीर नरसी नामदेव भी हरि यश किया बखाना ।।३।।
कर्म उपासन ज्ञान कठिन है कहे टेऊँ कलि माहीं।
सुगम कीर्तन है इक हरि का ताँसे प्रेम बढ़ाना ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ७५ ।। २९०।।

प्रेम भरे पन्थ में, धीरे धीरे चालना ।। टेक।।

प्रेम सचा पन्थ जानो, मिलने का मन्त्र मानो।
सत्गुरु से पूछके तुम, भगवत को भालना ।।१।।

प्रेम केरी बाट ऐसी, खंजर की धार जैसी।
चलना है ताहिं पर जो, सुरति को न टालना ।।२।।

रज़ा पर राज़ी रहना, मीठे मीठे बोल कहना।
मिलना है राम से तो, हौं मैं को जालना ।।३।।

सिर की ना परवाह कीजे, सुख दुख को सहीजे।
कहे टेऊँ अन्त ताईं, प्रीति को पालना ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ७६ ।। २९१।।

हरी नाम है पापन हारी, हरी नाम है नित सुखकारी।
हरी नाम दुख मेटे भारी,
लावो लावो मन हरि से, गावो गावो गुन हरि के ।। टेक।।

जो जन हरि से नेह लगावे, सो जन भव सागर तर जावे।
हरि की महिमा वेद बतावे, अन्त काल जम फास छुड़ावे।
हरी नाम ने गणिका तारी, अहिल्या शबरी पार उतारी।
हरी नाम है अधम उधारी ।।१।।

हरी नाम बिन संग न कोई, हरि बिन जनम अक्यार्थ होई।
हरि को सुमरे हरिजन जोई, पावे मुक्ती पद को सोई।
हरि ने पापी अजामिल तारा, व्याध गीध गजराज उबारा।
सैना सधना पार उतारा ।।२।।

हरी नाम मन मैल मिटावे, हरी नाम चित्त शान्त बनावे।
हरी नाम दिल द्वैत नसावे, हरी नाम उर ज्योति जगावे।
कहे टेऊँ जिस हरिगुन गाया, उसको हरि ने कंठ लगाया।
केवल मोक्ष पद पहुँचाया ।।३।।

।। राग भैरवी भजन ।। ७७ ।। २९२।।

रखवारा है, प्रभू मेरा दीनों का दातारा है ।।टेक।।
दुख दूर करे, सब पाप हरे, जो मन में हरि का ध्यान धरे।
ऐसा योग क्षेम अरु मोक्ष का भण्डारा है ।।१।।
दे शान्त सुमति, गुण ज्ञान शक्ति, जो राखे मन में भाव भक्ति।
वो शरनि आये को निर्भय करने हारा है ।।२।।
धन धान देत, सुख शान देत, अरु सर्व पदार्थ दान देत।
कहे टेऊँ वह सर्व जगत आधारा है ।।३।।

।। राग भैरवी भजन ।। ७८ ।। २९३।।

करले राम नाम से प्यार, होगा तेरा बेड़ा पार,
पाया मानुष का चोला तूने दुर्लभ है ।।टेक।।
नाम प्रभू का है सुखकारी, जिसने तारे अधम अनारी।
है वो सब दुख मेटनहार, सोई सुमरो सिरजनहार ।।१।।
गनिका अजामिल राम उचारे, जनम जनम के पाप उतारे।
पाया वैकुण्ठ का द्वार, तुम भी सुमरो सत् कर्तार ।।२।।
शबरी जटायू ने राम गुन गाया, कहे टेऊँ हरि का दर्शन पाया।
कोया तिनका जै जैकार, तुम भी लेवो राम अधार ।।३।।

।। राग भैरवी भजन ।। ७९ ।। २९४।।

सदा सत्संग श्रद्धा से करना, सुन सत्य वचन मन में धरना ।। टेक।।
छोड़ सर्व सङ्ग सत्सङ्ग जाओ, बैठ प्रेम से गोविन्द गुन गाओ।
लेके ज्ञान सर्व बन्धन हरना ।।१।।
संग दुर्जन का दुखदाई है, सत्पुरुषों का सुखदाई है।
तांते सन्तों की शरणी पड़ना ।।२।।
सत्संग में ही प्रभू बसता है, यही राम मिलन का रस्ता है।
कहे टेऊँ करे सत्संग तरना ।।३।।

।। राग भैरवी भजन ।। ८० ।। २९५।।

दर आया तेरे सत्गुरु मैं, विपति हरो मेरे तन मन की।। टेक।।
हम पापी अधम अज्ञानी है, तुम पूर्ण ब्रह्मज्ञानी है।
दे खान ज्ञान गुण रतनन की ।।१।।
मैं जम से हरदम डरता हूँ, पुनि जग में जमता मरता हूँ।
अब चौरासी कट निज जन की ।।२।।
टेऊँ सब जग देखा मैं, तुम जैसा ना पेखा मैं।
ओट गही तेरे चरनन की ।।३।।

।। राग भैरवी भजन ।। ८१ ।। २९६।।

मन स्मर ओम निज नाम को, तुम पाओ आत्म राम को।।टेक।।
जगत ओम में स्थित सारा, ओम बसे इस जगत मंझारा।
यों लख ओम अभिराम को ।।१।।
आदि नाद मय ओम उच्चारा, नाद ब्रह्म मय वेद पुकारा।
ध्वनि चाले आठों याम को ।।२।।

सुरति मिलाओ नाद ध्वनी से, प्रथम सीखो किसी मुनी से।
जो जानत ऐसे माम को ।।३।।
नाद ध्वनि के दस प्रकारा, पकड़ चलो ले ध्वनि आधारा।
यों पहुंचोगे पिय धाम को।।४।।
कहे टेऊँ जे ओम उपासी, पाये पूरण पद अविनाशी।
फिर लौटे ना जग गाम को।।५।।

।। राग भैरवी भजन ।। ८२ ।। २९७।।

तुम भजन करो भगवान का, यह मार्ग है कल्यान का।। टेक।।
कलीकाल में मुक्ति करन का, सुगम यत्न है हरि स्मरन का।
यह कहना वेद पुरान का ।।१।।
और युगों में औरे साधन, कलि में केवल हरि का स्मरन।
गुन गाइये कृपा निधान का ।।२।।
सब सन्तों मिल निर्णय कीना, हरि स्मरण को उत्तम चीना।
कर स्मरन राम महान का ।।३।।
कहता टेऊँ हरि को रटले, जन्म मरण के बन्धन कटले।
तज झूठा मोह जहान का ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ८३ ।। २९८।।

कर राम चरण की आस रे, तेरे कारज होवहिं रास रे ।। टेक।।
राज कामना मन में धारे, राम शरण सुग्रीव सिधारे।
किया राज तख़्त पर वास रे ।।१।।
शबरी ने मन प्रीति बढ़ाई, देख राम को अति हर्षाई।
किया वैकुण्ठ माहिं निवास रे ।।२।।

भक्त विभीषण प्रेम लगाये, शरण राम की वेग सिधाये।
भयी पूर्ण तांकी प्यास रे ।।३।।
कहे टेऊँ जिस जैसी प्यासा, राम करे तिस पूर्ण आसा।
यह साखी है इतिहास रे ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ८४ ।। २९९।।

मन राम नाम मुख बोल रे, तुम जन्म न वृथा रोल रे ।। टेक।।
राम जपन से क्यों घबराता, गांठी से कुछ गिर नहीं जाता।
नहिं लागत तेरा मोल रे ।।१।।
दम दम राम नाम को ध्याओ, वृथा श्वास न एक गंवाओ।
यह जानो अति अनमोल रे ।।२।।
जीने पर इतबार न कोई, गया श्वास फिर आय न सोई।
यह देखो दिल में तोल रे ।।३।।
राम भजन बिन जो जहं जावे, कहे टेऊँ सो दुख तहँ पावे।
पढ देखो पुस्तक खोल रे।। ४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ८५ ।। ३००।।

सत्गुरु तेरा नाम, मुझको लागत प्यारा ।।टेक।।
मात पिता धन धाम लुगाई, मित्र पुत्र परिवारा।
इन प्यारों से अधिक प्यारा, सत्गुरु नाम तुम्हारा।
देश विदेश में और न कोई, हित को करने हारा ।।१।।
जबसे सत्गुरु तुम्हरे नाम का, मैंने स्मरण कीया।
तब से मेरा शीतल हुआ, तन मन वाणी जीया।
नाम समान न इसी जीव को, शीतल करने हारा ।।२।।

जिस घट अन्दर सत्गुरु तेरा, नाम करे प्रकाशा।
काम क्रोध मद आदिक दुर्गुण, हो जावहिं सब नाशा।
जन्म मरण के भारी भय को, जड़ से मेटन हारा ।।३।।
सर्व देश में सर्व काल में, सब वस्तुनि को देखा।
नाम समान न दूजा मैंने, सुखकारी को पेखा।
कहता टेऊँ जपत रहूँ मैं, तेरा नाम उदारा ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ८६ ।। ३०१।।

रे मन मेरा तज निठराई, मानो वचन हमारा।
जिससे पूर्ण शान्ती मिलहै, हो कल्यान तुम्हारा ।।टेक।।
झूठ कपट प्रपंच त्यागो, सत् मार्ग में चालो।
मात गर्भ में कौल किया जो, प्रभू से सो पालो।
राम नाम का स्मरण करके, जग से होय निरालो।
मानुष तन को सफला कीजे, हरि का ले आधारा ।।१।।
स्वप्ने के सम जान जगत को, सब ते होय निरासा।
अभय देश हो पावन भूमी, करलो ताहिं निवासा।
विवेक उपशम हृदय धर कर, आतम का अभ्यासा।
उभय लोक की आस तजे तुम, स्मरो सिरजनहारा ।।२।।
कहे टेऊँ उर श्रद्धा धारे, सत्गुरु शरणी जाओ।
तन मन धन से सेवा करके, इच्छित फल को पाओ।
देह मन्दिर के रंग महल में, दीपक ज्ञान जगाओ।
अविद्या तम को दूर करे तुम, अपना कर दीदारा ।।३।।

।। राग भैरवी भजन ।। ८७ ।। ३०२।।

मेरे मन तुम राम नाम जप, तेरी होय भलाई।
जिन जिन राम नाम को जपिया, तिन तिन शुभ गति पाई ।। टेक।।
राम नाम जप महादेव ने, विष को खाय पचाया।
राम नाम जप देवऋषी ने, जहं तहं आदर पाया।
राम नाम जप वाल्मीकि जा, ब्रह्म स्वरूप समाया।
राम नाम को फेरा देके, पूज्य भया गणराई ।।१।।
राम नाम को जप हनुमंता, कूद गये सिन्धु पारा।
राम नाम जप गीध जटायू, पाया हरि दीदारा।
राम नाम जप काक भुशण्डि ने, पाया ज्ञान भण्डारा।
राम नाम के दो अक्षरों ने, जल में शिला तराई ।।२।।
राम नाम जप दैत्यपुत्र ने, भक्तराज कहलाया।
राम नाम जप ध्रुव भक्त ने, निश्चल पद को पाया।
राम नाम जप भक्त विभीषण, दोनों काज बनाया।
राम नाम जप नामदेव ने, मृतक धेनु जिलाई ।।३।।
राम नाम जप तुलसीदास ने, गंगा पार कराया।
राम नाम जप महाप्रभू ने, अनन्त खेल दिखाया।
राम नाम जप गुरु नानक ने, लाखों जीव तराया।
कहता टेऊँ राम जपन से, सबको मिले बड़ाई ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ८८ ।। ३०३।।

सत्गुरु से ले राम नाम जप, जांते होय उद्धारा।
राम नाम बिन और न को, भवसागर तारनहारा ।। टेक।।
बड़े बड़े यज्ञ हवन करे को, वेद विधी से नाना।
अन्न जल वस्त्र सोना चान्दी, गौओं का दे दाना।
उत्तम काल में जाय करे को, तीर्थों में स्नाना।
बहु विधि देवों को आराधे, राखे व्रत महाना।
इन से जन्म मरण ना छूटे, मिलहैं स्वर्ग द्वारा ।।१।।
पांच अग्नि से तन को तापे, देह हिमाचल गारे।
एक पांव पर खड़े खड़े मुख, वैदिक मंत्र उच्चारे।
सब मन्दिरों की दे परिक्रमा, मन में श्रद्धा धारे।
आठों सिद्धियां प्राप्त करके, जल थल गगन पधारे।
इनके कीये शान्ति न आवे, मिटे न मन अहंकारा ।।२।।
चारों वेद उपवेद उपनिषद्, शास्त्र अंग पुराना।
महाभारत रामायण गीता, स्मृति बहु विज्ञाना।
बाईबिल पुनि ज़िंदहवस्था, पढ़ो इञ्जील कुराना।
सन्त जनों की वाणी का भी, पठन करो दे ध्याना।
सब शास्त्रों का सार यही है, स्मरो नाम उदारा ।।३।।
वाल्मीकि मुनि शंकर गणपति, देवऋषी हनुमाना।
याज्ञवल्क्य मुनि व्यास सूत शुक, सनकादिक विद्वाना।
भक्त ध्रुव प्रह्लाद विभीषण, काक भुशण्डि हरियाना।
धन्ना कबीरा दादू नामा, तुलसी सूर सुजाना।
कहे टेऊँ सब यही कहत हैं, राम भजन कर प्यारा ।।४।।

॥ राग भैरवी भजन ॥ ८९ ॥ ३०४॥

रे मन मेरे धीरज धरना, चित्त की चिन्ता हरना।
धीरज रूपी नौका चढ़कर, दुख सागर से तरना ॥टेक॥
सुख भी सपना दुख भी सपना, दोनों रहन न पावे।
साक्षी बनकर देख तमाशा, हर्ष शोक मत करना ॥१॥
सुख के पीछे दुख ही आवे, दुख पीछे सुख आता।
चक्कर आदि से चलता रहता, इसके पले न पड़ना ॥२॥
सुख दुख फल है निज कर्मों का, हरि आज्ञा से आते।
जो हरि भेजे दे तिस आदर, समता माहिं विचरना ॥३॥
देख दुखों को मत घबराना, सुख में फूल न जाना।
कहे टेऊँ तुम छोड़ कल्पना, धीरज की लो शरना ॥४॥

॥ राग भैरवी भजन ॥ ९० ॥ ३०५॥

भजन हरी का कर ले प्रानी, पाओ सुख की खानी।
भजन हरी का साचा जानो, जग सारा है फ़ानी ॥टेक॥
घृत वारि से तेल रेत से, बांझ पूत भलि होवे।
भजन बिना पर तरे न कोई, सन्तों की यह बानी ॥१॥
भजन हरी का जिहं नहिं कीना, सत्संग में नहिं जाया।
मानुष तन में पशू लखो तिहं, वेदनि बात बखानी ॥२॥
ज़ाति पाति बल यौवन विद्या, धन मन्दिर गुण शोभा।
भजन बिना सब वृथा जानो, ऐसे कहते ज्ञानी ॥३॥
तन सङ्गी ना धन सङ्गी ना, कुटुम्ब सङ्गी ना भाई।
कहे टेऊँ हरि साचा संगी, जानो सब सुखदानी ॥४॥

।। राग भैरवी भजन ।। ९१ ।। ३०६।।

एही मेरा अर्ज़ अघाना, हे समर्थ भगवाना।
दया करे सब अवगुण मेटे, अपने चरन लगाना ।।टेक।।
कली काल के देख कर्म को, डरपत है मन मेरा।
एक सहारा मुझको तेरा, हमरी लाज बचाना ।।१।।
कंचन कामिनी कीर्ति जग की, ये हैं शत्रू भारी।
राख लेहु तुम इन से मुझको, हे हरि कृपा निधाना ।।२।।
काम क्रोध पुनि लोभ मोह मद, मत्सर ममता माया।
मुक्ति पन्थ में ये हैं कण्टक, इनको दूर हटाना ।।३।।
तीन ईष्णा तीन वासना, तीन लज्जा गुण तीनों।
इन बन्धनों से मोहि छुड़ाके, अपना दास बनाना ।।४।।
सब दोषों की जननी अविद्या, पुनि मूण्ढों की संगति।
इन दोनों से मोहि बचाके, सन्तों संग बसाना ।।५।।
कहे टेऊँ मैं और न मांगूं, मांगूं तुम से येही।
अनन्य भक्ती दे हरि मुझको, अपने साथ मिलाना ।।६।।

।। राग भैरवी भजन ।। ९२ ।। ३०७।।

भजन राम का करले प्यारा, पाओ हरि दीदारा।
भजन राम का हरि से मेले, यम से हो छुटकारा ।।टेक।।
भजन नाम है चित्त का चिन्तन, भजन धर्म है मन का।
एक पलक मन छोड़ न साकत, चिन्तन यह निर्धारा ।।१।।
जामें जांकी रुची होत है, अहनिशि तांको चितवे।
जिस वस्तू का चिन्तन करते, बनते वह आकारा ।।२।।

जड़ चिन्तन से जड़ ही बनता, चेतन चितवे चेतन।
तांते जड़ का चिन्तन तजके, हरि स्मरो इकतारा ।।३।।
आठ भान्ति से मन यह पलटे, कहे टेऊँ सत् वाणी।
साध संगति हरि चिन्तन करके, भव से उतरो पारा ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ९३ ।। ३०८।।

सत्गुरु कीना कार्य पूरा, रहा न कुछ अधूरा।
मिटा अन्देशा गया बिछोड़ा, विघ्न भये चक चूरा ।। टेक।।
बहुत जन्म से बिछुड़ी होई, सुरती आत्म वर से।
दया करे गुरु ताहिं मिलाये, हरिया सकल विसूरा ।।१।।
सुरति शब्द मिल पवन कला से, अपने घर में आई।
निशिवासर तहं रिल मिल होके, पाया सुख भरपूरा ।।२।।
भुवन चतुर्दश आनन्द छाया, लागे देन बधाई।
गगन मण्डल में भान्ति भान्ति के, बाजे अनहद तूरा ।।३।।
कहे टेऊँ गुरु कृपा करके, सकले काज बनाया।
अन्तर्मुख हो अनुभव कीया, पाया हरी हज़ूरा ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ९४ ।। ३०९।।

सत्गुरु कीनी पूर्ण आसा, मेटी यम की त्रासा।
दया करे सब द्वन्द्व मिटाया, हृदय भया हुलासा ।। टेक।।
शान्ति वधू से शादी करके, ज्ञान पुत्र मैं पाया।
तिस प्रतापे भये मुक्त हम, होया वंश विकासा ।।१।।

कृत्रिम घर का त्याग करे मैं, आदी घर में आया।
सूर्य चान्द ना तहं प्रकाशे, नहिं तां धरनि अकासा ।।२।।
ब्रह्म ज्ञान का अमृत भोजन, रज रज के मैं खाया।
तृप्त भया अब मनुवा मेरा, रही न भूख प्यासा ।।३।।
आत्म धन मैं साचा पाया, खर्चत कभी न खूटे।
कहे टेऊँ अब निर्भय होया, टूटी कर्मनि फासा ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ९५ ।। ३१०।।

जोगी हैं अब जावण वाले, प्रेम पिलावण वाले।
मोहन वाली मुरली बजाकर, मस्त बनावण वाले ।।टेक।।
जोगियों आगे बैठ अभी तुम, जो कुछ पाना पाले।
ऐसे जोगी फिर नगरी में, मुश्किल आवण वाले ।।१।।
जन्म जन्म के कर्म फले जब, तबहीं जोगी मिलते।
भवसागर से जीवों को ये, पार तरावण वाले ।।२।।
पूर्व देश के जोगी हैं ये, जोग की जुगति सिखाते।
सुरति शब्द का घटहीं भीतर, मेल मिलावण वाले ।।३।।
ब्रह्मज्ञान का नाद बजाकर, सोये जीव जगावनि।
कहे टेऊँ दे सत् उपदेशा, भ्रम मिटावण वाले ।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ९६ ।। ३११।।

काल नित तेरे सिर नाचे ।।टेक।।
आयू के दिन घटते जाते, तुम जानत हो बढ़ते जाते।
माया के तुम रंग राचे ।।१।।

बैठा कांधे डंडा लेकर, तोहि अचानक मारे सिर पर।
तन टूटे जिमि घट काचे ।।२।।
बालक बूढ़ा जवान संहारे, धीर वीर गम्भीरनि गारे।
काल से ना कोई बाचे ।।३।।
नैन खोल कर देख प्यारे, कहे टेऊँ गये मित्र तुम्हारे।
तांते तुम जप हरि साचे।।४।।

।। राग भैरवी भजन ।। ९७ ।। ३१२।।

प्रभू तेरी शरण लई मैं ने ।। टेक।।

शरण पालक है नाम तुम्हारा, मुझ निर्बल का तुम आधारा।
तेरी इक ओट गही मैं ने ।।१।।
तुम ही मात पिता बन्धु भ्राता, तुम ही सजन सखा सुख दाता।
डोरी तुम हाथ दई मैं ने ।। २ ।।
जहं तुम भेजो तहं मैं जाऊँ, हरदम तेरे ही गुन गाऊँ।
करी अभिलाष यही मैं ने ।। ३।।
कहे टेऊँ सुन दीन दयालू, मोहि मिलाओ सन्त कृपालू।
यह निज आस कही मैं ने ।। ४ ।।

।। राग भैरवी भजन ।। ९८ ।। ३१३।।

गोबिन्द के गुन गाते रहो।
नित साध संगति में आते रहो ।। टेक।।

मनुष जन्म यह दुर्लभ हीरा, बड़े भाग से पाया है।
इसका महत्त्व वेद ग्रन्थनि, ऋषियों मुनियों ने गाया है।
तुम हरि रंग में नित राते रहो ।।१।।

साध संगति पुनि हरि का कीर्तन, इस जग में है सार सही।
प्रेम भाव से हरि गुन गाके, पाओ मोक्ष द्वार सही।
मन पाप कर्म से हटाते रहो ।।२।।
कलियुग में हरि भक्ती करना, उत्तम धर्म कहलाता है।
कहता टेऊँ जन्म जन्म के, सकले पाप मिटाता है।
चित्त हरि चरणों में लगाते रहो ।।३।।

।। राग ज़िला भजन ।। १ ।। ३१४।।

परम प्यारी प्रान अधारी, मुरली सद्गुरु वाली है ।। टेक।।
जाहिं बजाकर मनमोहन भी, चालत चाल मराली है।
जिसकी तान सुनत ही सबकी, होई मति मतिवाली है ।।१।।
जग में साज़ बजत बहुते पर, इसकी तान निराली है।
जो जो सुनता सो वश होता, ज्यों मुरली प्रति व्याली है।।२।।
कहे टेऊँ यह निर्गुण मुरली, अमृत रस की आली है।
एक पलक नहिं भूलत मुझसे, आदि अन्त रखवाली है ।।३।।

।। राग ज़िला भजन ।। २ ।। ३१५।।

गुरुमुख मनमुख दोनों केरे, लक्षण न्यारे न्यारे हैं ।। टेक।।
गुरुमुख गुरु संग हरिगुन गाके, मानुष जन्म सुधारे हैं।
मनमुख माया का चिन्तन कर, दोनों लोक बिगारे हैं ।।१।।
गुरुमुख मन को निर्मल करके, हरि का नाम पुकारे हैं।
मनमुख मन मैले से निशदिन, फीके वचन उचारे हैं ।।२।।

गुरुमुख जग से मुक्ता होके, ब्रह्मानन्द गुज़ारे हैं।
मनमुख जग बन्धन में बांधा, भोगत कष्ट अपारे हैं ।।३।।
गुरुमुख गुरु की आज्ञा माने, मनमुख मन मति धारे हैं।
कहे टेऊँ गुरुमुख का संग कर, जो भव सिन्धु से तारे हैं ।।४।।

।। राग ज़िला भजन ।। ३ ।। ३१६।।

सन्तों की यह रीति सनातन, सबको प्रेम पिलाते हैं ।। टेक।।
काम क्रोध मद ताप क्लेशा, जुगती साथ जलाते हैं।
धर्म कर्म की नीत सिखाकर, सीधी राह चलाते हैं ।।१।।
जड़ चेतन की ग्रन्थी खोले, निज स्वरूप मिलाते हैं।
जीव ईश का भेद मिटाकर, एक ब्रह्म दिखलाते हैं ।।२।।
आतम का उपदेश बताकर, मन से जगत भुलाते हैं।
कहता टेऊँ द्वन्द्व दूर कर, सम की सेज सुलाते हैं ।।३।।

।। राग ज़िला भजन ।। ४ ।। ३१७।।

काहे को तुम चिन्ता करते, प्रभू पालन हारा है ।। टेक।।
मात गर्भ जिहँ रक्षा कीनी, सो अब देवनहारा है।
आप बिसार दिया है उसको, उसने नाहिं बिसारा है ।।१।।
चौरासी लख जोनि को पालत, किसको भूख न मारा है।
कैसे आप लजावेंगा जिहं, नाम विश्वम्भर धारा है ।।२।।
कहता टेऊँ कर विश्वासा, दीन बन्धू दातारा है।
धीरज धारे हरि को सुमरो, जामें क्षेम तुम्हारा है ।।३।।

।। राग ज़िला भजन ।। ५ ।। ३१८।।

सन्त सच्चारे हरि के प्यारे, सबको साच सुनाते हैं।
खुद मस्ती में मस्त विचरते, गोविन्द के गुन गाते हैं ।। टेक।।
जीव ब्रह्म का करके मेला, अकड़ कला में खेले खेला।
धीरज धारे तत्व विचारे, सबसे सार उठाते हैं ।।१।।
हरि अनुरागी सर्व त्यागी, पांच विषय से हो वैरागी।
एका एकी परम विवेकी, आतम ध्यान लगाते हैं ।।२।।
निशदिन सुख दुख में सम रहते, अपना मान न कबहूं चहते।
पर उपकारी पर दुखहारी, मार्ग धर्म चलाते हैं ।।३।।
आतम अमृत को नित पीवत, कहता टेऊँ जुग जुग जीवत।
छोड़ उपाधी लाइ समाधी, सुख स्वरूप समाते हैं ।।४।।

।। राग ज़िला भजन ।। ६ ।। ३१९।।

एक अचम्भा हमने देखा, आवत अचरज भारी रे।
मात पिता को सुत ने जनिया, जाया पूत कुंवारी रे ।। टेक।।
एक नगर भूमी बिन देखा, जामें रंग अपारी रे।
तासु नगर इक धाम न देखा, रहत बहुत नर नारी रे ।।१।।
अजा कसाई को गहि मारा, छुरी सीस तां डारी रे।
पकड़ बाज को चिड़िया मारा, मारी मूस मंझारी रे ।।२।।
पाहन तरते पानी माहीं, तूंबा डूबत धारी रे।
पानी बिन इक नौका चलती, अग्नी जारत वारी रे ।।३।।

पिंगला पर्वत ऊपर चढ़िया, ठूंठ बजावत तारी रे।
अन्धा देखहिं बहुरा सुनहैं, गूंगे बात उच्चारी रे ।।४।।
अर्थ इसी का जो जन जाने, सो विद्वान विचारी रे।
कहे टेऊँ वह मेरा स्वामी, तांको वन्द हमारी रे।।५।।

।। राग ज़िला भजन ।। ७ ।। ३२०।।

गगन मण्डल में अजब तमाशा, देखत मैं विस्माया रे।। टेक।।
धरती बिन इक नगर नवीना, नज़र हमारी आया रे।
प्रजा बिन वां इक भूपति ने, अपना हुक्म चलाया रे ।।१।।
सीस बिना वां इक माली ने, बिन जल बाग बनाया रे।
डार तले जिस ऊपर मूला, ऐसे बिरछ लगाया रे ।।२।।
पांव बिना तहँ नटनी नाचे, अन्ध देख हर्षाया रे।
मुख बिन मीठे गाने गाकर, बहुरे लोक लुभाया रे ।।३।।
नीर बिना इक सागर में वां, बहुत लोक बह जाया रे।
बादल बिन जल बरसत है वां, निश में सूर समाया रे ।।४।।
कहे टेऊँ गुरु कृपा करके, ऐसा देश दिखाया रे।
देश उसी को जिसने देखा, सो मुनियों का राया रे ।।५।।

।। राग ज़िला भजन ।। ८ ।। ३२१।।

कैसे लिख हरि गाऊँ तव गुण कैसे लिख हरि गाऊँ मैं ।। टेक।।
सात सिन्धू की स्याही करहूं, पत्र धरणि लेखनि सुरतरुहूं।
तो भी अन्त न लाऊं मैं ।।१।।

कोटि कल्प तक हे हरिराई, सहस्र मुख से करूँ बड़ाई।
तो भी पार न पाऊँ मैं ।।२।।
तेरे गुण हैं अपर अपारे, कहे टेऊँ तुम जानन हारे।
क्या कह तोहि सुनाऊँ मैं ।।३।।

।। राग ज़िला भजन ।। ९ ।। ३२२।।

मैं डूबत था भवसागर में, गुरु नाम की नाव चढ़ाइ दीया ।। टेक।।
मैं पाप कर्म को करता था, जग झंगल माहिं विचरता था।
नित मोह ममत में मरता था,
गुरु सबसे मोहि छुड़ाइ दीया ।।१।।
इस मन में दोष अपारा था, पुनि पांचों चोर विकारा था।
उर महा अज्ञान अन्धारा था,
गुरु ज्ञान से सर्व हटाइ दीया ।।२।।
कहे टेऊँ और न जानत था, मैं अपने को तन मानत था।
निज आतम को न पछानत था,
गुरु आतम लाल लखाइ दीया ।।३।।

।। राग ज़िला भजन ।। १० ।। ३२३।।

बलवान बनो बुद्धिमान बनो,
मन दुश्मन को दल सहित हनो ।। टेक।।
अकाम कर्म की कुश्ती खेलो, धनुष ध्यान का कर में मेलो।
तीर शब्द का मारे मन को, नाश करो तुम धीर जनो ।।१।।

त्याग तमंचा तैयार करो तुम, बिरह बन्दूक बारूद भरो दम।
ढाल विरागी ज्ञान तेग कर, अहँ ब्रह्म आवाज़ भनो ।।२।।
अर्जुन सुत ज्यों रण में चलकर, भ्रम व्यूह को भेदो बलकर।
बहुत जन्म का मन है दुश्मन, मारो क्षमा ताहिं खनो ।।३।।
हनूमान ज्यों निज बल भूला, याद दिलाता हूँ तुझ मूला।
कहे टेऊँ तुम ब्रह्म स्वरूपा, गीता का यह ज्ञान गुनो ।।४।।

।। राग ज़िला भजन ।। ११ ।। ३२४।।

हरि सुमरे निज कल्याण करो,
हरि सुमरण बिन निस्तार नहीं ।। टेक।।

भक्त प्रह्लाद ने सुमरण कीया, सर्व कुटुम्ब को उबार लीया।
सुमरण कर भया जनक ज्ञानी, सुमरण बिन छुटकार नहीं।।१।।
सुमरण व्यास पुत्र ने कीना, भगवत रस में अहनिश भीना।
भूप परीक्षित नाम सुमरिया, सुमरण बिन जयकार नहीं ।।२।।
वाल्मीक सुमरे हरि जोया, तीन काल का ज्ञाता होया।
नारद सुमरे दर्शन पाया, सुमरण बिन दीदार नहीं ।।३।।
कहे टेऊँ हरि सुमरण करके, बहुते तर गये बन्धन हरके।
सुमरण से मन शान्ती पावत, सुमरण बिन सुख सार नहीं।।४।।

।। राग ज़िला भजन ।। १२ ।। ३२५।।

हम गीत सनातन गाएँगे, नित ध्वजा धर्म झुलाएँगे ।। टेक।।
धर्म सनातन ईश चलाया, राम कृष्ण ऋषि मुनि मन भाया।
पूर्व पुण्य से हमने पाया, लगन इसी से लाएँगे ।।१।।

धर्म सनातन आदि हमारा, जिसके आशय अनन्त अपारा।
वेदों ने इस भांति पुकारा, तिसको नाहिं भुलाएँगे ।।२।।
धर्म सनातन को हम धारे, भेद भ्रान्ती भ्रम निवारे।
ऊँचे स्वर से कह जयकारे, सोते जीव जगाएँगे ।।३।।
सर्व धर्म का है यह स्वामी, सर्व व्यापक है सुख धामी।
कहे टेऊँ दे मुक्ति मुदामी, तांको सीस निवाएँगे ।।४।।

।। राग ज़िला भजन ।। १३ ।। ३२६।।

जिस काज लिये यह जन्म धरा,
सो कारज अब तक नाहिं कीया ।। टेक।।
भोगों पीछे निशदिन धाया, साध सङ्गति में ना कब आया।
प्रेम सुधारस नाहिं पीया ।।१।।
पापों में मन कीन मलीना, जप तप संयम कर्म न कीना।
हाथों से ना दान दीया ।।२।।
मूर्ख तोहि भया अभिमाना, सन्त वचन नहिं सुनिया काना।
नाम हरी का नाहिं लीया ।।३।।
कहे टेऊँ तो लाज न आई, दुर्लभ मानुष देह गंवाई।
पाया आतम नाहिं पीया ।।४।।

।। राग ज़िला भजन ।। १४ ।। ३२७।।

जे सुख को तुम चाहत हो तो, सन्तों का सत्सङ्ग करो ।। टेक।।
जो सुख है सत्सङ्गति माहीं, सो सुख स्वर्ग लोक में नाहीं।
भावें वैकुण्ठ जा विचरो ।।१।।

सन्त समागम सुरतरु भारा, पूर्ण कारज करते सारा।
सद्‌गुण ले भण्डार भरो ।।२।।
साध संगति की करके सेवा, देखो प्रत्यक्ष आतम देवा।
जन्म मरण का दूख हरो ।।३।।
कहे टेऊँ सुन वचन हमारे, साध संगति भव सागर तारे।
निश्चय यह मन माहिं धरो।।४।।

।। राग ज़िला भजन ।। १५ ।। ३२८।।

सब ऊँचे स्वर से बोलो मिलकर,
साक्षी शिवोऽहम् साक्षी शिवोऽहम् ।। टेक।।
सागर के सब छोलिन माहीं, पँछिन के सब बोलिन माहीं।
गूञ्ज रहा यह गीत मनोहर,
साक्षी शिवोऽहम् साक्षी शिवोऽहम् ।।१।।
सूर्य चान्द सितारों से भी, मेघों की गजकारों से भी।
आय रही है धुनि यह सुन्दर,
साक्षी शिवोऽहम् साक्षी शिवोऽहम् ।।२।।
वृक्ष वृक्ष के सब पत्रों से, निगमागम के सब मन्त्रों से।
ऊठ रहा यह शब्द सुखम्बर,
साक्षी शिवोऽहम् साक्षी शिवोऽहम् ।।२।।
भांति भांति के साज़न भीतर, कुदरत के सब चिन्हन अन्दर।
बाज रहा यह नाम निरन्तर,
साक्षी शिवोऽहम् साक्षी शिवोऽहम् ।।४।।

जे जन बोलहिं साक्षी शिवोऽहम्, वे जन सुखिया रहते हरदम।
कहता टेऊँ सुमर स्वतन्तर,
साक्षी शिवोऽहम् साक्षी शिवोऽहम् ।।५।।

।। राग ज़िला भजन ।। १६ ।। ३२९।।

हे प्रभू प्यारे प्राण आधारे, कब तुम दरस दिखाओगे।
प्रेम सचे का प्याला मुझको, कब तुम आन पिलाओगे।। टेक।।
मार्ग तेरा देख देखकर, आंखें मेरी तरस रही।
अपना दर्शन मोहि दिखाकर, कब तुम प्यास बुझाओगे।।१।।
तुम बिन खान पान नहीं भावे, नैनें नीन्द न आती है।
दीन बन्धू कब कृपा करके, अपने साथ मिलाओगे ।।२।।
प्रीतम तुम बिन और न कोई, मेरे दुख को दूर करे।
साजन मेरे मन अन्तर की, कब तुम पीड़ मिटाओगे ।।३।।
कहता टेऊँ नाथ तुम्हारा, पल पल नाम पुकारत हूँ।
टेर हमारी सुनकर स्वामी, कब तुम कण्ठ लगाओगे ।।४।।

।। राग ज़िला भजन ।। १७ ।। ३३०।।

नाम जपो मन एही बारी, नाम हरी का है सुखकारी ।। टेक।।
पावक सम हरिनाम प्यारे, सब पापों को पल में जारे।
पतित उधारन तप्त निवारन, नाम महातम है अति भारी।।१।।
दुख भञ्जन है हरि का नामा, सुरतरु के सम पूरण कामा।
काज सँवारत जन्म सुधारत, काल कराल की काटत जारी।।२।।

नाम हरी का जान जहाजा, श्रद्धा से जो चढ़े समाजा।
तांको तारे करत किनारे, मुक्ति मिलावत है हितकारी ।।३।।
कहे टेऊँ हरि नाम उच्चारे, भव से तर गये अधम अपारे।
छीपा नाई भील कसाई, गनिका शबरी गौतमनारी ।।४।।

।। राग ज़िला भजन ।। १८ ।। ३३१।।

दीनदयाला हरि कृपाला, कबहूं मुझको नाहिं बिसारो।। टेक।।
जैसे बालक खेलन जावे, माता तांको नाहिं भुलावे।
दौड़ी आवे कण्ठ लगावे, ऐसे साहिब मोहि संभारो ।।१।।
देख डरूं हरि माया तेरी, सब जीवन की जिहं मति घेरी।
मैं अति दीना सब बल हीना, आप इसी से मोहि उबारो।।२।।
जन्म जन्म में बहु अघ कीया, जिन्होंने मुझको दुख दीया।
अब तो स्वामी अन्तर्यामी, कृपा कर सब कष्ट निवारो।।३।।
कहता टेऊँ टेर सुनीजे, करुणा कर मुझ यह वर दीजे।
तुम न भुलाओ मैं न भुलाऊँ, रटत रहूँ नित नाम तुम्हारो।।४।।

।। राग ज़िला भजन ।। १९ ।। ३३२।।

वृन्दावन में बीन बजाए, मोहन मुझको मोह लिया है।। टेक।।
सुनकर मुरली भयी मस्तानी, छूट गयी कुल की सब कानी।
रास रचाए मौज मचाए, हरि ने हमको मस्त किया है ।।१।।
प्रीति प्रभू से जबहीं लागी, तबहीं मन की सुध सब भागी।
नीन्द न आवे कछु ना भावे, पल पल आता याद पिया है।।२।।

वेद लोक कुल की तज लाजा, छोड़ दिया घर का सब काजा।
पाय मुरारी गिरिवरधारी, दर्शन कर अब जीउ जिया है ।।३।।
कहता टेऊँ मैं सदवारी, मोहनी मूरत पै बलिहारी।
देके दर्शन मन कर प्रसन्न, दूख दरद सब खोय दिया है ।।४।।

।। राग ज़िला भजन ।। २० ।। ३३३।।

रे मन प्यारा कर वीचारा, छोड़ जगत की झूठी आसा ।। टेक।।
समल वृक्ष के फल को जोवे, जैसे सूआ मोहित होवे।
पुनि पुनि आवत प्रेम बढ़ावत, फूटे फल तब जाय निरासा।।१।।
तैसे जग का देख निज़ारा, मोहित होवे मूण्ढ गंवारा।
खाली जावत बहु पछुतावत, झूठा जग का जान तमाशा।।२।।
मात पिता सुत धन परिवारा, अन्त काल को दे न सहारा।
तांको त्यागो अबहीं जागो, प्रभू मिलन की राखो प्यासा।।३।।
कहे टेऊँ तुम श्रद्धा धारे, जाओ पूरण गुरु के द्वारे।
आत्म ध्याए शान्ती पाए, अगम देश में करले वासा।। ४।।

।। राग ज़िला भजन ।। २१ ।। ३३४।।

रे मन देखो कर वीचारा, स्वपने मय है सब संसारा।। टेक।।
माता स्वपना ताता स्वपना, भैन स्वपन सुत भ्राता स्वपना।
बिछुड़न स्वपना मिलना स्वपना, स्वपने मय है सब परिवारा।।१।।
बैठन स्वपना धावन स्वपना, पीवन स्वपना खावन स्वपना।
देवन स्वपना लेवन स्वपना,स्वपनेमय है सब व्यवहारा।।२।।

मंगता स्वपना दाता स्वपना, मूर्ख स्वपना ज्ञाता स्वपना।
श्रोता स्वपना वक्ता स्वपना, स्वपने मय है सब विस्तारा।।३।।
कहे टेऊँ सब स्वपना जानो, इक आत्म ही सत् पहिचानो।
आतम जानत स्वपना नाशत, वेद मुनी यों करत उच्चारा।।४।।

।। राग ज़िला भजन ।। २२ ।। ३३५।।

ऐसा आतम राम ध्याया, जनम मरन के सब दुख जाया ।। टेक।।
एक अखण्ड जो है अविनासी, पूरन प्रभू घट घट वासी।
स्वयं प्रकाशी सब सुख राशी, वेदों ने यश जांका गाया ।।१।।
बाहर भीतर जो भरपूरा, निकट नहीं जो ना कछु दूरा।
निरंजन नूरा चमकत सूरा, अपनी महिमा माहिं समाया।।२।।
जांको कबहूँ जल न डुबावत, बाण न बेधे अगि न जलावत।
नहिं कहं धावत खेद न पावत, जिस शक्ती से नाचत माया ।।३।।
कहे टेऊँ सो सिरजनहारा, सबसे मिलिया सबसे न्यारा।
अन्त न पारा जग आधारा, जिसने ये सब खेल खिलाया।।४।।

।। राग ज़िला भजन ।। २३ ।। ३३६।।

खोज रहे जिस परमेश्वर को, तुझ में है वो नाहिं न्यारा।। टेक।।
मोहन मिलने हेतु सुजाना, मथुरा गोकुल में मत जाना।
मन मन्दिर में सदा बिराजे, ब्रह्म रूप नन्द लाल दुलारा ।।१।।
राम मिलन के हेतु सुजाना, चित्रकूट अयोध्या मत जाना।
हृदय अन्तर बसे निरन्तर, साक्षी चेतन राम उदारा ।।२।।

शंकर मिलने हेतु सुजाना, काशी कैलाशे मत जाना।
अन्दर चोले बैठा बोले, आत्म शंकर सिरजनहारा।।३।।
कहे टेऊँ गुरु ज्ञान गहीजे, भेद भ्रान्ती को हर लीजे।
आत्म ध्याये द्वन्द्व मिटाये, पाओ केवल मोक्ष द्वारा ।।४।।

।। राग ज़िला भजन ।। २४ ।। ३३७।।

हे परमेश्वर, हे जगदीश्वर, दीनों पर तुम कृपा करिये।। टेक।।
तुम हो दीन दयालू स्वामी, सङ्कटहारी पूर्णकामी।
दीनों केरे दोष न हेरे, दया करे तिनके दुख हरिये ।।१।।
अन्न बिन भूखे जल बिन प्यासी, वस्त्र बिन जे जीव उदासी।
रोय पुकारें तोहि निहारें, तिनके तुम भण्डारे भरिये ।।२।।
छोड़ आपको कहं ये जावें, तुम बिन दूजा नज़र न आवे।
विनय सुनीजे जीवन दीजे, तिन पर अपनी दृष्टी धरिये ।।३।।
सर्व जीवों को सुमती दीजे, कहे टेऊँ कुमती हर लीजे।
तुझे ध्यावहिं नाहिं भुलावहिं, दीन बन्धु तुम सब पर ढरिये।।४।।

।। राग ज़िला भजन ।। २५ ।। ३३८।।

रे मन मेरे सांझ सवेरे, नारायण का नाम स्मरिये ।। टेक।।
ब्रह्म ज्ञानिन की ज्ञेय नारायण, ध्यानिन की है ध्येय नारायण।
भक्त जनों का इष्ट नारायण, नारायण को हृदय धरिये ।।१।।
सब धर्मों का फल नारायण, सब कर्मों का बल नारायण।
सन्तजनों का धन नारायण, नारायण से जीउ जकड़िये ।।२।।

आदि नारायण, अन्त नारायण, मध्य नारायण नित्य नारायण।
यहां नारायण वहां नारायण, नारायण के पांव पकड़िये।।३।।
नारायण का नाम उच्चारे, भक्त गये हरिलोक मंझारे।
कहे टेऊँ तुम नारायण का,स्मरण करके सब दुख हरिये।।४।।

।। राग ज़िला भजन ।। २६ ।। ३३९।।

ब्रह्म प्यासी जाग जिज्ञासी, छोड़ जगत की सगरी आसा।। टेक।।
स्वपने सम जग मिथ्या जानो, मृग तृष्णा के जल सम मानो।
मृगा धावे बून्द न पावे,
भटकत भटकत दे निज श्वासा ।।१।।
मेघ मान ज्यों चातक धावे, धूम्र में निज नैन गंवावे।
गुञ्ज को आगी लखि हो रागी,
कम्पत कपि त्यों जगत विलासा ।।२।।
जादूगर की मिथ्या माया, देखन मात्र है खग छाया।
ज्यों नट केला नाटक खेला,
जानो वैसे जगत तमासा ।।३।।
छोड़ अनात्म कलना सारी, स्मरो आत्म ब्रह्म उदारी।
कहता टेऊँ जिसके स्मरे,
मन में होवे ज्ञान प्रकासा ।।४।।

।। राग ज़िला भजन ।। २७ ।। ३४०।।

ऊधव तेरी मति क्यों मारी, समझे ना कुछ बात हमारी ।। टेक।।
सुनो हमारे प्रीतम भाई, योग बतावत लाज न आई।
जिसको मैंने देखा नैनें, सो क्यों भूले ब्रज बिहारी ।।१।।

निर्गुण तेरा मोहि न भावत, सगुण रूप को हम नित चाहत।
बीन बजाई रास रचाई, पूछत हैं सो गिरिवरधारी ।।२।।
गोपनि संग गऊ चारनहारा, पूछ रही सो नन्द दुलारा।
केशी मारे कंस संहारे, ब्रज मण्डल की की रखवारी ।।३।।
कहे टेऊँ तुम जानत नाहीं, जो वेदनि हमरे मन माहीं।
और न चाहत इक ही भावत, मोहि मिलाओ मदन मुरारी।।४।।

।। राग ज़िला भजन ।। २८ ।। ३४१।।

पुण्य किया ना हरि गुन गाया, वृथा मानुष जन्म गंवाया ।। टेक।।
ना तुम पूजा मन्दिर देवा, ना सन्तों की कीनी सेवा।
दान न दीना यज्ञ न कीना, ना तुम जाकर तीर्थ नाया ।।१।।
ना तुम अपना किया उद्धारा, ना तुम कीना पर उपकारा।
ना तुम जागे हरि अनुरागे, किस कारण तू जग में आया।।२।।
कहे टेऊँ ना आप पछाना, पार ब्रह्म को भी नहिं जाना।
मानुष चोला रत्न अमोला, मूर्ख माटी माहिं मिलाया ।।३।।

।। राग ज़िला भजन ।। २९ ।। ३४२।।

सत्गुरु मारी शब्द कटारी, क्यों न मरा मन क्यों न मरा रे।। टेक।।
धोबी को जो वस्त्र दीया, मैल उतारे ऊजल कीया।
रंग में धरिया रंग न पड़िया, क्यों न पड़ा रंग क्यों न पड़ा रे।।१।।
वैद्य द्वारे रोगी आया, अपने दुःख का हाल सुनाया।
दारूं लाया दुख ना जाया, क्यों न हरा दुख क्यों न हरा रे ।।२।।

भंग धतूरे का जाम पिलाया, मीठा भोजन खूब खिलाया।
बेखुद वाला नशा निराला, क्यों न चढ़ा तिहं क्यों न चढ़ा रे।।३।।
कहे टेऊँ यह प्रश्न मेरा, साधो इसका करो निबेरा।
दीप उज्यारा तम अन्ध्यारा, क्यों न टरा वह क्यों न टरा रे।।४।।

।। राग ज़िला भजन ।। ३० ।। ३४३।।

ना वैरागा ना अनुरागा, इस कारण मन मरिया नाहीं ।। टेक।।
गुरु के वचन पर नहिं विश्वासा, बैठ एकान्त न किया अभ्यासा।
जग की आसा भई ना नासा, इस कर कारज सरिया नाहीं।।१।।
सूक्ष्म अहम् को नाहिं त्यागा, आत्म पद में ना चित लागा।
जीउ न जागा भ्रम न भागा, इस कारण मन ठरिया नाहीं ।।२।।
कहे टेऊँ गुरु ज्ञान न पाया, सन्तनि संग में ना कब आया।
हरि ना ध्याया मोह्या माया, इस कारण भव तरिया नाहीं।।३।।

।। राग बसन्त भजन ।। १ ।। ३४४।।

ऋतु ऋतु में है रंग साहब का, बसन्त ऋतु रंगवारी रे।। टेक।।
सूके तरु भये पत्र अपारा, बन बन फूले बाग फुलारा।
फूल रही फुलवारी रे ।।१।।
बसन्त ऋतु का देख निज़ारा, रिल मिल भँवरे करत गुञ्जारा।
सुगन्ध ले सुखकारी रे ।।२।।
बसन्त ऋतु को सब जन गावत, सुर नर मुनिजन के मन भावत,
मुझको लागत प्यारी रे ।।३।।
बसन्त ऋतु है बहुत रसाली, कहे टेऊँ भये सन्त सुखाली।
जाऊँ बलि बलिहारी रे ।।४।।

।। राग बसन्त भजन ।। २ ।। ३४५।।

सद्गुरु साहब सन्त मिलाया, जाग्या भाग हमारा जी ।। टेक।।
नित अवतारी पर उपकारी, कर्म भ्रम की काटत जारी।
लेकर ज्ञान कटारा जी ।।१।।
द्वैत बिना जे सन्त विदेही, प्रकट नाम सुणावहिं सेई।
हरत अज्ञान अन्धारा जी ।।२।।
जो घर बिछुड़ा सो घर पाया, हर सन्तों को सीस निवाया।
भव सागर जिन तारा जी ।।३।।
कहे टेऊँ पुण्य पूर्व फलिया, सन्त सज्जन मन मेली मिलिया।
वर्षे अमृत धारा जी ।।४।।

।। राग बसन्त भजन ।। ३ ।। ३४६।।

बिरह बसन्त मेरे घर आया, हृदय में भई होली रे।। टेक।।
बाग चिमन में पंकज फूले, कोयल मैना भँवरा झूले।
बोलत मीठी बोली रे ।।१।।
सर्व सखी मिल गावन लागी, हरी भजन में हो अनुरागी।
रंगी केसर चोली रे ।।२।।
शीतल सुगन्धी पवन चलत है, मृदंग भेरी बीन बजत है।
गावत गुनिजन टोली रे ।।३।।
कहे टेऊँ भया जय जयकारा, होया आनन्द मंगल अपारा।
दम दम जाऊँ घोली रे ।।४।।

।। राग बसन्त भजन ।। ४ ।। ३४७।।

बसन्त की ऋतु है अति सुन्दर, देख सभी हर्षाते हैं।। टेक।।
बसन्त की ऋतु आवत जबहीं, प्रसन्न होकर पंछी तबहीं।
रिलमिल मौज मचाते हैं ।।१।।
बन बन में होती हरियाली, त्रिविधि वायू बहत रसाली।
फूल सभी खिल जाते हैं ।।२।।
भँवरे मन में बहु हर्षावे, गुल्शन में जा गूंज लगावे।
सुगन्धि माहिं समाते हैं ।।३।।
सन्त हरी का नाम ध्याये, सत्संग का दीबान लगाये।
कहे टेऊँ गुण गाते हैं ।।४।।

।। राग बसन्त भजन ।। ५ ।। ३४८।।

बसन्त की ऋतु है सुखदाई, भँवरों के मन भाई रे।। टेक।।
भँवरा जावत गुल स्थाना, होवत फूलों पर मस्ताना।
तन की सुध बिसराई रे ।।१।।
बसन्त ऋतु की देख बहारी, चारों तरफ भई हुबकारी।
पांचों ऋतु शर्माई रे ।।२।।
बसन्त ऋतु अमृत को सींचे, फूले तन मन बाग बगीचे।
जहं तहं सुगन्धी छाई रे ।।३।।
बसन्त ऋतु की महिमा भारी, कहे टेऊँ मुझ लागत प्यारी।
तां पर मैं बलि जाई रे ।।४।।

।। राग बसन्त भजन ।। ६ ।। ३४९।।

साक्षी चेतन बसन्त ऋतु से, फूले पिण्ड ब्रह्मण्डा रे।। टेक।।
माया जीव ईश्वर फूले, ब्रह्मा विष्णु महेश्वर फूले।
फूले रवि प्रचण्डा रे ।।१।।
फूले धरणी पवन अकाशा, फूले पानी अग्नि प्रकाशा।
फूल रहे नव खण्डा रे ।।२।।
फूले सूक्ष्म थूल पसारा, फूले जीव चराचर सारा।
फूले यम का डण्डा रे ।।३।।
चेतन ऋतु कर सब जग फूले, कहे टेऊँ लख अंग अंग फूले।
फूले ज्ञान अखण्डा रे ।।४।।

।। राग बसन्त भजन ।। ७ ।। ३५०।।

सन्तों के संग होरी खेलो, पीवो प्रेम प्याला रे।। टेक।।
जांके पीवत होय बहारी, दिन दिन बढ़ती जाय खुमारी।
होवे मन मतिवाला रे ।।१।।
श्रद्धा की तुम केसर करिये, इत्र अम्बीर श्रेष्ठ गुण धरिये।
लाओ ज्ञान गुलाला रे ।।२।।
कहे टेऊँ यह होरी गाये, ब्रह्मानन्द में वृत्ति मिलाये।
पाओ आनन्द विशाला रे ।।३।।

।। राग बसन्त भजन ।। ८ ।। ३५१।।

बिरह बसन्त मेरे घर आये, होया मंगलचारा जी ।। टेक।।
बाजे बन्सी शंख सितारा, बाजे मृदंग चंग चौतारा।
झांझन का झनकारा जी ।।१।।
रिलमिल सखियां हरि गुन गाया, सुरति निरति ने आनन्द पाया।
भूल गया व्यवहारा जी ।।२।।
मन मन्दिर में भया प्रकाशा, अविद्या तम का भया विनाशा।
होया जय जयकारा जी ।।३।।
कहे टेऊँ मोहि दर्शन दीना, दर्शन कर मैं सब दुख छीना।
पाया सूख अपारा जी ।।४।।

।। राग बसन्त भजन ।। ९ ।। ३५२।।

सद्गुरु से तुम नेह लगाओ, सद्गुरु है हितकारी रे।। टेक।।
जैसे चन्द्रहिं देख चकोरा, तैसे देखो गुरु की ओरा।
गुरु दर्शन सुखकारी रे ।।१।।
आन्धे को ज्यों लकड़ सहारा, त्यों सद्गुरु का ले आधारा।
गुरु करता रखवारी रे ।।२।।
जल से हेत करत ज्यों मीना, त्यों कर जीवन गुरु आधीना।
बिछुड़े हो दुख भारी रे ।।३।।
गुरु बिन कबहूँ शान्ति न आवे, कहे टेऊँ भलि दह दिश धावे।
वेद कहत यों चारी रे ।।४।।

।। राग बसन्त भजन ।। १० ।। ३५३।।

गुरु का शब्द बसे जिस अन्तर, सो भव सिन्धु तर जाता है।। टेक।।
गुरु का शब्द कटे अज्ञाना, निश्चय देवत आतम ज्ञाना।
पूर्ण पद पहुँचाता है ।।१।।
गुरु शब्दे तांका मन लागे, जांके पूरब के पुण्य जागे।
बड़भागी कहलाता है ।।२।।
जो गुरु शब्द जपे दिन राती, मेटे पांचों भेद भ्रान्ती।
आतम रंग सो राता है ।।३।।
जो गुरु शब्द करे वीचारा, कहे टेऊँ पाय मोक्ष द्वारा।
आवागमन मिटाता है ।।४।।

।। राग बसन्त भजन ।। ११ ।। ३५४।।

सद्गुरु ऊपर मैं बलिहारी, कीया जिहँ उपकारा रे ।। टेक।।
कर्म करत कीया निष्कर्मी, धर्म धरत कीया निर्धर्मी।
कर्तृ भ्रम निवारा रे ।।१।।
भेद अन्दर निर्भेद लखाया, नाना में गुरु एक जनाया।
सम का दे वीचारा रे ।।२।।
काम क्रोध की अग्नि बुझाई, कलना हर दिल शान्ति बनाई।
दीया ज्ञान भण्डारा रे ।।३।।
जन्मों से था जम से झगड़ा, गुरु कृपा से मिट गया रगड़ा।
पाया मोक्ष द्वारा रे ।।४।।
कहे टेऊँ क्या गुरु गुन गाऊँ, गावत गावत अन्त न पाऊँ।
हरि से गुरू उदारा रे ।।५।।

।। राग बसन्त भजन ।। १२ ।। ३५५।।

श्वास श्वास से जप जिज्ञासू, एक अक्षर अविनाशी रे।। टेक।।
जिससे होया यह जग सारा, तांका होय प्यासी रे ।।१।।
जिससे चारों वेद बने हैं, सो तुम जप सुख रासी रे ।।२।।
जिससे यन्त्र मन्त्र सब निकले, तांका हो अभ्यासी रे ।।३।।
कहे टेऊँ तिहँ निशदिन ध्याए, हो अमरापुर वासी रे ।।४।।

।। राग बसन्त भजन ।। १३ ।। ३५६।।

श्री राम नाम को रटना रे, जम फासी कटना रे ।। टेक।।
राम साथ आराम बिराजे, देखो राम बुलाये।
राम से विष विश्राम होत है, देखो राम मिलाये।
हरि सुमरन से दुख घटना रे ।।१।।
भाव किसीसे भी तुम जग में, राम रटो दिन राती।
राम तुम्हारे पाप हरेंगे, यह गुन तिसमें जाती।
हरि सुमरन से नहीं हटना रे ।।२।।
समय समय अन साधन बदले, मुक्ती देने वाले।
राम नाम ना कबहूँ बदले, समझ लेहु मतिवाले।
हरि सुमरे बाज़ी खटना रे ।।३।।
कहे टेऊँ जे चाहो मेरा, भव से हो निस्तारा।
तो सन्तों के संग में रहकर, सुमरो राम उदारा।
जड़ पापों की तुम पटना रे ।।४।।

।। राग बसन्त भजन ।। १४ ।। ३५७।।

मन प्रेम हरी से कीजे रे, रस अमृत पीजे रे ।। टेक।।

माया के रस भोगत भोगत, कोटि जन्म तव बीते।
कबहूं तृप्ति भयी ना तुझको, अजहूं रह गये रीते।
अब हरि सुमरन कर लीजे रे ।।१।।

विषय वासना सर्व त्यागे, प्रेम प्रभू से लाओ।
साध संगति में जाकर मुख से, गोविन्द के गुन गाओ।
नित भाव भक्ति में भीजे रे ।।२।।

तन है झूठा धन है झूठा, झूठा है परिवारा।
सर्व जगत के नाते झूठे, साचा राम प्यारा।
तिहं राम नाम चित्त दीजे रे ।।३।।

कहता टेऊँ राम भजन बिन, वृथा जीवन सारा।
दृष्टि बिना ज्यों नेत्र दोनों, बिल्कुल हैं बेकारा।
हरि भजन बिना जम खीजे रे ।।४।।

।। राग बसन्त भजन ।। १५ ।। ३५८।।

इस मानुष तन में जागो रे, गुरु चरने लागो रे ।। टेक।।

जिस कार्य के करने कारन, पाया मानुष चोला।
भूल गये तिस कार्य को तुम, डाला अविद्या रोला।
ले विद्या अविद्या त्यागो रे ।।१।।

लख चौरासी जोनिन माहीं, चेतन मानुष देही।
छोड़ विषय कर भजन हरी का, देही का फल एही।
दे पीठ जगत से भागो रे ।।२।।

मानुष तन में शिव शक्ती का, होवे ज्ञान विकासा।
देवन को यह दुर्लभ मिलता, पुरानों में प्रकाशा।
कर तांते हरि अनुरागो रे ।।३।।
कहे टेऊँ मानुष तन दर्पन, हरि दर्शन हित जानो।
तां महिं जो हरि दर्शन करते, सफल जन्म तिहँ मानो।
तुम भी हरि दर्शन पागो रे ।।४।।

।। राग बसन्त भजन ।। १६ ।। ३५९।।

मन पाप कर्म मत करना रे, यम से तुम डरना रे ।।टेक।।
जो जो कर्म जगत में करते, चित्रगुप्त लिख लेते।
धर्मराज के आगे वाचे, चौदहँ साक्षी देते।
तहँ तिल तिल लेखा भरना रे ।।१।।
राज नहीं पूपा बाई का, साच न्याय तहँ होता।
धर्मी जन तहँ आदर पावे, पापी नर बहु रोता।
तुम सोच सोच पग धरना रे ।।२।।
साहब दर ना होय खुशामद, राव रंक जो होई।
कर्मों का ही होय निबेरा, ज़ोर न चाले कोई।
नहिं पापों पीछे पड़ना रे ।।३।।
पापियों के शिर मार पड़त है, शास्त्र यों बतलाते।
कहे टेऊँ वे सुख को पावत, जे शुभ कर्म कमाते।
सत् कर्म करे भव तरना रे ।।४।।

।। राग बसन्त भजन ।। १७ ।। ३६०।।

घर मेरे सत्गुरु आया रे, बहु आनन्द छाया रे ।।टेक।।
मिल मिल सखियाँ देत बधाई, सत्गुरु चरन पधारे।
आज सफल भये कारज मेरे, गुरु दर्शन से सारे।
मैं देख देख हर्षाया रे ।।१।।
सेवक के घर गुरु का आना, भागों की नीशानी।
विघ्न नशावे पुण्य बढ़ावे, दे गुण मङ्गल खानी।
अब सर्व दूख मिट जाया रे ।।२।।
आज दिवस पल पहर घड़ी धन्य, धन्य हैं भाग हमारे।
मन मन्दिर में रोशन होया, बाजे ढोल नगारे।
मैं गीत खुशी के गाया रे ।।३।।
कहता टेऊँ हरि कृपा से, सद्गुरु दर्शन दीना।
जप तप संयम दान स्नाना, सर्व सफल मम कीना।
मैं परमानन्द को पाया रे ।।४।।

।। राग बसन्त भजन ।। १८ ।। ३६१।।

अब बसन्त के दिन आये रे, बहु आनन्द छाये रे ।।टेक।।
बन बन में सब तरुवर फूले, फूल रही सब डाली।
डार डार में पत्रे फूले, पत्रों में हरियाली।
सब देख देख सुख पाये रे ।।१।।
बाग़नि में शुक मैना बुलबुल, कोयल मीठा बोले।
भंवरा भंवरी फूल फूल पर, मिलकर करत कलोले।
ये सबके मन को भाये रे ।।२।।

साध सन्त मिल हरिजन मुनिजन, बसन्त को नित गावहिं।
चङ्ग मृदङ्ग सितार तम्बूरा, बाजा ढोल बजावहिं।
सुन श्रोता गन हर्षाये रे ।।३।।
कहे टेऊँ भया आनन्द सबको, फूली सृष्टी सारी।
आपस में मिल रंग लगावहिं, मार प्रेम पिचकारी।
सब सुख के माहिं समाये रे ।।४।।

।। राग बसन्त भजन ।। १९ ।। ३६२।।

मन भगवत की कर भक्ती रे, ले गुरु से युक्ती रे ।।टेक।।
सर्व कामना छोड़ जगत की, आसा हरि की कीजे।
मन बुद्धि इन्द्रियां निश्चल करके, नाम हरी का लीजे।
हरि भक्ती देती मुक्ती रे ।।१।।
हरि भक्ती है सब ते ऊँची, सर्व सुखों की मूला।
मूल सींचन से सींचा जावे, डार पात फल फूला।
हरि भक्ती दे गुण शक्ती रे ।।२।।
चतुर भांति के भक्त जगत में, मुझको प्रिय हैं सारे।
तामें निष्कामी निर्मानी, ज्ञानी अधिक प्यारे।
यह ईश्वर की है उक्ती रे ।।३।।
सोई सन्त गुरू है सोई, मात पिता सो मानो।
कहे टेऊँ सो साचा बन्धू, सोई मीत पछानो।
जो हरि में ही अनुरक्ती रे ।।४।।

।। राग बसन्त भजन ।। २० ।। ३६३।।

मानुष तन यह सफला कीजे, पूजे गुरु को प्यारा रे ।। टेक।।
सत्गुरु को तुम ब्रह्म पछानो, पूर्ण श्रद्धा उर में आनो।
गुरु है सिरजणहारा रे ।।१।।
सर्व देव हैं गुरु के अंगा, गुरु पूजे हो भव दुख भंगा।
पाप मिटत पुनि सारा रे ।।२।।
गुरु को पूजे जीव जुगादी, गुरु को पूजे देव अनादी।
पूजत पुनि अवतारा रे ।।३।।
कहे टेऊँ गुरु पूजन करिये, तन मन धन की भेटा धरिये।
पाओ सूख अपारा रे ।।४।।

।। बसन्त महिमा भजन ।। २१ ।। ३६४।।

आई है आई है ऋतु बसन्त की ।। टेक।।
ऋतों में ऋतु सुहानी है, सुन्दर जिसकी कहानी है,
बरसे गुलाल होवे सब लाल, करे निहाल मोद मन में ।।१।।
सूखे तरुवर हरे होवैं, पुराने पात को खोवैं,
भयी गुलज़ार भँवर हुशियार, करे गुंजार गुल्शन में ।।२।।
बसन्त को सन्त जन गावे, सर्व के चीत में भावे,
होवे प्रसन्न सदा हरिजन, लगावे लगन भगवन में ।।३।।
कहे टेऊँ बसन्त गावो, परम आनन्द को पाओ,
रही निष्काम जपो हरि नाम, पाओ सुख धाम मनुष तन में ।।४।।

॥ राग तिलंग भजन ॥ १ ॥ ३६५॥

चलिये साधो देश अमर घर जनम मरण मिट जावत फेरा॥ टेक॥
चरन कमल सद्गुरु का ध्याओ, मूल कमल से मूल बन्धाओ।
गुरु गणेश को तहां मनाओ, लिंग कमल अज जान बसेरा॥१॥
नाभ कमल से नाम चलाए, विश्व व्यापक विष्णू पाये।
हृदय में शिव शंख बजाए, सहज धुनी सुन सांझ सवेरा॥२॥
कण्ठ कमल सरस्वती प्यारी, वहाँ बिराजे हंस विचारी।
त्रिभणा के घर ज्योति उज्यारी, निरजन का नित हरो अन्धेरा॥३॥
इड़ा पिंगला सुषुम्न नाड़ी, भँवर गुफा सुन बीन सितारी।
सुन्न सकड़ में शान्ति अपारी, पीले प्याला अमृत केरा॥४॥
कहे टेऊँ कोई कला धारे, चलिया ऊपर दशमद्वारे।
दिन नहिं रजनी जहँ रिणूकारे, बिन भूमी पा ब्रह्म का डेरा॥५॥

॥ राग तिलंग भजन ॥ २ ॥ ३६६॥

दिव्य रूप दर्शन, गुरां के निज़ारे।
देखा मेला कुम्भ का, गंगा के किनारे ॥ टेक॥

योगी वैरागी, त्यागी बेरागी।
रागी अनुरागी, हरी हर पुकारे ॥१॥
संन्यासी उदासी, प्रेम प्रकाशी।
अकाशी बनवासी, नंगे थे हज़ारे ॥२॥
ब्रह्मचारी पुजारी, आर्य अचारी।
संसारी उदारी, करत बहु भण्डारे ॥३॥

भेष पन्थ बहुते, जड़ चेतन पूजते।
सन्त महन्त वक्ते, अखण्ड ज्ञान उच्चारे ।।४।।
कहे टेऊँ काहीं, ऐसा मेला नाहीं।
देखे जो जन ताहीं, तिसे भाग भारे ।।५।।

।। राग तिलंग भजन ।। ३ ।। ३६७।।

फकीरी है कठिन करनी, खण्डे की धार पर चलना।
पकानी शीख माखन की, बिरह की आग में जलना।। टेक।।
नहीं है काम कायर का, करेगा सूरमा कोई।
हटाना पांच दैत्यों को, ममत मद मान को मलना ।।१।।
स्वर्ग लौं भोग जे सारे, तिनों की आस है तजनी।
परम वैराग्य को धारे, मिटानी काम की कलना ।।२।।
जगत से तोड़के नाता, निभानी प्रीति प्रभू से।
धरे गुरुदेव में नृती, शब्द में सुरति को रलना ।।३।।
कहे टेऊँ सजन मेरे, फकीरी को अगर चाहो।
कदम आगे उठा करके, पिछे नहिं पांव को वलना ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ४ ।। ३६८।।

बिना दीदार मोहन के, नहीं मैं शान्ति पाती हूँ।
लगी है प्रेम की अग्नी, जिगर तामें जलाती हूँ ।। टेक।।
सखी घनश्याम से बिछुड़े, बहुत दिन हो गये मुझको।
मिला नहिं आज तक आली, अभी देखन को जाती हूँ ।।१।।

ग़मनि में गुज़र गई आयू, नहीं दिल को करारी है।
विरह में रैन दिन रोके, नीर नैनें बहाती हूँ।।२।।
किया मैं भेष योगिन का, दरस हित श्याम सुन्दर के।
हरी का नाम ले ले के, अलख दर दर जगाती हूँ।।३।।
कहे टेऊँ बिना दर्शन, मुझे नहिं धीर आती है।
नहीं बस्ती सुहाती है, झंगल को जा बसाती हूँ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ५ ।। ३६९।।

देही मन्दिर अती सुन्दर, अजब हरि ने बनाया है।
रखे दश द्वार शुभ तामें, सर्व देवन सुहाया है ।। टेक।।
परस्पर पांच तत्त्व मेले, सत्तर का जोड़ जोड़ा है।
त्वचा का चून लेपन दे, पवन खम्भा लगाया है ।।१।।
इन्द्रिय चौदह रखी खिड़की, प्रेरक देवता कीने।
तहाँ दिल कोठड़ी रचकर, वहाँ आसन लगाया है ।।२।।
अवस्था तीन के माहीं, करत है खेल नित नाना।
असंग सबसे रहत सोई, यही वेदनि बताया है ।।३।।
कहे टेऊँ लखे तांको, गुरू के संग से कोई।
बड़े हैं भाग तिस नर के, जिसी ने दरस पाया है ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ६ ।। ३७०।।

हरी के भजन बिन मानुष, जन्म पाया तो क्या होया।
प्रभू के प्रीति बिन तुझको, कुटुम्ब भाया तो क्या होया ।। टेक।।

हरी के नाम जपने हित, मिली यह मानुषा देही।
बहुत रस भोग से पालन, करी काया तो क्या होया ।।१।।
अती बल छल कपट करके, करी दुनिया कठी तुमने।
दिया नहिं दान दीनों को, धरी माया तो क्या होया ।।२।।
गुरू से ज्ञान आतम का, करे सेवा नहीं पाया।
ब्रह्म के ज्ञान बिन तुमको, पुत्र जाया तो क्या होया ।।३।।
कहत टेऊँ जगत में जो, चक्रवर्ती बनो राजा।
भजन बिन सीस तेरे पर, छत्र छाया तो क्या होया ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ७ ।। ३७१।।

मिला मानुष जन्म तुझको, हरी के भजन हित प्यारा।
जपे नित नाम प्रभू का, तरो भवसिन्धु से पारा ।।टेक।।
कुटुम्ब के मोह को त्यागे, करो नित सङ्ग सन्तों का।
वचन गुरुदेव का धारे, चलो निज धर्म का चारा ।।१।।
इन्द्रिय मन को सदा रोको, विषय रस भोग आशा से।
करे वश पांच दुश्मन को, रहो नित शोक ते न्यारा ।।२।।
गुरू की शरण में जाकर, धरो धन सीस की दक्षिणा।
ब्रह्म के ज्ञान को लेकर, हरो अज्ञान दुख भारा ।।३।।
कहे टेऊँ सुनो साजन, करो कल्याण अब अपना।
मिले ना फेर तन मानुष, इसीमें पा मुक्ति द्वारा ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ८ ।। ३७२।।

प्याला प्रेम का चाहो, धरो तुम सीस की दक्षिना।
मिटाके मान तन मन का, नम्रता भाव को रखना ।। टेक।।
गुरू की शरण में जाकर, करो तुम सेव श्रद्धा से।
सचा उपदेश ले गुरु से, निजातम लाल को लखना ।।१।।
हटा मन के सकल फुरने, धरो तुम ध्यान आतम का।
शब्द का सार तुम लेकर, अमी रस को सदा चखना ।।२।।
कहे टेऊँ कटे बन्धन, रहो जीवन मुक्ति जग में।
लगे ना पाप पुण्य कोई, मिटे जम काल की जखना ।।३।।

।। राग तिलंग भजन ।। ९ ।। ३७३।।

अगर तुम इश्क को चाहो, दुनिया को छोड़ देवाना।
तजे तुम आस सब जग की,जिसम का तोड़ अभिमाना।। टेक।।
तर्क दुनिया तर्क उक्बा, तर्क परिवार को करना।
तर्क का तर्क कर तालब, तर्क कर नफ्स नादाना ।।१।।
दुखावो दर्द का धूंआ, जलाओ जान जुज़बों से।
दुखों का भार धर सिर पर, सुखों का छोड़ सामाना ।।२।।
कहे टेऊँ लज्जा तोड़े, इश्क की राह पर चलना।
बढ़ाओ कदम हो निर्भय, मरन से नाहिं घबराना ।।३।।

।। राग तिलंग भजन ।। १० ।। ३७४।।

तुम्हारा रूप है चेतन, बदन से तूं न्यारा है ।।टेक।।
बदन है पांच भूतों का, अनातम रूप सो जानो।
अवस्था तीन का साक्षी, सदा तूं निर्विकारा है ।।१।।
बुद्धी मन इन्द्रिय पुनि प्राना, चपल जड़ जान ये सारे।
अचल चित् एक रस आतम, सर्व का तूं सहारा है ।।२।।
बदन सुन्दर मन्दिर माहीं, बिराजे देव इक आतम।
वही स्वरूप है तेरा, निगम का ये इशारा है ।।३।।
कहे टेऊँ जगत सारा, असत् जड़ दूख मय जानो।
ब्रह्म साक्षी परम आनन्द, जगत का तूं अधारा है ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ११ ।। ३७५।।

जगत के काम सब झूठे, मुझे अब त्याग करना है।
सच्चा इक नाम ईश्वर का, सदा मन माहिं धरना है ।। टेक।।
तजे परिवार सुत दारा, महल मन्दिर रत्न मोती।
धरे शिर भेष वैरागी, सदा मन साथ लड़ना है ।।१।।
विषय की वासना त्यागे, रही गंगा किनारे पर।
शब्द गुरुदेव का सुमरे, जगत का मोह जरना है ।।२।।
तजे संग मूण्ढ पुरुषों का, रही सत्संग में हरदम।
सुनी उपदेश सन्तों का, भ्रम अरु भेद हरना है ।।३।।
कहे टेऊँ लजा तोड़े, निसंग निर्वार हो सबसे।
चढ़ी गुरु ज्ञान के बेड़े, जगत से पार तरना है ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। १२ ।। ३७६।।

लिखा जो भाग तेरे में, अवश होगा बन्दा सोई ।। टेक।।
धरनि पानी गुफा नभ में, छिपाओ आपको बन में।
चाहे सुर नर करें रक्षा, अवश होगा बन्दा सोई ।।१।।
लिखो यन्त्र करो तन्त्र, पढ़ो पुनि मन्त्र वेदों के।
चाहे औषधि करो कितनी, अवश होगा बन्दा सोई ।।२।।
कहे टेऊँ कर्म गति का, मिटे ना लेख यत्नों से।
दुखी हो या सुखी हो तुम, अवश होगा बन्दा सोई ।।३।।

।। राग तिलंग भजन ।। १३ ।। ३७७।।

नयन भर के जहाँ देखूं, तहां गुरुदेव है तूंही ।। टेक।।
उठा फुरना जिसी में है, विश्व पैदा करन खातिर।
परीपूरण चिदानन्द घन, वही गुरुदेव है तूंही ।।१।।
पद्म पर बैठकर निशदिन, विश्व रचना करत है जो।
निगम चारों कहत मुख से, वही गुरुदेव है तूंही ।।२।।
सगुण अवतार धर मारा, दशानन कंस को जिसने।
कृष्ण रघुनाथ नरसिंह जो, वही गुरुदेव है तूंही ।।३।।
स्वप्न जाग्रत सुषुप्ती जो, सकल प्रपंच माया का।
कहे टेऊँ सर्व साक्षी, वही गुरुदेव है तूंही ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। १४ ।। ३७८।।

तुम हो भगवन दीन दयाला, काट कर्म अब करो निहाला ।। टेक।।
साईना तारा सधन कसाई, नामे की तुम धेनु जिवाई।।१।।
दान द्रोपदा क्या तुझ दीना, शरम सभा में तुम रख लीना।।२।।
गनिका अजामिल पाप कमाया, कर्म कटे तिहं मुक्ति कराया।।३।।
भेट सुधामा क्या ले आया, काट कंगाली महल बनाया ।।४।।
आदि जुगां जुग आकर स्वामी, तारे पापी क्रोधी कामी ।।५।।
मेरी भी हरि विनय सुनीजे, कहे टेऊँ निज दर्शन दीजे।।६।।

।। राग तिलंग भजन ।। १५ ।। ३७९।।

जग में जानो गुरुमुख सोई, गुरु चरने चित राखत जोई ।। टेक।।
गुरु की मूरत मन में धारे, आज्ञा गुरु की जो ना टारे।।१।।
सद्गुरु का जो नाम उच्चारे, मन में गुरु के गुण वीचारे।।२।।
दोष दृष्टि नहिं गुरु में आने, गुरु को गोविन्द सम जो जाने।।३।।
कहे टेऊँ जो हौं मैं त्यागे, तन मन भेट धरे गुरु आगे।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। १६ ।। ३८०।।

प्रभू पावन नाम तुम्हारा, पाप सर्व जो करत परिहारा।। टेक।।
नाम जपे नर केते तरिया, गनिका अजामिल पार उतरिया।।१।।
नाम अमी रस जिन जिन पीया, काल कटे से जुग जुग जीया।।२।।
जिसी नाम की महिमा भारी, शेष गणेश अनन्त उच्चारी।।३।।
कहे टेऊँ हरि कृपा कीजे, ऐसा नाम दान मोहि दीजे।। ४।।

।। राग तिलंग भजन ।। १७ ।। ३८१।।

सत्गुरु साजन मैंने पाया, जन्म जन्म का पाप मिटाया ।। टेक।।
गुरु की वाणी अमृत खाणी, गावत गावत अति हर्षाया।।१।।
प्रेम प्याला गुरु का पीकर, मौज बहर में सहज समाया।।२।।
गुरु का शब्द सुमर दिन राती, हृदय अनाहत नाद बजाया।।३।।
कहे टेऊँ कर गुरु की सेवा, तन मन का सब दूख गंवाया।। ४।।

।। राग तिलंग भजन ।। १८ ।। ३८२।।

प्रभू लीनी अब ओट तुम्हारी, देख भयानक भव यह भारी ।। टेक।।
तुम हो दाता दीन दयाला, मैं हूँ दुखिया दीन कंगाला ।।१।।
बहुत जन्म मैं भ्रमत आया, यतन कीया कुछ सूख न पाया।।२।।
कर्म उपासन कीन अपारी, टूटी नाहीं जम की जारी ।।३।।
कहे टेऊँ अब सुन भगवन्ता, अभय दान दे करो निश्चिन्ता।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। १९ ।। ३८३।।

सदा सुखधाम है, प्रभूजी का नाम है,
बोलो प्रेमी प्रेम से करता पूरण काम है।। टेक।।
राम नाम के कहने से बहु पापियों का निस्तार हुआ।
अजामेल अरु गीध व्याध गज गनिका का छुटकार हुआ।।१।।
रोम रोम में राम को रटके हनूमान वश राम किया।
देखो पाहन को बन्दरों ने राम नाम से तार दिया ।।२।।
राम नाम को उल्टा कहके वाल्मीक बुद्धिमान भये।
राम नाम रट रावण कुम्भकर्ण हरि के दर दरबान भये ।।३।।
कहता टेऊँ राम नाम की महिमा कहँ तक गाऊँ मैं।
शेष शारदा पार न पावे क्या कह उसे सुनाऊँ मैं ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। २० ।। ३८४।।

साजन सुख है राम भजन में,

ना सुख सुन्दर मन्दिरों माहीं, ना सुख त्रिया पुत्रों माहीं।
ना सुख माया मित्रों माहीं, ना सुख राग रतन में ।। टेक।।
ना सुख शाहन शाही अन्दर, ना सुख मान बड़ाई अन्दर।
ना सुख पढ़न पढ़ाई अन्दर, ना सुख देस रटन में ।।१।।
ब्रह्मा विष्णू शंकर लोका, तामें रंचक सुख न विलोका।
तीन भवन में भरिया शोका, ना सुख चिरजीवन में ।।२।।
सर्व त्याग गुरु शरणी आवे, मन थिर कर जो हरि गुन गावे।
कहे टेऊँ सो सुख को पावे, पढ़ देखो वेदन में ।।३।।

।। राग तिलंग भजन ।। २१ ।। ३८५।।

साधो राम वसे हर रंग में,

राम रंग बिन रंग न खाली, रंग रंग में लालन की लाली।
देख देख मति भई मतिवाली, झूम रहा झर झंग में ।। टेक।।
जेते रंग इस जगत मंझारे, राम रंग से शोभत सारे।
तिस बिन सकले रंग असारे, पढ़ देखो प्रसंग में ।।१।।
चान्द सूर में चमके सोई, दामिनि में भी दमके सोई।
सब ज्योतियों में झमके सोई, झलकत नाना नंग में ।।२।।
देखत नैनों से दीदारा, बोलत मुख से वचन अपारा।
सुनत शब्द श्रवण से सारा, फैल रहा अंग अंग में ।।३।।
सागर लहरों के भी अन्तर, झूल रहा है राम निरन्तर।
कहे टेऊँ ले तिसका मन्तर, सुमरो सत्गुरु संग में ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। २२ ।। ३८६।।

गुरु का शब्द जान सुखदाई।

जो जन गुरु का शब्द कमावे, जहाँ तहाँ सो सुख को पावे।
सहजे निज स्वरूप समावे, सन्तनि साख सुनाई ।। टेक।।
गुरु का शब्द करे प्रकाशा, अविद्या तम का करत विनाशा।
भेद भ्रम का होवत नाशा, संशय रहे न राई ।।१।।
गुरु शब्दे तांका मन लागे, जांके पूरब के पुण्य जागे।
विषय वासना सो सब त्यागे, साची करत कमाई ।।२।।
कहे टेऊँ जो श्रद्धा धारे, स्वास स्वास गुरु शब्द उच्चारे।
धर्मराज भय को सो टारे, निर्भय रहे सदाई ।।३।।

।। राग तिलंग भजन ।। २३ ।। ३८७।।

मेरे मन निर्भय हो विचरो।

रंचक भय ना किसको देवो ना भय किससे करो ।। टेक।।
कारण भय का भेद पछानो, भेद बुरा तुम सबसे मानो।
ज्ञान से ताहिं हरो ।।१।।
एक ब्रह्म सब माहिं समाना, सो तेरा है रूप सुजाना।
अपने से न डरो ।।२।।
एक पिता प्रभु सबका जानो, सब जीवन को बालक मानो।
भाई से भय न धरो ।।३।।
कहे टेऊँ जिहँ भय नहिं राई, निर्भय जग में रहत सदाई।
तां संग भय से तरो ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। २४ ।। ३८८।।

साधो मैं हूँ केवल राम।

मुझ बिन दूजा है ना कोई, मेरी मुझ प्रणाम ।।टेक।।
आदि भी मैं हूँ अन्त भी मैं हूँ, मध्य भी मुझको जान।
देश काल का छेद न मुझ में, मैं हूँ अखण्ड अकाम ।।१।।
अब तक किससे नाहिं मिला मैं, मुझ से मिला न कोय।
होय अलग तो मेला होवे, मैं हूँ पूरण धाम ।।२।।
अब तक किसको ना मैं देखा, ना देखा किस मोहि।
द्वैत माहिं तो देखन बनता, मैं अद्वैत अलकाम ।।३।।
कहने में तो नाना भासत, बिन कहने से एक।
एक दोय से मैं हूँ न्यारा, शब्द अतीत अनाम ।।४।।
कहे टेऊँ कछु कहत बने नहिं, कैसे कहिया जाय।
रूप हमारा अगम अगोचर, अद्‌भुत अति अभिराम ।।५।।

।। राग तिलंग भजन ।। २५ ।। ३८९।।

खोजो आतम सार, तन तेरे में रहता जोई ।।टेक।।
अग्नी व्यापक ज्यों वन माहीं, देख सके यह नैन न ताहीं।
घर्षण से निर्वार ।।१।।
घृत व्यापक ज्यों पय अन्तर, जैसे तेल तिलों के भीतर।
मथने से हो धार ।।२।।

गन्ध बिना ज्यों पुष्प न खाली, मेन्दी में ज्यों व्यापक लाली।
मर्दन से इज़िहार ।।३।।
कहे टेऊँ त्यों आतम तन में, होत विवेक से प्रगट छिन में।
गुरु से ले वीचार ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। २६ ।। ३९०।।

तुम हो ब्रह्म स्वरूप, जीवपणे का भाव मिटाओ ।। टेक।।
जनम मरण है तन के धर्मा, खट उर्मी पुनि वर्णाश्रमा।
नहिं तुम सुन्दर कुरूप, देह अध्यास को वेग हटाओ ।।१।।
नाम रूप मय यह संसारा, जड़ परिणामी दुखमय सारा।
तजे नाम अरु रूप, अस्ति भाति प्रिय माहिं समाओ ।।२।।
तुम है अखण्ड अजर अविनाशी, आतम चेतन आनन्द राशी।
असंग एक अरूप, उलट आपने अन्तर आओ ।।३।।
कहे टेऊँ निज रूप पछानो, पांचों भेद भ्रान्ती भानो।
आदी धाम अनूप, सद्गुरु के प्रसादे पाओ ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। २७ ।। ३९१।।

सुमरले नाम ईश्वर का, जगत नाता सकल हरके।
बनो वासी अमर घर के, जन्म मरना मिटाओ जी ।। टेक।।
बैठ सत्संग हरवारी, सफल करले उम्र सारी।
विश्व में देख गिरधारी, किसी को ना सताओ जी ।।१।।

गुरू से ज्ञान गम लीजे, नाश अज्ञान तम कीजे।
सर्व संशय भ्रम छीजे, मुक्ति का गैल पाओ जी ।।२।।
सदा सन्तोष मन धर के, हरी की आस इक करके।
भक्ति अरु भाव उर भरके, हरी से हेत लाओ जी ।।३।।
कहे टेऊँ कहा मानो, सचे स्वरूप को जानो।
उत्तम गुण को हृदय आनो, सकल अवगुण मिटाओ जी।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। २८ ।। ३९२।।

सद्गुरु दीन दयाला कृपाला रखपाला,
मेरा दूख हरीजे देवा ।। टेक।।
मैं पापी तुम पातक हर्ता, मैं मैला तुम निर्मल कर्ता।
भगवन् बख्शणहारा दातारा हितकारा,
मन शान्ति भरीजे देवा ।।१।।
मैं हूँ बालक तुम पितु माता, मैं हूँ मूरख तुम हो ज्ञाता।
पूरण पर उपकारी भयहारी दुखटारी,
जम जाल जरीजे देवा ।।२।।
मैं लोहा तुम सद्गुरु बेड़ा, मुझको एक आसरा तेरा।
भव से पार तराओ अब आओ उर लाओ,
सिर हाथ धरीजे देवा ।।३।।
कहे टेऊँ मैं शरण तुम्हारी, सद्गुरु राखो पैज हमारी।
अपना किङ्कर कीजे रख लीजे भय छीजे,
सब काज करीजे देवा ।।४।।

॥ राग तिलंग भजन ॥ २९ ॥ ३९३॥

सुनले प्रभू प्यारे, यह है विनय हमारी।
धर नाथ हाथ मुझ पर, मैं हूं शरण तुम्हारी ॥टेक॥
भव सिन्धु बहा जाता, कोई नहीं बचाता।
करले तूं पार सागर, पकड़े भुजा बिहारी ॥१॥
ताकत नहीं है तन में, नहिं भाव भक्ति मन में।
होगा उधार कैसे, चिन्ता मुझे है भारी ॥२॥
बचपन गया खेलन में, यौवन विषय रसन में।
कीना न शुभ कर्म को, वृथा उम्र गुज़ारी ॥३॥
बहु पतित तुम उधारे, अवगुण नहीं निहारे।
कहे टेऊँ तार मुझको, कृपा करे मुरारी ॥४॥

॥ राग तिलंग भजन ॥ ३० ॥ ३९४॥

ईश्वर तेरे द्वारे, आया हूँ मैं भिखारी।
सारे जगत के दाता, तुम हो बड़े उदारी ॥टेक॥
सुमती का दान दीजे, कुमती को काट लीजे।
मन भाव भक्ति भीजे, ऐसी ही दया कीजे।
संसा भ्रम मिटाओ, कर ज्ञान की उज्यारी ॥१॥
भव सिन्धु पार तारो, दुख दर्द सब निवारो।
आया हूँ शरन तेरी, मुझको नहीं बिसारो।
तव नाम शरन पालक, कहते हैं मुनि विचारी ॥२॥
विषयों को मन त्यागे, हरि चरन माहिं लागे।
अविद्या की नींद तज कर, मेरा ये जीव जागे।
कहे टेऊँ आस ये ही, पूरी करो हमारी ॥३॥

।। राग तिलंग भजन ।। ३१ ।। ३९५।।

कैसे ध्याऊं तुझे कैसे मैं पाऊं, मुझे बताओ ।।टेक।।
या होवां गृहस्थी चित्त उदारी, दया धीरज सत्यव्रत धारी।
तीर्थ नाऊं वा यज्ञ कराऊं ।।१।।
या होवां साधू निज संन्यासी, घर को छोड़ बनूं बनवासी।
जटा बढ़ाऊँ वा मूण्ड मुण्डाऊँ ।।२।।
या होवां पण्डित कर्माचारी, ठाकुर पूजूं हो पूजारी।
भोग लगाऊं वा घण्टी बजाऊं ।।३।।
कहे टेऊँ सो करूं सद्वारी, जिसमें हरि हो रुची तुम्हारी।
मौन रहूं वा हरि गुण गाऊं ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ३२ ।। ३९६।।

तुम मानुष देही पाई, कुछ करले नेक कमाई ।।टेक।।
मानुष तन है निर्मल दर्पन, इसमें अपना करले दर्शन।
दर्शन से मन होवे प्रसन्न, मिटे भेद मती दुखदाई ।।१।।
मानुष तन में जाग प्यारा, तस्कर पांचों कर परिहारा।
अपने घर का हो रखवारा, चल मार्ग सूधे भाई ।।२।।
मानुष तन है भूमि समाना, तामें शुभ गुण बीज लगाना।
पाप वृक्ष को नाहिं जमाना, यह सन्तनि बात बताई ।।३।।
कहता टेऊँ तोहि पुकारे, मानुष तन सम भानु उज्यारे।
इसमें कर हरि भजन प्यारे, पाय पूरण पद सुखदाई ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ३३ ।। ३९७।।

है आतम रूप तुम्हारा, यह मानो वचन हमारा ।।टेक।।
नाम रूप है तन के माहीं, तीन काल यह तन तूं नाहीं।
अचल अनादी तूंही आहीं, इस नाम रूप से न्यारा ।।१।।
नाम रूप को कल्पित जानो, अपने में ना रंचक मानो।
आतम अपना रूप पछानो, सब कल्पित का आधारा ।।२।।
नाम रूप में ममता धारे, भूलो ना निज रूप उदारे।
तन परिणामी जानो सारे, तूं स्थिर इक रस प्यारा ।।३।।
नाम रूप की छोड़ भ्रान्ती, सद्गुरु के संग लख निज क्रान्ती।
कहता टेऊँ पाओ शान्ती, तज तन मन का अहङ्कारा ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ३४ ।। ३९८।।

यह सब है ब्रह्म पसारा, मन और न कर वीचारा ।। टेक।।
बर्छी भाला शस्त्र सारे, लोहे के तुम जान प्यारे।
फेन बुद्बुदा लहर अपारे, सब जल का है जिन्सारा।।१।।
जानो सब बन भार अठारे, दर दरवाजे तरुवर सारे।
मटका मटकी महल मुनारे, सब माटी का विस्तारा।।२।।
मखमल रेशम मलमल जोड़ी, रुई रूप सब तागे डोरी।
कंकण कुण्डल भूषण क्रोड़ी, सब कंचन का आकारा।।३।।
कहे टेऊँ सब जीव चराचर, ब्रह्मा आदी देव हरी हर।
देखो तुम निज ज्ञान दृष्टि कर, सब आतम का दीदारा ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ३५ ।। ३९९।।

मन अपना आप सम्भारो, तुम तन अध्यास निवारो ।। टेक।।
यह तन कारज भूतन केरा, जड़ परिणामी दुख का डेरा।
सत्‌चित् आनन्द स्वरूप तेरा, यह निश्चय उर में धारो ।।१।।
तन के गिरते तूं ना गिरता, तन के जरते तूं ना जरता।
तन के मरते तूं ना मरता, इस तन से तूं है न्यारो ।।२।।
छिन छिन पलटत जात शरीरा, तुम हो चेतन इक रस धीरा।
कर्मों से तन भोगत पीरा, नहिं तूं है भोगनहारो ।।३।।
कहे टेऊँ सिर सङ्कट सहना, अपने को तन भूल न कहना।
आतम में नित स्थित रहना, यह मानो वचन हमारो ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ३६ ।। ४००।।

मन किसकी दिल न दुखाना, यह ईश्वर का स्थाना ।। टेक।।
गंगा यमुना करले तीर्थ, भावें दे बहु दान पदार्थ।
दिल रञ्जाने से सब व्यर्थ, यह सन्त करत वख्याना ।।१।।
दिल रञ्जाने जैसा भारा, पाप न कोई जगत मंझारा।
तांते इससे करो किनारा, यह कहते वेद पुराना ।।२।।
जड़ मन्दिर पूजत पूजारी, हरि मन्दिर दिल दे दुख भारी।
क्यों तेरी मन है मति मारी, कछु समझत नहिं नादाना ।।३।।
जो हरि मन्दिर दिल को सेवे, हरि ठाकुर तिहँ दर्शन देवे।
कहे टेऊँ सो सब फल लेवे, पुनि होवे पुरुष महाना ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ३७ ।। ४०१।।

मैं गुरु का दर्शन देखा, सब वार दिया यम लेखा ।।टेक।।
लड़का देके लड़की लीनी, लड़की ने लय सृष्टी कीनी।
ब्रह्मानन्द में वृत्ती भीनी, कछु रूप रहा ना रेखा ।।१।।
पहली नारी घर से भागी, दूजी नारी जब उठ जागी।
लड़का लड़की जनने लगी, मन आनन्द भया विशेखा ।।२।।
बिना सूत के डोर चढ़ाया, बिना भूमि के नगर बसाया।
थिर कर आसन ताहिं जमाया, जहँ द्वैत नहीं कछु पेखा ।।३।।
कहे टेऊँ सब कारज होया, अपने घर में सुख से सोया।
जन्म मरण दुख को मैं खोया, अब मीम रही ना मेखा ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ३८ ।। ४०२।।

मन सब है ठाकुर द्वारा, ये जितने तन आकारा ।।टेक।।
तन मन्दिर हैं सुन्दर सारे, कुदरत जोड़े सकल संवारे।
बैठा इसमें कृष्ण मुरारे, नित करिये ताहिं जुहारा ।।१।।
तन मन्दिर बहु जगत मँझारे, ठाकुर सब में एक उदारे।
किसमें भेद न धरो प्यारे, कर देखो मन वीचारा ।।२।।
अन मन्दिरों से तन शुभ मन्दिर, बैठा चेतन इसके अन्दर।
कहे टेऊँ ले गुरु से मन्त्र, कर सेवा सबकी प्यारा ।।३।।

।। राग तिलंग भजन ।। ३९ ।। ४०३।।

प्रभू कैसे होय उद्धारा, गया व्यर्थ जन्म हमारा ।।टेक।।
भोग विषय से प्रीति लगाई, पाप कर्म में उम्र गँवाई।
दान धर्म में दी नहिं पाई, कछु कीना नहिं उपकारा ।।१।।
जाप ताप मैं कबहुँ न कीया, नेम व्रत में नहिं चित्त दीया।
सन्तों से कछु गुण ना लीया, नहिं तेरा नाम उच्चारा ।।२।।
कहे टेऊँ अब कृपा धारो, जन्म मरण का दूख निवारो।
भव सागर से पार उतारो, मैं लीना तव आधारा ।।३।।

।। राग तिलंग भजन ।। ४० ।। ४०४।।

प्रभू मेरा अर्ज़ अघाओ, सब जन के कष्ट मिटाओ ।। टेक।।
दुख सागर में जीव अपारे, डूब रहे ना लगे किनारे।
ऊँचे स्वर से तोहि पुकारे, अब तिनको आन तराओ ।।१।।
शोक अग्नि से जीव बिचारे, रैन दिवस ही जलते सारे।
रोदन कर सब तोहि पुकारे, अब तिनकी तप्त बुझाओ ।।२।।
इस जग रूपी झंगल मंझारे, भूल पड़े हैं जीव गँवारे।
राह न सूझत जिनहिं मुरारे, अब तिनको राह लगाओ ।।३।।
कहे टेऊँ सुन सत् कर्तारे, थर थर कम्पत जीव तुम्हारे।
तुम बिन कोई ना रखवारे, अब आकर उन्हें बचाओ ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ४१ ।। ४०५।।

हो प्रभू अन्तर्यामी, तुम सब के प्रेरक स्वामी ।।टेक।।
यह जग बाज़ी का स्थाना, बाज़ीगर तुम हो भगवाना।
पुतली सारे जीव जहाना, तव आज्ञा के अनुगामी ।।१।।
माया से तुम बाज़ी लाते, भान्ति भान्ति के खेल खिलाते।
कबहुँ डराते कब हर्षाते, निज रुचि से पारग्रामी ।।२।।
जहँ जहँ खैंचो तहँ चल जावत, जो तुम चाहो सो मुख गावत।
स्व इच्छा से कर्म करावत, सब तेरे वश बलधामी ।।३।।
क्या कर साके जीव बिचारे, जीवों के वश नहिं कछु प्यारे।
सब कछु तुमहीं करने हारे, कहे टेऊँ तोहि नमामी ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ४२ ।। ४०६।।

क्यों जग से प्रीति लगाते,
ओ बन्दे! सब तुझे छोड़ जावेंगे ।।टेक।।
माया इकठी करने कारन पाप करत बहु भाई।
भोग रसन को भोगत भोगत ज़रा लाज नहिं आई।
क्यों वृथा जन्म गँवाते ।।१।।
देख देख जिस सुन्दर तन को करते हो श्रृंगारा।
हाड़ मांस का तेरा तन वो होगा इक दिन छारा।
क्यों झूठी देह सजाते ।।२।।
जगत पदार्थ झूठे हैं सब जिनहिं देख हर्षाया।
झूठे हैं सब साक सम्बन्धी जिनसे नेह लगाया।
ये किससे नाहिं निभाते ।।३।।

कहे टेऊँ तुम भूल न जाना मेरा यह उपदेशा।
राम भजन तुम अबहीं करले जांसे मिटहिं क्लेशा।
यह संत वेद बतलाते।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ४३ ।। ४०७।।

दिल का दाग़ न धोता जावे, सहसें साबुन लाया मैं ।। टेक।।
दर्द लगा रांझन दा सजनी, भड़के अन्दर विरह दी अग्नी।
झंग विकार जलाया मैं ।।१।।
रांझन वाली नृति निराली, उलटा बोलन उलटी चाली।
उलटा भेद सु पाया मैं ।।२।।
रांझन वाला मस्त प्याला, पीकर होया मन मतिवाला।
अपना आप भुलाया मैं ।।३।।
रांझन ऊपर सदके जावां, कहे टेऊँ गुण तांके गावां।
साचा नेह लगाया मैं ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ४४ ।। ४०८।।

अपनी मौज बढ़ावन कारण, सांग बनाया मैं वो मैं ।। टेक।।
ब्रह्मा होकर जगत बनाये, पांच तत्त्व गुण तीन मिलाये।
रंग रचाया मैं वो मैं ।।१।।
बाज़ीगर बन बाज़ी लाये, बेख़ुद वाली बीन बजाये।
नाच नचाया मैं वो मैं ।।२।।
राजा बन कर राज कमाये, माल खज़ाना सैन सजाये।
हुक्म चलाया मैं वो मैं ।।३।।

पण्डित बन कर पुस्तक लीना, व्रत नेम को स्थित कीना।
कर्म कमाया मैं वो मैं ।।४।।
टेऊँराम निज नाम धराये, सबके अन्दर जाय समाये।
आप छिपाया मैं वो मैं ।।५।।

।। राग तिलंग भजन ।। ४५ ।। ४०९।।

जो कुछ तुम यह देख रहे हो, सो सब खेल तुम्हारा है ।। टेक।।
तुम ही खेल बनाया सारा, तुम ही देखनहारा है ।।१।।
तेरे होते सब कुछ होवे, तुझ बिन नहिं संसारा है ।।२।।
तेज तुम्हारे से प्रकाशत, अग्नी रवि शशि तारा है ।।३।।
सबके अन्दर तूंही रमिया, तूंही सबसे न्यारा है ।।४।।
कहता टेऊँ तीन लोक में, तेरा ही दीदारा है ।।५।।

।। राग तिलंग भजन ।। ४६ ।। ४१०।।

मानुष देह अमोलक पाई, हरि का नाम उच्चारो रे।। टेक।।
साध संगत की सेवा करके, अपना जन्म सुधारो रे ।।१।।
काम क्रोध मद लोभ निवारे, गुरु का वचन विचारो रे ।।२।।
सत्गुरु का सत् ज्ञान पिराये, संसा भ्रम निवारो रे ।।३।।
कहे टेऊँ ग़फ्लत को त्यागे, अपना आप सम्भारो रे ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ४७ ।। ४११।।

मानुष जन्म अमोलक पाया, हरि का धरो ध्याना रे ।। टेक।।
सद्गुरु से ले सत् उपदेशा, श्रुती शब्द मिलाना रे ।।१।।
अन्तर्मुख हो कर अभ्यासा, आत्म रस को पाना रे ।।२।।

ब्रह्मज्ञान की ज्योति जगाये, मेटो तम अज्ञाना रे ।।३।।
कहे टेऊँ सब बन्धन काटे, पाओ पद निर्बाना रे ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ४८ ।। ४१२।।

मानुष देह अमुल को पाए, हरि हृदय नहिं ध्याया रे।। टेक।।
धर्म कर्म नहिं कीना कोई, वृथा जन्म गंवाया रे ।।१।।
धन दारा सुत सम्पति माहीं, अपना आप बन्धाया रे ।।२।।
देवों को भी दुर्लभ यह तन, भागों से तुम पाया रे ।।३।।
कहे टेऊँ अब चेत प्राणी, करले जन्म सजाया रे ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ४९ ।। ४१३।।

मानुष जन्म रतन तुम पाया, क्यों न भजत भगवाना रे।। टेक।।
मात गर्भ में कौल किया जो, तिसको भूल न जाना रे ।।१।।
बालापन खेलन में खोया, होया मूण्ढ अजाना रे ।।२।।
यौवन में सत् कर्म न कीना, भोगे भोग महाना रे ।।३।।
वृद्ध भयो ममता मन बाढ़ी, बहुत सहत अपमाना रे ।।४।।
कहता टेऊँ अब भी चेतो, गहो गुरू से ज्ञाना रे ।।५।।

।। राग तिलंग भजन ।। ५० ।। ४१४।।

देस छोड़ परदेश में आये, साचा वणिज विहाना रे ।। टेक।।
ऊठ मुसाफिर जागो जल्दी, नींद न कर नादाना रे ।।१।।
इस जग की बाज़ार मंझारे, सत्संग खुला दुकाना रे ।।२।।
सन्त जनां की सेवा करके, हरि का दर्शन पाना रे ।।३।।
कहे टेऊँ सत्गुरु प्रसादे, पावो पद निर्बाना रे ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ५१ ।। ४१५।।

सांग पहन कर शाहनशाही, क्यों तुम भटका खाते हो।। टेक।।
सांध धार कर शेरों का क्यों, स्यालों से डर जाते हो ।।१।।
सांग पहन कर अवधूतों का, क्यों धन में लपटाते हो ।।२।।
सांग बनाकर मुड़दे केरा, क्यों मुख बात चलाते हो ।।३।।
कहे टेऊँ धर भेष फकीरी, क्यों तुम ढोंग बनाते हो ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ५२ ।। ४१६।।

इन्द्रियों को शुभ मार्ग लाओ, समझ धरे तुम स्याना रे।। टेक।।
पाँवों से चल सत्संग करना, हाथों सेव कमाना रे ।।१।।
श्रवन से सत् शब्द सुनीजे, रसना हरि गुण गाना रे ।।२।।
घ्राणों से गुरु नाम जपीजे, बुद्धि में धारो ज्ञाना रे ।।३।।
नैनों से गुरु दर्शन कीजे, मन में धर हरि ध्याना रे ।।४।।
कहता टेऊँ इस रहनी से, अपना कर कल्याना रे ।।५।।

।। राग तिलंग भजन ।। ५३ ।। ४१७।।

सद्गुरु पूरे कृपा करके, अपना नाम जपाया है ।। टेक।।
ज्ञान भानु उर माहिं उदय कर, तम अज्ञान मिटाया है ।।१।।
जन्म मरन का फेरा मेटे, निज घर माहिं समाया है ।।२।।
जीव ईश की कटे उपाधी, एको ब्रह्म लखाया है ।।३।।
कहे टेऊँ गुरु पै बलिहारी, जिसने भ्रम नसाया है ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ५४ ।। ४१८।।

मैं बालक तुम मात पिता गुरु, हरदम मेरी सार करो।। टेक।।
मैं हूँ पापी तुम हो पावन, पाप सर्व संहार करो ।।१।।
तीन ताप में जलता हूँ मैं, मुझको ठण्डा ठार करो ।।२।।
मैं गुण हीना तुम गुणखानी, मम उर गुण भण्डार करो ।।३।।
डूबत हूं मैं भव सागर में, कहे टेऊँ अब पार करो ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ५५ ।। ४१९।।

सद्‌गुरु के संग जाग जिज्ञासू, गाओ गोविन्द गीत सैयां।। टेक।।
सद्‌गुरु के संग कर अभ्यासा, पाओ मन पर जीत सैयां ।।१।।
सद्‌गुरु के संग सत्य वचन सुन, धारो मन प्रतीत सैयां ।।२।।
सद्‌गुरु के संग पाये ज्ञाना, तोड़ो भ्रमन भीत सैयां ।।३।।
कहता टेऊँ सद्‌गुरु के संग, सीखो सुमरन रीत सैयां ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ५६ ।। ४२०।।

धर्म की रहति रहे जो गृही, पावे सो कल्याना रे ।। टेक।।
मात पिता गुरु सन्त सेव कर, त्यागे तन अभिमाना रे ।।१।।
घर में जो अतिथी चल आवे, तांको दे सन्माना रे ।।२।।
तन मन धन से सब को सुख दे, करे न किस अपमाना रे ।।३।।
धर्म नीत से करे कमाई, दीनों को दे दाना रे ।।४।।
कहे टेऊँ यह धर्म धरे जो, गृही सो परवाना रे ।।५।।

।। राग तिलंग भजन ।। ५७ ।। ४२१।।

आज मेरे उर आनन्द होया, इश्क हकीकी आया जी।। टेक।।
बेखुद बीन बिरह का बाजा, दम का ढोल बजाया जी ।।१।।
ध्यान के तागे ज्ञान के घुंघुरू,पिरोय पिरोय पग पाया जी ।।२।।
ज़िकर जामा पा फिकर फेरी दे, नाच नाच हर्षाया जी ।।३।।
कहे टेऊँ रंग इश्क रचाया, गीत अनलहक गाया जी ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ५८ ।। ४२२।।

अगम देश में अलख बिराजे, नहिं वां जगत पसारा है।। टेक।।
नहिं वां ब्रह्मा नहिं वां विष्णू, नहिं वां शिव का द्वारा है ।।१।।
नहिं वां सूर्य नहिं वां चन्दा, नहिं वां दामिन तारा है ।।२।।
नहिं वां भूमि न अग्नि अकाशा, नहिं वायू जल धारा है।।३।।
नहिं वां नरक स्वर्ग नहिं देवा, नहिं वां अंग अकारा है ।।४।।
कहे टेऊँ नहिं तीन काल तहँ, नहिं त्रिगुण विस्तारा है ।।५।।

।। राग तिलंग भजन ।। ५९ ।। ४२३।।

काल की नौबत निशदिन बाजे, सुनते क्यों न अजाना रे।। टेक।।
पीर पैग़म्बर मीर धीर को, मार करे मैदाना रे ।।१।।
जोगी झँगम जप तप धारी, सबको मारत बाना रे ।।२।।
मानुष राक्षस जीव चराचर, किसका नाहिं ठिकाना रे ।।३।।
कहे टेऊँ थिर नाम हरी का, सुमरो ताहिं सुजाना रे ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ६० ।। ४२४।।

सुनले प्यारा वचन हमारा, गोविन्द के गुण गाओ रे ।। टेक।।
हरि का नाम सदा सुखकारी, सुमर सुमर सुख पाओ रे ।।१।।
सन्त जनां की करके सेवा, गर्व गुमान गँवाओ रे ।।२।।
आशा तृष्णा दुर्मति त्यागे, ममता मोह मिटाओ रे ।।३।।
कहता टेऊँ गुरु कृपा से, सुख स्वरूप समाओ रे ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ६१ ।। ४२५।।

जे तुम जग में सुख को चाहो, राम भजन नित करना रे।। टेक।।
राम भजन से सब दुख मेटे, जम का लेख न भरना रे ।।१।।
राम भजन से निर्भय होके, काहूँ से ना डरना रे ।।२।।
राम भजन से पांच क्लेशा, पाप ताप सब हरना रे ।।३।।
राम भजन से निर्बन्धन हो, जीवन मुक्ति विचरना रे ।।४।।
कहता टेऊँ राम भजन कर, भव सागर से तरना रे ।।५।।

।। राग तिलंग भजन ।। ६२ ।। ४२६।।

गुरुमुख गुरु की सेव कमाओ, छोड़े मन का मान गुमान।। टेक।।
गुरु मूरत में नृती लाये, हरदम तांका धरो ध्यान ।।१।।
गुरु मंतर से सुरती मेले, निशदिन जाप जपो प्रधान ।।२।।
गुरू ज्ञान में वृत्ती जोड़े, हर ले भेद भ्रम अज्ञान ।।३।।
गुरु पूरे को मनुष न मानो, कहे टेऊँ जानो भगवान ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ६३ ।। ४२७।।

सत्गुरु साचे कृपा करके, भव का बन्धन तोड़ दिया।। टेक।।
आदि शब्द का जाप जपा के, जीव ब्रह्म से जोड़ दिया ।।१।।
उपशम का उपदेश बताकर, मन विषयों से मोड़ दिया ।।२।।
ब्रह्म ज्ञान का डण्डा मारे, भ्रम का भांडा फोड़ दिया ।।३।।
कहे टेऊँ गुरु मुक्ता कीना, यम ने लेखा छोड़ दिया ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ६४ ।। ४२८।।

मेरी तो है ज़ात अज़ाती, क्या पूछत हो हमरी ज़ात।। टेक।।
ना मैं खलकत ना मैं खालिक, नहीं छिपा हूँ नहिं इसबात।।१।।
ना मैं नर हूँ ना मैं नारी, ना मैं न्याती नाहिं न्यात ।।२।।
ना मैं जन्मा ना मैं मरता, नहीं पिता नहिं मेरी मात ।।३।।
टेऊँ भी नहीं नाम हमारा, समझे को यह अद्भुत बात ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ६५ ।। ४२९।।

बन्दा हरि का भजन करो तुम, वृथा जन्म गँवाते क्यों।। टेक।।
भजन हेतु तन मानुष पाया, विषयों में लपटाते क्यों ।।१।।
आज कहे मैं काल भजूंगा, यों कह वक्त बिताते क्यों ।।२।।
संतों ने तुझ बहु समझाया, दिल में सो न हंडाते क्यों ।।३।।
कहे टेऊँ हरि भजन बिना नर, जग में बहु दुख पाते क्यों ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ६६ ।। ४३०।।

इश्क अक्ल का झगड़ा भारी, तिसका करूँ बयाना रे।। टेक।।
अक्ल कहे हो महल मकाना, इश्क चहे श्मशाना रे ।।१।।
अक्ल कहे हो बस्ती सुन्दर, इश्क चहे वैराना रे ।।२।।
अक्ल कहे हो मान बड़ाई, इश्क चहे निर्माना रे ।।३।।
अक्ल कहे मैं राज कमाऊँ, इश्क चहे मंग खाना रे ।।४।।
कहता टेऊँ छोड़ अक्ल को, इश्क से नेह लगाना रे ।।५।।

।। राग तिलंग भजन ।। ६७ ।। ४३१।।

हरि ने हरिजन मूरत धारी, हरिजन हरी समाना है।। टेक।।
हर्ष शोक हरिजन नहिं करते, होते मान अमाना है ।।१।।
शत्रु मित्र को सम कर जाने, नहिं अपना बेग़ाना है ।।२।।
कंचन माटी भेद न जांको, ऊँच नीच इक जाना है ।।३।।
सुख दुख माहिं रहे इक जैसा, जांको लाभ न हाना है ।।४।।
कहे टेऊँ ये चिन्ह जिसी में, प्रत्यक्ष वह भगवाना है ।।५।।

।। राग तिलंग भजन ।। ६८ ।। ४३२।।

सत्गुरु अपनी कृपा करके, दे भक्ती का दान मुझे ।। टेक।।
अवगुण मेरा देख न स्वामी, अपना बालक जान मुझे ।।१।।
राज काज नहिं चाहत हूँ मैं, दे चरणों का ध्यान मुझे ।।२।।
दीन दयालू अति कृपालू, दे हरि प्रेम प्रधान मुझे ।।३।।
कहे टेऊँ कर जोड़ पुकारे, दे निज आतम ज्ञान मुझे ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ६९ ।। ४३३।।

प्रेम प्याला मस्ती वाला, मोहि पिलाया गुरु भरके ।। टेक।।
गुरु का सुनिया शब्द नगारा, काम्प उठे सब चोर विकारा।
भाग चले सबहीं डरके ।।१।।
सद्गुरु हृदय दीप जगाया, भ्रम अन्धेरा दूर भगाया।
निर्भय कीया भय हरके ।।२।।
सद्गुरु सम की औषधि दीनी, द्विधा व्याधी मन की छीनी।
जीवित होया मैं मरके ।।३।।
कहे टेऊँ गुरु ध्यान बताया, सब घट निज स्वरूप लखाया।
पार गया भव सिन्धु तरके।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ७० ।। ४३४।।

प्रभू करूँ पुकार, श्रवण देके विनय सुनीजे ।। टेक।।
भवसागर है दुस्तर भारी, डूब रहा हूँ ताहिं मंझारी।
नाम नाव आधार, देके मुझको पार करीजे ।।१।।
मच्छ कच्छ काम क्रोध सताता, लोभ लहर में गोता खाता।
पावत दूख अपार, कृपा कर मुझ उबार लीजे ।।२।।
भोग वासना विषय वक्कर में, भ्रम रहा हूँ मोह चक्कर में।
तांसे तुरत निकार, करुणा का सिर हाथ धरीजे ।।३।।
कहता टेऊँ दो कर जोड़े, और न कोय सहायक मोरे।
मैं हूँ शरण तुम्हार, दीन बन्धू निज मुक्ती दीजे ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ७१ ।। ४३५।।

सो योगी परवान, योगिन वाली रहनी जिसकी ।।टेक।।
सम्बन्ध त्याग मय कान कटावे, मर्म शर्म की मुद्रा पावे।
क्षमा ख़फनी जान, द्वन्द्व सहारन सहनी जिसकी ।।१।।
करुणा मुदिता जटा बढ़ावे, संयम डण्डा हाथ उठावे।
प्रेम पन्थ पहिचान, आत्मनिष्ठा बहनी जिसकी ।।२।।
सोऽहं का नित शंख सुनावे, अनाहत धुन का नाद बजावे।
भोजन ब्रह्म ज्ञान, मैं हूँ चेतन कहनी जिसकी ।।३।।
तन मिथ्या की खाक रमावे, झोली श्रद्धा अटल बनावे।
दसमें लाय ध्यान, कहे टेऊँ गुण गहनी जिसकी ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ७२ ।। ४३६।।

सबको मारत काल, छोड़त ना किस जगत मंझारा ।। टेक।।
बीसों वर ब्रह्मा से लीना, वर को पाय गर्व जिहं कीना।
ऐसा वीर विशाल, हिरणाकशप भी तांसे हारा ।।१।।
बीस भुजायें बीसहु नैना, दश शिर जांको बहुती सेना।
बांधा काल कराल, तिस रावण को भी संहारा ।।२।।
देह कठोर सुमेरु समाना, जांके सम नहिं को बलवाना।
भारी जिसका भाल, ऐसा कुम्भकर्ण भी मारा ।।३।।
कहे टेऊँ ले काल कटारी, मार गिरावत सृष्टी सारी।
तांते सुमर अकाल, जांते भागे काल करारा ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ७३ ।। ४३७।।

खुद मस्ती के माहिं, आठ पहर मैं हूँ मस्ताना ।। टेक।।

सद्‌गुरु दीना प्रेम प्याला, पी पी मस्त भया मतिवाला।
दुनिया की सुध नाहिं, अपने आप में हूँ अलसाना ।।१।।

पाया आतमराम सनेही, दर्शन देखत भुल गयी देही।
दौड़त मन नहिं काहिं, अपने घर में किया ठिकाना ।।२।।

देश उसी में कीना वासा, जहाँ न सूर्य चन्द्र प्रकाशा।
काल न व्यापे ताहिं, अमर देश में किया स्थाना ।।३।।

कहे टेऊँ मैं आप गँवाया, आत्म सुख में सहज समाया।
दूख न परसे जाहिं, ब्रह्मानन्द रहूँ गल्ताना ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ७४ ।। ४३८।।

सन्त सज्जन अवतार, आज हमारे अजिर पधारे ।। टेक।।

परम वैरागी हरि अनुरागी, शान्त आत्मा सर्व त्यागी।
निर्मल निरहंकार ।।१।।

तीन काल के जाननहारे, निर्वैरी निष्कामी न्यारे।
दुख भञ्जन सुखकार ।।२।।

जीवन मुक्ता ब्रह्मज्ञानी, धीरजधारी आत्म ध्यानी।
दीनबन्धू दातार ।।३।।

प्रेम प्रकाशी पर उपकारी, इन्द्रिय जित नित धर्माचारी।
पूरन पुरुष उदार ।।४।।

कहे टेऊँ बड़ भाग हमारे, दर्शन से भये अनन्द अपारे।
भक्ती ज्ञान भण्डार ।।५।।

।। राग तिलंग भजन ।। ७५ ।। ४३९।।

राम भजो सुख धाम भजो,

तेरा हो जाए बेड़ा पार, जग में करलो ये व्यापार ।। टेक।।

और धन्धे हैं झूठे सारे, कर देखो वीचार।

राम नाम का साचा सौदा, जानो जग में सार ।।१।।

साधसंग से मिलकर हरदम, स्मरो सिरजणहार।

राम नाम से चीत लगाके, अपना करो उद्धार ।।२।।

राम पदार्थ कबहुँ न खूटे, दिन दिन बढ़ने हार।

जो जन इस सौदे को लेवे, तांका हो निस्तार ।।३।।

तन मन धन की भेटा देके, सेव करो हरवार।

कहे टेऊँ यह सौदा लीजे, जा गुरु सन्त द्वार ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ७६ ।। ४४०।।

मेरे मन ध्यान यही धरले, प्रीति गुरु चरणों से करले।

होवेगा तेरा बेड़ा पार ।।टेक।।

जगत की प्रीति कच्ची जानो, गुरू की प्रीति सच्ची मानो।

हृदय में भाव भक्ति भरले,भ्रम अरु संशय को हरले ।।१।।

गुरू बिन कोय नहीं तरता, चाहे को पुण्य दान करता।

गुरू से आदी मन्तर ले, स्वास से उसको स्मरले ।।२।।

गुरू का ज्ञान है सुखदाई, कहे टेऊँ सुनले भाई।

तुरत भवसागर से तरले, फेर ना गर्भ माहिं पड़ले ।।३।।

।। राग तिलंग भजन ।। ७७ ।। ४४१।।

रहो ना गफ़्लत में गल्तान, उठो अब याद करो भगवान।
समय करले सफल ।। टेक।।
पूरब में शुभ कर्म कमाया, तब यह दुर्लभ नर तन पाया।
इसे ना मुफ्त गंवाओ तुम, हरी के गीत गाओ तुम,
समय करले सफल ।।१।।
पुण्य करन हित जग में आया, पाप कर्म क्यों बहुत बढ़ाया।
करो ना स्वासों का नुकसान, साच का सौदा लेहु सुजान,
समय करले सफल ।।२।।
दीन जनों की सेवा करले, मान गुमान को मन से हरले।
धर्म से हेत बढ़ाओ तुम, उसी पर जान लुटाओ तुम,
समय करले सफल ।।३।।
कहे टेऊँ नित सत्संग करके, प्रेम प्याला पीवो भरके।
गुरू का शब्द कमाओ तुम, ज्ञान का दीप जगाओ तुम,
समय करले सफल ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ७८ ।। ४४२।।

जब जान लिया तो रटना क्या, टूट गया जब जड़ से तरुवर,
शाखों को फिर कटना क्या ।। टेक।।
पारस की मणि प्राप्त जांको, कौड़ी की नहिं इच्छा तांको।
अमृत भोजन पाय लिया जब, चटनी को फिर चटना क्या ।।१।।

निद्रा से नर जागा जोई, स्वप्न चोर से डरत न सोई।
सूर्य का प्रकाश भया जब, दीपक को फिर डटना क्या ।।२।।
वायू रूपी वाहन जांको, अन्य सवारी की चाह न तांको।
शेरों के जब सामने होया, हिरनों से फिर हटना क्या ।।३।।
जिनके मन में नहिं कछु आसा, कहे टेऊँ वे न होय निरासा।
आतम दर्शन पाय लिया जब, तीर्थों पै फिर अटना क्या ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ७९ ।। ४४३।।

जल्दी जा मन आत्म घर में, परम शान्ति को पाओ रे।। टेक।।
दुनिया की सब दावा छोड़े, लगन राम से लाओ रे ।।१।।
भयता वाला भवन त्यागे, निर्भय नगर बसाओ रे ।।२।।
सुन्न महल में सीधा चलिये, इधर उधर मत धाओ रे ।।३।।
कहता टेऊँ ब्रह्म ज्ञान से, आवागमन मिटाओ रे ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ८० ।। ४४४।।

से सब स्थल तीर्थ जानो, सन्त जहाँ पग धरते हैं ।। टेक।।
शुभ भूमी वह सन्त मुनी जहं, भजन राम का करते हैं ।।१।।
देश नगर से पावत होते, जिन्हों में सन्त विचरते हैं ।।२।।
सन्त दया कर दीन जनों के, अभर भण्डारा भरते हैं ।।३।।
कहे टेऊँ से करुणा सागर, दुखियों का दुख हरते हैं ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ८१ ।। ४४५।।

उसी देव का कर मन दर्शन, जो इस जग का वाली है।। टेक।।
नैनों से नित निरख रहा जो, जांकी नज़र निराली है ।।१।।
ख्याल के अन्दर खेल रहा जो, जांकी अद्भुत चाली है।।२।।
अन्तर बाहर सारे जग में, जांकी सब उजियाली है ।।३।।
कहे टेऊँ जो सत् चित् आनन्द, आदी पुरुष अकाली है।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ८२ ।। ४४६।।

मेरे मन यह मोह अन्धेरा, महा अती भय वाला है ।। टेक।।
मोह से राजे महा मुनियों ने, देखा दूख विशाला है ।।१।।
भरत ऋषी ने मृग मोह से, पाया कष्ट कराला है ।।२।।
सब जीवों के मन को मोहे, मोह करत मतवाला है ।।३।।
मोक्ष मन्दिर के दरवाज़े को, दिया मोह ने ताला है ।।४।।
कहे टेऊँ सब मोह मिटाये, को जन होत सुखाला है ।।५।।

।। राग तिलंग भजन ।। ८३ ।। ४४७।।

मेरे मन शुभ कर्म करो नित, कर्मों का ये जहाना है।। टेक।।
सुख दुख फल है कर्मों केरा, बनता और बहाना है ।।१।।
जन्म मरण पुनि लाभ हानि का, कर्म अती प्रधाना है ।।२।।
किया कर्म कब मिटता नाहीं, कहते सन्त सुजाना है ।।३।।
भोगे बिन ये भागत नाहीं, टेरत वेद पुराना है ।।४।।
कहता टेऊँ निश्चय करिये, कर्म बहुत बलवाना है ।।५।।

।। राग तिलंग भजन ।। ८४ ।। ४४८।।

मेरे मन तुम अहं त्यागो, जो सब दुख का कर्त्ता है ।। टेक।।
अहं मलिन को धारे क्यों तुम, जन्म मरण में पड़ता है ।।१।।
देह मान कर अपने को क्यों, यम का लेखा भरता है ।।२।।
अहं का कारण है अज्ञाना, तांको क्यों ना हरता है ।।३।।
कहे टेऊँ तुम हौं मैं त्यागे, भव सिंधु क्यों ना तरता है ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ८५ ।। ४४९।।

कहो गुरू मैं कहाँ से आया, कहां मुझे फिर जाना है।। टेक।।
ज़ाति वर्ण क्या नाम हमारा, आदी कहाँ ठिकाना है ।।१।।
अपनी मौज से आया हूं या, भेजा मुझ भगवाना है ।।२।।
कैसे हमरा आना होया, क्या मुझको यहाँ पाना है ।।३।।
कहे टेऊँ सब खोल सुनाओ, सत्गुरु आप सुजाना है ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ८६ ।। ४५०।।

सुनले साची बात कहूं तुम, अमर लोक के वासी है।। टेक।।
भली भान्ति मैं जानत हूँ तुम, चेतन चिद आकाशी है ।।१।।
नाम वर्ण नहिं ज़ाति तुम्हारी, तुम तो अज अविनाशी है।।२।।
अपनी इच्छा से तुम आये, अब क्यों भया उदासी है ।।३।।
तुझ में दुख तो रंचक नाहीं, आनन्द की तुम राशी है ।।४।।
कहे टेऊँ निज रूप पछानो, तुम तो स्वयं प्रकाशी है ।।५।।

।। राग तिलंग भजन ।। ८७ ।। ४५१।।

मेरे मन तुम भोग भोगके, सारा जन्म गंवाया है।। टेक।।
रसना को ना तृप्ति होई, षट्रस भोजन खाया है ।।१।।
नैनों नाना रूप देखके, अब लौं चैन न पाया है ।।२।।
श्रवण से बहु शब्द सुना पर, अजहूं नाहिं अघाया है ।।३।।
घ्राणों ने भी शान्ति न पायी, बहुत सुगन्धि उठाया है ।।४।।
कहे टेऊँ चित्त चाह त्यागो, काल निकट तव आया है ।।५।।

।। राग तिलंग भजन ।। ८८ ।। ४५२।।

सद्गुरु ने सत्संग का जग में, खोला बड़ा दुकाना रे।। टेक।।
कर्म धर्म गुण ज्ञान भक्ति का, धरे पदार्थ नाना रे ।।१।।
जैसा प्रेमी गाहक आवे, तैसा देत समाना रे ।।२।।
श्रद्धा का धन जो ले आवे, दे तिस नाम निधाना रे ।।३।।
कहे टेऊँ गर लेना चाहो, मन का तज अभिमाना रे ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ८९ ।। ४५३।।

सत्गुरु दाता दीन दयालू, अभय दान मुझ दीजे जी।। टेक।।
करुणा सागर करुणा करके, भेद भ्रान्ती भयता हरके।
निर्भय हमको कीजे जी ।।१।।
आया हूँ मैं शरण तुम्हारी, मोह ममत की काटो जारी।
जन्म मरण दुख छीजे जी ।।२।।
चरण कमल की सेवा करहूं, ध्यान तुम्हारा हरदम धरहूं।
भाव भक्ति मन भीजे जी ।।३।।

कहे टेऊँ मैं दासनि दासा, सत्गुरु मेरी सुन अर्दासा।
अपना कर मोहि लीजे जी ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। १० ।। ४५४।।

मन राजा ने अपने बल से, जीत लिया जग सारा है ।। टेक।।
रावण कुम्भकर्ण पुनि बाली, हरनाकस जैसे बलशाली।
ऐसे सर्व संहारा है ।।१।।
तपसी त्यागी धर्मी दाता, पण्डित पाठी वेद विज्ञाता।
बहुत गुनिन को गारा है ।।२।।
कहे टेऊँ मन सकल डराया, को जन निर्भय नज़री आया।
जो सत्गुरु का प्यारा है ।।३।।

।। राग तिलंग भजन ।। ११ ।। ४५५।।

गुरु की भक्ती सुगम न जानो, मुश्किल तोड़ निभाना है।। टेक।।
इक दो दिन का काम न होना, प्रीति लगा कर पल पल रोना।
सहन मान अपमाना है ।।१।।
गुरु आज्ञा को सिर पर धरना, मैं तूं त्यागे जीवित मरना।
तजना तन अभिमाना है ।।२।।
छोटा मार्ग बहु चिकनाई, गन्धमाल्य ज्यों कठिन चढ़ाई।
तेग़ धार पर जाना है ।।३।।
कहे टेऊँ सब तोड़े लाजा, मन को जीते करना काजा।
अपना आप जगाना है ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ९२ ।। ४५६।।

बन्दा हरि हरि नाम उच्चार।

हरि हरि नाम उच्चार करन से, बेड़ा होगा पार ।।टेक।।
हरि हरि नाम स्मर सत्संगी, अन्त काल यम दे ना तंगी।
अजामेल हरि स्मरण करके, गया वैकुण्ठ द्वार ।।१।।
जहं को हरि गुन सुने सुनावे, तुम में से तहं को ना जावे।
धर्म राज ने दूतों प्रती, ऐसे कहा पुकार ।।२।।
हरि भक्तों पर हुकम न मेरा, मैं हूं चाकर भक्तों केरा।
रविनन्दन की लिखी ज़बानी, नृसिंह पुराण मंझार ।।३।।
कलियुग में हरि कीर्तन जैसा, फलदायक मग और न ऐसा।
कहे टेऊँ यह वेदव्यास ने, कहिया बारम्बार ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ९३ ।। ४५७।।

ऐसे सत्गुरु पै कुर्बान।

दया करे जिस मुझको दीया, ब्रह्म ज्ञान का दान।।टेक।।
जिस अज्ञान ने बहु भ्रमाया, चौरासी में दुख भोगाया।
ब्रह्म ज्ञान के वचनों से जिहं, दूर किया अज्ञान ।।१।।
जिस प्रभू को खोजत फिरता, देश देश में बहुत विचरता।
दया करे निज घट ही में वह, दिखलाया भगवान ।।२।।
जिस मस्ती को सिद्ध मुनि चाहत, बड़भागी जन कोई पावत।
महिर करे उस खुद मस्ती में, मुझे किया मस्तान ।।३।।
कहता टेऊँ गुरु उपकारा, कह न सकूं है अपरमपारा।
तन भी वारूं धन भी वारूं, वारूं मन बुद्धि प्रान ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ९४ ।। ४५८।।

प्यारे मीठे वचन उच्चार।

वचन उच्चारो पीछे मुख से, पहले मन वीचार ।।टेक।।

दिल का दर्पन है यह बानी, दिल की सारी कहत कहानी।

मनुषपने की परख पड़त है, बोलन के अनुसार ।।१।।

जो नहिं बोलत वचन सम्भारे, सो जन सहता कष्ट अपारे।

द्रोपदा के बोलन से ज्यों, बढ़ गई बहुती रार ।।२।।

घाव खञ्जर का मिट सकता है, मगर वचन का नहिं मिटता है।

शेर कथा को स्मरण करके, बोलो वचन सम्भार ।।३।।

अमृत जैसी कहिये वाणी, जांसे प्रसन्न हों सब प्राणी।

प्रिय वचन कह सब से जोड़ो, नाता जगत मंझार ।।४।।

सन्तों की ज्यों निर्मल बानी, सब सुख परमार्थ की दानी।

कहे टेऊँ त्यों बाणी बोले, अपना जन्म सुधार ।।५।।

।। राग तिलंग भजन ।। ९५ ।। ४५९।।

प्यारे करले शुद्ध अहार।

शुद्ध अहार के करने से ही होगा शुद्ध व्यवहार ।।टेक।।

साधन शुद्ध से शुद्ध हो भोजन, शुद्ध भोजन से होवहिं शुद्ध मन।

शुद्ध मन से शुद्ध प्रज्ञा होवे, उपजे शुद्ध वीचार ।।१।।

तन मन बुद्धि पुनि आत्म उन्नती, जिससे हो सो खा नित प्रती।

पाप रोग ना लागे कबहूं, सो कर भोजन सार ।।२।।

राजस तामस भोजन तजले, सात्विक भोजन खा तन सजले।
सात्विक स्वल्प भोजन से हो, वृत्ती ब्रह्माकार ।।३।।
जैसा पानी तैसी बानी, बानी के सम बने प्रानी।
कहे टेऊँ शुद्ध अन्न जल से ही, होवहिं सूख अपार ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ९६ ।। ४६०।।

तुम यह विनय सुनो महाराज।
लाज राख इस अवसर मेरी, गुरू गरीबनिवाज़ ।।टेक।।
देश छोड़ परदेशहिं आये, देख व्यवस्था मन घबराये।
लाज हमारी लेहु बचाये, कृपा करके आज ।।१।।
अपना बल ना मुझ में कोई, सर्वज्ञ हो तुम जानत सोई।
निर्बल के बल तुम इक होई, पूरण करिये काज ।।२।।
तन मन कर मैं दास तुम्हारा, तुम हो मेरा एक सहारा।
जहं जाऊँ तहं हो रखवारा, हे समर्थ सुख साज़ ।।३।।
ज्यों हरि भक्तनि लाज बचाई, सब ग्रन्थनि यह बात बताई।
कहे टेऊँ त्यों होय सहाई, सन्तों के सिरताज ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ९७ ।। ४६१।।

मन तूं राम राम जप राम।
राम जपन से तेरे सारे, होंगे पूर्ण काम ।।टेक।।
कहूं लाख की बात सु नीकी, राम बिना है बानी फीकी।
नमक बिना ज्यों ताम ।।१।।

वेद वचन मैं कहूं यथार्थ, राम बिना है जन्म अक्यार्थ।
मूज़ी का ज्यों दाम ।।२।।
सब सन्तों का निर्णय ये ही, राम बिना है सूनी देही।
दीपक बिन ज्यों धाम ।।३।।
कहे टेऊँ जग सारा सपना, राम भजन बिन कोय न अपना।
स्मरण कर निष्काम ।।४।।

।। राग तिलंग भजन ।। ९८ ।। ४६२।।

मन तूं लखले अपना आप।
जब तक अपना आप लखो ना, तब तक मिटे न ताप ।। टेक।।
अपना आप लखोगे जबहीं, ब्रह्म माहिं समावहिं तबहीं।
लगे न कोई पाप ।।१।।
सत् चित् आनन्द निज को जानो, और भाव मन में ना आनो।
मारो संशय साप ।।२।।
आप बिना नहिं कोई भासे, तेरे से ही सब प्रकासे।
है सब तव प्रताप ।।३।।
अपना आप लखो गुरु द्वारे, कहे टेऊँ सब भेद निवारे।
जपले सोऽहम् जाप ।।४।।

।। राग हुसेनी भजन ।। १ ।। ४६३।।

साधो अद्भुत रूप हमारा।
क्या कहूं कछु कहत बने नहिं, अनन्त रूप अपारा ।। टेक।।
ना मैं तन मन इन्द्रिय प्राना, ना मैं चित्त अहङ्कारा।
विश्व न तेजस प्राज्ञ न कारण, सूक्ष्म थूल अकारा ।।१।।
विराट न हिरण्यगर्भ अव्याकृत, ईश नहीं अवतारा।
निर्गुण सगुण न सत् असत् है, तिमिर नहीं उजियारा ।।२।।
कहे टेऊँ नहिं आदि अन्त मध्य, नहीं दृश्य संसारा।
सत्चित् आनन्द अनुभव रूपा, सर्व द्वन्द्व ते न्यारा ।।३।।

।। राग हुसेनी भजन ।। २ ।। ४६४।।

साधो सद्गुरु शब्द सुनाया।
परम यथार्थ अर्थ उसी का भिन्न भिन्न कर समझाया ।। टेक।।
सत् कर्मों की शिक्षा देके सकले पाप मिटाया।
भूत बराबर चंचल मन को हरि मूरत ठहराया ।।१।।
अहंता ममता चित्त की मेटे अजपा जाप जपाया।
सत् असत् का दे वीचारा संशय भ्रम भुलाया ।।२।।
ब्रह्मज्ञान का कर प्रकाशा देह अध्यास नसाया।
अन्तर बाहर व्यापक प्रभू प्रकट कर दिखलाया ।।३।।
कहे टेऊँ गुरु कृपा करके अपना आप लखाया।
जन्म मरण का बन्धन काटे जीवन मुक्ति बनाया ।।४।।

।। राग हुसेनी भजन ।। ३ ।। ४६५।।

साधो ऐसा रूप हमारा।

जाग्रत स्वप्न सुषोप्ति का जो साक्षी सिरजणहारा ।। टेक।।

धोला पीला नाहीं नीला लाल नहीं है कारा।

रंग रूप नहिं धूप न छाया ना को अङ्ग अकारा ।।१।।

चार वेद तिहँ जानत नाहीं ना पुनि पुराण अठारा।

योगी पण्डित पार न पावत है सो अगम अपारा ।।२।।

ऊँच नीच नहिं छोटा लंबा हलका नाहीं भारा।

भेष पन्थ नहिं वर्ण न ज़ाती तीन गुणों से न्यारा ।।३।।

कहता टेऊँ अज अविनाशी निर्गुण निरहंकारा।

चींटी कुंचर माहिं व्यापक सत्‌चित् आनन्द सारा ।।४।।

।। राग हुसेनी भजन ।। ४ ।। ४६६।।

मेरे मन राम सुमर अविनाशी।

जांके सुमरत सब दुख नाशे टूटे यम की फासी ।। टेक।।

राम नाम को संतनि सुमरे पाई आनन्द राशी।

जन्म मरन का फेरा मेटे अमर देश भये वासी ।।१।।

राम नाम का सुमरण कर बहु जग ते भये उदासी।

गोपीचन्द भरथरी पीपा बन गये बन के वासी ।।२।।

राम नाम के सुमरन से ही पाप पुञ्ज हो नाशी।

कहे टेऊँ हरि के सुमरण बिन यमपुर होवे हासी ।।३।।

।। राग हुसेनी भजन ।। ५ ।। ४६७।।

प्रभुजी मेलहु सन्त सचारे।
जांकी सङ्गति भवसागर से पल में पार उकारे ।। टेक।।
जांका दर्शन परसन हर्सन मन की तप्त निवारे।
जांकी वाणी अमृत खाणी संसा भ्रम संहारे ।।१।।
जांकी कहनी बहनी रहनी सबके काज संवारे।
जांका ज्ञान अज्ञान नसावे पाप सर्व परिहारे ।।२।।
अन्तर बाहर परम पवीत्र जो हरिनाम उच्चारे।
ज्ञान ध्यान गुण भक्ती देके सब जीवों को तारे ।।३।।
कर जोड़े कर कहता टेऊँ पल पल तोहि पुकारे।
ऐसे सन्तों का संग मुझको दीजे सत्कर्तारे ।।४।।

।। राग हुसेनी भजन ।। ६ ।। ४६८।।

प्रभुजी कर कृपा जन जानी।
सब गुण सम्पन्न तुम हो स्वामी मैं हूं अवगुण खानी ।। टेक।।
प्रबल है प्रभू तेरी माया मोहे मुनिवर ज्ञानी।
मैं निर्बल किस लेखे माहीं अति हूं मूण्ढ अज्ञानी ।।१।।
केते तुमने दास उबारे कामी क्रोधी मानी।
अवगुण उनका एक न देखा दीना पद निर्बानी ।।२।।
आदि जुगादी तेरी चाली वेदनि यही बखानी।
अपने जन को कबहुं न छोड़त दीनबन्धु सुखदानी ।।३।।
मैं भीखारी यह वर मांगूं दाता दया निधानी।
कहे टेऊँ हरि मुझको दीजे परा भक्ति प्रधानी ।।४।।

।। राग हुसेनी भजन ।। ७ ।। ४६९।।

इक ही प्रेम प्रभू को भाया।
ज़ाति वर्ण कुल कर्म न देखा प्रेम के हाथ बिकाया ।। टेक।।
प्रेम अटल जब केवट कीना राम देख मुस्काया।
जिन चरणों को योगी चाहत से निज चरण धुलाया ।।१।।
प्रेम भीलनी का जब देखा रघुवर तब घर आया।
प्रेम जटायू का लख हरि ने अपने धाम पठाया ।।२।।
प्रेम देख सुग्रीव का हरि ने अपना मित्र बनाया।
प्रेम पवनसुत ऐसा कीना रघुपति कण्ठ लगाया ।।३।।
प्रेम विभीषण का जब देखा तब हरि राज दिलाया।
कहे टेऊँ यह प्रेम हरी का भाग बड़े किस पाया ।।४।।

।। राग हुसेनी भजन ।। ८ ।। ४७०।।

प्रभु ने अपनी कृपा धारे।
आदि जुगांजुग निज भक्तों के आकर दूख निवारे।। टेक।।
नामदेव हित गऊ जिवाकर लाज बचाई प्यारे।
सैने सधने का दुख मेटे तांके काज संवारे ।।१।।
भक्त प्रह्लाद का कष्ट निवारा हो नरसिंह मुरारे।
द्रोपदी की लाज रखी हरि देकर चीर अपारे ।।२।।
जाट धन्ने का दुख हर लीना सांवल खेत सुधारे।
कबीर का हरि शान बढ़ाया खोले अखण्ड भण्डारे ।।३।।
कहता टेऊँ श्रवन देके सुनिये सन्त उदारे।
जो यह साखी साची है तो आएँगे मम द्वारे ।।४।।

।। राग हुसेनी भजन ।। ९ ।। ४७१।।

प्रभुजी तुझ बिन और न मेरा।
दीन दयाल सदा कृपाला मोहि आसरा तेरा ।।टेक।।
मात पिता ज्यों तुम प्रतिपालक निशदिन सांझ सवेरा।
मैं हूँ शरण तुम्हारी स्वामी जान आपना चेरा ।।१।।
मैं अज्ञानी कछु नहिं जानत पड़ा आपके डेरा।
कृपा कर मोहि ज्ञान सुनाके मेट अज्ञान अंधेरा ।।२।।
कहे टेऊँ मैं विनय करत हूँ सुनले मेरी टेरा।
ऐसी दया दास पर कीजे मिट जावे जम फेरा ।।३।।

।। राग हुसेनी भजन ।। १० ।। ४७२।।

मेरे मन हरि का धरो ध्याना।
हरि चरणों का ध्यान धरे तुम पाओ सूख महाना ।।टेक।।
शुभ कर्मों से प्रीति लगाके पाप से चीत हटाना।
सर्व कामना छोड़ जगत की निष्कामी बन जाना ।।१।।
आठ पहर हरिनाम उच्चारे मन का मोह मिटाना।
साध संगति की सेवा करके चार पदार्थ पाना ।।२।।
हरि सुमरन में सुरति लगाके मन को अचल बनाना।
कहता टेऊँ काट चौरासी पाओ पद निर्बाना ।।३।।

।। राग हुसेनी भजन ।। ११ ।। ४७३।।

साधो सो है राम हमारा।
सब घट अन्तर खेल रहा जो सब से रहत न्यारा ।।टेक।।
अस्ति भाति जो प्रिय स्वरूपा नाम रूप आधारा।
सत्चित् आनन्द अखण्ड अनादी अनुभव रूप अपारा ।।१।।
आना जाना जिसमें नाहीं जन्म न मरन विकारा।
असंग अलेपा रंग न रेखा ना को अंग अकारा ।।२।।
ब्रह्मा विष्णू आदिक देवा जांको करत जुहारा।
जिसकी महिमा मुनिवर गाके पावत कबहुँ न पारा ।।३।।
जांकी ज्योती निशदिन जगती अतिशय कर उजियारा।
कहे टेऊँ जिसके प्रकाशे प्रकाशत संसारा ।।४।।

।। राग हुसेनी भजन ।। १२ ।। ४७४।।

साधो इस विधि पूजा कीजे।
ऊठत बैठत सोवत जागत सद्गुरु शब्द पढ़ीजे ।।टेक।।
दया सर्व पर कर भण्डारी वीर धर्म ठहराओ।
सुरितां जोगिनि को जागाए अनुभव दीप जगाओ ।।१।।
स्थित करके अज विश्वासा आतम दर्शन करिये।
ब्रह्म विचारी करो अचारी ध्यान उसीका धरिये ।।२।।
नौराता नौ द्वारे जागी खोलो दसम द्वारा।
देवी आतम शक्ती का तुम करले तहँ दीदारा ।।३।।
कहे टेऊँ इस विधि पूजा से देवी प्रसन्न होवे।
मुक्ती भक्ती शक्ती देके जन्म मरन दुख खोवे ।।४।।

।। राग हुसेनी भजन ।। १३ ।। ४७५।।

सद्गुरु मुझको भेद बताओ।

मैं मूर्ख कछु जानत नाहीं भिन्न भिन्न कर समझाओ ।। टेक।।

मैं हूं कौन कहां से आया होगा फिर कहँ जाना।

किसने मोहि बनाया जग में सत्गुरु दे यह ज्ञाना ।।१।।

कौन जन्मता कौन मरत है को सुख दुख को पाता।

काल किसी को कहते हैं जो तीन लोक को खाता ।।२।।

जीव कौन है ब्रह्म कौन है जगत रूप क्या लहिये।

कैसे बनिया किसने बनाया कृपा कर यह कहिये ।।३।।

कौन रूप है मन का जिसने सारा जग भ्रमाया।

कहे टेऊँ यह शंका मेटो शरण तुम्हारी आया ।।४।।

।। राग हुसेनी भजन ।। १४ ।। ४७६।।

मेरे मन छोड़ मलिन अभिमाना।

सन्त ग्रन्थ सब पुरान पुकारे सुनिये दे निज काना ।। टेक।।

प्रान प्यारे साथी चल गये तुम भी चलने हारा।

दो दिन के हैं रहने वाले जीव सकल संसारा ।।१।।

जबहीं जग में जन्म लिया तुम साथ नहीं कुछ लाये।

धन परिवार को बहुत बढ़ाया, अन्त काम नहिं आये ।।२।।

कहे टेऊँ अब कर वीचारा सत्गुरु शरणी जाओ।

लेकर तांसे आत्म ज्ञाना परम मुक्ति को पाओ ।।३।।

।। राग हुसेनी भजन ।। १५ ।। ४७७।।

मेरे मन राम सुमर सुखदाई।
जांके सुमरे विघ्न विनाशे दूख दर्द सब जाई ।। टेक।।
राम जपत नित शंकर मन में, काशी मुक्ति करावत क्षन में।
गणपति पूज्य भयो देवन में, सनकादिक गति पाई ।।१।।
वाल्मीक जप नाम निरंतर, पाई सर्वज्ञता उर अन्तर।
राम जपत शुक भयो स्वतन्तर, परीक्षित कथा सुनाई।।२।।
राम नाम जप लाय समाधी,भक्त प्रह्लाद भयो अहलादी।
अटल ध्रुव ने पद्वी लाधी, गज जप विपति मिटाई ।।३।।
कहता टेऊँ भरत हनुमाना, नाम जपे वश किया भगवाना।
भये विभीषण भूप सुजाना, राम से जब रति लाई ।।४।।

।। राग हुसेनी भजन ।। १६ ।। ४७८।।

करले प्रेम प्रभू से प्यारा।
छोड़ अनात्म तन की प्रीती होय जगत से न्यारा ।। टेक।।
ज्ञानी ध्यानी मुनिजन सारे, पाय देह फिर अन्त सिधारे।
काल महा रिपु सर्व संहारे, तांते जप कर्तारा ।।१।।
पांच तत्त्व का पिञ्जरा नाशी, तामें आतम है अविनाशी।
झूठे तन से होय उदासी, सुमरो सिरजण हारा ।।२।।
मारूथल जल स्वप्न समाना, शीत कोट सम जान जहाना।
तांको तजकर भज भगवाना, पाओ मोक्ष द्वारा ।।३।।
कहे टेऊँ तुम अबहीं जागो, झूठे जग का मोह त्यागो।
अहनिश हरि सुमरण में लागो, गुरु का ले आधारा ।।४।।

॥ राग हुसेनी भजन ॥ १७ ॥ ४७९॥

सत्गुरु काटो यम की फासी।

अपनी कृपा मुझ पर कीजे, दीजे पद अविनाशी ॥टेक॥

मैं हूं पापी पाप हरो गुरु, तुम हो तीर्थ काशी ॥१॥

दया करे निज नाम सुनाओ, सर्व सुखों की राशी ॥२॥

बहुत जन्म का बिछुड़ा हूँ मैं, हरि मिलने का प्यासी ॥३॥

कहे टेऊँ हरि मोहि मिलाओ, अमरापुर का वासी ॥४॥

॥ राग हुसेनी भजन ॥ १८ ॥ ४८०॥

साधो चुप का यह चिमकारा।

क्या कहूं कुछ कह न सकत हूं, अद्भुत है इसरारा ॥टेक॥

धरनी चुप है गगना चुप है, चुप है सागर भारा।

पवना पावक सूर्य चुप है, चुप है चन्द्र तारा ॥१॥

ब्रह्मा चुप है शंकर चुप है, चुप है हरि अवतारा।

आगम चुप है निगमा चुप है, चुप है पुराण अठारा ॥२॥

अन्तर चुप है बाहर चुप है, चुप है जग जिन्सारा।

पहले चुप है पीछे चुप है, चुप है सकल पसारा ॥३॥

तुम भी चुप है, हम भी चुप है, चुप है सिरजन हारा।

कहता टेऊँ चुप में चुप हो, चुप का देख निज़ारा ॥४॥

।। राग कोह्यारी भजन ।। १ ।। ४८१।।

जब आय वबा इन तन लागी,
तब देखा लोकनि वैरागी ।। टेक।।
सावन चींटी पंख जब आवे, अपने को तब पतंग कहावे।
देख अग्नि को डर भागी ।।१।।
मानसरोवर बगुला जावे, देख हंस को ध्यान लगावे।
मछली में मन है रागी ।।२।।
भोग विषय में मन भ्रमाये, माया मद में ज्ञान गंवाये।
हरि को सुमरत नहिं जागी ।।३।।
मूण्ढ मरन से दम दम डरते, सन्त अमर भये हरी सुमरते।
कहे टेऊँ वे बड़भागी ।।४।।

।। राग कोह्यारी भजन ।। २ ।। ४८२।।

यह तन तेरा होसी ख़ाक मसाना,
लहर सागर ज्यों आना जाना ।।टेक।।
बीज धनुष ज्यों मृग जल माया, तरुवर बादल धूम्र छाया।
स्टेशन पर पल घड़ी ठिकाना ।।१।।
खेल मदारी ज्यों संसारा, आदित्य ओला उड़हैं पारा।
भोर नखट पते बून्द न ठाना ।।२।।
मात पिता सुत बन्धु लुगाई, साथ चले ना धन इक पाई।
सूखे वृक्ष ज्यों पंछी उड़ाना ।।३।।

पापी जग में पाप कमावे, जाकर नरकें दुख को पावे।
तांते भूल न पाप कमाना ।।४।।
धर्मी पुण्य कर स्वर्गे जावे, ज्ञानी शुद्ध स्वरूप समावे।
फेर न होवे उसका आना ।।५।।
कहे टेऊँ तोड़े तीनों पड़दा, गुरु भक्ती का करले सौदा।
तन मन धन का तज अभिमाना ।।६।।

।। राग कोह्यारी भजन ।। ३ ।। ४८३।।

प्रेम ने मुझको बान्ध लिया है,
बिरह केरे बन्दखाने, मध मैखाने।। टेक।।
जैसे पतंग दीप अनुरागी, निरती त्यों गुरु मूरत लागी।
गुरु को गोविन्द जाने, धरे ध्याने ।।१।।
सुनके नाद कुरंग तन भूला, तैसे शब्द श्रुति मिल झूला।
मिला हरी सुख माने, अमृत पाने ।।२।।
हंस अनल जिमि सार सुजागी, तैसे वृति विवेकहिं रागी।
लाल पाया तन छाने, रहा सुखाने ।।३।।
कहे टेऊँ कर जोड़ पुकारे, ऊगा सहस्र भानु उज्जारे।
पाया पद निर्बाने, ब्रह्मज्ञाने ।।४।।

।। राग कोह्यारी भजन ।। ४ ।। ४८४।।

फिठ पगड़ी जुठ जामा पाकर,
पाप सर्व मैं धोया, सुख घर सोया ।। टेक।।

लोक निन्दा की नाव बनाए, बद नेकी का भार चढ़ाये।
पार द्वन्द्व से होया, सुख घर सोया ।।१।।
पाय गिला का गल में घांघा, छोड़ा लोकों का आसांगा।
हरि आरामी होया, सुख घर सोया ।।२।।
खिटपिट की मैं बान्धी धोती, मिहने ताने के कर मोती।
सुन्दर हार पिरोया, सुख घर सोया ।।३।।
कहे टेऊँ मैं भया निराला, खुद मस्ती का पीकर प्याला।
तीन लजा को खोया, सुख घर सोया ।।४।।

।। राग कोह्यारी भजन ।। ५ ।। ४८५।।

जीवन मुक्ति जगत में देखा,
सन्त सज्जन सचियारा, प्रीतम प्यारा ।। टेक।।
निर्वैरी निर्मोही ज्ञानी, निशदिन बोलत निर्गुन बानी।
करते जग उपकारा, परम उदारा ।।१।।
दिल की दुर्मति दूर हटाते, सब जीवों को प्रेम पिलाते।
बरसाय अमृत धारा, कर गजकारा ।।२।।
शान्ति सरोवर शान्ति बढ़ाते, तापों की सब तप्त मिटाते।
देते भजन भण्डारा, अखण्ड अपारा ।।३।।
कहे टेऊँ रह आनन्द घन में, निर्भय विचरत तीन भवन में।
राग द्वेष से न्यारा, सदा बहारा ।।४।।

।। राग कोह्यारी भजन ।। ६ ।। ४८६।।

सद्‌गुरु मेरा सर्व व्यापक,
सत्‌चित् आनन्द सारा, है कर्तारा ।।टेक।।
सब रंगों में सोई रंगी,
रूप रंग ते न्यारा, है निर्धारा ।।१।।
निर्गुण से सो सर्गुण बनके,
करत जगत जयकारा, धर अवतारा ।।२।।
कहता टेऊँ तीन लोक में,
खेले खेल अपारा, अजब निज़ारा ।।३।।

।। राग कोह्यारी भजन ।। ७ ।। ४८७।।

सद्‌गुरु अपनी कृपा करके,
दीना पुर कर प्याला, वहदत वाला ।।टेक।।
हरदम ख़ुद मस्ती के अन्दर,
मस्त भया मतिवाला, रहूं निराला ।।१।।
धर्मराय का लेखा चूका,
हट गया काल कराला, जम जँजाला ।।२।।
अमर देश में वासा कीया,
देखा दीन दयाला, भया निहाला ।।३।।
कहता टेऊँ गुरु प्रसादे,
खुलिया अनुभव ताला, रहा सुखाला ।।४।।

॥ राग कोह्यारी भजन ॥ ८ ॥ ४८८॥

सत्‌गुरु मेरा अन्तर्यामी,
पूरन पर उपकारी, नित अवतारी ॥टेक॥
पाप ताप हर पांच क्लेशा,
मन की ममता मारी, दुर्मति टारी ॥१॥
अनुभव ज्योति जगाए उर में,
अविद्या रैन निवारी, कर उजियारी ॥२॥
योग अभ्यास की युक्ती देके,
खोली सुषुम्न नाड़ी, भयी सुध सारी ॥३॥
कहे टेऊँ गुरु ज्ञान बताया,
पाया पद निर्धारी, अति सुखकारी ॥४॥

॥ राग कोह्यारी भजन ॥ ९ ॥ ४८९॥

कितने भेष धरे तन ऊपर,
गुरु बिन भटका खावे, मुक्ति न पावे ॥टेक॥
शिर पर जटा गले में माला,
अंग भभूति रमावे, मुक्ति न पावे ॥१॥
सेल्ही पहरे सिंगी बजावे,
दर दर अलख जगावे, मुक्ति न पावे ॥२॥
काला पीला गेरू वस्त्र,
पहरे मूण्ड मुण्डावे, मुक्ति न पावे ॥३॥
कहे टेऊँ गुरु ज्ञान बिना नर,
मानुष जन्म गँवावे, मुक्ति न पावे ॥४॥

॥ राग कोह्यारी भजन ॥ १० ॥ ४९०॥

सहसें साज़ बजै घट भीतर,
मधुर मधुर झनकारा, सुनले प्यारा ॥ टेक॥
घिण्ड घड़ियाला नरसिंह भेरी,
बाजत नाद नगारा, सुनले प्यारा ॥१॥
तबल सारंगी सुरन्दा बाजे,
चंग उपंग चौतारा, सुनले प्यारा ॥२॥
बीन सुरीली बेहद बाजे,
अनहद का धुनिकारा, सुनले प्यारा ॥३॥
कहे टेऊँ ले गुरु से युक्ती,
साज़ सुरीले सारा, सुनले प्यारा ॥४॥

॥ राग कोह्यारी भजन ॥ ११ ॥ ४९१॥

आत्म चिन्तन निशदिन करले,
गुरु के चरन ध्याओ, शान्ती पाओ ॥ टेक॥
काम क्रोध लोभ अहंकारा,
ममता मोह मिटाओ, शान्ती पाओ ॥१॥
पांचों इन्द्रिय पांच विषय से,
सम दम साधि हटाओ, शान्ती पाओ ॥२॥
मन को मार दृढ़ कर आसन,
इत उत नाहिं डुलाओ, शान्ती पाओ ॥३॥
कहता टेऊँ गगन मण्डल में,
अपनी श्रुति समाओ, शान्ती पाओ ॥४॥

।। राग कोह्यारी भजन ।। १२ ।। ४९२।।

सत् चित् आनन्द सर्व व्यापक,
साक्षी सिरजणहारा, तूं है प्यारा ।।टेक।।
अजर अडोल अगम अविनाशी,
नाम रूप ते न्यारा, तूं है प्यारा ।।१।।
असंग अरूप अनूप अनादी,
आत्म अखण्ड अपारा, तूं है प्यारा ।।२।।
कहता टेऊँ तीन लोक का,
अधिष्ठान आधारा, तूं है प्यारा ।।३।।

।। राग कोह्यारी भजन ।। १३ ।। ४९३।।

कारज मात्र काम करो तुम,
मन से लोभ हटाओ, आनन्द पाओ ।।टेक।।
नेम प्रेम से सत्संग जाकर,
सन्तनि सेव कमाओ, आनन्द पाओ ।।१।।
भाव भक्ति को हृदय धारे,
गोविन्द के गुन गाओ, आनन्द पाओ ।।२।।
पांचों इन्द्रिय वश में करके,
पांच क्लेश नसाओ, आनन्द पाओ ।।३।।
कहे टेऊँ गुरु ज्ञान पायके,
आवागमन मिटाओ, आनन्द पाओ ।।४।।

।। राग कोह्यारी भजन ।। १४ ।। ४९४।।

आज हमारे भाग जगे हैं,
सद्गुरु घर में आया, दर्शन पाया ।। टेक।।
फूले बाग़ चिमन फुलवारी, गगन मण्डल होई गुलज़ारी।
बिरह बसन्ती लाया ।।१।।
जगमग ज्योति ब्रह्म की जागी, पांच सखी अब नाचन लागी।
मिल कर मंगल गाया ।।२।।
कृपा कर गुरु दर्शन दीना, घट ही में सब तीर्थ कीना।
सगले पाप मिटाया ।।३।।
कहे टेऊँ सब संसा भागा, आतम रंग अलस्ती लागा।
लाल अमर भई काया ।।४।।

।। राग कोह्यारी भजन ।। १५ ।। ४९५।।

बाज़ीगर इक बाज़ी पाई,
अजब रखा इसरारा, बलि बलिहारा ।। टेक।।
पड़दे अन्दर रंग रचाया, बहु विधि मृदंग ताल बजाया।
खेले खेल अपारा ।।१।।
प्रकट नाना खेल दिखावे, खेलन वाला नज़र न आवे।
अचरज है यह भारा ।।२।।
जिस पर गुरु की कृपा होवे, टेऊँ सो बाज़ीगर जोवे।
बाज़ी से हो न्यारा ।।३।।

।। राग कोह्यारी भजन ।। १६ ।। ४९६।।

मोहन मेरे घर में आये,
मुरली मधुर बजाये, रास रचाये ।।टेक।।
सब सखियों में शोभा धारी, ऊज़ा भानु गई अन्धारी।
मिल कर मंगल गाये ।।१।।
सहसें साज़ बजन सुर मण्डल, अनुभव अखियां ज्ञान के कुण्डल।
अनहद नाद बजाये ।।२।।
सर्गुण में जो निर्गुण निरखा, रूप में रूप अरूप सो परखा।
परखे आप लखाये ।।३।।
कर जोड़े कर कहता टेऊँ, अन्दर ओऽम् बाहर सोऽहम्।
साक्षी बन सुख पाये ।।४।।

।। राग कोह्यारी भजन ।। १७ ।। ४९७।।

आज मेरे घर संत पधारे बलि बलि मैं बलिहारा,
प्रीतम प्यारा ।।टेक।।
दो कर जोड़ करूँ प्रणामा, तन मन भेट धरे धन धामा।
वारौं सब परिवारा ।।१।।
फूलों की मैं सेज बिछाये, तां पर सन्तों को बैठाये।
पाऊँ मोतिन हारा ।।२।।
श्रद्धा से मैं सेवा करके, तिनसों लेवा देवा करके।
पाऊं भक्ति भण्डारा ।।३।।
कहे टेऊँ धन भाग हमारे, आये हम घर सन्त सचारे।
साक्षी सिरजणहारा ।।४।।

।। राग कोह्यारी भजन ।। १८ ।। ४९८।।

सद्‌गुरु मिलिया पड़दा खुलिया अंग अंग फुलिया सारा,
प्रीतम प्यारा ।।टेक।।
श्रवन सुनते सार शब्द को, उलट नैन निरखत गुरु पद को।
नासिक नाम उच्चारा ।।१।।
रसना बोलत हरि की बानी, सुन सुन सुरतां शब्द समानी।
पाया आनन्द अपारा ।।२।।
चित चेतन में निशदिन लागा, मनुवा मोह नींद से जागा।
बुद्धि वेदान्त विचारा ।।३।।
कहे टेऊँ अहं ब्रह्मास्मी, भेद भ्रम भया सब भस्मी।
जीव ब्रह्म निर्धारा ।।४।।

।। राग कोह्यारी भजन ।। १९ ।। ४९९।।

अखण्ड आरती गुरु की कीजे।
जांते सद्‌गुरु रीझे, भव दुख छीजे।। टेक।।
थिरता थाल दीप कर ज्ञाना, वृत्ती बाती घृत विज्ञाना।
धूप ध्यान का दीजे ।।१।।
अविद्या अगरबती को जलाए, साच कुंगू चित्त चन्दन चढ़ाए।
कपट कपूर जलीजे ।।२।।
सोऽहं शंख तुरी निज बानी, हरी नाम नरसिंह निशानी।
अनहद घिण्ड बजीजे ।।३।।

श्रद्धा केसर शुभ गुण सुमना, चांवल सम दम के तुम करना।
चिन्तन चँवर झुलीजे ।।४।।
कहे टेऊँ शिर दक्षिणा धरके, एह आरती नितहीं करके।
हरि रस अमृत पीजे ।।५।।

।। राग कोह्यारी भजन ।। २० ।। ५००।।

दर दर फिरता काहिं दिवाना,
अन्तर है इसरारा, कर दीदारा ।। टेक।।
अन्तर सूर्य अन्तर चन्दा, अन्तर लाखों तारा ।।१।।
अन्तर अठसठ तीर्थ सारे, अन्तर हरि का द्वारा ।।२।।
अन्तर बाजा बीन सितारा, अन्तर है चौतारा ।।३।।
अन्तर ब्रह्मा विष्णु महेशा, अन्तर ओऽङ्कारा ।।४।।
कहता टेऊँ शिर को सोझो, शिर में सिरजणहारा ।।५।।

।। राग कोह्यारी भजन ।। २१ ।। ५०१।।

धन धन जन्म उसीका जग में,
जो नित भक्ति कमावे, हरि गुन गावे ।। टेक।।
श्रद्धा धार चले सत्संग में, सन्त चरन शिर नावे ।।१।।
सन्तों की अति सेवा करके, मन का मान मिटावे ।।२।।
सन्तों की नित बानी सुनके, हृदय माहिं हंडावे ।।३।।
कहता टेऊँ सन्त शरन में, परमानन्द को पावे ।।४।।

॥ राग कोह्यारी भजन ॥ २२ ॥ ५०२॥

देह मन्दिर में देव बिराजे,
साक्षी सिरजणहारा, सत् कर्तारा ॥टेक॥
तीन अवस्था तीन देह से, रहता है नित न्यारा ॥१॥
जाग्रत स्वप्न सुषोप्ति माहीं, खेलत खेल अपारा ॥२॥
रूप रेख कछु रंग न उसका, पांच कोष से पारा ॥३॥
कहे टेऊँ मैं गुरु प्रसादी, देखा तिहँ दीदारा ॥४॥

॥ राग कोह्यारी भजन ॥ २३ ॥ ५०३॥

गुरु बिन गति मति ज्ञाति न आवे,
गुरु बिन होत न ज्ञाना, वेद बखाना ॥टेक॥
गुरु बिन कर्म धर्म नहिं क्रिया, गुरु बिन नहिं कल्याना ॥१॥
गुरु बिन प्रेम नेम नहिं पावे, गुरु बिन नहिं सन्माना॥२॥
गुरु बिन जोग जुगति नहिं जाने, गुरु बिन होय न ध्याना॥३॥
गुरु बिन भेद भ्रम नहिं भागे, मिटे न मूल अज्ञाना ॥४॥
गुरु बिन मन की मैल न जावे, कोटि करे इस्नाना ॥५॥
गुरु बिन अपना आप न बूझे, पाय न कहूँ ठिकाना ॥६॥
कहता टेऊँ गुरु बिन हृदय, उदे न अनुभव भाना ॥७॥

॥ राग कोह्यारी भजन ॥ २४ ॥ ५०४॥

मैं को छोड़ सदा सुख पाओ,
गाफिल कर न गुमाना, समझ सियाना ॥टेक॥

मैं मैं करके योगी भूले, बड़े बड़े विद्वाना ।।१।।
मैं मैं करके तपस्वी गिर गये, शूरवीर बलवाना ।।२।।
मैं मैं करके केते मर गये, सालिक शाह सुल्ताना ।।३।।
कहे टेऊँ जिसने मैं मारी, सोई सन्त सुजाना ।।४।।

।। राग कोह्यारी भजन ।। २५ ।। ५०५।।

सैर करत हैं साधू शूरा,
जग से रह कर न्यारा, प्रीतम प्यारा ।। टेक।।
सारी उम्र रहत सैलानी, करे न कहँ चौबारा ।।१।।
खुद मस्ती में मस्त फिरे नित, ज्ञान करत गजकारा ।।२।।
आतप शीत सहारे निज पर, अवरां करत उद्धारा ।।३।।
कहता टेऊँ सर्व देश में, करहिं प्रेम प्रचारा ।।४।।

।। राग कोह्यारी भजन ।। २६ ।। ५०६।।

मानुष जन्म पवीत्र पाया,
मांस मछी मत खाना, समझ सियाना ।। टेक।।
जे जन जग में मांस अहारी, ते जाय नरक निदाना ।।१।।
रस के कारण घात करत जे, ते नर मूण्ढ अजाना ।।२।।
मांस मनुष का नाहिं अहारा, दैतों का है खाना ।।३।।
कहता टेऊँ मांस का खण्डन, करते वेद पुराना ।।४।।

।। राग कोह्यारी भजन ।। २७ ।। ५०७।।

अन्तर्मुख हो पाए ज्ञाती,

आप किया इस्बाती, गयी भ्रान्ती ।। टेक।।

पीया प्याला वहदत वाला, नशा चढ़ा दिन राती ।।१।।

मगन भया अब मनुवा मेरा, बिरह लाई बरसाती ।।२।।

सब घट साहब साक्षी देखा, वृत्ती तां रंग राती ।।३।।

कहे टेऊँ गुरु ज्ञान बताया, पायी हृदय शान्ती ।।४।।

।। राग कोह्यारी भजन ।। २८ ।। ५०८।।

हाथ जोड़ गुरुदेव को कीजे,

बारम्बार जुहारा, प्रीतम प्यारा ।। टेक।।

गुरु को भेंट धरे तन मन धन, जाओ बलि बलिहारा ।।१।।

हो निष्काम करो गुरु सेवा, मन का तज अहंकारा ।।२।।

गुरु का नाम जपे निशवासर, पाओ शान्ति भण्डारा ।।३।।

कहता टेऊँ गुरु के वचने, पाओ मोक्ष द्वारा ।।४।।

।। राग कोह्यारी भजन ।। २९ ।। ५०९।।

गुरु का ज्ञान तोफ का गोला,

मन को मार मुकावे, सन्त बतावे ।। टेक।।

गुरु का ज्ञान सिंह के सदृश, संसा स्याल भगावे ।।१।।

गुरु का ज्ञान सूर्य की न्याई, अविद्या रैन मिटावे ।।२।।

गुरु का ज्ञान पवन के समसर, बादल भ्रम उड़ावे ।।३।।

कहे टेऊँ गुरु ज्ञान अग्नि सम, विषय विकार जलावे ।।४।।

॥ राग कोह्यारी भजन ॥ ३० ॥ ५१०॥

गुरु बिन मानुष शान्ति न पावत,
दर दर भटका खावे, जन्म गँवावे ॥ टेक॥
जो गुरु से उपदेश न लेवे, अन्त समय पछतावे ॥१॥
निगुरे की गति कबहुं न होवे, मर कर जमपुर जावे ॥२॥
निगुरे का अति नाम बुरा है, भगवत को ना भावे ॥३॥
कहता टेऊँ निगुरा फिर फिर, चौरासी में धावे ॥४॥

॥ राग कोह्यारी भजन ॥ ३१ ॥ ५११॥

पूरब पुण्य से मिलिया मुझको,
सद्गुरु ब्रह्मज्ञानी, आत्म ध्यानी ॥ टेक॥
कृपा सागर आनन्द आगर, पूरण परम विज्ञानी ॥१॥
ब्रह्म नेष्ठी, ब्रह्म श्रोत्री, बोलत अमृत बानी ॥२॥
नित अवतारी जगत उद्धारी, निर्वैरी निर्मानी ॥३॥
कहे टेऊँ गुरु शिव स्वरूपा, अभय दान का दानी ॥४॥

॥ राग कोह्यारी भजन ॥ ३२ ॥ ५१२॥

भव सागर से पार उतारो,
मैं हूं शरन तुम्हारी, गुरु अवतारी ॥ टेक॥
तुम हो पावन पतित उधारन, मैं हूं पापी भारी ॥१॥
तुम हो गोबिन्द सब गुन खानी, मैं अवगुन भण्डारी ॥२॥
तुम हो दाता दीन दयाला, मैं हूं दीन भिखारी ॥३॥
कहे टेऊँ यह विनय सुनीजे, राखो लाज हमारी ॥४॥

।। राग कोह्यारी भजन ।। ३३ ।। ५१३।।

सहसें सांग बनाए साजन,

अपनी मौज मचाए, रास रचाए ।। टेक।।

आप विष्णू शिव ब्रह्मा बनकर, नाना खेल खिलाए ।।१।।

आप बली पुनि बावन होकर, महिमा दान बढ़ाए ।।२।।

आप कृष्ण पुनि सखियां बनकर, मुरली मधुर बजाए ।।३।।

कहे टेऊँ हो आपे हरिजन, निशदिन निज गुन गाए ।।४।।

।। राग कोह्यारी भजन ।। ३४ ।। ५१४।।

सद्‌गुरु से ले योग युक्ति मैं,

सहज समाधि लगाई, सुरति समाई ।। टेक।।

श्वास श्वास से सार शब्द के, सुमरण से लिंव लाई ।।१।।

पीकर प्याला प्रेम अगम का, अनुभव ज्योति जगाई ।।२।।

देश दयाल से आगे चलकर, अमरापुरी बसाई ।।३।।

कहे टेऊँ मैं गुरु कृपा से, जम की चिन्त चुकाई ।।४।।

।। राग कोह्यारी भजन ।। ३५ ।। ५१५।।

अपना आत्म रूप पछानो,

पिण्ड को खोज प्यारा, कर वीचारा ।। टेक।।

ना तुम पांच भूत का पिञ्जर, नाहिं पचीस पसारा ।।१।।

ना तुम इन्द्रिय अन्त:करणा, ना है पांच विकारा ।।२।।

ना तुम जाग्रत स्वप्न सुषोपति, नहिं त्रिगुण विस्तारा ।।३।।

कहे टेऊँ तुम सत्‌चित् आनन्द, नाम रूप ते न्यारा ।।४।।

।। राग कोह्यारी भजन ।। ३६ ।। ५१६।।

भेष धरन से मुक्ति न होवे,
कहते सन्त सुजाना, समझ सियाना ।। टेक।।
जे गति होवे जटा बढ़ावे, बट पावे निर्बाना ।।१।।
जे गति होवे मूण्ड मुण्डाए, भेड़ पाय भगवाना ।।२।।
जे गति होवे जल के नाये, मेंढ़क पावे माना ।।३।।
जे गति होवे राख रमावे, कुंचर पा कल्याना ।।४।।
जे गति होवे पाखण्ड कीने, बक पावे सन्माना ।।५।।
कहे टेऊँ नहिं गति करनी बिन, वेद करत वख्याना ।।६।।

।। राग कोह्यारी भजन ।। ३७ ।। ५१७।।

जन्म जन्म के भाग जगे हैं,
सन्त मिले सुखकारी, जाऊँ बलिहारी ।। टेक।।
परहित कारन धर अवतारा,
सब जीवों का करत सुधारा, आये पर उपकारी ।।१।।
ब्रह्मज्ञान का कर प्रकाशा,
पांच भ्रम का करके नाशा, काटत जम की जारी ।।२।।
दुख भञ्जन सुख देवन हारे,
जन्म जन्म के पाप निवारे, तारत भवजल भारी ।।३।।
कहे टेऊँ अति कृपा धारे,
आज मेरे घर सन्त पधारे, पूरन पुरुष उदारी ।।४।।

।। राग कोह्यारी भजन ।। ३८ ।। ५१८।।

सुनले सत्गुरु अरज हमारा, किस विधि मेरा हो निस्तारा।।टेक।।
श्रद्धा से गुरु मन्त्र सुमरो, भारी भव सागर से उधरो।
गुरु बिन जानो जन्म असारा ।।१।।
सत्गुरु माया चलन न देती, कण्टक डारे हरि मग केती।
किस विधि देखूं हरि दर्बारा ।।२।।
अविचल हरि की भक्ती कीजे, और तरफ ना दृष्टी दीजे।
इस विधि होवे हरि दीदारा ।।३।।
कहे टेऊँ गुरु कहिये युक्ती, कैसे प्राप्त हो हरि भक्ती।
भक्ति मिले सत्संग मँझारा ।।४।।

।। राग कोह्यारी भजन ।। ३९ ।। ५१९।।

अन्तर की जानत भगवाना, बाहर के ना देखत बाना ।।टेक।।
गीध जटायू अरु संपाती, रूप विद्या नहीं पंछी ज़ाती।
दीनी गति तिहँ बाप समाना ।।१।।
भालू बानर रावण भाई, अधम देह नहिं कछु ठकुराई।
तां निज मन्त्री कीन प्रधाना ।।२।।
कोल जाट पुनि भील किराते, कर्म न शुभ को नीच कहाते।
भाई सम तांको सन्माना ।।३।।
कहे टेऊँ हरि मन को देखे, तन के रूप रंग ना पेखे,
निश्चय कर यह जान सुजाना ।।४।।

।। राग कोह्यारी भजन ।। ४० ।। ५२०।।

अपना चाहो जे कल्याना, साहब दर तुम कर शुकराना ।। टेक।।
किस्म किस्म के वस्त्र नवीने, ओढ़न हित हरि तुमको दीने।
नगन फिरे पशु पँछी नाना ।।१।।
रहने कारण हरि ने सुन्दर, दीने तुमको महला मन्दिर।
और जोनि गिर जल थल थाना ।।२।।
षट्रस नाना भान्ति अहारे, दीने तुमको सत्कर्तारे।
और जोनि तृण फल मल खाना ।।३।।
उन्नती करने हित बुद्धि शक्ती, कहे टेऊँ दी हरि तोहि भक्ती।
और जोनि नहिं भक्ती ज्ञाना ।।४।।

।। राग कोह्यारी भजन ।। ४१ ।। ५२१।।

प्रेम प्रभू से करले प्यारे, छोड़ जगत के फुरने सारे ।। टेक।।
प्रेम प्रभू से शबरी कीना, रघुवर तांको दर्शन दीना।
सर्व ऋषिन के छोड़ द्वारे ।।१।।
प्रेम प्रभू से विदुर लगाया, शाक अलूणा तांका खाया।
राजा के तज भोग अपारे ।।२।।
प्रेम प्रभू से पीपे लाया, हरि दर्शन हित आप डुबाया।
द्वारिका देखी जलधि मँझारे ।।३।।
कहे टेऊँ हरि प्रेम सुहावे, प्रेम करे सो हरि को भावे।
वेद ग्रन्थ यों सन्त उच्चारे ।।४।।

।। राग कोह्यारी भजन ।। ४२ ।। ५२२।।

करले हरी का भजन सुजाना,
भजन बिना नहिं हो कल्याना ।। टेक।।
तीन लोक का होके राजा, भावें भोगे राज समाजा।
भजन बिना पाय नर्क निदाना ।।१।।
दीर्घ आयु अरोगी काया, भावें हो मन वांछित माया।
भजन बिना दुख पाय महाना ।।२।।
भावें मन्तर तन्तर साधे, ऋद्धि सिद्धि पावे देव अराधे।
भजन बिना पाय जोनी नाना ।।३।।
कहे टेऊँ मिल सन्तनि संगा, भजन करो तुम होय निसंगा।
जांते पावो पद निर्बाना ।।४।।

।। राग कोह्यारी भजन ।। ४३ ।। ५२३।।

देखा जग में सन्त उदारी, सार ग्राही सत् वीचारी ।। टेक।।
सच ही देवे सच ही लेवे, सच ही देखे सच ही सेवे।
सम दम आदिक षट्गुणधारी ।।१।।
अपने शिर पर दूख सहारहिं, सब जीवों के कष्ट निवारहिं।
स्वार्थ बिन से पर उपकारी ।।२।।
अति कृपालू कृपा करहैं, जन्म मरन दुख को वे हरहैं।
मात पिता ते अति हितकारी ।।३।।
कहे टेऊँ से ब्रह्म ज्ञानी, रहते आत्म अन्तर ध्यानी।
जाऊँ तिन पर मैं बलिहारी ।।४।।

॥ राग कोह्यारी भजन ॥ ४४ ॥ ५२४॥

सुन जिज्ञासू वचन हमारा,
जांको खोजत सो तूं प्यारा ॥ टेक॥
काहे तीर्थ करने जाते, पाप हरन हित गोता खाते।
तूं है तीर्थ रूप अपारा ॥१॥
काहे भेटत और शिवाला, देह तुम्हारी है शिवशाला।
तूं है शंकर देव उदारा ॥२॥
काहे जाकर वृन्दावन में, मनमोहन खोजत मन्दिरन में।
तूं है रास रचावनहारा ॥३॥
कहे टेऊँ चित थिर कर लीजे, तत्क्षण अपना दर्शन कीजे।
छूटे सबहीं भेद विकारा ॥४॥

॥ राग कोह्यारी भजन ॥ ४५ ॥ ५२५॥

हरी का भजन कर भाई, हरि बिन तेरा कौन सहाई ॥ टेक॥
जबहीं जम आ चोट चलावे, मात पिता तब नाहिं छुड़ावे।
काम न आवे लड़का लुगाई ॥१॥
यह दुनिया है खाक की ढेरी, अन्तकाल ना होवे तेरी।
क्यों तुम इससे प्रीत लगाई ॥२॥
मनुष जन्म दुर्लभ जग जानो, चौरासी से ऊँचा मानो।
सुमरो इसमें हरि सुखदाई ॥३॥
कहे टेऊँ तुम समझ प्यारा, भजन बिना नहिं होय उद्धारा।
वेद पुरान यह साख सुनाई ॥४॥

॥ राग कोह्यारी भजन ॥ ४६ ॥ ५२६॥

हे श्रुती तूं, हे वृती तूं, चलिये आदी धाम को ॥टेक॥
सद्गुरु का सत्संग कर, नित्यप्रती तूं, हे वृती तूं ॥१॥
सद्गुरु के स्वरूप में, जोड़ नृती तूं, हे वृती तूं ॥२॥
सुमरन आदी नाम की, कर कृती तूं, हे वृती तूं ॥३॥
कहे टेऊँ निज ज्ञान की, धार धृती तूं, हे वृती तूं ॥४॥

॥ राग कोह्यारी भजन ॥ ४७ ॥ ५२७॥

पूर्व का पुण्य जबहीं फलिया,
सत्गुरु मिला ज्ञानी, अन्तर ध्यानी ॥टेक॥
कृपा सागर दीन दयालू, सर्व गुणों की खानी ॥१॥
पर उपकारी पर दुखहारी, अभय दान के दानी ॥२॥
ब्रह्म नेष्ठी ब्रह्म श्रोत्री, बोलत ब्रह्म की बानी ॥३॥
कहे टेऊँ हैं ब्रह्म स्वरूपा, निष्कामी निर्मानी ॥४॥

॥ राग कोह्यारी भजन ॥ ४८ ॥ ५२८॥

मन ऊपर विश्वास न करना,
दम दम तां पर दृष्टी धरना ॥टेक॥
एक श्वास हो आयू यद्यपी, मन से भयता राखो तद्यपी।
भक्तमाल का प्रसंग पढ़ना ॥१॥
बूढ़ापन हो तन पुनि रोगी, कथा सुनो बन तपसी योगी।
तो भी मन की साख न भरना ॥२॥
अर्ध गगन में ध्यान लगाओ, वेद शास्त्र पुनि पढ़ो पढ़ाओ।
तो भी मन के छल से डरना ॥३॥

मन जीतन की जे तोहि प्यासा, छोड़ जगत की सारी आसा।
कहे टेऊँ गुरु शरणी पड़ना ।।४।।

।। राग कोह्यारी भजन ।। ४९ ।। ५२९।।

दुनिया है यह अजब कहानी, जानत कोई ब्रह्म ज्ञानी ।। टेक।।
ना कछु उपजी ना बिनसेगी, बांझ पुत्र सम कहनी होगी।
वृथा बिलोवे मूर्ख पानी ।।१।।
जा गुज़री सा भई कहानी, हाथ न आवे कछुक निशानी।
कहने मात्र राजा रानी ।।२।।
धात्री ने ज्यों कथा सुनाई, राज पुत्रों की दिल बहलाई।
वसिष्ठ की है एह ज़िबानी ।।३।।
तीन काल में नाश न जांका, कहे टेऊँ कर स्मरण तांका।
कल्पित जग को तजले प्रानी ।।४।।

।। राग कोह्यारी भजन ।। ५० ।। ५३०।।

रे मन मेरे रोष न कीजे, हर्षित होकर उत्तर दीजे ।। टेक।।
को कहे कैसा, को कहे कैसा, शान्ति में रहना पहले जैसा।
घट बढ़ किसको नाहिं कहीजे ।।१।।
गुण अवगुण मय जग यह सारा, शूल सुगन्धि ज्यों फूल मंझारा।
भौंरा बनकर सुगंधि गहीजे ।।२।।
जगत पदार्थ भिन भिन सारे, धरे दुकाने बेचनहारे।
जो मन भावे सोई लीजे ।।३।।
कहे टेऊँ भवसागर माहीं, विष अमृत दुख आनन्द आहीं।
विष को त्यागे अमृत पीजे ।।४।।

।। राग कोह्यारी भजन ।। ५१ ।। ५३१।।

रे मन मेरा छोड़ पसारो, अपने घर को वेग पधारो ।। टेक।।

अपना घर है गोविन्द का घर, अपना दर है दाता का दर।
अपने घर में सुख है सारो ।।१।।

जैसा सुख अपने चौबारे, तैसा सुख ना कहां प्यारे।
थोड़े से ही करले गुज़ारो ।।२।।

अग्नि बढ़े तो धाम जलावे, नीर बढ़े तो गाम डुबावे।
बढ़ना सब विधि दुखनि भण्डारो ।।३।।

छोड़ बखेरा बाहर वाला, अन्तर्मुख सुख पाय विशाला।
कहे टेऊँ यह शिक्षा धारो ।।४।।

।। राग सोरठ भजन ।। १ ।। ५३२।।

मोहि भूल गया संसार, सुन्दर मुरली सुनके ।। टेक।।

चारण चङ्ग बजाया जबहीं, राय दियाच दिया शिर तबहीं।
सुनके सुरन्दे तार, छोड़ा सुख राजन के ।।१।।

तक्षक तज बिल भूल रहा है, जोगी आगे झूल रहा है।
मुरली सुन सुरदार, मन्त्र आज्ञा मनके ।।२।।

मुरली सुनके मोहे हरिजन, सिद्ध साधक पुनि सुर नर मुनिजन।
त्याग दई तन सार, मृग सुन नाद धुनके ।।३।।

मधुर मुरली सुन के भूचर, चर अचर अरु मोहे नभचर।
अमृत रस की धार, धरी मुख मोहन के ।।४।।

शब्द मुरली वेद बखाने, कहे टेऊँ को सन्त पछाने।
पाए गम गुरुद्वार, अगम अनहद झुनके ।।५।।

।। राग सोरठ भजन ।। २ ।। ५३३।।

सफल करले श्वास रे तुम हरी भजन से ।। टेक।।

मोक्ष द्वारे मानुष तन में, ज्ञान करो प्रकाश ।।१।।

अविद्या तम है अति दुखदाई, तांका करले नाश ।।२।।

लेखा यम का तुरत निवारे, पाओ निर्भय वास ।।३।।

कहे टेऊँ जिस कारन आया, कारज कर वह रास ।।४।।

।। राग सोरठ भजन ।। ३ ।। ५३४।।

धरले हरि का ध्यान, रे तुझे शान्ति मिलेगी ।। टेक।।

हृदय में तुम हरी बसाओ, जीभ से कर गुन गान ।।१।।

आंखों से हरि दर्शन करिये, सुनले हरि यश कान ।।२।।

पांवों से चल सत्संग जाओ, हाथों से दे दान ।।३।।

कहे टेऊँ गुरु नाम सुमरले, श्वासों श्वास सुजान ।।४।।

।। राग सोरठ भजन ।। ४ ।। ५३५।।

रे मन अब उठ जाग, रे तुझे हरी मिलेगा ।। टेक।।

मानुष तन में राम नाम जप, खोलो अपना भाग ।।१।।

साध संगति में शान्ती पाए, तृष्णा का कर त्याग ।।२।।

झूठी प्रीती जान जगत की, धारो मन वैराग ।।३।।

कहे टेऊँ उर श्रद्धा धारे, सत्गुरु के पद लाग ।।४।।

।। राग सोरठ भजन ।। ५ ।। ५३६।।

सन्तों का कर संग, रे तुम आनन्द पाओ ।। टेक।।

सन्त चरन रज शिर पर लाके, मेटो मस्तक अंग ।।१।।

तन मन धन से सेवा करके, लाओ आत्म रंग ।।२।।

सन्त वचन को श्रवण करके, भेद भ्रम कर भंग ।।३।।

कहता टेऊँ सन्त कृपा से, नाओ ज्ञान की गंग ।।४।।

।। राग सोरठ भजन ।। ६ ।। ५३७।।

धीरे धीरे पग धार, रे तुम गिर ना जाओ ।। टेक।।

हरि का मार्ग बहुत कठिन है, चलिये आप संभार ।।१।।

इस मार्ग में बहुत विघ्न है, कीर्ति कँचन नारि ।।२।।

इस मग में अभिमानी गिरते, तांते तज अहंकार ।।३।।

कहे टेऊँ चल सोच समझके, हरि के गैल मंझार ।।४।।

।। राग सोरठ भजन ।। ७ ।। ५३८।।

जप साक्षी सत्नाम, रे तेरे काज सरेंगे ।। टेक।।

सत्नाम साक्षी मन्त्र धुर का, करता वासी अमरापुर का।
सुमरो आठों याम ।।१।।

सत्नाम साक्षी भूषण जन का, वशीकरण है मन्त्र मन का।
तांको जप निष्काम ।।२।।

सत्नाम साक्षी साचा संगी, अपने जन को देत न तंगी।
सुमर पाय विश्राम ।।३।।

सत्नाम साक्षी सुमरन करिये, कहे टेऊँ भवसागर तरिये।
पाओ मुक्ती धाम ।।४।।

।। राग सोरठ भजन ।। ८ ।। ५३९।।

गीता का सुन ज्ञान, रे तेरा भ्रम हरेगा ।। टेक।।

सोच जिसीका ना हो करना, सोच उसी में ना तुम पड़ना।
ये पण्डितों का ध्यान ।।१।।

अमर आत्मा तन से न्यारा, कोय न तांको छेदनहारा।
व्यापक व्योम समान ।।२।।

जड़ परिणामी असत् शरीरा, तांका शोक करत नहिं धीरा।
आत्म सत् पहिचान ।।३।।

जो सत् है सो कबहुँ न नासे, जोय असत् सो कबहुँ न भासे।
कहे टेऊँ सत् जान ।।४।।

।। राग सोरठ भजन ।। ९ ।। ५४०।।

गुरूजी मुझे अपने चरन लगाओ ।। टेक।।

अविद्या की तम है उर माहीं, सत् असत् मोहि सूझत नाहीं।
ब्रह्मज्ञान की ज्योति, हृदय माहिं जगाओ ।।१।।

सर्व पदार्थ हैं दुखदाई, तामें सूख न देखा राई।
इन्हों ठगे सब लोग, मुझको नाहिं ठगाओ ।।२।।

बुद्धि वस्त्र है मैला भारी, साबुन नाम लाय सुखकारी।
ऊज्जल करके ताहिं, विरह के रंग रंगाओ ।।३।।

कहे टेऊँ तुम हो दातारा, मैं हूँ मंगता मांगनहारा।
देके निर्भय दान, भ्रम के भूत भगाओ ।।४।।

।। राग सोरठ भजन ।। १० ।। ५४१।।

देवो गुरुदेव मुझे भक्ती का दाना ।। टेक।।

ज्ञान सहित दे पर वैरागा, राम भजन का हो अनुरागा।
हरि मूरत के माहिं, निशदिन रहे ध्याना ।।१।।
लोकों का संजोग न चाहूँ, ब्रह्म लोक के भोग न चाहूँ।
नहिं चाहूँ कछु मान, रहूँ मैं निरअभिमाना ।।२।।
कहे टेऊँ कर पूरण आसा, हरि चरनों में होवे वासा।
सन्तों के संग माहिं, देवो प्रेम प्रधाना ।।३।।

।। राग सोरठ भजन ।। ११ ।। ५४२।।

सत्‌गुरु मुझ पर कृपा धारो,
इस विधि होवे मन हमारो ।। टेक।।
माटी कंचन एक समाना, नारी नर का रहे न भाना।
होय न कब मन माहिं, रंचक मारो थारो ।।१।।
इस्तुति निन्दा सम हो जावे, वैरी मीत नज़र ना आवे।
नीच ऊँच के माहिं, देखूं प्रभू प्यारो ।।२।।
हर्ष शोक पुनि मैं तूं नासे, मान अमान न सुख दुख भासे।
होवे मुख के माहिं, हरदम ओऽम् उच्चारो ।।३।।
कहे टेऊँ कब वे दिन होंगे, सुख से सम की शैया सोंगे।
भासे सब जग मोहि, पूरण ब्रह्म पसारो ।।४।।

।। राग सोरठ भजन ।। १२ ।। ५४३।।

राम नाम को जपले प्रानी, यही जपन की वारी रे।
राम भजन बिन तुम पावेगा, जन्म मरण दुख भारी रे ।। टेक।।
बहुत जन्म से भ्रमत आये, बहुते दूख सहारा रे।
अब शुभ अवसर आय बना है, पाओ मोक्ष द्वारा रे ।।१।।
मानुष देही पुण्य ते पाई, भजन करो मन मेरा रे।
राम भजन बिन इस जग माहीं, संगी नहीं को तेरा रे ।।२।।
पूर्ण हृदय धर विश्वासा, साध सङ्गति में जाओ रे।
सार वचन की शिक्षा सुनकर, अविनाशी पद पाओ रे ।।३।।
कहे टेऊँ सत्गुरु के संग से, खोले दिल का ताला रे।
आंख उलटकर अन्तर देखो, आत्म देव विशाला रे ।।४।।

।। राग सोरठ भजन ।। १३ ।। ५४४।।

मेरे मन प्रभू से कर प्रीत, जगत की झूठी यारी है ।। टेक।।
धन सुत दारा पुनि परिवारा, दूख समय सब करत किनारा।
संगी इक सत्नाम, करे रक्षा तुम्हारी है ।।१।।
बहुत जन्म का बिछुड़ा होया, अजहूं तुम ग़फ्लत में सोया।
जागी मिल जगदीश, मिलन की एह वारी है ।।२।।
निशदिन भोगों से रति लाई, हरि की भक्ती तुम बिसराई।
भक्ती से मन लाय, भक्ति हरि को प्यारी है ।।३।।
कहे टेऊँ तज ग़फ्लत प्यारा, आज काल तुम चलने हारा।
भजन करो भगवान, गजे शिर काल भारी है ।।४।।

।। राग सोरठ भजन ।। १४ ।। ५४५।।

दुनिया के दाम में पड़कर, जन्म व्यर्थ गँवाओ ना।
जगत के ख्याल में फंस कर, समय सुन्दर बिताओ ना ।। टेक।।
अमोलक श्वास की खानी, दई जो ईश ने तुमको।
वृथा बकवाद में पड़के, मुफ्त तांको लुटाओ ना ।।१।।
सुन्दरता और यौवन यह, मिला हरि के भजन कारण।
कुटुम्ब के मोह में पड़कर, उसी को तुम नसाओ ना ।।२।।
मुक्ति का पन्थ है जग में, सचे गुरुदेव की सेवा।
समझ कर तुम करो सेवा, कदम पीछे हटाओ ना ।।३।।
कहे टेऊँ हरी सुमरे, सफल आयू करो अपनी।
विषय भोगों की अग्नी में,हृदय अपना जलाओ ना ।।४।।

।। राग सोरठ भजन ।। १५ ।। ५४६।।

करो तुम साध संगति सद्वार, जिसी से सूख पावोगे।
और ना को यतन जग में, इसी से दुख मिटावोगे ।। टेक।।
गंगा यमुना सभी तीर्थ, बसत है संत संग माहीं।
कटेंगे पाप सब तेरे, जभी इसमें नहावोगे ।।१।।
कहा भगवान सुन नारद, न मैं वैकुण्ठ योगियों में।
जहां मिल भक्तजन गावें, तहां मम दरस पावोगे ।।२।।
सन्त के शरण पड़ने से, कर्म की रेख मिटती है।
बड़ी विपता भी हट जावे, जभी तुम शिर निवावोगे ।।३।।
बिना सत्संग के किसका, कभी ना होय कल्याना।
कहे टेऊँ साध सङ्गति से, सहज पद में समावोगे ।।४।।

।। राग सोरठ भजन ।। १६ ।। ५४७।।

लेवो सत्गुरु से निज ज्ञान, समझ मन साजना रे ।। टेक।।
कर्म उपासन अहनिश करके, मल विक्षेप द्वन्द्व को हरके।
तजो देह अभिमान ।।१।।
अपने उर में झाती पाए, अनुभव की तुम ज्योति जगाए।
आत्म लाल पछान ।।२।।
आत्म सत् जग मिथ्या जानो, जीव ब्रह्म इक रूप पछानो।
हरो भेद अज्ञान ।।३।।
कहता टेऊँ सुनिये प्यारा, हर्ष शोक से होय न्यारा।
पाओ पद निर्बान ।।४।।

।। राग सोरठ भजन ।। १७ ।। ५४८।।

लेवो सत्गुरु की तुम ओट, प्रीतम प्यारियां रे ।। टेक।।
गुरु बिन ज्ञान कभी नहीं होता, गुरु बिन जन्म जन्म नर रोता।
घोर नर्क में जात, जहाँ अन्धारियां रे ।।१।।
गुरु बिन प्रेम नेम नहिं पावे, गुरु बिन योग युक्ति नहिं आवे।
गुरु बिन दुख बहु पात, मूण्ढ गँवारियां रे ।।२।।
गुरु बिन कर्म धर्म नहिं सूझे, गुरु बिन भाव भक्ति नहिं बूझे।
गुरु बिन गम ना पाय, रहत अनारियां रे ।।३।।
गुरु बिन को भव सिन्धु न तरता, कहे टेऊँ नित जमता मरता।
गुरु बिन होय न जीत, बाजी हारियां रे ।।४।।

।। राग सोरठ भजन ।। १८ ।। ५४९।।

जपले हरि का नाम, मनुवा प्रेम लगाके।
पाओ सुख विश्राम, मनुवा प्रेम लगाके ।। टेक।।
हरि सुमरन बिन नहिं निस्तारा, सन्त वेद नित करत पुकारा।
छोड़ो झूठे काम, मनुवा प्रेम लगाके ।।१।।
हरि सुमरन है अति सुखदाई, माया का संग बहु दुखदाई।
लेवो हरि की शाम, मनुवा प्रेम लगाके ।।२।।
जिसने प्रेम प्रभू से लाया, आनन्द में वो सहज समाया।
पाया मुक्ती धाम, मनुवा प्रेम लगाके ।।३।।
कहे टेऊँ धन्य तांका जीवन, जिसने हरि का कीना सुमरन।
तांको कर प्रणाम, मनुवा प्रेम लगाके ।।४।।

।। राग खम्भाट भजन ।। १ ।। ५५०।।

अजब तमाशा लाया, हरि ने अजब तमाशा लाया।
मैं देख देख विस्माया ।। टेक।।
फुरने का यह बना पसारा, ना कछु आया जाया ।।१।।
जो कछु देखत सो कछु नाहीं, स्वपने ज्यों दर्शाया ।।२।।
ज्ञानी ध्यानी खोजत हारे, नेति नेति कह गाया ।।३।।
कहता टेऊँ कहत न आवे, अद्‌भुत खेल खिलाया ।।४।।

।। राग खम्भाट भजन ।। २ ।। ५५१।।

करता कुदरत वाला, मेरा करता कुदरत वाला।
खेलत खेल निराला ।। टेक।।

बेरंग होके रंग रचाया, बिन काया सब कर्म कमाया।
कामिल किया कमाला ।।१।।
अपनी माया आप पसारे, अनहोता बहु ठाठ सँवारे।
रचिया स्वर्ग पताला ।।२।।
सूक्ष्म बीज से वृक्ष उपाए, पात फूल फल ताहिं लगाए।
नाना रंग निकाला ।।३।।
कहे टेऊँ जिहँ गुरू लखावे, कुदरत में सो करता पावे।
जो है सबसे आला ।।४।।

।। राग खम्भाट भजन ।। ३ ।। ५५२।।

प्रबल तेरी माया, प्रभू प्रबल तेरी माया।
मैं देख देख घबराया ।। टेक।।
नारद ऊँचा भक्त ज्ञानी, काम जीत भये अति अभिमानी।
ताहिं कुरूप बनाया ।।१।।
अर्जुन योधा भक्त प्यारा, माया देखन का हठ धारा।
तांको बहुत रुआया ।।२।।
शृंगी ऋषी ने अहँता धारी, माया तिस पर करी सवारी।
पांव से ताहिं दबाया ।।३।।
माया बड़े बड़े गिरि डारे, तांके डर से डरके प्यारे।
मैं तव शरनी आया ।।४।।
कहे टेऊँ यह निश्चय कीना, माया है इक तोहि अधीना।
राख मोहि हरिराया ।।५।।

।। राग खम्भाट भजन ।। ४ ।। ५५३।।

मैंनूं मिलिया गुरु दातार, पाया भक्ती का भण्डार ।। टेक।।
सत्गुरु मिलिया पड़दा खुलिया, दर्शन देखत तन मन फुलिया।
हरदम प्रेम हिंडोले झुलिया, होया अनन्द अपार ।।१।।
पुरकर पीया प्रेम प्याला, खुलिया अनुभव घर का ताला।
आठों पहर भया मतिवाला, भूल गया संसार ।।२।।
अपने अन्तर झाती पाई, मिलिया मन मोहन सुखदाई।
सुरति निरति तां माहिं समाई, मिट गया ममता जार ।।३।।
कहे टेऊँ जिस जोगी ध्यावहिं,तपस्वी तपस्या कठिन कमावहिं।
शेष महेश आदि गुन गावहिं, देखा तिहँ दीदार ।।४।।

।। राग खम्भाट भजन ।। ५ ।। ५५४।।

तुम हो सत्चित् आनन्द सार,
सबके साक्षी सिरजणहार ।। टेक।।
तुझमें कबहूँ हार न जीता, हर्ष शोक नहिं वैरी मीता।
तीन गुणों से आप अतीता, निर्गुण निरआकार ।।१।।
तुझमें मन चित्त ना बुद्धि बानी, विश्व न तेजस प्राज्ञ न प्रानी।
तीन अवस्था की न निशानी, तुम तुर्या आधार ।।२।।
तुझमें ना है त्रिविध तापा, सूख दूख नहिं पुण्य न पापा।
इस्तुति निन्दा नहिं वर शापा, है शुद्ध अगम अपार ।।३।।
तुझमें ना को अंग अकारा, खट उर्मी नहिं पांच विकारा।
कहे टेऊँ तूं सबसे न्यारा, ब्रह्म रूप निर्धार ।।४।।

।। राग खम्भाट भजन ।। ६ ।। ५५५।।

मैंनूं दीना आतम सार, जाऊँ सत्गुरु पै बलिहार ।। टेक।।

सद्गुरु अमृत बून्द पिलाई, जन्म मरन की चिन्त मिटाई।

तन मन की सब सुध बिसराई, बिसर गया व्यवहार ।।१।।

सद्गुरु साचे सैन लखाई, श्वास श्वास में सुन धुनि लाई।

सार शब्द की बीन बजाई, खुल गया दसमा द्वार ।।२।।

सद्गुरु अनुभव ज्योति जगाई, मूरत में सूरत दिखलाई।

भेद भ्रान्ती रही न राई, पाया ब्रह्म विचार ।।३।।

कहे टेऊँ गुरु ज्ञान बताया, हृदय का अज्ञान मिटाया।

पूरन परमानन्द मिलाया, होया मंगलाचार ।।४।।

।। राग खम्भाट भजन ।। ७ ।। ५५६।।

लग गयी इश्क अकुल दी चोट,

मज़हबी आशिक से लड़ँदे ।। टेक।।

इश्क दी उलटी बेरंग बाज़ी, इश्क में घिड़न्दे गोहर गाज़ी।

तोड़ कुफ़र दे कोट, घायल इश्क अन्दर घिड़न्दे ।।१।।

सूली पर मन्सूर चढ़ाया, बुलाशाह नूं कतल कराया।

आशिक से अणमोट, सिर दा सांगा ना करन्दे ।।२।।

भक्त कबीर को बहुत सताया,पाय संगल जल माहिं बहाया।

घाणे माहीं घोट, शाह बिलावल नूं पिड़न्दे ।।३।।

आशिक टेऊँ रहत उजाला, मज़हबी है नित मन का काला।

पकड़ इश्क दी ओट, आशिक चाढ़ी पै चढ़न्दे ।।४।।

।। राग खम्भाट भजन ।। ८ ।। ५५७।।

सद्गुरु सुन्दर शाम, मेरे सिर हाथ झुलाया ।।टेक।।
सद्गुरु मुझ पर कृपा कीनी, वस्तु अमोलक मुझको दीनी।
सुमर सुमर सो नाम, हृदय में सत् सुख पाया ।।१।।
सद्गुरु शम दम साधन दीना, ब्रह्मज्ञान दे मुक्ता कीना।
पाया पूरण धाम, द्वन्द्व का दूख मिटाया ।।२।।
सद्गुरु दीना प्रेम प्याला, पीवत पीवत भया मतिवाला।
भूल गये सब काम, उर में अति आनन्द छाया ।।३।।
कहे टेऊँ गुरु पर बलिहारी, तन मन धन भेटा दे सारी।
ताहिं करूं प्रणाम, जिसने हरि दरस कराया ।।४।।

।। राग खम्भाट भजन ।। ९ ।। ५५८।।

बुरे हैं कर्म जे जग में, तिनों से मन लगाओ ना।
यही उपदेश सन्तों का, कभी मन से भुलाओ ना ।। टेक।।
जूआ से नल युधिष्ठिर ने, कठिन दुख को सहा बन में।
बुरा फल जूप खेलन का, उसी में दिल फसाओ ना ।।१।।
मछी और मांस का खाना, निषिद्ध है वेद पुराणों में।
जिह्वा के स्वाद कारण तुम, गला किसका कटाओ ना ।।२।।
सुरा के पान से सारा, भया कुल नाश यादव का।
करे मदपान तुम कबहूँ, धर्म अपना गँवाओ ना ।।३।।
कहे टेऊँ कुशल चाहो, तजो पर नारि की प्रीती।
समझ दुख बहुत चोरी में, वस्तु किसकी चुराओ ना ।।४।।

।। राग खम्भाट भजन ।। १० ।। ५५९।।

अभी तुम चेतले प्राणी, उत्तम यह देह पाई है।
कर्म ना नेक को कीना, उम्र वृथा गँवाई है ।। टेक।।
विषय रस भोग में पड़ कर, हर्ष पुनि शोक क्यों करता।
तजो रस भोग की प्रीती, इसी में तव भलाई है ।।१।।
जगत के जाल में फस कर, भया मस्तान तूं निशदिन।
करो अब संग सन्तों का, सदा जो तव सहाई है ।।२।।
समझ कर देखले मन में, नहीं को अन्त है साथी।
कुटुम्ब को छोड़ भज हरि जो, करत रक्षा सदाई है ।।३।।
कहे टेऊँ हृदे धारो, वचन गुरु सन्त वेदों का।
धरो तुम ध्यान इक हरि का, सृष्टि जिसने उपाई है।।४।।

।। राग खम्भाट भजन ।। ११ ।। ५६०।।

हरी की गति हरी जाने, पता नहिं काल क्या होगा ।। टेक।।
कभी जिस बात का दिल में, ज़रा भी ख़्याल नहीं हूआ।
अभी वह देखता प्रत्यक्ष, पता नहिं काल क्या होगा ।।१।।
उद्यम आराम के खातिर, करत बहु लोग दुनिया में।
अचानक तिहं पड़े सङ्कट, पता नहिं काल क्या होगा ।।२।।
नृप दशरथ करी त्यारी, तिलक कल राम को दूंगा।
गया रघुनाथ बन माहीं, पता नहिं काल क्या होगा ।।३।।
कहे टेऊँ सर्व व्यापक, हरी त्रिकाल का ज्ञाता।
मनुष को सूझ नहिं पड़ती, पता नहिं काल क्या होगा ।।४।।

।। राग खम्भाट भजन ।। १२ ।। ५६१।।

मुझे है प्यास इक तेरी, और कछु ना सुहाता है ।।टेक।।
बदन तो है इधर मेरा, मगर मन पास है तेरे।
दर्द में नैन रो रोके, रक्त जल को बहाता है ।।१।।
अग्नि तेरे विरह की जब, जलाती है जिगर मेरा।
निकल तब नीर नैनों का, उसी को जा बुझाता है ।।२।।
जिसी क्षण याद आते हो, उसी क्षण सूझ ना रहती।
तजे मन ख्याल दुनिया का, हरी तुझ में समाता है ।।३।।
कहे टेऊँ सुनो स्वामी, करूं पीउ पीउ पपीहे ज्यों।
तुम्हारे दरस हित मनुवा, चकोरे ज्यों चिल्लाता है ।।४।।

।। राग खम्भाट भजन ।। १३ ।। ५६२।।

मिले जो भाग से कुछ भी, शुक्र उस पर मनुष करले ।। टेक।।
मिले जो ताज शाही का, जगत में नर कभी तुमको।
पड़े मँगना कभी भावें, शुक्र उस पर मनुष करले ।।१।।
मिले जो सेज फूलों की, तुझे आराम के खातिर।
धरनि पर हो शयन भावें, शुक्र उस पर मनुष करले ।।२।।
मिले जो खान पहने को, मधुर भोजन सुन्दर वस्त्र।
रहो भूखा नगन भावें, शुक्र उस पर मनुष करले ।।३।।
कहे टेऊँ सुनो प्यारे, खुशी ग़म ना कभी करना।
मिले सुख वा तुम्हें दुख को, शुक्र उस पर मनुष करले ।।४।।

।। राग खम्भाट भजन ।। १४ ।। ५६३।।

मस्त खुद मस्ती में मैं हूँ, जले जे जगत जलने दे ।। टेक।।
गुरू से ज्ञान आतम का, भली प्रकार है पाया।
समझ संसार की सारी, टले जे ताहिं टलने दे ।।१।।
अभी चित्त शांत से निशदिन, ब्रह्म आनन्द भोगत हूं।
विषय रस भोग सुख अगि में, बले जे ताहिं बलने दे ।।२।।
ब्रह्म स्वरूप नित मैं हूं, अभी निश्चय पछाना है।
जिसम का जो सम्बन्ध झूठा, गले जे ताहिं गलने दे ।।३।।
कहे टेऊँ कहत हूं मैं, अभी अद्वैत की गाथा।
भ्रम अरु द्वैत की चर्चा, दले जे ताहिं दलने दे ।।४।।

।। राग खम्भाट भजन ।। १५ ।। ५६४।।

हरी का भजन नहिं कीना, अवर कीना तो क्या कीना ।। टेक।।
धर्म यज्ञ दान उपकारा, कर्म शुभ तोहि करना था।
उसी में नाहिं चित्त दीना, अवर दीना तो क्या कीना ।।१।।
सदा सत्संग में चलकर, हरी का नाम लेना था।
प्रभू का नाम नहिं लीना, अवर लीना तो क्या कीना ।।२।।
गुरू की शरण में जाकर, निजातम रूप लखना था।
उसे तुमने नहीं चीना, अवर चीना तो क्या कीना ।।३।।
कहे टेऊँ बन्धन तोड़े, मुक्त हो जग विचरना था।
मुक्त हो बन्ध नहिं छीना, अवर छीना तो क्या कीना ।।४।।

॥ राग खम्भाट भजन ॥ १६ ॥ ५६५॥

अगर ना राम को पाया, और पाया तो क्या फायदा।
ज़रा ना प्रेम रस पीया, और पीया तो क्या फायदा ॥ टेक॥
ब्रह्म से जिहं अलग करके, फसाया जीव कोटी में।
अगर ना नफ्स वो मारा, और मारा तो क्या फायदा ॥१॥
बदन के मैल को तुमने, सफा धोया बहुत बारी।
मगर दिल को नहीं धोया, और धोया तो क्या फायदा ॥२॥
नदी तालाब सर सागर, तरे तुमने बहुत बारी।
मगर भव सिन्धु ना तरिया, और तरिया तो क्या फायदा ॥३॥
देव मन्त्र पितृ मन्त्र, प्रेत मन्त्र बहुत जपिया।
मगर गुरु मन्त्र ना जपिया, और जपिया तो क्या फायदा ॥४॥
कहे टेऊँ यतन करके, सदा तुम और को खोजा।
अगर आतम नहीं खोजा, और खोजा तो क्या फायदा ॥५॥

॥ राग खम्भाट भजन ॥ १७ ॥ ५६६॥

मिलत है कर्म से सुख दुख, किसी को दोष ना दीजे ॥ टेक॥
जगत में और ना कोई, सज्जन दुश्मन तुम्हारा है।
कर्म ही है सज्जन दुश्मन, किसी को दोष ना दीजे ॥१॥
किया जो कर्म तुम जग में, हरी साक्षी उसी का है।
कर्म का फल वही देता, किसी को दोष ना दीजे ॥२॥
करत है मनुष जो चोरी, तिसे सरकार दण्ड देवे।
करे सन्मान साधू का, किसी को दोष ना दीजे ॥३॥
कहे टेऊँ मित्र मेरे, करो निश्चय यही मन में।
भला हो वा बुरा तुम हो, किसी को दोष ना दीजे ॥४॥

।। राग खम्भाट भजन ।। १८ ।। ५६७।।

ब्रह्म स्वरूप को जानो, अवर जानो न जानो रे ।। टेक।।
ब्रह्म अरु जीव के अन्तर, धरा जो भेद माया ने।
तिसे गुरु ज्ञान से हानो, अवर हानो न हानो रे ।।१।।
असत् सत् यह जगत सारा, बनाया है विधाता ने।
करे वीचार तिहँ छानो, अवर छानो न छानो रे ।।२।।
बैठ योगी समाधी में, ब्रह्म का दरस करते हैं।
करे वह दरस भय भानो, अवर भानो न भानो रे ।।३।।
कहे टेऊँ सुनो प्यारे, मनौती जीव की छोड़ो।
ब्रह्म का भाव मन आनो, अवर आनो न आनो रे ।।४।।

।। राग खम्भाट भजन ।। १९ ।। ५६८।।

चौरासी का चक्कर फिरके, अमोलक जन्म पाया है ।। टेक।।
किये शुभ कर्म पूरब में, मिली तिस कर मनुष देही।
कमाया काल का खाते, अभी नहिं कछु कमाया है ।।१।।
मिला तो द्वार मुक्ती का, बन्धाया आप अपना तुम।
पले पाया न कछु फायदा, उलट नर तन गँवाया है ।।२।।
कुटुम्ब के मोह में फस कर, करे बहु पाप पालत हो।
जिसी ने ये जन्म दीना, उसी को क्यों भुलाया है ।।३।।
कहे टेऊँ समय सारा, बिताया भोग विषयों में।
बिगाड़ा काज सब अपना, शर्म ना तोहि आया है ।।४।।

॥ राग खम्भाट भजन ॥ २० ॥ ५६९॥

पती से प्रेम का नाता, निभाना नारि को चहिये।
गुनी जन ग्रन्थ सब गाते, निभाना नारि को चहिये ॥ टेक॥
गयी सीता गहन बन में, धरे ज्यों भेष मुनिया का।
तजे त्यों भोग दुनिया का, निभाना नारि को चहिये ॥१॥
पती ब्रह्मा पती विष्णू, पती है रूप शंकर का।
समझ तिहँ रूप ईश्वर का, निभाना नारि को चहिये ॥२॥
पती पिंगला अन्धा भावें, विकारी मूक हो रोगी।
समझ तो भी परम योगी, निभाना नारि को चहिये ॥३॥
कहे टेऊँ कपट त्यागे, पतीव्रत धर्म में रहकर।
सर्व दुख द्वन्द्व को सहकर, निभाना नारि को चहिये ॥४॥

॥ राग खम्भाट भजन ॥ २१ ॥ ५७०॥

ब्रह्म के ज्ञान का डंका, सदा मारो सदा मारो ॥ टेक॥
ब्रह्म अरु जीव इक रूपा, यही निश्चय धरो मन में।
भ्रान्ती भेद की शंका, सदा टारो सदा टारो ॥१॥
लखो निज राम आत्म को, ज्ञान हनुमान को लेके।
तुरत अज्ञान की लंका, सदा जारो सदा जारो ॥२॥
विवेक वैराग के बल से, दशानन मन को जीते।
भ्रम का कोट जो बंका, सदा डारो सदा डारो ॥३॥
कहे टेऊँ जगत जीवा, ब्रह्म इक रूप हैं तीनों।
यही उर माहिं इक अंका, सदा धारो सदा धारो ॥४॥

॥ राग खम्भाट भजन ॥ २२ ॥ ५७१॥

दुनिया के तरफ ना देखो, रहो तुम मौज मस्ती में ॥ टेक॥
चन्दन कोई मिट्टी लावे, निन्दे कोई को यश गावे।
कर्म अपने सो फल पावे, रहो तुम मौज मस्ती में ॥१॥
करे को अगर सन्माना, करे को तोहि अपमाना।
सर्व को जान भगवाना, रहो तुम मौज मस्ती में ॥२॥
दुखी कोई सुखी होवे, हसे कोई बहुत रोवे।
करे को पाप धन खोवे, रहो तुम मौज मस्ती में ॥३॥
कहे टेऊँ बन्धन तोड़े, प्रीति जगदीश से जोड़े।
जगत से तुरत मन मोड़े, रहो तुम मौज मस्ती में ॥४॥

॥ राग मारू भजन ॥ १ ॥ ५७२॥

खाक अन्दर घर तेरा, तूं सुमर नाम सवेरा ॥ टेक॥
मात पिता सुत खाक पछानो, खाक रूप सब धन्धा जानो।
खाक कुटुम्ब कुल डेरा ॥१॥
काया माया गृही भोगी, पण्डित जोशी झंगम योगी।
खाक में पावन फेरा ॥२॥
खाक मौलवी हाफ़िज हाजी, खाक पीर पैग़म्बर काजी।
खाक सर्व को घेरा ॥३॥
खाक देवता दानव सारे, राजा प्रजा खाक प्यारे।
खाक है तेरा मेरा ॥४॥
कहे टेऊँ सब खाक पसारा, खाक माहिं गुरु करत उज्यारा।
नासे भ्रम अन्धेरा ॥५॥

॥ राग मारू भजन ॥ २ ॥ ५७३॥

बन्दे भजन बन्द क्यों करिये ॥ टेक॥

बन्द किया हरणाकश राजा राम प्रह्लाद सुमरिये।
लाज प्रह्लाद की नरसिंह राखी हरणाकशिपु बिदरिये ॥१॥
वैर राम से राखा रावण गर्व कुटुम्ब पर धरिये।
तिस रावण घर दीप न बाती कूकां कर कर मरिये ॥२॥
हरि से बेमुख कौरव कंसा पापों में जे पड़िये।
पल में नष्ट होय गये सारे करिये का फल भरिये ॥३॥
आदि अन्त सत्नाम संगी है तांते ताहिं उच्चरिये।
कहे टेऊँ चढ़ नाम की नौका भवसागर से तरिये ॥४॥

॥ राग मारू भजन ॥ ३ ॥ ५७४॥

मत कर तूं अहंकार, रे मन मत कर तूं अहंकार ॥ टेक॥

दो दिन के तुम जीवन कारण, कितना किया पसार ॥१॥
काल महा बलवान रिपू है, सबका करत संहार ॥२॥
मात पिता सुत दारा चलसी, चलसी सब परिवार ॥३॥
अजा चलसी प्रजा चलसी, चलसी सब संसार ॥४॥
कहे टेऊँ इक अचल आतमा, तांसे करले प्यार ॥५॥

॥ राग मारू भजन ॥ ४ ॥ ५७५॥

दो दिन का महिमान, तुम हो दो दिन का महिमान ॥ टेक॥
थोड़े जीवन कारण क्यों कर, जोड़त बहु सामान ॥१॥
अन्त काल कुछ साथ न चलसी, काहे करत गुमान ॥२॥
कूड़ कपट कर क्यों जोड़त हो, माया को नादान ॥३॥

वृथा आयू क्यों खोवत हो, बिना भजन भगवान ।।४।।
कहे टेऊँ तज मोह ममत को, धरले हरि का ध्यान ।।५।।

।। राग मारू भजन ।। ५ ।। ५७६।।

जगत मुसाफिरखाना, रे मन किसका यह न ठिकाना ।। टेक।।
धर्मशाला में लोग हज़ारे, आकर रहते दिन दो चारे।
सब आखिर करत पयाना ।।१।।
सांझ समय जिमि पंछी सारे, बैठ बिरछ पर रैन गुज़ारे।
उड़ जाते होय विहाना ।।२।।
जैसे देख लगा आखाड़ा, लोक जुड़े पल माहिं अपारा।
जब टूटे होय रवाना ।।३।।
कहे टेऊँ तुम जल्दी जागो, अबहीं हरि सुमरण में लागो।
इस जग का मोह मिटाना ।।४।।

।। राग मारू भजन ।। ६ ।। ५७७।।

दूर तुम्हारा देस, अब तो करो तयारी ।। टेक।।
दिना भया अब खुला दुकाना, शुभ कर्मों का वणिज विहाना,
त्यागे लोभ लिबेस ।।१।।
जाग मुसाफिर बहु तुम सोये, तीन अवस्था व्यर्थ खोये,
श्वेत भये हैं केस ।।२।।
जब से जग में जन्म ले आया, तब से तुमने बहु दुख पाया,
मेटो ताप क्लेश ।।३।।
कहे टेऊँ सत्गुरु प्रसादी, पाओ आतम भवन अनादी,
जामें दुख नहिं लेश ।।४।।

।। राग मारू भजन ।। ७ ।। ५७८।।

अमरापुर निज धाम, अब तो चालो हंसा ।। टेक।।

अमरापुर को नाहिं भुलाओ, वहां जाय के आनन्द पाओ।
छोड़ कल्पना काम ।।१।।

अमरापुर में राग न रोषा, पाप ताप पुनि नाहिं क्लेशा।
तामें कर विश्राम ।।२।।

सैर करन आये सैलानी, दो दिन है तेरी ज़िंदगानी।
यहाँ न तेरा ठाम ।।३।।

अमरापुर है घर अविनासी, कहे टेऊँ काटे यम फासी।
स्मरे सद्गुरु नाम ।।४।।

।। राग सारंग भजन ।। १ ।। ५७९।।

पीवु पीवु करत पपीहे जैसे, सानूं दरद बरस के आया रे।। टेक।।

पीवु पीवु कर जीव गया मेरा, अन्तर बाहर आगम तेरा।
नैनों नीर बहाया रे ।।१।।

बरसो बादल छाया करके, कृपा दृष्टी अपनी धरके।
ताप हरो हरिराया रे ।।२।।

जहं बरसो तहं हरिया मन्दिर, सत्ता तुम्हारी सबके अन्दर।
तुम हीं हुकम चलाया रे ।।३।।

कहे टेऊँ यह उर में आसा, दर्शन देखन की बहु प्यासा।
दे दर्शन कर दाया रे ।।४।।

।। राग सारंग भजन ।। २ ।। ५८०।।

आज मेरे घर भलि तुम आये, देख देख रङ्ग रतियां रे ।। टेक।।
दर्शन तेरे दिल को मोहिया, मेरे मन में आनन्द होया।
भूल गई सब मतियां रे ।।१।।
मोहनी मूरत जुग जुग जीवो, इक पल मुझ से दूर न थीवो।
प्राणों के हो पतियां रे ।।२।।
छोड़ न जाओ मारत वेरी, कौन रखे पति तुझ बिन मेरी।
तुम हो मेरी गतियां रे ।।३।।
कहे टेऊँ कर जोड़ अर्दासा, हरदम करले हम घर वासा।
तेरा गुन गावतियां रे ।।४।।

।। राग सारंग भजन ।। ३ ।। ५८१।।

जप राम नाम मन जागी, जागे सो बड़भागी ।। टेक।।
जागे मीना चाहत जल को, जागे सीप चहत बादल को।
नाद कुरंग सुन रागी ।।१।।
जागे पंछी अनल अकासे, जागे चकोर चन्द्र प्रकाशे।
चकवी पति हित लागी ।।२।।
जागे सोनारो सोना निरखे, जागे सराफ हीरा परखे।
पांव पछाने पागी ।।३।।
कहे टेऊँ त्यों जागहिं हरिजन, हरि हित जागहिं सुरनर मुनिजन।
जागहिं नित वैरागी ।।४।।

।। राग सारंग भजन ।। ४ ।। ५८२।।

सद्गुरु दीन दयाल, दरस मोहि दीना ।। टेक।।

मेरे सिर पर हाथ धरे गुरु, कीना नाथ निहाल ।।१।।

बिछुड़ा हंस मिलाया हरि से, बनकर आप दलाल ।।२।।

मोह ममत के बन्धन तोड़े, दीया मोक्ष विशाल ।।३।।

कहे टेऊँ गुरु कृपा करके, काटा जम का जाल ।।४।।

।। राग सारंग भजन ।। ५ ।। ५८३।।

सचा संगी है राम, समझ मन मेरा ।। टेक।।

मात संगी ना तात संगी ना, बहिन संगी ना भ्रात संगी ना।
संगी ना सुत वाम ।।१।।

धरनि संगी ना धाम संगी ना, देह संगी ना दाम संगी ना।
संगी ना को गाम ।।२।।

संगी जगत के हैं सब काचे, सन्त राम हैं संगी साचे।
देते मुक्ती धाम ।।३।।

कहे टेऊँ तज झूठे संगी, ममता इनकी दे बहु तंगी।
सुमर साक्षी सत्नाम ।।४।।

।। राग सारंग भजन ।। ६ ।। ५८४।।

मेट सके ना कोय, कर्म की रेखा ।। टेक।।

कर्म अधीन रहे जग सारा, कर्म बन्ध से ना को न्यारा।
हस भोगे को रोय ।।१।।

ज्ञानी ध्यानी पण्डित धीरा, कर्मों की सब भोगत पीरा।
देव सके ना खोय ।।२।।
तन अभिमानी जग में जेते, कर्मों का फल भोगत तेते।
मल मल अखियाँ धोय ।।३।।
सन्त गुरू हरि की कृपा ते, कर्म भोग कछु कछु हट जाते।
गिरि से राई होय ।।४।।
कहे टेऊँ जिस ब्रह्मज्ञाना, कर्म भोग तिस होय न भाना।
तन के मानत सोय ।।५।।

।। राग सारंग भजन ।। ७ ।। ५८५।।

धन धन सत्गुरु देव, अलख की मूरत ।। टेक।।
पार ब्रह्म गुरु मूरत धारे, जग तारन हित धरनि पधारे।
पर उपकारी एव ।।१।।
अपने घर का मग बतलावे, शब्द सहारे सुरति चढ़ावे।
गुप्त लखावे भेव ।।२।।
सार शब्द से सुरति मिलाके, नैन नगर से ताहिं उठाके।
देवे निज पद सेव ।।३।।
कहे टेऊँ वहं वासी हंसा, अमृत भोजी काल ध्वंसा।
तांकी ऊप अखेव ।।४।।

।। राग सारंग भजन ।। ८ ।। ५८६।।

रिम झिम कर हरबार, बादल बरसे ।। टेक।।

बादल बन कर बरसण आया, आज सखी मम भवन सुहाया।
बिजली कर चिमकार ।।१।।
चौदिश होई अति हरियाली, अवनि भयी अद्‌भुत उजियाली।
चिमन खिड़ी गुलिज़ार ।।२।।
बुलबुल पपिहा नाचत मोरा, कोयल मैना गूंजत भौंरा।
मधुर करे झनकार ।।३।।
सरवर नदियां नाला भरिया, कहे टेऊँ सब कारज सरिया।
होई जय जयकार ।।४।।

।। राग सारंग भजन ।। ९ ।। ५८७।।

सुन्दर सावन मास, सफल कर सारा ।। टेक।।

मानुष तन यह सावन आया, पुण्य प्रतापे तूने पाया।
व्यर्थ खोय न तास ।।१।।
दया धर्म का जल बरसाये, ब्रह्मज्ञान की गर्जन लाये।
देवो छाया वास ।।२।।
प्रेम भक्ति के जल को अंचे, बुद्धि भूमी में तांको संचे।
हरा करे गुण घास ।।३।।
सावन को जिस सफला कीया, कहे टेऊँ तिस पाया पीया।
मेटे जम का त्रास ।।४।।

।। राग सारंग भजन ।। १० ।। ५८८।।

जीव भाव डार डार, ब्रह्म भाव धार धार,
भ्रम को भुलाना ।। टेक।।

परम पवीत्र निर्मल चेतन आत्म रूप न्यारा,
पुरुष निरञ्जन सर्व व्यापी साक्षी रूप तुम्हारा।
पांचों नहिं कोष कोष, राग नहीं रोष रोष,
अहंब्रह्म गाना ।।१।।

माया से मिल ईश्वर भासे अविद्या से मिल जीवा,
दोनों की जब मिटे उपाधी जीव रहे ना शीवा।
चेतन इक सार सार, सो तूं निर्धार धार,
भेद को मिटाना ।।२।।

शेर बहादुर होके प्यारा मन में क्यों तुम डरता,
भेद भ्रम में भूल अयाने अजा संग क्यों मरता।
शर्म नहीं तोहि तोहि, बैठा निज खोहि खोहि,
होइके अजाना ।।३।।

कहे टेऊँ जिमि कंचन भूषण सूत बसन इक होई,
लहर सिन्धु ज्यों जीव ब्रह्म में जानो भेद न कोई।
दूर करो खेद खेद, पावो निज भेद भेद,
गुरु से ले ज्ञाना ।।४।।

।। राग सारंग भजन ।। ११ ।। ५८९।।

मुसाफिर जाग जाग, हरी मग लाग लाग,
समर को संभार ले ।।टेक।।

पांव पसारे निन्द्रा माहीं सारी रैन गुज़ारी।
दिन होने पर भी तुम मूर्ख आंखें नाहिं उघारी।
आंखें अब खोल खोल, राम नाम बोल बोल,
वतन ना विसार ले ।।१।।

मंज़िल दूर मुसाफिर तेरी आलस को तज दीजे।
और बखेड़े सर्व त्यागे अपना मार्ग लीजे।
अपने कह जोय जोय, तेरे नहिं सोय सोय,
मन में विचार ले ।।२।।

केते आते चल चल जाते किसका यह न ठिकाना।
पाव पलक का आप मुसाफिर तुझको भी है जाना।
ममता को मार मार, तृष्णा को टार टार,
काल को चितार ले ।।३।।

कहता टेऊँ बैठ रहो ना आगे कदम बढ़ाओ।
परम धाम के पाने कारण साचा समर उठाओ।
देवी गुन धार धार, करे नेक कार कार,
काज को संवार ले ।।४।।

।। राग सारंग भजन ।। १२ ।। ५९०।।

कीजे सन्तनि संग, समझ मन मेरा ।। टेक।।

पीवो पुर कर प्रेम प्याला, आठों याम रहो मतिवाला।
निर्भय होय निसंग ।।१।।

सत् असत् का कर वीचारा, स्वप्ने सम जानो जग सारा।
सत् है ब्रह्म असंग ।।२।।

सत्गुरु का सत् शब्द उच्चारे, कहे टेऊँ सब भ्रम निवारे।
मेटो अविद्या अंग ।।३।।

।। राग सारंग भजन ।। १३ ।। ५९१।।

नारायण का नाम, स्मर मन प्यारे ।। टेक।।

अजामेल नारायण स्मरे, यम दूतनि के भय से उबरे।
पाया वैकुण्ठ धाम ।।१।।

नारद ने नारायण गाया, पूर्ण निर्भय पद को पाया।
हरे कल्पना काम ।।२।।

ध्रुव भक्त नारायण गाये, प्रकट तांका दर्शन पाये।
पाया निश्चल ठाम ।।३।।

कहे टेऊँ नारायण रटले, जग के सारे बन्धन कटले।
पाओ नित विश्राम ।।४।।

।। राग पूरब भजन ।। १ ।। ५९२।।

पूरब देश का मैं हूं वासी, पूरब में मेरा स्थान ।। टेक।।
पूरब देश सम देश न दूजा, पूरब है सब ते प्रधान ।।१।।
पूरब देश में भेद न कोई, पूरब का है ऊँचा शान ।।२।।
पूरब देश में तिमिर नहीं है, पूरब में प्रकाशत भान ।।३।।
पूरब देश में नहिं को मरता, पूरब नित अविनाशी जान ।।४।।
पूरब देश में ग़म ना कोई, कहे टेऊँ है मोद महान ।।५।।

।। राग पूरब भजन ।। २ ।। ५९३।।

पूरण सद्‌गुरु मोहि पिलाई, भर कर प्रेम प्याली रे ।। टेक।।
पीवत नाम नशा मोहि चढ़िया, खुल गई दिल की ताली रे ।।१।।
ऊग्या अनुभव भानु अन्दर में, मिट गई अविद्या काली रे ।।२।।
तन मन धन की सुधि सब भूली, देख लाल की लाली रे ।।३।।
कहे टेऊँ गुरु कृपा करके, काटी जम की जाली रे ।।४।।

।। राग पूरब भजन ।। ३ ।। ५९४।।

पूरण सत्‌गुरु की सुन शिक्षा, निश से दिन हो गइया रे ।। टेक।।
बगुला हंसा कौआ कोयल, अग्नि सलिल हो रहिया रे ।।१।।
जीवित मुड़दा मुड़दा जीवित, जड़ चेतन को लहिया रे ।।२।।
मच्छक सुमेर धरनि अकासा, सरवर सागर भइया रे ।।३।।
कहे टेऊँ गुरु वचनों का यश, मुख से जात न कहिया रे ।।४।।

।। राग पूरब भजन ।। ४ ।। ५९५।।

कृपा कर गुरु मोहि सुनाओ, भूमी नभ अभ्यासा जी ।। टेक।।
भूमी का स्थान कहां है, नभ का कहां निवासा जी ।।१।।
भूमी नभ का रूप कौन है, करो सर्व प्रकाशा जी ।।२।।
भूमी नभ अभ्यास करन से, कौन काज हो रासा जी ।।३।।
कहे टेऊँ कैसे उठ भूमी, जाय मिले आकासा जी ।।४।।

।। राग पूरब भजन ।। ५ ।। ५९६।।

सुनिये शिष्य अब ध्यान लगाके, भूमी नभ प्रसंगा रे ।। टेक।।
सुरति धरनि है शब्द अकाशा, यह है ज्ञान उतंगा रे ।।१।।
सुरति शब्द का देश अगम है, जहं न काल का दंगा रे ।।२।।
सुरति शब्द चेतनमय जामें, माया का नहिं संगा रे ।।३।।
सुरति शब्द अभ्यास करन से, जम की छूटत जंगा रे ।।४।।
गुरु कृपा से सुरती जाकर, मिलत शब्द के रंगा रे ।।५।।
कहे टेऊँ शिष्य शंका मेटो, सुनकर यह सत्संगा रे ।।६।।

।। राग पूरब भजन ।। ६ ।। ५९७।।

गुरु की कृपा से जिज्ञासू, सिन्धु सुता पति जोवे है ।। टेक।।
धरनि सुता पति के जपते ही, सूर पूत भय खोवे है ।।१।।
सागर सुत का सुत उर उपजे, अर्जुन सुत तब सोवे है ।।२।।
गिरि कन्या पति के दर्शन से, हरि सुत मृतक होवे है ।।३।।
कहे टेऊँ जो यह पद समझे, सो दुर्मति को धोवे है ।।४।।

।। राग पूरब भजन ।। ७ ।। ५९८।।

प्रेम प्रभू का सद्गुरु के सम, गुहज भेद बतलाता है ।। टेक।।
जिसी बात को वेद न जानत, तिसको प्रेम जनाता है ।।१।।
जिस मग को रवि शशि ना देखत, सो मग प्रेम दिखाता है।।२।।
मन बुद्धि वाणी जहां न पहुंचे, प्रेम तहां पहुंचाता है ।।३।।
कहे टेऊँ यह प्रेम पदार्थ, भाग्यवान को पाता है ।।४।।

।। राग कामोल भजन ।। १ ।। ५९९।।

चालो हंसा मानसरोवर, तांके तट पर रहना रे ।। टेक।।
अपनी चाली नित ही चलिये, बगों संग ना बहना रे ।।१।।
मुख से मीठी बानी बोलो, कटू वचन मत कहना रे ।।२।।
धर्म तुम्हारा मोती खाना, मछली को मत गहना रे ।।३।।
कहता टेऊँ दूध पियो नित, पानी को मत छुहना रे ।।४।।

।। राग कामोल भजन ।। २ ।। ६००।।

साजन मुझको आन मिलावे, है को ऐसा प्यारा रे ।। टेक।।
तन मन धन की भेट धरे मैं, दास बनूं तिस द्वारा रे ।।१।।
विरह अग्नि में तन मन जलता, जैसे जरत अंगारा रे ।।२।।
पल पल में उठ मारग देखूं, बिन देखे न करारा रे ।।३।।
कहे टेऊँ जिस पल पिय देखूं, तिस पल पर बलिहारा रे ।।४।।

।। राग कामोल भजन ।। ३ ।। ६०१।।

सद्‌गुरु मुझ पर कृपा कर के, अपना दास बनाओ जी ।। टेक।।
और किसी की मन नहिं आसा, अपनी सेव लगाओ जी ।।१।।
मोह ममत के बन्धन तोड़े, अपने साथ मिलाओ जी ।।२।।
तुम से मिलना जे नहिं देवहिं, वे सब विघ्न विलाओ जी ।।३।।
कहता टेऊँ अपने संग में, हरि का नाम जपाओ जी ।।४।।

।। राग कामोल भजन ।। ४ ।। ६०२।।

तुम बिन सद्‌गुरु मेरा जग में, और न को रखवारा है ।। टेक।।
तुम ही सद्‌गुरु मात पिता सम, पालन पोषण हारा है ।।१।।
मैं हूं बालक मूंढ अज्ञानी, तेरा मोहि सहारा है ।।२।।
जे जन शरण तुम्हारी आये, तिनको तुमने तारा है ।।३।।
कहे टेऊँ मोहे पार उतारो, भारी भव जल धारा है ।।४।।

।। राग कामोल भजन ।। ५ ।। ६०३।।

मोह नींद में सब जग सोया, जागत ब्रह्म ज्ञानी रे ।। टेक।।
जग स्वप्ने को सत्य समझ कर, सोय रहा अज्ञानी रे ।।१।।
ज्ञानी जग को असत् समझता, दृष्टा आपहिं जानी रे ।।२।।
हानि लाभ और हर्ष शोक कर, रोवत तन अभिमानी रे ।।३।।
कहता टेऊँ द्वन्द्व वाद में, रहते सम विज्ञानी रे ।।४।।

।। राग कामोल भजन ।। ६ ।। ६०४।।

साजन मुझ से आन मिलो अब,दर्शन की मुझ प्यासा है।। टेक।।
दिवस दिवस इक युग सम बीते,पल पल जानूं मासा है।।१।।
तुम बिन सारे जग के नाते, जानत मैं जम फासा है ।।२।।
साजन तुम्हरे दरस बिना यह, दुखिया मेरा स्वासा है ।।३।।
कहे टेऊँ निज दर्शन दीजे, यह मेरी अरदासा है ।।४।।

।। राग कामोल भजन ।। ७ ।। ६०५।।

साजन मुझको छोड़ न जाओ, साथ रहो तुम प्यारा जी।। टेक।।
अवगुन देख न मोहि त्यागो, यह है अरज़ हमारा जी ।।१।।
जैसे चाहो तैसे करहूं, मैं हूं दास तुम्हारा जी ।।२।।
तुम बिन स्वामी रह न सकूं मैं, ज्यों मछली बिन वारा जी।।३।।
कहे टेऊँ इक पल नहिं जीऊँ, तुम हो प्रान आधारा जी ।।४।।

।। राग कामोल भजन ।। ८ ।। ६०६।।

गुरुमुख मनमुख हंस काक के, लक्षण सन्त बताते हैं ।। टेक।।
हंसा मानसरोवर रहता, कौवे पोखर जाते हैं ।।१।।
हंस रैन दिन मोती चुगता, कौवे दुर्गन्ध खाते हैं ।।२।।
हंसा मधुरी बोली बोलत, कौवे कड़वा गाते हैं ।।३।।
हंसा सूधी चाल चलत हैं, कौवे टेढ़े धाते हैं ।।४।।
कहे टेऊँ कौवे दुख देते, हंस सर्व सुख दाते हैं ।।५।।

।। राग कामोल भजन ।। ९ ।। ६०७।।

मनुष काहे को तूं आया रे।
जग में जिसने जन्म दिया है, तिसको नाहिं ध्याया रे ।। टेक।।
मात गर्भ में उलटे थे जब, हरि से बोल बंधाया रे ।।१।।
बाहर निकसे ताहिं बिसारा, मोह लिया तुझ माया रे ।।२।।
पांच तत्त्व की देह देख के, निज स्वरूप भुलाया रे ।।३।।
कहे टेऊँ हरि भजन बिना तूं, यम के हाथ बिकाया रे ।।४।।

।। राग कल्याण भजन ।। १ ।। ६०८।।

चरन पकड़ गुरु का, सुमरण कर मनसा ।। टेक।।
दर्शन गुरु के द्वैत विनाशे, बिनस बिनस संसा ।।१।।
गुरु की वाणी अमृत धारी, धार धार दम सा ।।२।।
गुरु का नाद अनाहत बाजे, बाज बाज बरसा ।।३।।
गुरु का ज्ञान परस घट माहीं, परस परस परसा ।।४।।
कहे टेऊँ सद्गुरु प्रसादे, तत्त्व तत्त्व दरसा ।।५।।

।। राग कल्याण भजन ।। २ ।। ६०९।।

माई मैं सद्गुरु पूरण पाया,
तन मन धन दे भेट गुरू को ले हरि नाम ध्याया ।। टेक।।
दर्शन गुरु का है सुखदाई, देख देख दुख जाया ।।१।।
गुरु को बार बार कर वन्दन, चरण कमल चित्त लाया ।।२।।
गुरु की सेव करे दिन राती, मन के पाप मिटाया ।।३।।
गुरु का शब्द सुमर घट माहीं, धुनि में ध्यान लगाया ।।४।।
कहे टेऊँ गुरु ज्ञान पिराये, सहज स्वरूप समाया ।।५।।

।। राग कल्याण भजन ।। ३ ।। ६१०।।

माई मैंनूं सद्गुरु ज्ञान बताया,
तांके मनन निदिध्यासन माहीं, पुनि पुनि मुझे लगाया ।। टेक।।
मल विक्षेप आवरण का पड़दा, तीनों तुरत मिटाया ।।१।।
अनुभव ज्योति जगाई उर में, आतम लाल लखाया ।।२।।
द्वन्द्व दूख ते किया अतीता, सुख स्वरूप समाया ।।३।।
कहे टेऊँ गुरु तोड़े बन्धन, मोक्ष धाम दरसाया ।।४।।

।। राग कल्याण भजन ।। ४ ।। ६११।।

माई मैंनूं सद्गुरु शब्द सुनाया,
प्राणायाम की युक्ती देके भिन्न भिन्न कर समझाया ।। टेक।।
मूल कमल दृढ आसन करके, नभ से नाम चलाया ।।१।।
हृदय कमल शिव दर्शन पाये, तामें ध्यान लगाया ।।२।।
कण्ठ कमल में कर वीचारा, शारद सीस निवाया ।।३।।
त्रिकुटी घर में करे निवासा, अनुभव दीप जगाया ।।४।।
कहता टेऊँ दसम द्वारे, आत्म दर्शन पाया ।।५।।

।। राग कल्याण भजन ।। ५ ।। ६१२।।

माई मैंनूं सद्गुरु अलख लखाया,
सात दीप नव खण्डों माहीं एक ब्रह्म दरसाया ।। टेक।।
अस्ति भाति प्रिय निज स्वरूपा, नाम रूप में पाया ।।१।।
अमर अनादी अज अबिनासी, जहां धूप नहिं छाया ।।२।।
कहता टेऊँ गुरु प्रसादे, सहजे ताहिं समाया ।।३।।

।। राग कल्याण भजन ।। ६ ।। ६१३।।

प्यारे सद्गुरु के दर जाईये।
सद्गुरु का संग अबहीं करलो यह न समय फिर पाईये।। टेक।।
चार दिनों के पाहुन हो तुम, राम नाम गुन गाईये ।।१।।
यह माया तरुवर की छाया, तां पीछे ना धाईये ।।२।।
खाटन कारण आये जग में, साचा वखर विहाईये ।।३।।
कहे टेऊँ गुरु शब्द विचारे, सुख स्वरूप समाईये ।।४।।

।। राग कल्याण भजन ।। ७ ।। ६१४।।

प्यारे सत्संग में चल आईये।
बैठ सत्संग अमृत पीजे भाव भक्ति गुण गाईये ।। टेक।।
दर्शन पाये प्रसन्न होवो, चोट न यम की खाईये ।।१।।
मान त्यागे सेव कमाओ, मन की मैल मिटाईये ।।२।।
श्रद्धा धारे संत चरण की, धूली मस्तक लाईये ।।३।।
कहे टेऊँ संतों के संग में, परमानन्द पद पाईये ।।४।।

।। राग कल्याण भजन ।। ८ ।। ६१५।।

हरि कृपा से सद्गुरु पाया, जिसने मैंनूं अलख लखाया।। टेक।।
गुरु को भेटा देके तन मन, सर्वस्व अपना करके अर्पन।
हरि का ध्यान लगाया ।।१।।
गुरु को बार बार कर वन्दन, अपना सीस धरे गुरु चरननि।
मन का मान हटाया ।।२।।

गुरु घर की नित करके सेवा, पाया चार पदार्थ मेवा।
आवागमन मिटाया ।।३।।
कहे टेऊँ गुरु सैन लखाई, ब्रह्म ज्ञान की ज्योति जगाई।
पांचों भ्रम नसाया ।। ४।।

।। राग कल्याण भजन ।। ९ ।। ६१६।।

करो आरती सद्गुरु चरना, जिस कृपा ते भव जल तरना ।। टेक।।
सद्गुरु चरने ध्यान लगाये, अहंता ममता रोग मिटाये।
हृदय के दुख हरना ।।१।।
गुरु मन्त्र का कर अभ्यासा, देखो दम में अजब तमासा।
ध्यान उसीका धरना ।।२।।
गगन मण्डल में अनाहत बाजे, तांका सुन्दर सुन आवाजे।
मेटो मन के फुरना ।।३।।
कहे टेऊँ सद्गुरु प्रसादी, लाए सुन में सहज समाधी।
आतम दर्शन करना ।।४।।

।। राग कल्याण भजन ।। १० ।। ६१७।।

साक्षी चेतन स्वयं प्रकाशी, अजर अमर है सो अविनासी।। टेक।।
असंग आत्म एक अभेवा, सब देवन का है सो देवा।
चिद्घन चिद्आकासी ।।१।।
पूरण पुरुष अनादि अरूपा, अस्ति भाति पुनि प्रिय स्वरूपा।
सत् चित् आनन्द रासी ।।२।।

सर्व व्यापक अखण्ड अडोला,अचल अमल है अतुल अतोला।
सूक्ष्म सर्व निवासी ।।३।।
कहे टेऊँ जब गुरु समझाया, ऐसा आत्म तब मैं पाया।
मिट गई जोनि चुरासी ।।४।।

।। राग कल्याण भजन ।। ११ ।। ६१८।।

सद्गुरु काटा बन्धन मेरा, मोहि जगाया सवेरा ।।टेक।।
हर्ष शोक अब द्वेष न जागत, ममता मत्सर मोह न लागत।
मिट गया मेरा तेरा ।।१।।
अनुभव भानु भया प्रकाशा, पाया पूरण पद अविनाशा।
भागा भ्रम अंधेरा ।।२।।
आतम घर मैं प्राप्त कीना, जीव ईश के भेद विहीना।
चूका यम का फेरा ।।३।।
कहता टेऊँ सहज समाया, घट घट में हरि दर्शन पाया।
अमरापुर किया डेरा ।।४।।

।। राग कल्याण भजन ।। १२ ।। ६१९।।

सद्गुरु मेरे घर में आया, खुलिया भाग सवाया ।।टेक।।
कर्म बीज जो पूर्व बोया, सोई फल अब प्रकट होया।
जिसने आन मिलाया ।।१।।
दर्शन से प्रमोद भया है, दूख दर्द सब शोक गया है।
सकल पाप मिट जाया ।।२।।

कोटि यज्ञ का फल है जोई, आज सखी मैं पाया सोई।
आनन्द उर में छाया ।।३।।
कहे टेऊँ सब कारज सरिया, भाव भक्ति से हृदय भरिया।
सद्गुरु पद सिर नाया ।।४।।

।। राग कल्याण भजन ।। १३ ।। ६२०।।

बंदा अपना काज बनाय।
काज बनाने का यह वेला गफ़लत में न गंवाया ।। टेक।।
भागों से यह पाया वेला, फेर मिले यह मुश्किल मेला।
गुरु मिल जीव जगाय ।।१।।
भ्रम अरी ने तोहि भुलाया, जीव बनाकर बहुत रुलाया।
गुरु मिल भ्रम मिटाय ।।२।।
बहु युग होया घर से निकले, अब लौं ना तुम पाया कमले।
गुरु मिल निज घर जाय ।।३।।
काल बली ने तोहि सताया, जन्म जन्म सिर डण्ड लगाया।
गुरु मिल काल नसाय ।।४।।
सद्गुरु बिनु यह काज न सरहीं, कहे टेऊँ बहु यत्न जु करहीं।
गुरु की सेव कमाय ।।५।।

।। राग कल्याण भजन ।। १४ ।। ६२१।।

बंदा माया से मन मोड़।
माया बिजली के सम चंचल, तांका पीछा छोड़ ।। टेक।।

माया डाकिन के सम भाई, तांकी संगति है दुखदाई।
सिर को देवे फोड़।।१।।
माया कांटों की है शैया, तां पर भूल न बैठो भैया।
तन को देवे तोड़ ।।२।।
माया सांपिन समझ सुजाना, तांको भूल न हाथ लगाना।
लेवे श्वास निचोड़ ।।३।।
कहे टेऊँ जो हित को चाहो, माया को गुरु चरण लगाओ।
जीव ब्रह्म से जोड़ ।।४।।

।। राग कल्याण भजन ।। १५ ।। ६२२।।

बन्दा लाज न तुमको आइ।
वृद्ध भये भी नाम न जपते, रुचि रुचि विषय कमाइ ।। टेक।।
टूट गई दांतों की पंक्ती, मंद भई जठराग्नि शक्ती।
तो भी चने चबाइ ।।१।।
सत्तर वर्ष की उम्र तुम्हारी, तो भी विषय वासना धारी।
ले ले कुश्ते खाइ ।।२।।
घर के सारे मित्र प्यारे, गाली दे दे तोहि निकारे।
फिर भी जाते धाइ ।।३।।
भोग भोग के यौवन खोया, अजहूं मन सन्तोष न होया।
दिन दिन दूनी चाइ ।।४।।
कहे टेऊँ तुम अब भी चेतो, भजन करो है अवसर जेतो।
गुरु चरने चित्त लाइ ।।५।।

।। राग कल्याण भजन ।। १६ ।। ६२३।।

बन्दा भूल न पाप कमाइ।

दुख का कारण पाप पछानो, तांसे चित्त ना लाइ ।। टेक।।

पाप कर्म कीकर सम भाई, तांके कांटे बहु दुखदाई।

पाप से प्रीति न पाइ ।।१।।

पाप से मन जिस कीना मैला, तिसका होय न जन्म सुहेला।

मर कर नरके जाइ ।।२।।

पाप भाव नहिं मन में धरना, पापी का सङ्ग भूल न करना।

जीवन सफल बनाइ ।।३।।

कहे टेऊँ जे हित को चाहो, शुभ कर्मों में चीत लगाओ।

साध संगति गुन गाइ ।।४।।

।। राग कल्याण भजन ।। १७ ।। ६२४।।

बन्दा मीठी बाणी बोल।

पहले अपने हृदय तोले, पीछे मुख को खोल ।। टेक।।

मीठी बाणी है सुखकारी, सब जीवों को लागत प्यारी।

सुन सुन जावत घोल ।।१।।

राम रूप हैं सर्व प्राणी, बोल न किससे फीकी बाणी।

फीकी का नहिं मोल ।।२।।

दो दिन है तेरी ज़िन्दगानी, तांते बोलो मीठी बानी।

मीठी है अनमोल ।।३।।

कहे टेऊँ नित मीठी बानी, बोलत सुरनर मुनिजन ज्ञानी।

अपने मन में तोल ।।४।।

।। राग कल्याण भजन ।। १८ ।। ६२५।।

हंसा मानसरोवर जाउ।
साचा मोती हैं बहु तामें, चुन चुन के नित खाउ ।।टेक।।
यह तो सरवर मैला सारा, कीचड़ से बहु भरिया भारा।
तेरा हो न निभाउ ।।१।।
वायस बगुलों की यह टोली, तेरी तांसे बनत न बोली।
भाइयों से गुण गाउ ।।२।।
देखन में ये रंग रंगीले, भीतर में हैं बहुत कटीले।
इन संग दुख न उठाउ ।।३।।
कहे टेऊँ ये संग है झूठा, हंसों का संग अजब अनूठा।
तासों नेह लगाउ ।।४।।

।। राग कल्याण भजन ।। १९ ।। ६२६।।

गुरुमुख गुरु चरने मन लाय।
लेकर गुरु से नाम हरी का, हृदय माहिं ध्याय ।।टेक।।
निष्कामी हो सेव कमाओ, निर्मल अपना चीत बनाओ।
पापनि मैल मिटाय ।।१।।
सफल करो ये मानुष चोला, सुमरे गुरु का शब्द अमोला।
मन को शान्त बनाय ।।२।।
गुरु भक्ती को हृदय धारो, आज्ञा गुरु की कबहुं न टारो।
गुरु के गुण नित गाय ।।३।।
कहे टेऊँ ले गुरु से ज्ञाना, पाओ आतम सूख महाना।
भव सिन्धु से तर जाय ।।४।।

।। राग कल्याण भजन ।। २० ।। ६२७।।

रे मन आतम आनन्द पाय।
उस आनन्द में सुरति समाये, सकले दूख मिटाय ।। टेक।।
आतम आनन्द पावत ज्ञानी, होकर आतम अन्तर ध्यानी।
तूं भी ध्यान लगाय ।।१।।
आतम आनन्द पावत योगी, भोग विषय से होय वियोगी।
तूं भी योग कमाय ।।२।।
कहे टेऊँ गुरु शरनी जाकर, ज्ञान योग की युक्ती पाकर।
तामें चित्त को लाय ।।३।।

।। राग कल्याण भजन ।। २१ ।। ६२८।।

अगर चाहो परम मुक्ती, शरण गुरुदेव की पड़ना।
तजे तुम तीन लाजों को, भजन भगवान का करना ।। टेक।।
निवाये सीस सद्गुरु को, करो कर जोड़ के सेवा।
गुरू से नाम ले सुमरो, तजे मन के सभी फुरना ।।१।।
जगत को झूठ तुम जानो, गुरू का नाम सत् मानो।
बैठ गुरु नाम बोहथ में, तुरत भवसिन्धु से तरना ।।२।।
करो सत्संग सन्तों का, सुनो सद्वाक्य वेदों का।
धरे उर ज्ञान आत्म का, मलिन अहङ्कार को हरना ।।३।।
कहे टेऊँ सज्जन मेरे, रहो तुम राम के रंग में।
जपे नित नाम ईश्वर का, हरो अपना जन्म मरना ।।४।।

।। राग कल्याण भजन ।। २२ ।। ६२९।।

बुरा है ख्याल नर तेरा, और का दोष ना कोई ।।टेक।।
अरी दश सीस रघुवर को, विभीषण ने मित्र माना।
विभीषण राज मरा रावण, राम का दोष ना कोई ।।१।।
कृष्ण को कंस अरि समझा, मित्र समझा उग्रसेन ने।
कंस मूआ भक्त मुक्ता, कृष्ण का दोष ना कोई ।।२।।
रवी को अरि उल्लू जाने, मनुष्य जाने सज्जन तांको।
उल्लू अंध हो मनुष्य रोशन, रवी का दोष ना कोई ।।३।।
कहे टेऊँ सुनो प्यारा, जोई जिस भाव से देखे।
तिसी को फल मिले तैसा, किसी का दोष ना कोई ।।४।।

।। राग कल्याण भजन ।। २३ ।। ६३०।।

सत्‌गुरु कीनी कृपा भारी, तां पर जाऊं मैं बलिहारी ।। टेक।।
सत् शब्द का स्मरण दीना, मेरे मन को निर्मल कीना।
भूल गई जग की सुधि सारी ।।१।।
अनुभव की उर ज्योति जगाई, भया प्रकाश अखण्ड सुखदाई।
भागी अविद्या रैन अन्धारी ।।२।।
प्रेम प्याला सत्‌गुरु दीया, श्रद्धा से वो मैंने पीया।
चढ़ी रैन दिन नाम खुमारी ।।३।।
कहे टेऊँ गुरु तोड़े भ्रान्ती, बन्धन काटे दीनी शान्ती।
निर्भय पद पाया निर्धारी ।।४।।

।। राग कंसो भजन ।। १ ।। ६३१।।

मिली अब संग सन्तों के, वचन सत् का धियाया है।
सचा स्वरूप सद्गुरु का, बदन मेरे समाया है ।।टेक।।
सतोगुण शील सुखदाई, संयम श्रद्धा सुमति पाई।
कहा जो वेद के माहीं, धर्म धीरज मैं पाया है ।।१।।
भया वैराग्य सुखराशी, जगत देखा सर्वनाशी।
कटे जग मोह की पाशी, सफल जीवन बनाया है ।।२।।
अगम निज देश में रहिया, छिप गयी रैन दिन भइया।
अभी डर काल का गइया, नगर निर्भय बसाया है ।।३।।
शिवोऽहं सर्व का स्वामी, कहे टेऊँ सुखनि धामी।
भया स्वरूप आरामी, सर्व दुख द्वन्द्व जाया है ।।४।।

।। राग कंसो भजन ।। २ ।। ६३२।।

किये करतूत पशुओं के, मनुष होया तो क्या होया।
पदार्थ और सब पाये, हरि न पाया तो क्या होया ।।टेक।।
वृक्ष देखन में सुन्दरे, नहीं छाया नहीं गन्धरे।
नहीं फल फूल नहिं पत्रे, वृक्ष होया तो क्या होया ।।१।।
सरोवर जल बिना जैसे, धनी है पुण्य बिना तैसे।
बिना दीपक मन्दिर कैसे, सुन्दर होया तो क्या होया ।।२।।
कुंचर ज्यों नीर में नावे, निकस बाहर मिट्टी पावे।
अन्तर की मैल ना जावे, गंगा नाया तो क्या होया ।।३।।
कहे टेऊँ बहुत पढ़के, दुनिया के लोभ में लटके।
बिना गुरु ज्ञान के भटके, पढ़ा होया तो क्या होया ।।४।।

।। राग कंसो भजन ।। ३ ।। ६३३।।

करो कृपा गुरू मुझ पर, शरण तेरी मैं आया हूं।
सचा तुम हो मित्र सद्गुरु, शरण तेरी मैं आया हूं ।। टेक।।
जगत में को नहीं मेरा, सिर्फ आधार है तेरा।
हरो भव काल का फेरा, शरण तेरी मैं आया हूं ।।१।।
भयानक देख भव भारी, डरत है जान यह सारी।
करो अब वेग रखवारी, शरण तेरी मैं आया हूं ।।२।।
कपट छल पाप बहु कीना, नहीं शुभ कर्म चित्त दीना।
भक्ति गुण ज्ञान से हीना, शरण तेरी मैं आया हूं ।।३।।
कहे टेऊँ दया कीजे, भ्रम की पाश कट लीजे।
अभय का दान मुझ दीजे, शरण तेरी मैं आया हूं ।।४।।

।। राग कंसो भजन ।। ४ ।। ६३४।।

करो सत्संग सन्तों का, यही है सार संसारे ।। टेक।।
बहुत विधि कर्म यज्ञ दाना, व्रत तप नेम जप नाना।
करो प्रयाग इस्नाना, नहीं सत्संग सम सारे ।।१।।
चन्दन शशि शीत जग माहीं, उभय सत्संग सम नाहीं।
सदा सेवो सज्जन ताहीं, सर्व संसा भ्रम टारे ।।२।।
श्रद्धा से देव सब सेवे, जोई फल देव तिहं देवे।
वही सत्संग से लेवे, अटल विश्वास जो धारे ।।३।।
कहे टेऊँ सत्य मानो, यही निश्चय हृदय आनो।
बोहथ जग साधु संग जानो, तुरत भव सिन्धु जो तारे ।।४।।

।। राग कंसो भजन ।। ५ ।। ६३५।।

कहे कोई दीवाना है, कहे कोई सुजाना है।
नहीं है काम लोकों से, मुझे हरि ही ध्याना है ।।टेक।।
सुना उपदेश गुनियां का, वचन सत् वेद मुनियां का।
तजा व्यवहार दुनियां का, अभी हरि गीत गाना है ।।१।।
मुझे पहले न सुधि होई, उम्र रस भोग में खोई।
किया शुभ कर्म ना कोई, अभी करना कल्याना है ।।२।।
जपे सत् नाम सत्गुरु का, धरे पुनि ध्यान इक हरि का।
पता लेके अमर घर का, परम आनन्द पाना है ।।३।।
कहे टेऊँ कटे जाली, चलूंगा हंस की चाली।
खुदी से दिल करे खाली, ब्रह्म से मन मिलाना है ।।४।।

।। राग कंसो भजन ।। ६ ।। ६३६।।

लिखा जो लेख पूरब का, समझ सो अवश्य होता है।
मुफ्त फरियाद तूं करके, वृथा क्यों वक्त खोता है ।।टेक।।
देखो रघुनाथ अवतारी, बली रावण महा भारी।
कर्म रेखा न किस टारी, धर्म का तात रोता है ।।१।।
सुनो शंकर क्या पाया, भिक्षा मंग मंग टुकर खाया।
डेरा श्मशान में लाया, हरी अहि सेज सोता है ।।२।।
कर्म ही जीव को प्रेरे, दसों दिस में सदा फेरे।
सभी सुर नर मुनी टेरे, कर्म का जगत बोता है ।।३।।
कहे टेऊँ समझ धारे, सदा प्रसन्न रहो प्यारे।
कर्म को भोगते सारे, मिले जो बीज बोता है ।।४।।

।। राग कंसो भजन ।। ७ ।। ६३७।।

अगर तुम मोक्ष को चाहो, करो शुभ काम को जल्दी।
तजे सब काम दुनिया के, रटो हरि नाम को जल्दी ।। टेक।।
जगत की छोड़ आशा को, ममत की तोड़ पाशा को।
गही गुण ज्ञान राशा को, पाओ विश्राम को जल्दी ।।१।।
कुटुम्ब का छोड़के नाता, रहो हरि रंग में राता।
गही गुरुदेव से ज्ञाता, पाओ घनश्याम को जल्दी ।।२।।
प्रभू की शरन में जाके, अखण्ड धुनि शब्द की लाके।
हरी के गीत नित गाके, पाओ आराम को जल्दी ।।३।।
कहे टेऊँ सुमर पलपल, हरो कलिकाल की कलकल।
बुझाये जीय की जलजल, पाओ सुखधाम को जल्दी ।।४।।

।। राग कंसो भजन ।। ८ ।। ६३८।।

अगर है आस आनन्द की, जाओ गुरुदेव की शरना।
अभय ज्ञाना ले आत्म का, सर्व भय दूख को हरना ।। टेक।।
तजे तुम लोक की लाजा, करो अपना तुरत काजा।
बजे शिर काल का बाजा, उठो दम देर ना करता ।।१।।
अभी हरि मिलन की वारी, तजे गफ़लत करो तयारी।
जपे गुरु नाम निर्धारी, हरी का ध्यान मन धरना ।।२।।
अटल विश्वास उर धारे, गहो गुरु ज्ञान को प्यारे।
भ्रम संसा सभी टारे, तुरत भवसिन्धु से तरना ।।३।।
मिटाये मोह तन केरा, बसाओ ब्रह्म का डेरा।
कहे टेऊँ कटे फेरा, जगत में मुक्त हो चरना ।।४।।

।। राग कंसो भजन ।। ९ ।। ६३९।।

तूं मेरा रखवारा सत्गुरु, तूं मेरा रखवारा।
तुम हो मात पिता गुरु मेरा, मैं हूं बाल तुम्हारा ।। टेक।।
तुम हो दाता दीन दयालू, मैं हूं मांगनहारा।
नवधा भक्ती ज्ञान ध्यान गुण, देवो भजन भण्डारा ।।१।।
तुम हो पावन पतित उधारन, मैं हूं पापी भारा।
तुम्हरी ओट गही मैं निशदिन, पाप करो परिहारा ।।२।।
तुम हो सुख का सागर स्वामिन्, मैं हूं अति दुखियारा।
कृपा करके विघ्न हरे सब, करिये काज हमारा ।।३।।
भवसागर में डूबत हूं मैं, कोय न तारनहारा।
कहे टेऊँ अब बांह पकड़ गुरु, कीजे भव से पारा ।।४।।

।। राग कंसो भजन ।। १० ।। ६४०।।

काटो कष्ट हमारा प्रभुजी, काटो कष्ट हमारा।
जन मन रञ्जन भव भय भञ्जन, है यह बिरद तुम्हारा।। टेक।।
भक्तों पर जब भीड़ पड़त है, तब धारत अवतारा।
निज भक्तों की रक्षा करते, दुष्टों को संहारा ।।१।।
हिरणकश्यप प्रह्लाद भक्त को, दीना दूख अपारा।
नरसिंह रूप धार तब तुमने, हिरणकश्यप को मारा ।।२।।
द्रोपदा को बीच सभा में, दीना चीर हज़ारा।
कौरव का कुल नास कराया, कंस के प्रान निकारा ।।३।।
कहे टेऊँ मैं और त्यागे, लीना तव आधारा।
कलूकाल के कठिन समय में, मेरा हो रखवारा ।।४।।

।। राग कंसो भजन ।। ११ ।। ६४१।।

काटो जम की फासी सत्गुरु, काटो जम की फासी ।। टेक।।
मेरे उर की अविद्या मेटो, तुम गुरु ज्ञान प्रकाशी।
मेरे मन के पाप हरो सब, तुम गुरु तीर्थ काशी ।।१।।
जिस घर से बिछुड़ा भ्रमत हूं, कर हो तिस घर वासी।
कहे टेऊँ जग बन्धन काटे, मुक्त करो सुखरासी ।।२।।

।। राग कंसो भजन ।। १२ ।। ६४२।।

अजब बनाई माया हरि ने, अजब बनाई माया ।। टेक।।
क्या कहूं कछु कहत न आवे, अद्भुत खेल खिलाया।
चौरासी लख जोनि उपाए, सबके माहिं समाया ।।१।।
निर्गुन से वह सगुन होयके, राम कृष्ण कहलाया।
कहता टेऊँ खोजत केते, पार किसे ना पाया ।।२।।

।। राग कंसो भजन ।। १३ ।। ६४३।।

तुमहो साक्षी चेतन चिद्घन, तेरा जग आभास है ।। टेक।।
जाग्रत स्वपन सुषोपति तुरिया, तामें तव प्रकाश है।
अपने आप में स्थित हो तुम, ज्यों स्थित आकाश है ।।१।।
अन्तर बाहर खेल तुम्हारा, नवखंड माहिं निवास है।
चींटी कुंचर माहिं व्यापक, एक अखंड अविनाश है ।।२।।
सगुन निर्गुन नाम तुम्हारा, करते वेद विलास है।
अपनी मौज बढ़ावन कारन, कीना स्वयं विकास है ।।३।।
आना जाना तुझमें नाहीं, ना तेरा कब नास है।
कहे टेऊँ यह निश्चय करले, तूं स्वामी तूं दास है ।।४।।

।। राग कंसो भजन ।। १४ ।। ६४४।।

सो सुख सद्गुरु कहां बसत जो, लिखिया वेद पुरान में ।। टेक।।
कोई कहत सुख विद्या माहीं, कोई कहत है ध्यान में।
कोई कहत सुख उपशम माहीं, कोई कहत निज ज्ञान में ।।१।।
कोई कहत सुख मौन धरन में, कोई कहत वख्यान में।
कोई कहत सुख सैर करन में, कोई कहत थिरथान में ।।२।।
कोई कहत सुख संपति माहीं, कोई कहत सुख मान में।
कोई कहत सुख माहिं गरीबी, कोई कहत अभिमान में ।।३।।
कोई कहत सुख स्वर्ग लोक में, कोई कहत जहान में।
कहे टेऊँ गुरु खोल सुनाओ, है सुख किस स्थान में ।।४।।

।। राग कंसो भजन ।। १५ ।। ६४५।।

सार वचन शिष्य सुनले मेरा, सो सुख रूप तुम्हारा है ।। टेक।।
सो सुख सागर के सम जानो, पूरण अखण्ड अपारा है।
तिस सुख के लवलेश को पाए, होत सुखी संसारा है ।।१।।
जनक जन्य तामें न उपाधी, पांच विषय आधारा है।
देश काल पुनि वस्तु न छेदे, ऐसा वेद उच्चारा है ।।२।।
पांच तत्त्व से पृथक् सोई, नाम रूप से न्यारा है।
अस्ति भाति पुनि प्रिय स्वरूपा, सर्व व्यापक सारा है ।।३।।
सुरनर मुनिजन यह सुख खोजत, पावत ना को पारा है।
कहे टेऊँ को गुरुमुख पावे, जांके भाग उदारा है ।।४।।

।। राग कंसो भजन ।। १६ ।। ६४६।।

यह संसारा जान असारा, मेरे मन ब्रह्म का ध्यान धरो।। टेक।।
झाग सलिल मारुस्थल पानी, तांसे ना किस प्यास बुझानी।
मेरे मन तांकी आस हरो ।।१।।
मर्कट अग्नी बादल छाया, स्वप्न पदार्थ के सम माया।
मेरे मन तुरत त्याग करो ।।२।।
पांच विषय रस जान विनाशी, तांसे हरदम होय उदासी।
मेरे मन भूल न ताहिं परो ।।३।।
कहे टेऊँ सत् मारग चालो, आदी अपना रूप संभालो।
मेरे मन भव सिन्धु पार तरो ।।४।।

।। राग कंसो भजन ।। १७ ।। ६४७।।

सन्त पधारे धाम हमारे, प्रीतम होया जय जयकार ।। टेक।।
निर्मोही नित परम विरागी, राम भजन में अति अनुरागी।
प्रीतम आये परम उदार ।।१।।
बहुत जन्म के पुण्य विकासा, दर्शन प्रसन्न भया हुलासा।
प्रीतम होया अनन्द अपार ।।२।।
हृदय अन्दर भया प्रकाशा, भ्रम अन्धेरा सर्व विनाशा।
प्रीतम देखा दिव्य दीदार ।।३।।
कहे टेऊँ सुन तिनकी बानी, आतम पद में सुरति समानी।
प्रीतम पाया शान्ति भण्डार ।।४।।

।। राग कंसो भजन ।। १८ ।। ६४८।।

गुरु नाम दिया, सब काज किया,
सुख सुरति लिया, पीय संग रही ।।टेक।।
पाए हृदय अन्दर झाती, देखी अपनी ज़ाति सनाती।
मिट गयी पांचों भेद भ्रान्ती, सब घट देखा राम सही ।।१।।
दसम द्वारे ज्योति प्रकाशी, पाया आत्म तहं अविनाशी।
टूटी कठिन काल की पाशी, भ्रम अन्धेरी दूर गयी ।।२।।
ब्रह्म ज्ञान का डङ्का लागा, पांचों तस्कर भय कर भागा।
चेतन का नित पहरा जागा, काया नगरी शांति भयी ।।३।।
अनुभव घर का खोले ताला, पीया भरकर अमृत प्याला।
कहे टेऊँ गुरु किया निहाला, देश अगम की सूझ गही ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। १ ।। ६४९।।

दाता गुरुजी दान देवो हरि, भक्ति मुक्ति गुण ज्ञान देवो मुझ,
निर्गुण नाम लखाओ ।।टेक।।
मैं हूं लोहा कीट अज्ञानी, तुम गुरु पारस भृंग ज्ञानी।
मेरा जन्म मिटाओ ।।१।।
मैं अपराधी अधम अधीना, तुम गुरु पावन तीर्थ चीना।
मेरा पाप नसाओ ।।२।।
मैं हूं निर्गुण कर्म कंगाला, तुम गुरु सुरतरु दीन दयाला।
दे गुण दोष हटाओ ।।३।।
कहे टेऊँ कर जोड़ अरदासा, तुम हो सद्गुरु स्वयं प्रकाशा।
अनुभव ज्योति जगाओ ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। २ ।। ६५०।।

सद्‌गुरु बोले सुन रे चेला।
साधु कहावन सुगम नहीं है, साधन काम दुहेला ।।टेक।।
सेवा सुमरण निशदिन करना, काटन बुख का वेला।
तांते समझी पांव सु धरना, आतप शीत सहेला ।।१।।
लोक निन्दा को सिर पर सहना, जग में चरत अभेला।
तीन लज्जा को तोड़के चलना, भव ते रहन अकेला ।।२।।
पांच विषय की आस न करनी, इन्द्रियां जीत रहेला।
अन्तर आतम चिन्तन करना, है यह अद्‌भुत खेला ।।३।।
कहता टेऊँ कठिन फकीरी, यह ना गैल सुहेला।
जीव ईश की कटे उपाधी, करन ब्रह्म से मेला ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ३ ।। ६५१।।

दाता गुरु जी अज अविनाशी, तुम हो ज्ञान गुणों की राशी।
दे गुण अवगुण टारो ।। टेक।।
मैं हूं पतित क्रोधी कामी, तुम गुरु पूरण पावन स्वामी।
पाप मेरे परिहारो ।।१।।
डूबत हूं मैं भवसिन्धु माहीं, तुम गुरु केवट पकड़े बाहीं।
भवसागर से तारो ।।२।।
मैं भोगों कर हूं अति रोगी, तुमहो रोग रहित गुरु जोगी।
सगले दूख निवारो ।।३।।
कहे टेऊँ मैं जीव अज्ञानी, तुम हो सद्‌गुरु ब्रह्म ज्ञानी।
दे ब्रह्म बोध उद्धारो ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ४ ।। ६५२।।

सद्गुरु बोले सुन रे चेला,

साधु कहावन जीवित मरना, सौदा समझी कीजे ।। टेक।।

पहले अपना आप गंवाये, श्रद्धा से सिर दीजे।

पांव धरे पीछे नहीं हटना, दम पै कदम धरीजे ।।१।।

एक दिवस का काम नहीं है, अन्तक रहति रहीजे।

सुख दुख आदिक में सम रहना, निर्भय ज्ञान गहीजे ।।२।।

आठों याम एकांती रहिये, अजपा जाप जपीजे।

अष्ट कमल पर आसन करना, अनहद नाद सुनीजे ।।३।।

कहता टेऊँ काया अन्दर, अपना आप लखीजे।

तुरिया से भी होय अतीता, अगम देश लख लीजे ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ५ ।। ६५३।।

तुमहो चेतन जाननहारा।

यह तन जड़ तो जान सके नहिं, आप इसीसे न्यारा ।। टेक।।

पांच तत्त्व का यह तन पुतला, मिथ्या मलिन असारा।

इस तन का है दृष्टा जोई, सोई तुमहो प्यारा ।।१।।

जाग्रत स्वप्न सुषोपति का तुम, साक्षी है निर्धारा।

तीन अवस्था पल पल पलटे, तूं नहिं पलटन हारा ।।२।।

तन को अपना रूप लखे जो, सो चण्डाल चमारा।

ब्रह्म रूप जो निज को जाने, सो है पुरुष उदारा ।।३।।

वेद कहत है सन्त कहत है, पुनि गुरुदेव पुकारा।

कहे टेऊँ तूं सत् चित आनन्द, सब जग का आधारा ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ६ ।। ६५४।।

मनमोहन गिरधारी, बलिहारी जाऊँ दर्शन तेरियां ।। टेक।।

भाल तिलक गल फूल हार पुनि, मुरली मुख पै प्यारी ।।१।।

वृन्दावन में सखियों से मिल, खेल करत बनवारी ।।२।।

पीताम्बर कटि काछनी सोहे, मोर मुकट शिरधारी ।।३।।

कहे टेऊँ मुझ दर्शन दीजे, श्याम सुन्दर सुखकारी ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ७ ।। ६५५।।

सद्गुरु शब्द सुनाओ, दिखाओ मैंनूं दर्शन आपना ।। टेक।।

मैं हूं बालक सद्गुरु तेरा, तुमहो मात पिता गुरु मेरा।
सिर पर हाथ झुलाओ ।।१।।

मैं हूं मूर्ख मूण्ढ अज्ञानी, तुमहो पूर्ण ब्रह्म ज्ञानी।
ब्रह्म का ज्ञान बताओ ।।२।।

मैं हूं मंगता मांगनहारा, तुमहो दाता देवनहारा।
भक्ती दान दिलाओ ।।३।।

कहे टेऊँ कर जोड़ अरदासा, तव दर्शन की बहुत प्यासा।
मन की प्यास बुझाओ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ८ ।। ६५६।।

नाम जपो निर्धारी, पाओ जी तुम सूख अपारियां ।। टेक।।

स्वप्ने के सम यह जग जानो, सर्व पदार्थ मिथ्या मानो।
तांको छोड़ उदारी ।।१।।

स्वार्थ का है सब परिवारा, विपत्ति काल में करत किनारा।
त्यागो तांकी यारी ।।२।।

सद्गुरु से मिल आप जगाओ, हरि सुमरण में श्रुति लगाओ।
करके नित हुशियारी ।।३।।
कहता टेऊँ वेग सम्भारो, हीरा मानुष जन्म न हारो।
ज्ञान गहो सुखकारी ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ९ ।। ६५७।।

तुम्हारा हमारा, एको रूप प्यारा।
ज्यों जल तरंगा, नहीं है न्यारा ।।टेक।।
अहै काष्ठ सब तरु, ज्यों लोह शस्त्र।
वसन जान सूत्र, मिट्टी घट अपारा ।।१।।
भूषण कुल कंचन है, चिनग कुल अग्नि है।
चतुर नभ गगन है, शिला शैल सारा ।।२।।
मिठाई पताशा, शक्कर की पैदाशा।
बदल हिम सतासा, ज्यों रवि उजारा ।।३।।
टेऊँ तोड़ भेदा, कीया निश्चय मेधा।
ब्रह्म जीव अभेदा, कहे वेद चारा ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। १० ।। ६५८।।

गुरू है हमारा, प्रभू का पियारा।
धरे सीस तां पग, करूं मैं जुहारा ।।टेक।।
ज्ञानी ध्यानी, अभय दान दानी।
कथे ब्रह्म बानी, हरत भ्रम सारा ।।१।।
त्यागी विरागी, निजातम रागी।
श्रुति के सुजागी, रहत निर्विकारा ।।२।।

करुणाकर कृपालू, दीनों पर दयालू।
करत शिष्य निहालू, लगावत न बारा ।।३।।
टेऊँ ब्रह्म रूपा, सदा शिव स्वरूपा।
अनामी अरूपा, अखण्ड है अपारा ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ११ ।। ६५९।।

करो तुम राम नाम व्यापार ।। टेक।।
और धन्धे सब झूठे जानो, राम नाम को सत् कर मानो।
छोड़ो सब व्यवहार ।।१।।
और धन्धों में दूख भरा है, राम नाम में सूख धरा है।
मन में देख विचार ।।२।।
और धन्धे जड़ हैं नहिं कायम, राम नाम चेतन है दायम।
देवे शान्त भण्डार ।।३।।
कहे टेऊँ भज राम प्यारे, जो भवसिन्धु से पार उतारे।
कहते वेद पुकार ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। १२ ।। ६६०।।

धरो मन गुरु चरणों का ध्यान ।। टेक।।
गुरु चरणों की सेवा कीजे, तन अभिमान सकल हर लीजे।
पाओ पूरण ज्ञान ।।१।।
गुरु चरणों पर सीस निवाओ, पापों की सब पोट गिराओ।
पावन हो प्रधान ।।२।।

भव सागर यह भारी जानो, गुरु के चरण जहाज़ पछानो।
तां चढ़ तरो सुजान ।।३।।
जन्म जन्म के पुण्य जिहं जागे, कहे टेऊँ सो गुरु पद लागे।
तांका हो कल्यान ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। १३ ।। ६६१।।

बन्दे तुम करलो पर उपकार ।। टेक।।
अपने तन का स्वार्थ त्यागो, पर उपकार में अहनिश लागो।
मानुष जन्म सुधार ।।१।।
पर उपकार जिसीने कीया, तिसने जग में यश को लीया।
होया जय जयकार ।।२।।
पर उपकार दधीच कमाया, रन्तिदेव ने राज लुटाया।
छाय हरि दीदार ।।३।।
पर उपकार में जिन तन दीना, कहे टेऊँ धन्य तांका जीना।
करते देव जुहार ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। १४ ।। ६६२।।

भाग भले भाग भले, हैं तांके जग में, भाग भले।
पापों से जो मन को पले ।। टेक।।
मात पिता गुरु सन्त वेद की, आज्ञा में नित जोई चले ।।१।।
साध संगति मिल हरि गुण गावे, देते दान न जोई टले ।।२।।
पांच विषय से इन्द्रिय रोके, माया छल में न जोई छले ।।३।।
कहे टेऊँ निज आतम जाने, मन दुश्मन को जोई दले ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। १५ ।। ६६३।।

श्रद्धा धारे श्रद्धा धारे, सुन ज्ञान कथा तूं, श्रद्धा धारे।
सन्त जनों के जाय द्वारे ।।टेक।।
ज्ञान कथा नित सन्त सुनावहिं,
गुरुमुख सुनकर काज संवारे ।।१।।
ज्ञान कथा जा कथे ब्रह्म को,
जगत अनातम भ्रम निवारे ।।२।।
ज्ञान कथा अज्ञान नसावे,
श्रुति समावे ब्रह्म मंझारे ।।३।।
ज्ञान कथा जो सुने सुनावे,
कहे टेऊँ कुल केते तारे ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। १६ ।। ६६४।।

बोल हरी बोल हरी, हरि नाम उद्धारे, बोल हरी।
जिन सुमरिया तिन विपता टरी ।। टेक।।
हरि का नाम अमोलक हीरा,
भाग्यवान रति तांसे करी ।। १।।
हरि जप पापी अजामिल तरिया,
हरि हरि जपती गनिका तरी ।। २।।
कोटि जन्म अघ हरि जप नाशत,
आग विषे जिमि लकड़ी जरी ।। ३।।
कहे टेऊँ ले गुरु उपदेशा,
करी सुधारस पीले ज़री ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। १७ ।। ६६५।।

भाग जागे भाग जागे आज हमारे,
मन मेली सन्त सज्जन धाम पधारे,
बलि बलि जाऊँ बलिहारे ।।टेक।।
सन्तों का दर्शन सुखदाई, वेद ने जिसकी महिमा गाई।
दूख दर्द निवारे, ओ प्रीतम, करत सुखारे ।।१।।
सन्त जगत में ज्ञान के दाते, राम रंग में निशदिन राते।
अखण्ड ज्ञान उचारे, ओ प्रीतम, भ्रम निवारे ।।२।।
सन्त वचन मोती सम जानो, कहे टेऊँ चुन हृदय आनो।
पाओ भक्ति भण्डारे, ओ प्रीतम, मुक्ति द्वारे ।।३।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। १८ ।। ६६६।।

शरन लेवो शरन लेवो सीयाराम की,
ओट लेवो ओट लेवो राधेश्याम की,
वे दोनों करत सहाए ।।टेक।।
विभीषण सब कुटुम्ब त्यागे, आकर राम शरन जब लागे।
तब लंकेश बनाये, ओ प्रीतम वचन निभाए ।।१।।
ग्राह से लड़ते गज ने हारा, फूल देहि उस करी पुकारा।
गरुड़ छोड़ हरि आये, ओ प्रीतम गज को छुड़ाए ।।२।।
द्रोपदा ने शरण गही जब, वसन रूप धर श्याम आये तब।
सभा में चीर बढ़ाये, ओ प्रीतम लाज बचाए ।।३।।
गीता में यह गाया कृष्न, मम शरनी जो आवे अर्जुन।
टेऊँ सो सुख को पाये, ओ प्रीतम पाप मिटाए ।।४।।

॥ राग पहाड़ी भजन ॥ १९ ॥ ६६७॥

मन दर्शन कर अपना।
गुरु ज्ञान के नैनों से, निज आतम को लखना ॥ टेक॥
तन मिथ्या जड़ सारा, यह रूप नहीं तेरा,
तूं इनसे है न्यारा ॥१॥
दिल दर्पन में देखो, तुम अन्तर्मुख होके,
निज आतम को पेखो ॥२॥
नट स्वाङ्ग धरे जैसे, त्यों खेल करे आतम,
फिर जैसे को तैसे ॥३॥
कहे टेऊँ तज भ्रांती, हैं स्वांग सभी झूठे।
लख निर्मल निज क्रान्ती ॥४॥

॥ राग पहाड़ी भजन ॥ २० ॥ ६६८॥

उपदेश सुनो प्यारे, क्यों आये हो जग में,
तुम देखो वीचारे ॥ टेक॥
यहं लेने को आया, सो लाल नहीं लीया,
तुम कौड़ी को पाया ॥१॥
यहं अमृत था पीना, वो तुमने नाहिं पिया,
विष विषयों रस लीना ॥२॥
यहं चन्दन था बोना, तुम कीकर को बोया,
पड़ा अन्त तुम्हें रोना ॥३॥
यहं जो कछु था करना, कहे टेऊँ सो न किया,
पड़े जाल जन्म मरना ॥४॥

।। राग पहाड़ी भजन ।। २१ ।। ६६९।।

जो साध संगति चित लावे, वह अमृत फल को पावे।। टेक।।
साध संगति सागर सम जानो, जो जन डुबकी लावे।
ज्ञान ध्यान गुण प्रेम के मोती, तांके कर में आवे ।।१।।
साध संगति सुरतरु सम जग में, मन की आस पुजावे।
जो जन तिसकी छाया बैठे, तांकी तप्त मिटावे ।।२।।
साध संगति पारस के सदृश, लोहा कनक बनावे।
ज्यों चन्दन के संग से सब तरु, चन्दन ही बन जावे ।।३।।
साध संगति की महिमा भारी, वेद पुरान बतावे।
शेष शारदा पार न पावे, जन टेऊँ क्या गावे ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। २२ ।। ६७०।।

हम द्वार तुम्हारे आये, गुरु मेरी करो सहाये।। टेक।।
बीच भंवर में आन अड़ी है, नौका आज हमारी।
एक तो ज़ोर से आन्धी चलती, दूजी रैन अन्धारी।
है तुझ बिन और न कोई, जो नैया पार लगाये ।।१।।
क्या करूं अब कित ही जाऊँ, सूझत राह न काई।
सभी सहारे टूट चुके अब, तेरी ली शरणाई।
है चौदिश दुख ने घेरा, अब तुझ बिन कौन बचाये ।।२।।
कहे टेऊँ गुरु समर्थ हो तुम, सब कुछ वश है तेरे।
जैसा तैसा तेरा हूं मैं, दूख हरो सब मेरे।
इस कठिन समय में आकर, तुम लाज रखो हरि राये ।।३।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। २३ ।। ६७१।।

शरण ले राम की भाई, वही भव सिन्धु तारेगा।
सर्व सुख राम के शरणी, राम तुमको उधारेगा ।।टेक।।
तजो तुम और की आसा, करो मन राम भरवासा।
शरण पालक बिरद उसका, वही दुख दर्द टारेगा ।।१।।
तजे जो ईश आधारा, भरोसा लेत संसारा।
ईहां ऊँहां दुखी होकर, जोनि चौरासी धारेगा ।।२।।
हरी की शरन जो पड़ते, रक्षा तिनकी हरी करते।
कहे टेऊँ सो तेरा भी, जन्म फेरा निवारेगा ।।३।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। २४ ।। ६७२।।

अगर तुम राज़ को मुझ पर, बढ़ाओगे तो क्या होगा।
प्रभू तुम प्रेम का नाता, निभाओगे तो क्या होगा ।।टेक।।
प्रभू इक प्रेम तेरे का, प्यासी रैन दिन मैं हूं।
भरे तुम प्रेम का प्याला, पिलाओगे तो क्या होगा ।।१।।
किये हैं पाप बहुतेरे, प्रभू तुम हो पतित पावन।
दया कर दास के अवगुन, मिटाओगे तो क्या होगा ।।२।।
तेरी दर्बार में हरगिज़, कमी किस वस्तु की ना है।
पदार्थ भाव भक्ती का, दिलाओगे तो क्या होगा ।।३।।
कहे टेऊँ तजे सबको, पड़ा हूं द्वार पर तेरे।
हरी निज हाथ से मुझको, उठाओगे तो क्या होगा ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। २५ ।। ६७३।।

प्रभू तुम दास को दर्शन, दिखाओगे तो क्या होगा।
भक्ति गुण ज्ञान मन मेरे, जगाओगे तो क्या होगा ।। टेक।।
कठिन संसार के बन में, पड़ा हूं भूल जन्मों से।
दया कर दास को मार्ग, बताओगे तो क्या होगा ।।१।।
दुखों के सिन्धु में स्वामिन्, पड़ा दिन रैन डूबत हूं।
चढ़ा कर चरन की नौका, तराओगे तो क्या होगा ।।२।।
विषय की वासना मन में, सताती है सदा मुझको।
हरी वैराग दे उसको, हटाओगे तो क्या होगा ।।३।।
कहे टेऊँ करूं भगवन्, तुम्हारा दरस आंखों से।
यही अभिलाष हृदय की, पुजाओगे तो क्या होगा ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। २६ ।। ६७४।।

आओ मिलकर सभी प्रेमी, हरी के गीत गाओ जी।
मिली दुर्लभ मनुष देही, उसे ना मुफ्त गंवाओ जी ।। टेक।।
जिसी कारण मनुष चोला, मिला तुमको अती सुन्दर।
तजे गफ्लत करो सोई, सफल यह तन बनाओ जी ।।१।।
गर्भ अन्दर कीया तुमने, हरी से कौल है जोई।
वचन वह याद कर अपना, उसीको ना भुलाओ जी ।।२।।
नहीं कछु जीभ घिसती है, नहीं कछु मोल लगता है।
तजे शंका भजो हरि को, सभी सुख साज पाओ जी ।।३।।
हरी गुन गान करना जो, यही कलि में भजन साचा।
कहे टेऊँ सर्व त्यागे, हरी से हेत लाओ जी ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। २७ ।। ६७५।।

तूं स्वामी मेरा मैं दास तेरा, कर कृपा।
तूं मात पिता हरि बन्धु सखा, तुझ बिन कोय न मेरा ।। टेक।।
हाथ जोड़ अर्दास करूं, सीस धरूं पुनि सेव करूं।
कृपा करो प्रभू कृपा करो, काटो जम का फेरा ।।१।।
शरन तेरी में दास पड़ा, तुझ बिन कोय न सूझे बड़ा।
अरज़ी सुनो मेरी अरज़ी सुनो, टेऊँ कहे कर चेरा ।।२।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। २८ ।। ६७६।।

साधो मैं पूजूं सत्नाम को, साक्षी आनंद धाम को ।। टेक।।
कोई पूजत विष्णू शंकर, कोई शक्ति गणेशा।
कोई पूजत इन्द्र चन्द्र रवि, को पूजत घनश्याम को ।।१।।
कोई पूजत दशरथ नन्दन, कोई धरनि अकासा।
कोई पूजत वायू अग्नी, को पूजत जलधाम को ।।२।।
जिसके जाने से सब जाने, जिस माने सब माने।
जिसके पूजे सबहीं पूजत, पूजूं तिहं अलिकाम को ।।३।।
जिस से हो जग उत्पति स्थित, जामें लय पुनि होवे।
नेति नेति जिहं वेद बतावे, इष्ट वही टेऊँराम को ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। २९ ।। ६७७।।

साधो पारब्रह्म बेअन्त जी, कहते शास्त्र सन्त जी ।। टेक।।
अन्त लेन को ब्रह्मा चलिया, चलिया शंकर विष्णू।
खोज खोज कर वे भी हारे, क्या जाने तुछ जन्त जी ।।१।।
कारण से ही कार्य होता, यह जग देखा जाता।
तीन लोक में बिन कारण इक, केवल है भगवन्त जी ।।२।।

परमेश्वर की अद्‌भुत लीला, जान सके ना कोई।
विस्मय को भी विस्मय आवे, आगम निगम भनन्त जी ।।३।।
धरनि तले अहिराज बिराजे, तां तल वारह कछुआ।
कहे टेऊँ सबका आधारा, एक ब्रह्म बलवन्त जी ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ३० ।। ६७८।।

राम नाम मुख बोल रे, प्रीतम प्यारे ।।टेक।।
राम नाम का सुमरन करके, सगले पाप मिटाओ।
परम पवीत्र नाम प्रभू का, प्रेम उसी से पाओ।
पीले प्रेम प्याला, करले हिरदा उेला।
हरले जगत जंजाला, अविद्या ताला खोल रे ।।१।।
राम नाम का सुमरण करके, ऋद्धि सिद्धि नव निधि पाओ।
कल्प बिरछ है नाम हरी का, शरण उसी की जाओ।
प्रभू कृपा धारे, तुम्हरे काज संवारे।
सब दुख दर्द निवारे, दर्शन दे अनमोल रे ।।२।।
राम नाम का सुमरण करके, भव सिन्धु से तर जाओ।
परम जहाज़ा नाम हरी का, तां पर तुम चढ़ जाओ।
निश्चय पूरण राखो, प्रेम से हरि हरि भाखो।
अमृत रस को चाखो, जन्म न जग में रोल रे ।।३।।
कहे टेऊँ हरि सुमरन करके, तर गये अधम अनारी।
विदुर सुदामा कुब्जा कर्मा, तर गई गौतमनारी।
अजामिल सधन कसाई, गनिका सैना नाई।
शबरी मीराबाई, हरि ने किये सब कोल रे ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ३१ ।। ६७९।।

बलिहारी मिलिया, मुझको सन्त सुधीर जी।
मेरे मन की मिट गई पीर जी, धन धन भाग हमारे।
आ गई दिल को धीर जी ।।टेक।।
लक्षण सुनो तांके नर नारी, पूरण वे हैं पर उपकारी।
आज मिलिया शान्ति शरीर जी ।।१।।
नित अवतारी पुरुष उदारी, इन्द्रिय जित हैं उपशम धारी।
आज मिलिया गुणी गहीर जी ।।२।।
धीरज धारी धर्म अचारी, वेद वेता जे वर वीचारी।
आज मिलिया ज्ञानी गम्भीर जी ।।३।।
कहे टेऊँ वे वीर विज्ञानी, तिन पर जाऊं मैं कुर्बानी।
आज मिलिया असुल फकीरी जी ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ३२ ।। ६८०।।

सुनिये मन मेरा सुमरण की कर कार रे।
ग़ाफिल ग़फ्लत में न गुज़ार रे।
निशदिन हरि नाम ध्याये, पाओ मोक्ष द्वार रे ।। टेक।।
भोगों से तुम करे किनारो, अपने मन में उपशम धारो।
भोग दुख का जान अगार रे ।।१।।
जिसको कहते मेरा मेरा, अन्त काल सो है नहिं तेरा।
कर देखो दिल में विचार रे ।।२।।

यह जग जान मुसाफिरखाना, जीव सर्व तांमें महिमाना।
रहना तुझको दिन दो चार रे ।।३।।
कहता टेऊँ सुनले प्यारे, सद्‌गुरु के अब जाय द्वारे।
अपना करले वेग उद्धार रे ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ३३ ।। ६८१।।

आतम का जिहं ध्यान धरा, सो और का ध्यान धरे न धरे।। टेक।।
गुरु का नाम रटा जिहं अन्तर, सो अन नाम ररे न ररे ।।१।।
तत्त्वमसी जिहं शोध लिया सो, औरहिं शोध करे न करे ।।२।।
विरह अग्नि में जिहं मन होम्या, सो अन आग जरे न जरे ।।३।।
कहे टेऊँ जो भव सिन्धु तरिया, सो अन सिन्धु तरे न तरे ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ३४ ।। ६८२।।

स्वास में प्रकाश पेखो, स्वास सोधे कर सही।
स्वास सोधे कर सही, शिष्य मान मति मेरी यही ।। टेक।।
मूल माहिं गणेश वासा चरण सद्‌गुरु के गही।
लिङ्ग भीतर अज निवासा नाभि हरि वेखो वही ।।१।।
शंख शिव हिरदे सु बाजे कण्ठ सरस्वती अही।
त्रिभणा में ज्ञान जोती सुन सकड़ पेखो पही ।।२।।
इड़ा पिङ्गला सुषुम्ना में सरित अमृत की बही।
सो सुधा रस आप पीले शरण सद्‌गुरु के रही ।।३।।
कहत टेऊँ मार डुबकी लाल आतम को लही।
स्वास सारे सफल करले बात यह सन्तों कही ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ३५ ।। ६८३।।

पूरण धर विश्वास, गुरुमुख गुरु के वचन में ।।टेक।।
साक्षी चेतन रूप तुम्हारा, चारों वस्था माहिं प्यारा।
खेलत बारह मास, जैसे भूप भवन में ।।१।।
बैठ अकेला तत्व विचारो, अपना आतम रूप सम्भारो।
होवे संसा नास, पाओ आनन्द मन में ।।२।।
देह मलिन का तज अभिमाना, भेद भ्रम हरके अज्ञाना।
आदि पुरुष अविनास, देखो दिल दर्पन में ।।३।।
अपने अन्तर ध्यान लगाये, कहे टेऊँ स्वरूप समाये।
निशदिन करो निवास, निर्भय शान्ति सदन में ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ३६ ।। ६८४।।

आतम घर के माहिं, रे मन शान्ती पाओ ।।टेक।।
जो है आदी धाम तुम्हारा, सूर्य चन्द्र से अति उज्यारा।
वृत्ति लगाओ ताहिं, कबहूं नाहिं भुलाओ ।।१।।
अपने घर में सुख है जैसा, तीन लोक में ना सुख तैसा।
इत उत भटको नाहिं, अपने घर में आओ ।।२।।
बहुत जन्म से हो तुम भूला, सहते आये हो बहु शूला।
अब दुख सहते काहिं, निज घर चित्त ठहराओ ।।३।।
कहे टेऊँ तज सर्व उपाधी, अपने घर में लाइ समाधी।
ब्रह्मानन्द है जाहिं, तांमें सहज समाओ ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ३७ ।। ६८५।।

धर्म सनातन सार, दिल धर अपने धरम से ।।टेक।।
और धर्म से चीत हटाके, अपने धर्म से दिल को लाके।
गीता ज्ञान विचार, रहिये अपने शरम से ।।१।।
धर्म जिसी में तन है धारा, धर्म उसी को धरले प्यारा।
धर्म हेत शिर डार, मोह न कर अपने चरम से ।।२।।
पशु पंछी की सहस्र ज़ाती, अपनी अपनी बोलत बाती।
आतम शक्ति संभार, मुक्ति पाय अपने मरम से ।।३।।
कहे टेऊँ तिन लोकों माहीं, धर्म सनातन सम को नाहीं।
परम पदार्थ चार, पाओ अपने करम से ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ३८ ।। ६८६।।

देखो अपना आप, सुनले मेरे मन ।।टेक।।
पूरन गुरु की शिक्षा पाए, बैठ अकेला ध्यान लगाए।
जपले जाप अजाप ।।१।।
पांच तत्व का तन यह नासी, इनका दृष्टा तुम अविनासी।
सब जग के हो बाप ।।२।।
आना जाना तुझ में नाहीं, स्थित हो तुम अपने माहीं।
लगे न तोहि सन्ताप ।।३।।
कहे टेऊँ सो रूप तुम्हारा, नाम रूप का जो आधारा।
जां महिं पुण्य न पाप ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ३९ ।। ६८७।।

करले सर्व का त्याग, रे तुम मेरे मन ।।टेक।।
झूठा जग का जान पसारा, साथ नहीं कछु चलने हारा।
कर न किसी से राग ।।१।।
इक दिन तुझको सब तज देंगे, या सबको तुम छोड़ चलेंगे।
तांते होय सुजाग ।।२।।
झंगल में चल बैठ अकेला, मन मोहन से करके मेला।
मेटो द्वैत का दाग़ ।।३।।
कहे टेऊँ सब बन्धन तोड़े, निज आतम से वृत्ती जोड़े।
पाओ सूख सुहाग ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ४० ।। ६८८।।

किया ना वीचारा तुम, किस लिये आया रे ।।टेक।।
पूरब में शुभ कर्म कमाया, मानुष जन्म अमोलक पाया।
तांको वृथा मूण्ढ गंवाया, हरी न ध्याया रे ।।१।।
जिस प्रभू ने पैदा कीना, तिसका नाम न कबहूं लीना।
पाप कर्म में तुम चित्त दीना, पुण्य न कमाया रे ।।२।।
भोगों में भगवान भुलाया, पशुओं जैसे जन्म गंवाया।
जग बन्धन में आप बन्धाया, मोक्ष नहीं पाया रे ।।३।।
झूठे जग से करे किनारा, कहे टेऊँ ना किया उद्धारा।
बहुत बढ़ाया तुम परिवारा, मोह न मिटाया रे ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ४१ ।। ६८९।।

हे दीना नाथ दयाल, शरन मैं आया तेरी।
जान आपना बाल, लजा हरि राखो मेरी ।।टेक।।
दुष्टों ने आ मुझको घेरा, काज बिगाड़त अब हरि मेरा।
रक्षा करो रखपाल, दूर हो जावन वेरी ।।१।।
सर्व कला तुम समर्थ स्वामी, आदि पुरुष हो अन्तर्यामी।
बन कर काल कराल, कला हर दुश्मन केरी ।।२।।
शरनागत को शरनी दीजे, पूरण मेरा कारज कीजे।
करुणानिधि कृपाल, दरस दे कर ना देरी ।।३।।
दूख हरो मम दीन त्राता, शान्ती सुख दे हे सुख दाता।
हरले विघ्न विशाल, कहे टेऊँ सुन टेरी ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ४२ ।। ६९०।।

राम नाम जप श्रद्धा से, राम भव सागर तारे,
कटे दुख भारी ।।टेक।।
राम नाम के नौका माहीं चढ़ले तूं,
भव सागर से सहजे पार उतरले तूं,
मोक्ष धाम को तुम पाओ, दूख नहीं है जामें,
सदा सुखकारी ।।१।।
राम नाम का अमृत अहनिश पीजिये,
जीवन मुक्ती होकर जग में जीजिये।
जन्म मरन का दूख हरो, फेर न आवो कबहूं,
गर्भ मंझारी ।।२।।

राम नाम बिन और न मुख से बोलिये,
राम नाम को हृदय अन्दर तोलिये।
राम नाम में चित लाए, दर्शन करले हरि का,
जो हितकारी ।।३।।
कहे टेऊँ जग भीतर साधन जेते हैं,
राम नाम के सुमरन सम नहिं तेते हैं।
तांते सब तज राम भजो, जांके सुमरन से आयू,
सफली हो सारी ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ४३ ।। ६९१।।

ओ मेरे सत्गुरु स्वामी, भव सागर से तारो ।।टेक।।
जैसा तैसा तेरा हूं मैं, तेरे दर पर आये,
तुझ बिन मेरा और न कोई, तुमहीं करो सहाये ।।१।।
पतित पावन है नाम तुम्हारा, मैं पापी हूं भारी,
दीन दुखी मैं दर का भिखारी, तुम दाता उपकारी ।।२।।
बिरद तुम्हारा शरन पालक है, मैं हूं शरनी तेरी,
कहे टेऊँ मुझ पार उतारो, नाव पुरानी मेरी ।।३।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ४४ ।। ६९२।।

तारो हे सद्गुरु तारो, मुझे भव से उबारो, दुख दर्द निवारो।। टेक।।
भव सिन्धु में हम डूब रहे हैं, मच्छ कच्छ के बहु दूख सहे हैं,
भुजा पकड़ के निकारो, हे सद्गुरु तारो ।।१।।

सत्गुरु तेरी शरण मैं आया, भव जल धारा मोहि डराया,
दया की दृष्टी धारो, हे सद्गुरु तारो ।।२।।
जिस पर सद्गुरु दया तुम्हारी, टेऊँ तरहैं सो भव भारी,
मुझ को नाहिं बिसारो, हे सद्गुरु तारो ।।३।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ४५ ।। ६९३।।

जिसी ने मानुष तन दीना, उसी को याद करले।
जिसी ने बुद्धि बल धन दीना, उसी का नाम सुमरले ।। टेक।।
भजन बिन भगवान के यह जीवन वृथा जान तूं,
सन्त शास्त्र कहत हैं सब निश्चय करके मान तूं,
सफल जीवन बनाने को, हरी का ध्यान धरले ।।१।।
पहन को वस्त्र दिया जिस खान को भोजन दिया,
धरनि पानी अगि पवन नभ चन्द्र रवि रोशन दिया,
उसी प्रभू के गुन गाके, भव सिन्धु पार तरले ।।२।।
जिसकी कृपा से सदा तुम, कहे टेऊँ सुख पात हो,
बैठ महलों में हमेशा फूले नाहिं समात हो,
उसी हरि की शरन लेके, सर्व दुख द्वन्द्व हरले ।।३।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ४६ ।। ६९४।।

करो सत्संग सदा, सन्तों के द्वार जा करके,
हृदय में प्रेम पा करके ।। टेक।।
श्रद्धा मन धारो यही, सन्त हरी रूप सही।
सेवा करो सिर निवा करके ।।१।।

भोग विषयों से हटो, सन्त संग नाम रटो।
पाओ सुख मन मिला करके ।।२।।
सन्तों से ज्ञान सुनो, तांको हृदय में गुनो।
चलो यह लाभ उठा करके ।।३।।
कहे टेऊँ शरन गहो, परम आनन्द लहो।
जन्म मरन को मिटा करके।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ४७ ।। ६९५।।

मेरी रसना ऊँचे स्वर बोलो, श्री राम नारायण हरी हरी।
श्री राम नाम रस मीठे की, तूं पीले अमृत ज़री ज़री ।। टेक।।
श्री राम नाम तेरी लाली है, श्री राम बिना तूं काली है।
श्री राम नाम तेरी माली है, श्री राम बिना तूं खाली है।
श्री राम नाम तेरी शोभा है, तूं राम सुमर हर घड़ी घड़ी ।।१।।
रस विषयों के लेते लेते, तुम आयू बहुत गंवाई है।
अफसोस मुझे ये आता है, कछु शान्ति न तूने पाई है।
अब भोगों के रस छोड़ सभी, इक हरि रस में रह पड़ी पड़ी।।२।।
छोड़ निन्दया चुगली कटु वचना, छोड़ तात पराई छल रचना।
छोड़ झूठा बोलन पर हंसना, छोड़ गाली देना तूं रसना।
छोड़ जगके झूठे बातों को, कर बात राम की खरी खरी ।।३।।
श्री राम न सुमरे जा रसना, इक कौड़ी तिसका मुल्ह नाहीं।
उस जिव्हा को तिल तिल कट दीजे, कूकर कौवों मुख माहीं।
कहे टेऊँ ऐसे वेद कहे, तुम देखो पुस्तक पढ़ी पढ़ी ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ४८ ।। ६९६।।

मेरा सद्गुरु पर उपकारी है, जिहं मन की ममता मारी है।
दे आतम ज्ञान सच्चा मुझको,
जिस अविद्या की तम टारी है ।। टेक।।
था मोह ने मुझको उलझाया, पुनि बहुत जनम से भटकाया।
गुरु कृपा करके मोह अरी को, मारी ज्ञान कटारी है ।।१।।
जिस कारण मैंने घर त्यागा, जा बन खण्ड में ढूंढन लागा।
गुरु कृपा कर घट भीतर वह, दिखलायी मूरत प्यारी है ।।२।।
जिस काल ने सब जग खाय लिया, गुरु उससे मोहि बचाय लिया।
कहे टेऊँ ऐसे गुरु ऊपर, मैं बार बार बलिहारी है ।।३।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ४९ ।। ६९७।।

जब गोबिन्द के गुन गाओगे, तब भगवत के मन भाओगे।
जब हृदय हरी बसाओगे, तब जम की चोट न खाओगे।। टेक।।
जो राम नाम गुन गाता है, सो भव सागर तर जाता है।
जब लगन हरी से लाओगे, तब जीवन सफल बनाओगे ।।१।।
जो अहनिश राम को रटता है, वो जम की फासी कटता है।
जब हरि में सुरति समाओगे, तब सकले पाप मिटाओगे ।।२।।
कहे टेऊँ जो हरि जपता है, सो तीन ताप नहिं तपता है।
जब परमेश्वर को ध्याओगे, तब सर्व सुखों को पाओगे ।।३।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ५० ।। ६९८।।

रह शान्ति में निज क्रान्ति में,
संकल्प विकल्प छोड़ मना ।।टेक।।
शान्ती घर से आये हो, शान्ती माहिं समाये हो,
अब तुम क्यों घबराये हो, छोड़ बीच की कल्पना ।।१।।
लखले अपने आपको, जपले अजपा जाप को,
हरले तीनों ताप को, तजले संगति दुर्जना ।।२।।
काम क्रोध को त्याग ले, विषयों से वैराग ले,
आतम पद में जाग ले, मोह नींद को छोड़ना ।।३।।
कहे टेऊँ एकान्ति में, प्रेम करो गुरु पान्ति में,
लीन रहो निज शान्ति में, छोड़ भ्रम में भ्रमना ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ५१ ।। ६९९।।

हर हाल में, हर काल में, अपने घर की सुरति करो ।। टेक।।
मिथ्या पिण्ड स्थान छोड़े, ब्रह्माण्डी बड़थान छोड़े,
महा सुन्न मैदान छोड़े, सत्य लोक में पांव धरो ।।१।।
षष्ठ चक्कर दल सहस्र त्यागो, भंवर गुफा से आगे भागो,
अगम पुरुष के चरने लागो, अमृत पीके काल हरो ।।२।।
मरमी गुरु से ले प्रकाशा, सुरति शब्द का कर अभ्यासा।
माया से मन होय उदासा, शब्द सुमर भव सिन्धु तरो ।।३।।
कहता टेऊँ संयम धारे, बाहरमुखता ख्याल निवारे।
सुरति शब्द संग ऊपर चाढ़े, चेतन घर में जाय चरो ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ५२ ।। ७००।।

हर काम में दम दाम में, सुनले अनहद नाद मना ।। टेक।।
श्रवण में दो अंगुली पाके, सुनले धुनि को ध्यान लगाके,
झीने स्वर से सुरति मिलाके, मगन रहो तुम रैन दिना ।।१।।
शब्द रसी को दृढ़ पकड़ के, क्रम क्रम से ऊपर चढ़के,
मेघ नाद में सुरती धरके, जीव भाव को छोड़ जना ।।२।।
जैसे मृग नाद रति लागी, तैसे दसों नाद हो रागी,
अनल पंछी ज्यों अहनिश जागी, गाफिल होय न एक छिना ।।३।।
कहे टेऊँ गुरु शरन गहीजे, दश नादों को परचा लीजे,
तिनका नित अभ्यास करीजे, मधुर सुधा रस पीउ घना ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ५३ ।। ७०१।।

बिना हरी नाम के, कोई सच्चा मीत नहीं।
नाम बिना हार गये, होई किसकी जीत नहीं ।। टेक।।
स्वार्थ के मात तात दारा सुत भ्रात हैं,
बिन स्वार्थ कोई पूछत न बात है।
सोच कर देखो साची, जग की प्रीति नहीं ।।१।।
जब धन देखे सब कहे मेरा यार है,
बिना धन वाले का तो इक कर्तार है।
बिना मतलब कोई, राखे प्रतीति नहीं ।।२।।
कहे टेऊँ तांते तुम हरि से लगन लाओ,
अन्त जो सहाय करे ताहिं उर में बसाओ।
पाओ निर्भय पद, लागे कछु भीत नहीं ।।३।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ५४ ।। ७०२।।

सन्तों के दर का दर्बान हो जा,
सेवा भाव करके निर्मान हो जा ।।टेक।।
सन्त हरी में भेद नहीं है, सन्त हरी का रूप सही है।
वेद पुरानों का वाक्य यही है,
श्रद्धा से गुण पाए गुणवान हो जा ।।१।।
सन्त ब्रह्म का ज्ञान बताते, सोये हुए जीवों को जगाते,
भेद भ्रम अज्ञान मिटाते,
तूं भी ज्ञान लेके ज्ञानवान हो जा ।।२।।
सन्त कृपा कर मोक्ष दिलाते, कहे टेऊँ बिछुड़े को मिलाते,
मूए दिलों को तुरत जिलाते,
सन्तों से मिलके तूं भगवान हो जा ।।३।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ५५ ।। ७०३।।

साध संगति के द्वार, शान्ती पावो रे ।।टेक।।
साध संगति में बैठ प्यारा, सन्त वचन सुन कर वीचारा।
संसा सकल निवार, शान्ती पावो रे ।।१।।
साध संगति की करके सेवा, पाये पूरण आतम देवा।
लेखा यम का वार, शान्ती पावो रे ।।२।।
साध संगति है गंग समाना, तांमें डुबकी मार सुजाना।
पापनि मैल उतार, शान्ती पावो रे ।।३।।
साध संगति की बड़ी बड़ाई, कहे टेऊँ सन्तों ने गाई।
तांमें श्रद्धा धार, शान्ती पावो रे ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ५६ ।। ७०४।।

ब्रह्म ज्ञान का दान सत्गुरु देवत है ।। टेक।।

मोक्ष इच्छा को हृदय धारे, जो जन जावत गुरु के द्वारे।

तांको आतम ध्यान, सत्गुरु देवत है ।।१।।

तन मन धन जो भेट चढ़ाए, अहंता ममता मान मिटाए।

तांको निर्भय ज्ञान, सत्गुरु देवत है ।।२।।

जांका चित हरि चरनों लागे, विष सम जान विषय रस त्यागे।

तांको सूख महान, सत्गुरु देवत है ।।३।।

कहे टेऊँ गुरु नाम जपे जो, काम क्रोध में नाहिं तपे जो।

तांको पद निर्बान, सत्गुरु देवत है ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ५७ ।। ७०५।।

मोक्ष मन्दिर का द्वार, मानुष चोला है ।। टेक।।

जोनि चुरासी से अधिकाई, मनुष देह भगवत को भाई।

सबका ये सरदार, मानुष चोला है ।।१।।

मानुष तन को सब सुर चाहत, सन्त ग्रन्थ भी महिमा गावत।

आनन्द का आगार, मानुष चोला है ।।२।।

मानुष कर्म धर्म को करता, सब साधन को हृदय धरता।

भक्ती का भण्डार, मानुष चोला है ।।३।।

मानुष तन में आप पछानो, टेऊँ भेद भ्रम को भानो।

ज्ञान ध्यान गुलिज़ार, मानुष चोला है ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ५८ ।। ७०६।।

भजले बन्दे भगवत को,

भगवत ने तुझको दीया मानुष चोला ।।टेक।।

मात गर्भ में हरि सुमरण का कौल किया।

माया में तुम फस कर उसको भूल गया।

अब भी हरि को याद करो,

काहे गंवाते अपना श्वास अमोला ।।१।।

निशदिन तेरे शिर पर काल पुकारत है।

बड़े बड़े बलवानों को ये मारत है।

जो इससे तुझ बचना है,

श्रद्धा से जपले हरि का नाम अडोला ।।२।।

कहे टेऊँ यह दुनिया सारी फानी है।

क्यों तुम इसमें अपनी ममता ठानी है।

छोड़ ममत को ध्यान धरो,

सत्गुरु से ले उपदेशा कट भ्रम भोला ।।३।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ५९ ।। ७०७।।

राम को सुमरले, संकट हरले,

करो तुम एही कार, बेड़ा हो पल में पार ।।टेक।।

राम नाम का जाप उत्तम है, करता कोई कोई।

जिसने राम से नेह लगाया, तिसकी मुक्ती होई।

हरी ध्यान धरले ।।१।।

रोम रोम में राम बसाओ, ज्यों हनुमान बसाया।
राम नाम बिन माला के, सब हीरे तोड़ गिराया।
राम जप करले ।।२।।
राम नाम बिन जग में तेरा, साथी कोई नाहीं।
कहता टेऊँ तांते जपले, राम नाम मन माहीं।
भव सिन्धु तरले ।।३।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ६० ।। ७०८।।

करो सन्तों का संग, होके जग से निसंग,
जांसे होय उद्धार ।।टेक।।
सब कर्मों से सत्संग प्रधान है।
जामें धर्म कर्म औ भक्ती ज्ञान है।
वेद पुरान पुकार, है सत्संग सार,
जांसे होय उद्धार ।।१।।
जब सैने का सत्संग से होया प्यार।
नाई बनके आया आप कृष्ण मुरार।
तप से सत्संग बड़ा, किया धरनि को खड़ा,
जांसे होय उद्धार ।।२।।
सत्संग से सदा जोग जुगती मिले।
कहे टेऊँ परम शान्ति मुक्ती मिले।
सत्संग से सज्जन, पावो सुख का सदन,
जांसे होय उद्धार ।।३।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ६१ ।। ७०९।।

करो सन्तों का सत्संग, यह मोक्ष द्वारा है ।।टेक।।
सत्संग के करने से, बहु पापी मुक्त होए।
बालमीक सैन सधना, अजामेल उद्धारा है ।।१।।
सत्संग में ज्ञान बढ़े, अज्ञान दूर होवे।
सब तप्त हरे मन की, दे शान्ति भण्डारा है ।।२।।
सन्तों की सच्ची शिक्षा, मुश्किल में काम आवे।
कहे टेऊँ वचन येही, वेदों ने उचारा है ।।३।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ६२ ।। ७१०।।

करता हूं अर्दास, सुनले सत्गुरु मेरे ।।टेक।।
ब्रह्म ज्ञान का देकर दाना, काटो कर्म की फास ।।१।।
बीज चन्द्र ज्यों बढ़ती जाये, पारब्रह्म की प्यास ।।२।।
कहे टेऊँ सब बन्धन टूटे, जगे न जग की आस ।।३।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ६३ ।। ७११।।

सत्गुरु के है हाथ, कुंजी चित्त चौबारे की ।।टेक।।
पूर्ण गुरु की शरणी जाकर, राज योग की युक्ती पाकर।
खोलो श्रद्धा साथ, खिड़की दसम द्वारे की ।।१।।
भेद भ्रम सब करके नासा, पूरण मन में धर विश्वासा।
सत्गुरु से सुन गाथ, साक्षी सिरजण हारे की ।।२।।
कहता टेऊँ सत्गुरु संग में, रंगले मन को आत्म रंग में।
पीवो अमृत पाथ, मिटे भय काल करारे की ।।३।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ६४ ।। ७१२।।

मेरे मन अब जाग, हरि का भजन करो ।। टेक।।

जागन का यह अवसर आया, मानुष तन तुम पुण्य ते पाया।
सत्गुरु के संग लाग ।।१।।

झूठे जग के नाते तोड़े, जगतपती से जिय को जोड़े।
करे सर्व का त्याग ।।२।।

कहता टेऊँ सुनले प्यारे, ब्रह्म ज्ञान को हृदय धारे।
खोलो अपना भाग ।।३।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ६५ ।। ७१३।।

कब होणी मिटंदी नाहीं, भलि कितना भी तुम चाहीं।। टेक।।

राम लखन सिय बैठे बन में, सब कुछ जानत अपने मन में।
तिहं ले गये मृग पराहीं ।।१।।

कृष्ण का कुल यादव सारा, तांको शाप दिया मुनि भारा।
हरि हटा सके नहिं ताहीं ।।२।।

पांचों पाण्डव योद्धे भारी, बन बन फिरते भये दुखारी।
कुछ चली न शक्ती काहीं ।।३।।

कहे टेऊँ ना भावी टरहैं, चाहे कोटि यतन को करहैं।
यह लिखिया ग्रन्थों माहीं ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ६६ ।। ७१४।।

ज्यों सरिता सागर जासी, त्यों ब्रह्म भजो जिज्ञासी ।। टेक।।

चकोर चाहत जैसे चन्द को, ज्यों मीना जल की रासी ।।१।।

भौंरा चाहत ज्यों फूलों को, ज्यों पपीहा बूंद प्यासी ।।२।।
मृग चहत ज्यों नाद ध्वनि को, ज्यों पतंग दीप पर आसी।।३।।
कहता टेऊँ घन को मोरा, ज्यों चाहत बारह मासी ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ६७ ।। ७१५।।

राम कथा राम कथा, सुन राम स्नेही, राम कथा ।।टेक।।
राम कथा कलि दोष मिटावे, राम चरण में प्रीति बढ़ावे।
जाहिं सुने हो सफली देही ।।१।।
राम कथा हरि भक्तनि भावे, निशिवासर ही सुने सुनावे।
राम कथा रस पीवत नेही ।।२।।
राम कथा है सब सुख खानी, मोह ममत की करती हानी।
बात कहूं मैं इसकी केही ।।३।।
राम कथा में रुचि है जिनकी, कहे टेऊँ रज मांगूं तिनकी।
बड़भागी हैं निश्चय तेही ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ६८ ।। ७१६।।

देखो नैन खोलके, तुम अद्भुत ही इसरारा है ।।टेक।।
पांच तत्त्व का तन ना तेरा, ना अंग ना आकारा है ।।१।।
छोटा लम्बा सीधा टेढ़ा, ना हल्का ना भारा है ।।२।।
मन बुद्धि आदिक ना इन्द्रियगण, ना गोरा ना कारा है ।।३।।
नाम न धाम न ज़ाति वर्ण तव, ना कुल ना परिवारा है ।।४।।
कहे टेऊँ तुम बाहर भीतर, ना मिलिया ना न्यारा है ।।५।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ६९ ।। ७१७।।

ऊठ मुसाफिर समर साधो, दूर देश है तुझको जाना ।। टेक।।
सन्त ग्रन्थ नित करत पुकारा, ऊँचे स्वर से गायके।
पूर्ण श्रद्धा मन में धारे, वचन सुनो वह देकर काना ।।१।।
सोवत सारी रैन गंवाई, दिवस गया व्यवहार में।
अब भी तुम कुछ सोचत नाहीं,देख दुनिया को भया दिवाना ।।२।।
कहे टेऊँ अब करो तयारी,आलस को तुम त्याग के।
वणज ले लो शुभ कर्म का, हृदय हरि का धरो ध्याना ।।३।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ७० ।। ७१८।।

गुरू अर्ज़ करूं तुझको।
क्यों जीव दुखी होते, यह उत्तर दे मुझको ।। टेक।।
जो कर्म करे जैसा।
सो निश्चय करके ही, फल पावत है तैसा ।।१।।
दुख पापों का फल है।
शुभकर्मों से सुख ही, सब जीवों को मिलहै ।।२।।
मेरी शिक्षा सुन लीजे।
तज पाप कपट छल को, नित पुण्य कर्म कीजे ।।३।।
पुण्य पाप लखूं कैसे।
कहे टेऊँ गुरु ज्ञानी, सत् शास्त्र कहें जैसे ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ७१ ।। ७१९।।

मेरे परम प्रेमी आज, कथा भगवत की सुनो ।।टेक।।
देव लोक में अमृत जो है, सो ना अमृत जान ले।
कथा हरी की अमृत साचा, भूमी पर पहिचान ले।
सब छोड़े घर के काज ।।१।।
कथा हरी की जहं नित होवे, गोबिन्द का वह गाम है।
वह तीर्थ वह ठाकुरद्वारा, शिव ब्रह्मा का धाम है।
तहं आप बसे महाराज ।।२।।
कथा हरी की भूप परीक्षित, जैसे सुन ली प्यार से।
तैसे तुम भी कथा हरी की, सुनले नित सत्कार से।
मिले मुक्ती का स्वराज ।।३।।
कली काल में कथा हरी की, उत्तम धर्म यह मान ले।
कहे टेऊँ फल चारों देती, श्रद्धा उस में आन ले ।
वह राखे तेरी लाज ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ७२ ।। ७२०।।

मेरे परम स्नेही नेक, कथा सोऽहम् की सुनो ।।टेक।।
देव सकल मिल खोजन चाले, जग का कर्त्ता कौन जी।
नभ से सोऽहम् बानी होई, आप रहो सब मौन जी।
मैं सब जग की हूं टेक ।।१।।
ब्रह्म आत्मा देह विश्व में, वायू रसना मान ले।
सोऽहम् सोऽहम् केवल तांकी, सहजे भाषा जान ले।
मन चित्त को करके एक ।।२।।

प्रान अपान के घोड़े चढ़ कर, सैर करे ब्रह्माण्ड में।
सोऽहम् बिन घट को ना खाली, सारे इस वरभाण्ड में।
निज बुद्धि से करो विवेक ।।३।।
अनुभव रूपी भावना मात्र, सबके रहता मूल में।
कहे टेऊँ थिर रहो मूल में, भूल पड़ो ना थूल में।
सुख इस बिन और अलेक ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ७३ ।। ७२१।।

मेरे परम प्रेमी श्रेष्ठ, ज्ञान सोऽहम् का सुनो ।। टेक।।
हंस उलट कर सोऽहम् बनिया, कहा हंस अवतार जी।
सोऽहम् सोऽहम् जपते जीवा, बनता हरि आकार जी।
यों कहते जन उत्कृष्ट ।।१।।
ओऽम् सोऽहम् से प्रकट होया, यांते सोऽहम् रूप है।
उभय शब्द का अर्थ एक ही, कहते मुनि जन भूप हैं।
यों लखने से अघ नष्ट ।।२।।
सोऽहम् अपनी जान स्थिती, मार्ग उसका ओम् जी।
ओम् उपासक सोऽहम् रस को, होय प्राप्त सोम जी।
तहं अमृत रस की वृष्टि ।।३।।
आदि अन्त में सोऽहम् ही है, मध्य भी सोऽहम् रहत है।
कहता टेऊँ सब घट व्यापक, गुरुमुख कोई लहत है।
रहे जां पर गुरु की दृष्टि ।।४।।

।। राग पहाड़ी भजन ।। ७४ ।। ७२२।।

मेरे उत्तम जिज्ञासी आप, बात स्वरूप की सुनो ।। टेक।।

विषय कथन की ना है साखी, कथन रहित निज रूप है।
मन बुद्धि वाणी लखे न तांको, अनुभव रूप अनूप है।
उस छुए न को वर शाप ।।१।।

अचरज कहना अचरज सुनना, अचरज उसका सोचना।
अचरज महिमा अचरज उपमा, अचरज उसका लोचना।
सो अचरज रूप अजाप ।।२।।

कारण कार्य का गुण कोई, परस सके ना एक तां।
वेद शास्त्र पुराण स्मृती, जान सके नहिं नेक तां।
सो निर्लेपी निष्पाप ।।३।।

तन की मैं से मन की मैं से, बुद्धि की मैं से हीन सो।
ज़ाति पाति कुल वर्ण धर्म की, मैं से निपट विहीन सो।
सो बिन माई बिन बाप ।।४।।

अपने को वह आपहिं जाने, और न जाननहार तां।
अपने को वह आप ही देखे, और न देखनहार तां।
सो आत्म अलख अमाप ।।५।।

ब्रह्म रूप से भिन्न न साक्षी, तेरा ब्रह्म स्वरूप है।
कहे टेऊँ लख गुरु कृपा से, पूर्ण अगम अरूप है।
सो निर्द्वन्द्वा निस्ताप ।।६।।

।। राग पीला भजन ।। १ ।। ७२३।।

दिल को मिलाओ तुम, दीन दयाल से।
दीन दयाल से, गोविन्द गोपाल से ।। टेक।।
संग न करना कब, भोग कराल से।
प्रीति लगाओ गुरु, सन्त मराल से ।।१।।
जीते जुदाई करो, जगत जंजाल से।
नेह निभाओ नित, हरि प्रतिपाल से ।।२।।
जीत करो जन, मन बैताल से।
सहज समाओ निज, स्वरूप विशाल से ।।३।।
कहता टेऊँ तोड़ो, लेखा जम काल से।
वृत्ति लगाओ तुम, ब्रह्म अकाल से ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। २ ।। ७२४।।

दर्शन तेरे की प्रभू, मुझको प्यास है ।। टेक।।
प्रेम आवेश आवे, नैनों से नीर जावे।
और न स्वाद भावे, तुम्हरी खुवाश है ।।१।।
प्रेम तेरे की पीरा, लागत जैसे तीरा।
मोहि न आवे धीरा, मनुवा उदास है ।।२।।
डुबते को तीर जैसे, प्यासे को नीर जैसे।
बालक को खीर जैसे, तैसे अभिलाष है ।।३।।
कहे टेऊँ पंछी होवां, उड़कर दर्शन जोवां।
तन मन के दुख खोवां, यही मन आश है ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। ३ ।। ७२५।।

अमरापुर के योगी आया, जुग जुग जीव उबारा ।।टेक।।
क्षमा सम संतोष विचारी, परमार्थ से पर उपकारी।
प्रेमिन किया पुकारा, तब धार लिया अवतारा ।।१।।
दानी जत सत धीरजधारी, बाहर भीतर भजन भण्डारी।
ज्ञान अमर फल सारा, नित करते सन्त अहारा ।।२।।
बिन भूमी जिन बाग़ लगाया, चारों साधन चिमन बनाया।
पुष्प गुणों गुलिज़ारा, उपदेश हुआ हुबकारा ।।३।।
अष्ट कमल पर आसन कीया, अमर देश को देख सु लीया।
पाया दिव्य दीदारा, तनि देखा अगम अपारा ।।४।।
कहे टेऊँ कर जोड़ पुकारे, भाग जगे घर आये हमारे।
लेखा जम निवारा, तब होया जय जयकारा ।।५।।

।। राग पीला भजन ।। ४ ।। ७२६।।

धन धन भाग हमारा, मोहि मिलिया हरिजन प्यारा ।। टेक।।
बादल हरिजन ज्ञान गरजना, प्रेम की बिजली आनन्द पवना।
बरसे शान्ती धारा, जिहं तपते मन को ठारा ।।१।।
ज्ञान सूर्य का रोशन भैया, भ्रम अन्धेरा संसा गैया।
छुप गये चोर विकारा, यह तन मन भया सुखारा ।।२।।
आनन्द मंगल मन में पाया, दूख दर्द सब संकट जाया।
बिगड़ा काज संवारा, उर भरिया भक्ति भण्डारा ।।३।।
कहे टेऊँ मम भाग विशाला, हरिजन पेखे भया निहाला।
अनुभव खुला किवारा, मैं देखा हरि दीदारा ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। ५ ।। ७२७।।

तुम राम जपो नर नारी, है नाम जपन की वारी ।।टेक।।

राम जपन हित यह तन पाया, राम जपे कर सफली काया।

वेद कहत यों चारी ।।१।।

कलियुग में इक नाम अधारा, भव जल पार उतारनहारा।

सन्तनि साख उच्चारी ।।२।।

नाम पाप सब ताप निवारे, आदि अन्त है संग तुम्हारे।

करे सदा रखवारी ।।३।।

कहे टेऊँ नित नाम जपीजे, नाम जपन में विलम्ब न कीजे।

मानो सीख हमारी ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। ६ ।। ७२८।।

हरि नाम जपो तुम प्यारा, जो भव जल तारण हारा ।। टेक।।

नाम जपे भव तरिया पीपा, नाभा नापा नामा छीपा।

दादू तरे पिंजारा ।। १।।

बालमीक दो भील चण्डाला,भक्त सुदामा तरे कंगाला।

भया अजामिल पारा ।।२।।

तरे कबीरा सैना नाई, जाट धन्ना सधना कासाई।

पुनि रविदास चमारा ।।३।।

कहे टेऊँ हरि नाम उचारे, उधरे नीच ऊँच नर सारे।

पाया हरि दीदारा ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। ७ ।। ७२९।।

जे दान अभय के दानी, से साधू ब्रह्मज्ञानी ।।टेक।।
काम क्रोध नहिं लोभ अहंता, हर्ष शोक नहिं करते ममता।
सर्व गुणों की खानी ।।१।।
पूरन तिनकी कहनी बहनी, योग युक्ति युत राखत रहनी।
बोलत अमृत बानी ।।२।।
हार जीत नहिं वैरी मीता, करत सहारो आतप सीता।
नांगा से निर्बानी ।।३।।
जग में रहते जीवन मुक्ता, ब्रह्म नेष्ठी ब्रह्म श्रोता।
धीरजवान ध्यानी ।।४।।
कहता टेऊँ परम उदारी, सगुण रूप हैं नित अवतारी।
अनुभव घर के थानी ।।५।।

।। राग पीला भजन ।। ८ ।। ७३०।।

तुम साध संगति में आओ, नित गोविन्द के गुन गाओ।। टेक।।
मानुष चोला दुर्लभ पाया, ग़ाफिल भोगों माहिं गँवाया।
अब तो सफल बनाओ ।।१।।
सन्तों का संग निशदिन करिये, श्रद्धा से हरि नाम सुमरिये।
मन को नाहिं डुलाओ ।।२।।
साध संगति की सेवा कीजे, तन मन धन की भेटा दीजे।
ममता मोह मिटाओ ।।३।।
सन्त वचन धर मन में प्यारा, कहे टेऊँ होवे निस्तारा।
फेर जन्म नहिं पाओ ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। ९ ।। ७३१।।

हरी नाम नहिं ध्याया, तुम वृथा जन्म गंवाया ।।टेक।।
मात गर्भ में कर इकरारा, बाहर निकसा नाम बिसारा।
मीठी लागी माया ।।१।।
बालापन खेलन में खोया, कबहूं हसिया कबहूं रोया।
सोच बिना दुख पाया ।।२।।
जोबन में प्रिय लागी नारी, तां हित पाप किया बहु भारी।
कर्म न नेक कमाया ।।३।।
बूढ़ापन में होय अधीना, कहे टेऊँ हरि भजन न कीना।
बहुता लोभ बढ़ाया ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। १० ।। ७३२।।

सन्त सज्जन घर आया, मैं मिल कर मंगल गाया ।।टेक।।
दो कर जोड़ करे प्रणामा, तन मन भेट धरे धन धामा।
ले हरि नाम ध्याया ।।१।।
सन्तों की मैं करके सेवा, देखा अन्तर आत्म देवा।
मुक्ति पदार्थ पाया ।।२।।
सन्तों की मैं सुन कर बानी, पाया पूरन पद निर्बानी।
जन्म मरन दुख जाया ।।३।।
कहे टेऊँ धन भाग हमारे, आज मेरे घर सन्त पधारे।
उर में आनन्द छाया ।।४।।

॥ राग पीला भजन ॥ ११ ॥ ७३३॥

गुरु मूरत मन धारो, तुम गुरु का नाम उच्चारो ॥टेक॥
पहले गुरु को तन मन धन दे, पीछे गुरु से नाम रतन ले।
सुमरो नाहिं बिसारो ॥१॥
नैन कान मुख को बन्द करके, अन्तर्मुख हो नाम सुमरके।
तांका अर्थ विचारो ॥२॥
इड़ा पिङ्गला सुषुम्न नाड़ी, इन से सुमरन कर सद्वारी ।
खोलो दसम द्वारो ॥३॥
कहे टेऊँ हरि सुमरन कीजे, अमर प्याला भर भर पीजे।
आवागमन निवारो ॥४॥

॥ राग पीला भजन ॥ १२ ॥ ७३४॥

तुम नाम जपो सुखकारी, यह जावे आयू सारी ॥टेक॥
गर्भ दुनिया का कभी न करिये, ध्यान हरी का दिल में धरिये।
मिले न ऐसी वारी ॥१॥
काम क्रोध तो लूट रहा है, श्वास अमोलक खूट रहा है।
वेग करो हुशियारी ॥२॥
नाम बिना नर ना को तेरा, जांको कहते मेरा मेरा।
झूठी जग की यारी ॥३॥
कहे टेऊँ सत् वचन हमारा, भजन बिना नहिं हो निस्तारा।
हरि सुमरो हरवारी ॥४॥

।। राग पीला भजन ।। १३ ।। ७३५।।

भोग विषय में भाई, क्यों वृथा उम्र गंवाई ।।टेक।।
मानुष तन का कदर न कीना, पांचों विषयों में मन दीना।
तुमको लाज न आई ।।१।।
पूरब पुण्य ते नर तन पाया, काम क्रोध मद माहिं गंवाया।
हरि से प्रीति न पाई ।।२।।
बिना विचारे मूण्ढ अज्ञानी, पाप कर्म बहु कीना प्रानी।
करी न नेक कमाई ।।३।।
कहे टेऊँ अब कर वीचारा, हरी भजन बिन नहिं निस्तारा।
सुमर सदा रघुराई ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। १४ ।। ७३६।।

यही जपन की वेरा, तुम राम जपो मन मेरा ।।टेक।।
निशदिन गोविन्द के गुन गावो, जीवन मुक्ती जग में पावो।
काल करे नहिं घेरा ।।१।।
मानुष जन्म भया प्रकाशा, अबहीं करलो ब्रह्म निवासा।
होगा फेर अन्धेरा ।।२।।
मात पिता सुत त्रिया भाई, जिनहों से तुम प्रीति लगाई।
होय संगी नहिं तेरा ।।३।।
कहता टेऊँ करो सुजागी, भजन करे नित हो बड़भागी।
पाओ निर्भय डेरा ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। १५ ।। ७३७।।

सुन समझ हरीजन प्यारे, चल सत्गुरु के दर्बा रे ।। टेक।।
श्रद्धा से कर सेवा गुरु की, लेवो नाम मुरारे ।।१।।
तन मन धन दे दक्षिणा गुरु को, आपा सर्व निवारे ।।२।।
नाम नाव में चढ़ कर बैठो, सत्गुरु पार उतारे ।।३।।
कहे टेऊँ गुरु संगति करके, पापी तरे अपारे ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। १६ ।। ७३८।।

गोबिन्द के गुन गाइ, तूं गोबिन्द के गुन गाइ ।। टेक।।
जिसने जन्म अमोलक दीना, तिसका कबहूं नाम न लीना।
तुमको ये न सुहाइ ।।१।।
ऊठत बैठत सोवत जागत, खावत पीवत बोलत चालत।
निशदिन नाम ध्याइ ।।२।।
हरि का नाम जपे हितकारी, उधरे नीच ऊँच नर नारी।
तूं भी राम रिझाइ ।।३।।
कहे टेऊँ हरि नाम जपीजे, राम जपन में विलम्ब न कीजे।
हरि से हेत लगाइ ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। १७ ।। ७३९।।

पीले गुरुमुख पीउ, तूं प्रेम प्याला पीउ ।। टेक।।
प्रेम प्याला है मतिवाला, पीने से मध चढ़े निराला।
भूले तन मन जीउ ।।१।।
प्रेम प्याला जिन जिन पीया, तिनको हरि ने दर्शन दीया।
तुम भी पाओ पीउ ।।२।।

प्रेम प्याला गुरु से लीजे, कहे टेऊँ पी जुग जुग जीजे।
जीव से होवो शीउ ।।३।।

।। राग पीला भजन ।। १८ ।। ७४०।।

सत्‌नाम साक्षी सर्व अधार, जो सुमरे सो उतरे पार ।। टेक।।
सत्‌नाम साक्षी मोहनी मंतर, तांका सुमरन करो निरन्तर।
सब साधन का जो है सार ।।१।।
सत्‌नाम साक्षी काज संवारे, तन मन के सब रोग निवारे।
सर्व सुखों का है भण्डार ।।२।।
सत्‌नाम साक्षी सब घट बोले, जो सुमरे तिस भाग्य खोले।
देवे परम पदार्थ चार ।।३।।
सत्‌नाम साक्षी है अविनासी, कहे टेऊँ काटे जम फासी।
देता है सो मोक्ष द्वार ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। १९ ।। ७४१।।

सीयाराम बोलो, राधेश्याम बोलो,
सब मिल कर बोलो राम राम राम ।। टेक।।
सत्‌संग में बैठ प्यारे, श्रीराम जो उच्चारे।
अपना सु आप तारे, परिवार पुनि उधारे ।।१।।
जो राम नाम बोले, अपना सो भाग्य खोले।
भव सिन्धु में न डोले, भगवान पाय चोले ।।२।।
जो राम को ध्यावे, दुख दर्द ताहिं जावे।
पद परम सोई पावे, फिर जोनि में न आवे ।।३।।
कहे टेऊँ साफ प्यारा, है राम सब अधारा ।
जिहं नीच ऊँच तारा, सुमरो तिसे उदारा ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। २० ।। ७४२।।

तेरी ग़ाफ़िल आयू सारी, गुज़र गयी सुते सुते।
अजे कीती ना हुशियारी, गुज़र गयी सुते सुते ।।टेक।।
तैं बाल अवस्था खोई, कछु खेलन में कछु रोई।
कछु चेत्ता नाहिं अनारी ।।१।।
तैं यौवन अवस्था भाई, रस भोगों माहिं बिताई।
कछु कीता ना अहंकारी ।।२।।
तैं वृद्ध अवस्था सारी, मोह ममता माहिं गुज़ारी।
कछु सोचा ना मति मारी ।।३।।
कहे टेऊँ ना कछु कीना, है धिक् धिक् तेरा जीना।
तैं जीती बाज़ी हारी ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। २१ ।। ७४३।।

समझ मना, समझ मना, समझ मना, समझ मना ।।टेक।।
यह जगत मुसाफिरखाना है, यह रहने का न ठिकाना है।
तुम दो दिन का महिमाना है ।।१।।
ये मात पिता सुत दारा है, सब स्वार्थ का परिवारा है।
को साथ न चलनेहारा है ।।२।।
ये भोग लगत जे प्यारा है, फल आख़िर इसका खारा है।
ये सन्तनि साफ पुकारा है ।।३।।
कहे टेऊँ सबका त्याग करो, हरि चरनों में अनुराग करो।
करे भक्ती ऊँचा भाग करो ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। २२ ।। ७४४।।

गुरूजी गुरूजी गुरूजी गुरूजी ।।टेक।।

तुम सर्व देवन के देवा हो, तुम आनन्द रूप अखेवा हो।
तुम आतम एक अभेवा हो ।।१।।

तुम आदि पुरुष अवतारी हो, तुम पावन परम उदारी हो।
तुम पूरण पर उपकारी हो ।।२।।

तुम सब जग के पित माता हो, तुम दीनबन्धु सुखदाता हो।
तुम तीन काल का ज्ञाता हो ।।३।।

तुम पूरण प्रेम प्रकाशी हो, तुम अमर देश के वासी हो।
तुम कहे टेऊँ सुखरासी हो ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। २३ ।। ७४५।।

तूंहीं तूं, तूंहीं तूं, तूंहीं तूं, तूंहीं तूं ।।टेक।।

तूंहीं अलख पुरुष अविनासी है, तूंहीं चेतन आनन्द रासी है।
तूंहीं निज महिमा में वासी है ।।१।।

तूंहीं अक्षर ओऽम्कार हरी, तूंहीं निर्गुण निरआकार हरी।
तूंहीं सगुण रूप साकार हरी ।।२।।

तूंहीं विष्णू अज त्रिपुरारी है, तूंहीं रामचन्द्र अवतारी है।
तूंहीं नरसिंह कृष्ण मुरारी है ।।३।।

तूंहीं कहे टेऊँ कर्तार सदा, तूंहीं साक्षी सर्व आधार सदा।
तूंहीं अनुभव रूप अपार सदा ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। २४ ।। ७४६।।

लख चौरासी जोनियों का सरदार मानुष है ।।टेक।।
घोड़े पर करे सवारी, हाथी पर धरे अम्बारी ।
सब मानुष की अखित्यारी, मुखित्यार मानुष है ।।१।।
पशु पंछी मागर मीना, पुनि भूत प्रेत प्रबीना।
सब मानुष के आधीना, बलदार मानुष है ।।२।।
जे जग में चारों खानी, तांमें है मनुष विज्ञानी ।
नहिं मानुष के को शानी, गुणकार मानुष है ।।३।।
तन मानुष को सुर चाहत, यह भाग बड़े को पावत।
कहे टेऊँ सब गुण गावत, इसिरार मानुष है ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। २५ ।। ७४७।।

इस जगतर में तुम जानो, गुज़रान दो दिन का ।।टेक।।
तुम देख कुटुम्ब को मोह्या, यह जन्म अमोलक खोया।
कछु तोहि विचार न होया, है कोई ना किन का ।।१।।
तुझ लागी नींद प्यारी, ना ग़ाफ़िल करी तयारी।
अति दूर भयानक भारी, मग आगे है रिन का ।।२।।
नित वेद करत वख्याना, नहिं सुनते हो नादाना ।
क्यों विषयों में लपटाना, जो सुख है पल छिन का ।।३।।
कहे टेऊँ नर सुन लीजे, अब भोगों को तज दीजे।
मिल गुरु से हरि रस पीजे, जग जानो ये तिनका ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। २६ ।। ७४८।।

यह जन्म अमोलक हीरा, तुम नाहिं गंवाओ रे ।।टेक।।
सन्तों से प्रीति लगाके, निशिवासर टहल कमाके।
सब मन के पाप मिटाके, अब पुण्य कमाओ रे ।।१।।
दे जीवों को सन्माना, लख सब में श्री भगवाना।
दिल किसकी नाहिं दुखाना, मन प्रेम बढ़ाओ रे ।।२।।
कर तन मन धन कुर्बानी, ले गुरु से नाम निशानी।
तां सुमरे गुरुमुख ज्ञानी, सुख शान्ती पाओ रे ।।३।।
कहे टेऊँ प्रेम प्रकाशी, कट जन्म मरण की फासी।
हो अमरापुर का वासी, निज ब्रह्म समाओ रे ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। २७ ।। ७४९।।

है सन्त गुरू से मिलता, हरि प्रेम प्याला जी ।।टेक।।
जनक परीक्षा लीनी, शुक ने पूरन दीनी,
तब तांके उर में कीना, हरि ज्ञान उज्याला जी ।।१।।
गोरख ने अज़माया, भरथरी को अपनाया,
फिर तांको भर कर दीया, हरि प्रेम रसाला जी ।।२।।
रामानन्द ने निरक्षा, पीपे को बहु परिक्षा,
फिर तांके हृदय लाया, हरि रंग गुलाला जी ।।३।।
टेऊँ जो शिर देवे, प्रेम सुधा सो लेवे,
यह प्रेम सुधा जिन पीया, वे भये निहाला जी ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। २८ ।। ७५०।।

आज मेरे घर सन्त पधारे, मंगल गाऊँ मैं ।। टेक।।

फूलों से मैं सेज सजाये, तां पर सन्तों को बैठाये।
मोती माला गल में पाये, सीस निवाऊँ मैं ।।१।।

सन्तों की मैं करके सेवा, पाऊँ चार पदार्थ मेवा।
देखूं अन्तर आतम देवा, ध्यान लगाऊँ मैं ।।२।।

नाना विधि प्रसाद बनाये, भाव भक्ति से ताहिं खिलाये।
पान सुपारी भेंट चढ़ाये, चंवर झुलाऊँ मैं ।।३।।

कहे टेऊँ कर जोड़ पुकारे, आज भया धन भाग हमारे।
सन्तों ने सब काज संवारे, सदके जाऊँ मैं ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। २९ ।। ७५१।।

सत्संग की हमेशा, सन्तनि हटी निकाली ।। टेक।।

जो सन्त पास आवे, तिसको शिक्षा सुनावे।
निज धर्म में लगावे, सन्तों की एह चाली ।।१।।

आतम विद्या पढ़ाये, संसा सकल मिटाये।
रंग राम का चढ़ाये, करते बुद्धी उजाली ।।२।।

कहे टेऊँ सन्त सारे, गुण ज्ञान देनहारे।
जाओ तिनी द्वारे, छोड़े कभी न खाली ।।३।।

।। राग पीला भजन ।। ३० ।। ७५२।।

राम जपो हरवार, रे मन राम जपो ।।टेक।।

भक्त प्रह्लाद ने राम संभारा, नरसिंह रूप हरी तब धारा।
दिया दैत्य को मार ।।१।।

राम नाम को उल्टा गाये, बालमीक जा ब्रह्म समाये।
जानत सब संसार ।।२।।
अजामेल पापी हत्यारा, अन्त समय हरिनाम उचारा।
यमदूत गये हार ।।३।।
शुक गनिका को राम पढ़ाया, तांको सुमर सुमर सुख पाया।
गयी देवों के द्वार ।।४।।
गज ने आधा राम उचारा, हरि ने आय ग्राह को मारा।
होई जै जैकार ।।५।।
कहे टेऊँ जिन राम सुमरिया, भवसिंधु से वे पार उतरिया।
कहते सन्त पुकार ।।६।।

।। राग पीला भजन ।। ३१ ।। ७५३।।

जानो अपर अपार, महिमा सत्संग की ।। टेक।।
जहं जहं सन्तों का है वासा, तहं तहं नारद करूं निवासा।
हरि ने कहा पुकार ।।१।।
अश्वमेध का फल है जोई, इक इक पग से मिलता सोई।
जाते सन्त द्वार ।।२।।
तप से जान बड़ा सत्संगा, प्रगट ऋषियों का प्रसंगा।
शेष कीया आचार ।।३।।
कहे टेऊँ जग साधन जेते, साध संग सम ना हैं तेते।
करते वेद उचार ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। ३२ ।। ७५४।।

भगवत की हरवार, प्यारे कथा सुनो ।। टेक।।

हरि की कथा पाप परिहारे, दोष दर्द सब ताप निवारे।

भव जल तारे पार ।।१।।

हरि की कथा सदा सुखकारी, हरि भक्तों को लागत प्यारी।

सुनिये श्रद्धा धार ।।२।।

हरि की कथा सदा सुखदाई, श्रवण करो परीक्षित न्याई।

कथा उद्धारनहार ।।३।।

कहे टेऊँ हरि कथा सुनीजे, मनन उसी का मन में कीजे।

कथा मुक्ति का द्वार ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। ३३ ।। ७५५।।

मन जीते जग जीत, मन से जीत करो ।। टेक।।

मन के बेटे पांच विकारा, पांचों मार करो जयकारा।

गुरु शिक्षा ले मीत ।।१।।

मन की माता ममता मारो, मन के बाप गर्व को गारो।

धार नम्रता चीत ।।२।।

मन की नारि तृष्णा त्यागो, भोग विषय ते भय कर भागो।

गाओ गोविन्द गीत ।।३।।

मन का फुरना मलिन मिटाओ, कहे टेऊँ हरि ध्यान लगाओ।

जग से होय अतीत ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। ३४ ।। ७५६।।

सत्गुरु की सद्वार प्यारे सेव करो ।। टेक।।

गुरु को हरि की मूरत मानो, मनुष भाव ना तांमें आनो ।
दोषनि दृष्टि निवार ।।१।।

गुरु को दण्डवत वन्दना कीजे, सेवा में तन मन धन दीजे ।
लीजे जन्म सुधार ।।२।।

गुरु मन्त्र में मन को लाओ, गुरु चरणों में ध्यान लगाओ ।
आठों पहर उदार ।।३।।

कहे टेऊँ गुरु आज्ञा धरिये, भाव भक्ति से हृदय भरिये।
पाओ मोक्ष द्वार ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। ३५ ।। ७५७।।

जीवन वृथा जान, हरि के प्रेम बिना ।। टेक।।

प्रेम बिना मन ठौर न पावे, प्रेम बिना बहु भटका खावे।
देखे दूख महान ।।१।।

प्रेम बिना प्रतीत न आवे, प्रेम बिना हरि चीत न आवे।
रीझे ना भगवान ।।२।।

प्रेम बिना होवत नहिं ज्ञाना, प्रेम बिना नहिं लागे ध्याना।
मिले न पद निर्बान ।।३।।

कहे टेऊँ सब सन्त सुनावे, प्रेम बिना कछु हरि ना भावे।
कबहूं न हो कल्यान ।।४।।

॥ राग पीला भजन ॥ ३६ ॥ ७५८॥

दीनों को तुम दान, दिल से दीया करो ॥टेक॥
देने से धन बढ़ता जावे, इक देवे सो दश को पावे।
निश्चय करके जान ॥१॥
दान देन में विलम्ब न कीजे, मन पर कबहूं नाहिं पतीजे।
चंचल मन पहिचान ॥२॥
दानी कबहूं नरक न जावे, मर कर सीधा स्वर्ग सिधावे।
सुर मुनि दे सन्मान ॥३॥
कहे टेऊँ कर दान सुजाना, मानुष का कर्तव्य दे दाना।
ब्रह्मा का वख्यान ॥४॥

॥ राग पीला भजन ॥ ३७ ॥ ७५९॥

रसना से हरबार, प्यारे सच बोलो ॥टेक॥
सच बराबर तपस्या नाहीं, पढ़कर देखो ग्रन्थों माहीं।
सच से राखो प्यार ॥१॥
सच का बेड़ा हिलता डुलता, भवसागर में कबहुं न डुबता।
आखिर उतरे पार ॥२॥
पहले सच में है दुख भारी, पीछे होवे सूख अपारी।
रीझे सत्कर्तार ॥३॥
कहे टेऊँ तांते सच बोलो, सच की तकड़ी हरदम तोलो।
जांसे जै जैकार ॥४॥

।। राग पीला भजन ।। ३८ ।। ७६०।।

प्रभू दीना नाथ, मेरे दूख हरो ।। टेक ।।

दुख भञ्जन है नाम तुम्हारा, तुम भक्तों के दूख निवारा।
प्रगट है ये गाथ ।।१।।

डूबत हूं मैं भवसिन्धु माहीं, नाथ निकारो पकड़े बाहीं।
राखो शिर पर हाथ ।।२।।

कहे टेऊँ कर जोड़ अर्दासा, कष्ट विघ्न कट यम की फासा।
दया करे रघुनाथ ।।३।।

।। राग पीला भजन ।। ३९ ।। ७६१।।

मुझको लागी लोर, गुरु के दर्शन की ।। टेक।।

ज्यों मछली चाहत जल रासी, पपीहा स्वान्ति बून्द का प्यासी।
प्यास लगी त्यों घोर ।।१।।

जैसे कुरंग नाद को चाहत, भँवरा ज्यों पंकज मन लावत।
ज्यों चन्द चाह चकोर ।।२।।

जैसे पति को चाहत नारी, ज्यों राजा को नीति प्यारी।
ज्यों बादल को मोर ।।३।।

कहे टेऊँ मोहि नींद न आवे, गुरु दर्शन बिन कछु ना भावे।
लगन लगी संझ भोर ।।४।।

॥ राग पीला भजन ॥ ४० ॥ ७६२॥

चलिये श्रद्धा धार, प्यारे सत्संग में ॥ टेक॥

सत्संग तन मन शीतल करहैं, पाप ताप को शीघ्र हरहैं।
देवे अनन्द अपार ॥१॥
सत्संग में हरि का रंग लागे, अविद्या निद्रा से मन जागे।
पावे तत्त्व विचार ॥२॥
सत्संग है निज मोक्ष द्वारा, सत्संग बिन ना हो निस्तारा।
कहते ग्रन्थ पुकार ॥३॥
कहे टेऊँ सत्संग सुखदाई, जांकी महिमा श्रीपति गाई।
गावत पुनि षट् चार ॥४॥

॥ राग पीला भजन ॥ ४१ ॥ ७६३॥

धारे गुण गुणवान, आयू सफल करो ॥ टेक॥

जप तप कर तीर्थ स्नाना, दीन जनों को देके दाना,
सेव करे निर्मान ॥१॥
श्रद्धा से नित सत्संग करके, सन्त वचन को हृदय धरके,
पाए आतम ज्ञान ॥२॥
हरि चरनों में चीत लगाओ, जन्म जन्म के पाप मिटाओ,
सुमरे श्री भगवान ॥३॥
कहे टेऊँ गुरु शब्द उचारे, मन के फुरने सर्व निवारे,
पाए सूख महान ॥४॥

।। राग पीला भजन ।। ४२ ।। ७६४।।

नींद न आवे नैन, गुरु के दरस बिना ।। टेक।।

गुरु बिन दिल को धीर न आवे, जीअ को चिन्ता आग जलावे,
चित ना पावे चैन ।।१।।

गुरु बिन मन को नाहिं करारी, दर्शन बिन दुख है उर भारी,
रोता हूं दिन रैन ।।२।।

गुरु बिन मुझको बिरह सतावे, खाना पीना मोहि न भावे,
भावे ना सुख शैन ।।३।।

गुरु बिन मुझको शान्ति न आती, कहे टेऊँ गुरु प्यास सताती,
भावे मोहि न ऐन ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। ४३ ।। ७६५।।

गुरु आये मम धाम, हमरे भाग जगे ।। टेक।।

आज गुरू का दर्शन पाया, गुरु चरनों में सीस निवाया,
पाया सुख विश्राम ।।१।।

गुरु दर्शन से सब अंग फूले, प्रेम हिण्डोले में मन झूले,
होया पूरण काम ।।२।।

सत्गुरु मुझ पर कृपा कीनी, वस्तु अमोलक हमको दीनी,
दीना हरि का नाम ।।३।।

कहे टेऊँ गुरु ज्ञान बताया, पांचों भ्रान्ती भेद मिटाया,
पाया आतम राम ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। ४४ ।। ७६६।।

श्रद्धा मन में धार, नवधा भक्ति करो ।। टेक।।

श्रवण भक्ति परीक्षित कीनी, कीर्तन में शुक की मति भीनी।
त्यों तुम कर सद्वार ।।१।।

सुमरन भक्त प्रह्लाद ने कीया, पद सेवन लक्ष्मी चित्त दीया।
त्यों तुम करो उदार ।।२।।

अर्चन भक्ति पृथू ने धारी, वन्दन की अक्रूर प्यारी ।
त्यों तुम कर हरबार ।।३।।

दासी भक्ति कीन हनुमाना, सखा भक्ति पार्थ प्रधाना।
त्यों हरि से कर प्यार ।।४।।

आतम अर्पन कर बलि राजा, कहे टेऊँ पाया रघुराजा।
त्यों तुम पा दीदार ।।५।।

।। राग पीला भजन ।। ४५ ।। ७६७।।

करले संगति सार, प्यारे सन्तां दी ।। टेक।।

संतां के संग प्रेम है मिलन्दा, जन्म जन्म के भाग्य खुलन्दा,
मिलन्दा सत्कर्तार ।।१।।

वचन सन्तां दा जो मन धरन्दा, छिन में सर्व दूख सो हरन्दा,
पांदा सूख अपार ।।२।।

सन्तां संग जो हरि गुन गावहिं, तां हृदय नूं शान्ती आवहिं,
पावैं मोक्ष द्वार ।।३।।

कहता टेऊँ संग संतां दा, रैन दिवस है मुझको भांदा,
करंदा भव जल पार ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। ४६ ।। ७६८।।

जाग्या जाग्या भाग हमारा, खुलिया खुलिया पुण्य हमारा ।। टेक।।
आज दिवस धन भाग हमारे, मेरे घर में सन्त पधारे।
बलि बलि जाऊं मैं बलिहारे, होया अनन्द अपारा ।।१।।
आज मेरा सब अंग अंग फूला, प्रेम हिण्डोले मनुवा झूला।
सार वचन सुन तन मन भूला, भूल गया संसारा ।।२।।
आज नाम का सौदा लीना, भाव भक्ति में यह मन भीना।
मानो अठसठ तीर्थ कीना, पाया हरि दीदारा ।।३।।
आज बजा उर अनहद तूरा, कहे टेऊँ भये कारज पूरा।
नैने निरख्या निर्मल नूरा, सफल जन्म भया सारा ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। ४७ ।। ७६९।।

जागो जागो हो हुशियारा, पकड़ो पकड़ो चोर विकारा।। टेक।।
यह संसार मुसाफिरखाना, तांमें लोक सभी महमाना।
इक दिन यांसे होगा जाना, निश्चय जानो प्यारा ।।१।।
मात पिता सुत बान्धव नारी, तिन है जारी मोह पसारी।
झूठी जानो इनकी यारी, तांसे करो किनारा ।।२।।
हरि का नाम जपो दिन राती, पाओ अपने हृदय झाती।
देखो अपनी ज़ाति सनाती, होवे मोक्ष तुम्हारा ।।३।।
कहे टेऊँ चाहो कल्याना, गुरु से लेवो आत्मज्ञाना।
मेटे भेद भ्रम अज्ञाना, पाओ पद निर्धारा ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। ४८ ।। ७७०।।

जै जै सीताराम बोलो, जै जै राधेश्याम बोलो ।।टेक।।
राम कृष्ण दोनों इक रूपा, निश्चय जानो ब्रह्म स्वरूपा।
दोनों की है ऊप अनूपा, दोई नाम अमोलो ।।१।।
राम कृष्ण दोनों अवतारा, भक्तजनों का है रखवारा।
दैतनि मार किया जैकारा, बज गया जग में ढोलो ।।२।।
राम कृष्ण का नाम उचारे, नीच ऊँच नर तरे अपारे।
नाम उन्हों प्रसिद्ध जुग चारे, भक्त माल को खोलो ।।३।।
राम कृष्ण के चरन पड़ीजे, राम कृष्ण की भक्ति करीजे।
राम कृष्ण का ध्यान धरीजे, मन में कभी न डोलो ।।४।।
कहे टेऊँ चाहो कल्याना, राम कृष्ण में भेद न लाना।
श्रद्धा से तांके गुन गाना, सफल करो यह चोलो ।।५।।

।। राग पीला भजन ।। ४९ ।। ७७१।।

जपले हरि का जाप, कटे जो सकले मन के पाप,
यही हरिजन कहते।
साची हरि की प्रीति, जगत की झूठी है सब रीति,
यही हरिजन कहते ।।टेक।।
हरी नाम बिन को है न तुम्हारा, अन्त में है हरि नाम अधारा।
तांको जप दिन रात, चहत हो जे तुम नित कुशलात ।।१।।
हरी नाम है सुख शान्ति भण्डारा, जो सुमरे पाय मोक्ष द्वारा।
तांसे लाओ हेत, सदा जो मन वांछित फल देत ।।२।।
हरी नाम सम धन और न कोई, कहे टेऊँ यह पावे जोई।
जग में सो प्रधान, मिले तिहं हरि दरगह में मान ।।३।।

॥ राग पीला भजन ॥ ५० ॥ ७७२॥

जाग मुसाफिर जाग मुसाफिर, जाग मुसाफिर मूण्ढ अजाना।
नींद न कीजे गुरु मति लीजे, हरि रस पीजे कर गुन गाना ॥ टेक॥
मारग में तुम बैठ न जाओ, उठ कर आगे पांव बढ़ाओ।
यह संसारा चलने हारा, कछु न तुम्हारा क्यों लपटाना ॥ १॥
दुर्लभ पाया मानुष चोला, खोय न वृथा जन्म अमोला।
ध्यान धरीजे भजन करीजे, भ्रम हरीजे ले गुरु ज्ञाना ॥२॥
ऊठ मुसाफिर समय न खोना, गफ्लत में ना इतना सोना।
ना को तेरा ना को मेरा, जगत बखेरा छोड़ सुजाना ॥३॥
कहता टेऊँ करे सुजागी, हरि चरनों में हो अनुरागी।
श्रद्धा धर के सत्संग करके, भव से तरके मिल भगवाना॥४॥

॥ राग पीला भजन ॥ ५१ ॥ ७७३॥

आप पछानो आप पछानो, आप पछानो मीत हमारे।
आप पछाने सो हरि जाने, अविद्या हाने वेद पुकारे ॥ टेक॥
आप पछानन चाबी जानो, हरि पहिचानन केरी मानो।
हरि पहिचाने आप लखे नहिं, आप पछाने हरिहिं निहारे॥१॥
हरि का जानन सुगम पछानो, अपना जानन अगम पछानो।
हरि के जाने मोक्ष न पावे, आप पछाने हो भव पारे ॥२॥
कहे टेऊँ तुम सर्व त्यागो, अपने आतम में अनुरागो।
अपने जानन की गम लीजे, श्रद्धा से चल गुरु के द्वारे ॥३॥

।। राग पीला भजन ।। ५२ ।। ७७४।।

सत्गुरु मेरा सत्गुरु मेरा, सत्गुरु मेरा बेड़ा तारो ।।टेक।।
बाप न माई भैन न भाई, तुम बिन मेरा को न सहाई।
तूंही ताता तूंही माता, तूंही दाता देवन हारो ।।१।।
तुम हो सत्गुरु दीन दयाला, हरदम मेरा हो रखपाला।
हे कृपाला करो निहाला, काट जंजाला भव दुख भारो ।।२।।
कहे टेऊँ यह अरज़ हमारा, सत्गुरु मांगूं दरस तुम्हारा।
दरस दिखाए ज्ञान सुनाए, पाप मिटाए मोहि सुधारो ।।३।।

।। राग पीला भजन ।। ५३ ।। ७७५।।

सत्गुरु मेरे सत्गुरु मेरे, सत्गुरु मेरे अन्तर्यामी ।।टेक।।
तेरे दर पर मैं भीखारी, मांगूं प्रेमा भक्ति प्यारी।
दर्शन पाऊँ हरि गुन गाऊँ, चरन ध्याऊँ करूं नमामी ।।१।।
हे गुरु ज्ञानी आत्म ध्यानी, सर्व गुणों की हो तुम खानी।
बालक जानी कर महिरबानी, नाम निशानी दे सुखधामी।।२।।
तुम हो सत्गुरु नित अवतारी, जगत उद्धारी पर उपकारी।
भवजल भारी तार मुरारी, विनय हमारी सुनले स्वामी ।।३।।
कहे टेऊँ गुरु दीन दयाला, भर कर देवो प्रेम प्याला।
अविद्या वाला तोड़े ताला, करो उजाला पार ग्रामी ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। ५४ ।। ७७६।।

राम कहो तुम राम कहो तुम, राम कहो तुम मित्र हमारे।। टेक।।
राम नाम सुख शान्ति भण्डारा, जनम मरण दुख हरने हारा।
बन्ध छुड़ाए मुक्ति मिलाए, सहज समाए पद निर्धारे ।।१।।
राम नाम है बोहथ भारी, जो चढ़ता है ताहिं मंझारी।
ताहिं तरावत बार न लावत, पार पहुंचावत मोक्ष द्वारे ।।२।।
राम नाम जो मन में धारे, जम का दूत न तांको मारे।
राम जपीजे अमृत पीजे, जुग जुग जीजे प्रीतम प्यारे ।।३।।
कहे टेऊँ हरि नाम उचारे, राम नाम का अर्थ विचारे।
भ्रम मिटाओ आनन्द पाओ,फेर न आओ जगत मंझारे।।४।।

। राग पीला भजन ।। ५५ ।। ७७७।।

कृष्ण कन्हाई बन्सी बजाई, मेरे मन की सुधि बिसराई।
सुन सुखदाई शान्ती पाई, आनन्द माहीं सुरति समाई।। टेक।।
बन्सी को हरि मधुर बजाया, ब्रज सारे को मस्त बनाया।
ज्ञान भुलाया ध्यान भुलाया, शान भुलाया लाज गंवाई।।१।।
मुरली बजा हरि मुनिवर मोह्या, नारद शारद सुरनर मोह्या।
ब्रह्मा मोह्या विष्णू मोह्या, शंकर मोह्या गिरजा माई ।।२।।
इस मुरली की सुन गजकारे, गंगा यमुना सुन्न को धारे।
रवि शशि तारे गंधर्व सारे, पवन प्यारे स्थिति पाई ।।३।।
मुरली की है महिमा भारी, कहे टेऊँ यह वेद उचारी।
अमृतधारी है गुणकारी, भक्तनि प्यारी मुझको भाई ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। ५६ ।। ७७८।।

सत्गुरु आया सत्गुरु आया, सत्गुरु आया प्रीतम प्यारे।
दर्शन पाया मंगल गाया, आनंद छाया भवन हमारे ।। टेक।।
दो कर जोड़ करूं प्रणामा, भेट धरूं तन मन धन धामा।
फधल चढ़ाऊँ चंवर झुलाऊँ, सेव कमाऊँ श्रद्धा धारे ।।१।।
आज हमारे अंग अंग फूले, प्रेम हिण्डोले मनुवा झूले।
प्रेम प्याला पी मतवाला, भया निहाला सब दुख टारे ।।२।।
सत्गुरु अपनी कृपा कीनी, वस्तु अमोलक मुझको दीनी।
मन्त्र दीना सुमरण कीना, आत्म चीना भरम निवारे ।।३।।
कहे टेऊँ मन भया हुलासा, पूरण होई मेरी आसा।
पाये दर्शन होया प्रसन्न, हृदय हरसन सरसन सारे ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। ५७ ।। ७७९।।

मन मेरे निज आनन्द चाहो, ओम् सुमर तूं प्यारा रे ।। टेक।।
ईश्वर का यह नाम अनादी, इसका सकल पसारा रे।
सर्व नाम हैं ओऽम् अन्तर, वेदों का आधारा रे ।।१।।
आदी बोली है यह तेरी, भूला क्यों गेंवारा रे।
कहे टेऊँ नित ओऽम् सुमरे, हो जा ओम् अकारा रे ।।२।।

।। राग पीला भजन ।। ५८ ।। ७८०।।

देह मन्दिर में देव बिराजे, तांका हो पूजारी रे ।।टेक।।
और देव सब जिसको पूजत, जान सर्व से भारी रे।
उसी देव के पूजन बिन कब, मुक्ति न होय तुम्हारी रे ।।१।।

पूजन की विधि गुरु से लेकर, पूजो तिहं हरवारी रे।
कहे टेऊँ तिहं पूजन करके, तोड़ो जम की जारी रे ।।२।।

।। राग पीला भजन ।। ५९ ।। ७८१।।

मन मेरा सुख शान्ती चाहो, राम नाम गुण गाओ रे ।। टेक।।
सुख सागर है नाम हरी का, तांसे प्रीत लगाओ रे।
जगत पदार्थ दुखमय लखके, तांके तरफ न जाओ रे ।।१।।
नाम बिना सुरपति भूपति मन, सुख जो होय दिखाओ रे।
निर्धन हरी भक्त के मन में, दुख हो तो दरशाओ रे ।।२।।
कहता टेऊँ यह मति मेरी, हृदय में ठहराओ रे।
सत्पुरुषों के संग में रहकर, राम जपे सुख पाओ रे ।।३।।

।। राग पीला भजन ।। ६० ।। ७८२।।

मन मेरा खुद मस्ती चाहो, पीओ प्रेम प्याला रे ।। टेक।।
सन्तनि संग में प्रेम का सागर, उमड़ उठे हर काला रे।
तन मन धन की दक्षिणा देकर, लेवो प्रेम रसाला रे ।।१।।
नामदेव त्रिलोचन पीपा, सैन कबीर कमाला रे।
संतों के संग प्रेम प्याला, पी पी भये मतवाला रे ।।२।।
कहे टेऊँ इस प्रेम सिन्धू का, रस है बहुत विशाला रे।
एक बूंद जो पीवे सोई, मस्त रहे हर हाला रे ।।३।।

।। राग पीला भजन ।। ६१ ।। ७८३।।

मन मेरा जो मुक्ती चाहो, पाओ आतम ज्ञाना रे ।। टेक।।
ज्ञान बिना नहिं मुक्ती होवे, वेद करत वख्याना रे।
गुरु बिन ज्ञान कभी ना होवे, पढ़कर देख पुराना रे ।।१।।
तन से गुरु की सेवा कीजे, मन से ध्यान लगाना रे।
वाणी से कर गुरु की महिमा, धन की भेट चढ़ाना रे ।।२।।
कहे टेऊँ गुरु शरणी पड़कर, अपना काज बनाना रे।
पूरन सत्गुरु की कृपा से, पाओ पद निर्बाना रे ।।३।।

।। राग पीला भजन ।। ६२ ।। ७८४।।

मन मेरा जो हित को चाहो, कर्म करो वीचारे ।। टेक।।
ममता अरु फल आश धरे जो, कर्म करोगे प्यारे।
वे दुख सुख के दायक बनकर, तोहि बंधन में डारे ।।१।।
कर्तापन को मन से त्यागे, फल की आश निवारे।
इस विधि कर्म करोगे जो तुम, वे तव बन्धन टारे ।।२।।
पाप कर्म दे वास नरक में, काम्य स्वर्ग मंझारे।
कर्म अकाम करे शुद्ध मन को, भवसागर से तारे ।।३।।
कर्म करन में जीव स्वतन्त्र, भोगत परवश सारे।
ज्यों चोरी में चोर स्वतन्त्र, बांधा कष्ट सहारे ।।४।।
कहे टेऊँ तज पाप कर्म को, यह शिक्षा मन धारे।
हो निष्काम करो शुभ कर्मा, सत्संग सेव उदारे ।।५।।

।। राग पीला भजन ।। ६३ ।। ७८५।।

बन्धन से जो छूटन चाहो, जग से हो वैरागी रे ।।टेक।।
मृग गले ज्यों तुम्हरे मन में, ममता डोरी लागी रे।
माया खूंटी से तुम बांधे, मूंढमती दुर्भागी रे ।।१।।
विराग खञ्जर बुद्धि कर में ले, काट जेवरी जागी रे।
निर्बन्धन हो हरि को सुमरे, हरि में हो अनुरागी रे ।।२।।
पांच विषय में ममता करके, पांचों देह त्यागी रे।
ममता कर शुक मरकट आदिक, होये दुख के भागी रे ।।३।।
भोग विषय को दुखमय लख कर, होय न इनमें रागी रे।
कहे टेऊँ सब ममता त्यागे, हो जा तुम बड़भागी रे ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। ६४ ।। ७८६।।

मानुष जन्म अमोलक पाया, करले पर उपकारा रे ।।टेक।।
जिस तन से उपकार न होवे, सो तन है मुड़दारा रे।
मानुष हो पर काज न करहीं, तिहं जीवन बेकारा रे ।।१।।
घास खाय पशु दूध पिलावे, फल दे बिरछ अपारा रे।
बांस सीप गिरि मोती देवे, सांप देहि मणि प्यारा रे ।।२।।
मीठे मीठे भोजन खाकर, पीके ठण्डा वारा रे।
कुछ भी तुम उपकार न कीया, तांते तोहि धिकारा रे ।।३।।
कहे टेऊँ अजहूं नहिं बिगड़ी, मन में कर वीचारा रे।
तन मन धन से पर हित करके, अपना करो उद्धारा रे ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। ६५ ।। ७८७।।

मन मेरे तुम जग में आकर, नहिं सुमरा रघुराई रे ।। टेक।।
भारत में तुम भाग बड़ों से, मानुष देही पाई रे।
पुरुषार्थ से सफल करी नहिं, लेकर गुरु शरनाई रे ।।१।।
भजन करन हित हरि ने भेजा, ताहिं दिया बिसराई रे।
जिस कृपा से बहु सुख पाया, तांसे प्रीति न लाई रे ।।२।।
विषय भोग हित पाप कमाया, ज़रा लाज नहिं आई रे।
धर्मराज जब लेखा मांगे, क्या कहोगे भाई रे ।।३।।
कहे टेऊँ जो यहं नहिं सोचा, सोचोगे तहं जाई रे।
जम का डण्डा जब सिर लागे, तब हो को न सहाई रे ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। ६६ ।। ७८८।।

तजो पेट की चिन्ता प्यारा, सबका प्रभू है छालनहारा,
निश्चय जानो, सत्य कर मानो ।। टेक।।
गर्भ से जन्मा न बालक, दूध पहले त्यार है।
देत कण है कीट को हरि, हस्ती को बहु भार है।
बैठे अगजर को देत अहारा ।।१।।
मनुष को अन्न देत प्रभुजी, पशुवों को दे घास है।
सर्प को दे पवन माटी, शेर को दे मास है।
फल पंछियों को देत अपारा ।।२।।
जीव जे जल पान करते, ताहिं देता नीर है।
दूध जांका है अहारा, ताहिं देता खीर है।
जल थल में भी दे कर्तारा ।।३।।

कहत टेऊँ इस वचन को, दिल अन्दर धारो सभी।
भूख में पुनि दूख में, विश्वास ना हारो कभी।
लेवो ईश्वर का आधारा ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। ६७ ।। ७८९।।

धारो दिल में दया को उदारी, दया धर्म का मूल उचारी।
हे संसारी हे नर नारी ।।टेक।।
धर दया शिवि भूप ने राखा कपोता कोल जी।
बाज़ को निज मास दीना ताहिं बदले तोल जी।
दोनों लोक भई जयकारी ।।१।।
ज्यों कपोत कपोतिनी मिल दया निज दिल में धरी।
आपने तन को जलाके भूख अतिथी की हरी।
दोनों भये परलोक सुखारी ।।२।।
शेर का कांटा निकाला चोर बन में जायके।
जान वांकी छोड़ दीनी शेर ने सिर नायके।
देख विस्मय भया भूप भारी ।।३।।
अगर चाहो राज़ हरि का तां दया मन धारिये।
कहत टेऊँ प्राण रहने तक दया ना टारिये।
ऐसी वाणी वेद उचारी ।। ४ ।।

।। राग पीला भजन ।। ६८ ।। ७९०।।

किसने कर्म गती नहिं टारी, गति कर्मों की प्रबल अपारी।
हे सुजानो सत् कर मानो ।। टेक।।

देव दैत्यों ने किया जब क्षीर सागर को मथन ।
ज़हर अमृत आदि निकले ताहिं से चौदह रतन ।
मिली कर्मों से शिव विष भारी ।।१।।
राम बन सीया हरन दशरथ त्यागे प्रान जी।
कलंक केकई को लगा और लखन लागा बान जी।
मरे कर्म से रावण हंकारी ।।२।।
वर्ष तेरह पाण्डवों ने भोगिया बनवास जी।
कर्म करके नृप नल ने दुख सहा बन दास जी।
देह सर्प की नहुष ने धारी ।।३।।
कहत टेऊँ कर्म आगे ज़ोर किसका ना चले।
कर्म के वश सृष्टि सारी बीज कर्मों का फले।
भोगत कर्म को सब नर नारी ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। ६९ ।। ७९१।।

मोहि पार उतार अखेव गुरू,
मेरी लाज रखो हरि एव गुरू ।। टेक।।
दिल केरे दरियाह में, प्रवाह चिन्ता का बड़ा।
तमो गुण तूफान भारी, तरंग फुरना है खड़ा।
अज्ञ तम हरो रवि देव गुरू ।।१।।
शुभ अशुभ जिसके किनारे, सुख दुख की लहरी लगी।
लोभ के लुधड़े बने पुनि, वासना बग ज्यों जगी।
मच्छ मदन हरो सत् सेव गुरू ।।२।।

भ्रान्ति की बहुलण बड़ी है, कामना के कुन बहू।
विरोध के वागू बली अरु, क्रोध के भारी कछू।
भय दूर करो हरिदेव गुरू ।।३।।
कहत टेऊँ जोड़ कर यह, टेर गुरु मेरी सुनो।
ज्ञान नौका पर चढ़ा कर, भमर संसा सब हनो ।
माथे हाथ धरो महादेव गुरू ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। ७० ।। ७९२।।

सुनो शिष्य शब्द सत्य ये हमरो,
मेरे वचन पर विश्वास करो ।।टेक।।
जगत सागर के तरन हित, बोध के बेड़े चढ़ो।
ब्रह्मश्रोत्री ब्रह्मनेष्ठी, गुरू केवट कर बड़ो।
करे स्वास सुखानी सदा सुमरो ।।१।।
निरइच्छा कपियां खूहे से, डोर सत्य की बांधिये।
अष्ट साधन सिड़ह चढ़ाये, ताहिं निशदिन साधिये।
जत जंजीर प्रेम के पगह धरो ।।२।।
श्रुति निरती की रस्सी कर, देव चौदह दीजिये।
ईश आदी चतुर कृपा, वंझ तांका कीजिये।
निश्चय नातारी करके सुगम उतरो ।।३।।
भूमिका का गृह करके, वास तांमें कीजिये।
कहत टेऊँ काल तीनों, ब्रह्म आनन्द लीजिये।
ब्रह्म भावना कर निर्भय विचरो ।।४।।

॥ राग पीला भजन ॥ ७१ ॥ ७९३॥

सत्गुरु साचा ज्ञान सुना दो मुझे,
सब भिन्न भिन्न कर समझा दो मुझे ॥टेक॥
शोक सिन्धु में डूबता हूं, सूझता ना धर्म है।
काम क्या करना मुझे है, क्या कर्म अकर्म है।
यह मर्म सर्व ही लखा दो मुझे ॥१॥
योग के हैं अंग कितने, योग किसको कहत हैं।
योग साधन साध योगी, रहन कैसी रहत हैं।
वह योग कला सिखला दो मुझे ॥२॥
मन बड़ा चंचल बली है, ठौर कहं पाता नहीं।
रोकना है कठिन इसका, हाथ यह आता नहीं।
मन जीतन युक्ति जना दो मुझे ॥३॥
आतमा परमातमा का, क्या कहो वीचार है।
कहत टेऊँ क्यों भया, कैसे बना संसार है।
यह सगले भेद बता दो मुझे ॥४॥

॥ राग पीला भजन ॥ ७२ ॥ ७९४॥

हरि का नाम जपो निष्काम सज्जन,
पाओ शान्ती सुख विश्राम सज्जन ॥टेक॥
नाम भवसिन्धु माहिं बोहथ, बहुत पापी तारता।
जो जपे श्रद्धा धरे मन, ताहिं दूख निवारता।
देवे भक्तों को निज धाम सज्जन ॥१॥

नाम हरि का गङ्ग जल है, ताहिं में नित नाइये।
मैल मन की दूर करके, पाप ताप मिटाइये।
पीवो नाम का भरकर जाम सज्जन ।।२।।
नाम हरि का कल्पतरु सम, करत पूरण काज को।
सेवते जो ताहिं को नित, पाय सो स्वराज को।
तांते सुमरो आठों याम सज्जन ।।३।।
कहत टेऊँ साफ तुझको, विषय रस को त्यागिये।
बहुत सोया नींद में तुम, अब तो उठकर जागिये।
जपले स्वास स्वास हरिनाम सज्जन ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। ७३ ।। ७९५।।

सत्‌गुरु अपना नाम जपाओ मुझे,
भर कर प्रेम का प्याला पिलाओ मुझे ।। टेक।।
मूण्ढ मति हूं अति अज्ञानी, बहु बुरा बदकार मैं।
काम आदिक में उलझ कर, ना कीया वीचार मैं।
पांचों दुष्टों से आप बचाओ मुझे ।।१।।
सुमति सम्पति भाव भक्ती, जोग जुगती दीजिये।
ब्रह्म का निज ज्ञान देके, भ्रम सब हर लीजिये।
कृपा करके मोक्ष मिलाओ मुझे ।।२।।
कहत टेऊँ नाथ मेरी, सुन यही अरदास जी।
दास को दिन रात दीजे, चरण माहिं निवास जी।
अपने मन से नाहिं भुलाओ मुझे ।।३।।

।। राग पीला भजन ।। ७४ ।। ७९६।।

हरि का भजन करो मेरे मीत सज्जन,
गाओ गोविन्द के तुम गीत सज्जन ।। टेक।।
उलट लटकत गर्भ में जब, दूख लागा भारियां।
बोल दीना तब हरी को, याद कर सो प्यारियां।
राखो राम नाम में चीत सज्जन ।।१।।
शब्द स्पर्श रूप रस पुनि, गन्ध से मन मोड़िये।
इन्द्रियगण को दमन कर तुम, सत् कर्म में जोड़िये।
अपने मन पर पाओ जीत सज्जन ।।२।।
काम आदिक पांच वैरी, ताहिं मार हटाइये।
जगत के फुरने सर्व जे, तुरत ताहिं मिटाइये।
सुमरो शब्द गुरू का नीत सज्जन ।।३।।
कहत टेऊँ आतमा का, ज्ञान गुरु से लीजिये।
मनन कर एकान्त में, आनन्द अमृत पीजिये।
राखो गुरु चरणों से प्रीत सज्जन ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। ७५ ।। ७९७।।

मोहि सन्त मिलिया अवतार सज्जन,
जाऊँ बलि बलि मैं बलिहार सज्जन ।। टेक।।
आज मेरे भाग जागे, धाम आये सन्त जी।
मंगल आनन्द मन भया, मानो मिले भगवन्त जी।
होया हिरदे माहिं करार सज्जन ।।१।।

आज मन मन्दिर भया है, प्रेम का प्रकाश जी।
काज पूरण सर्व होया, पाय परम हुलास जी।
होया घर में जय जयकार सज्जन ।।२।।
कहत टेऊँ मिट गये दुख, सूख पाया सार जी।
अंग तन के सर्व फूले, भया बाग बहार जी।
होया शुभ गुण का गुलिज़ार सज्जन ।।३।।

।। राग पीला भजन ।। ७६ ।। ७९८।।

चलो गुरु द्वार बन्दे, बेड़ा हो पार बन्दे ।। टेक।।
गुरुदेव जगत में हैं ज्ञानी सच्चे, जो शरनि पड़े सो रंग में रचे।
माया मोह ममत से सोई बचे, कभी नरक अग्नि में नाहिं पचे।
पाए फल चार बन्दे ।।१।।
गुरुदेव सर्व हितकारी है, पुनि पूरण पर उपकारी है।
जांकी वाणी मधुर प्यारी है, दे दिल को आनन्द भारी है।
सुनो सद्वार बन्दे ।।२।।
गुरुदेव का जोई ध्यान धरे, कहे टेऊँ सो भव सिन्धु तरे।
हो अमर सदा जन्मे न मरे, जा देश अमर में वास करे।
ध्यान मन धार बन्दे ।।३।।

।। राग पीला भजन ।। ७७ ।। ७९९।।

प्रभू अपनी कृपा धारो, मुझको भव सागर से तारो।
मैं हूं जैसा तैसा तेरा, प्रभू मुझको नाहिं बिसारो ।। टेक।।

सर्व द्वार को छोड़ स्वामी, शरन तुम्हारी आया।
हाथ देहि प्रभु मोहि बचाओ, दुस्तर है यह माया।
तुम तो अपना बिरद सम्भारो, मेरे अवगुन नाहिं निहारो।।१।।
मतलब के सब साथी जग में, सबको मैं अज़माया।
बिन मतलब तुम दीन दयालू, सन्तों ने यह गाया।
मेरे मन की मैल उतारो, देके सुमति कुमति को टारो।।२।।
कर्म धर्म कछु ना मैं कीया, तीर्थ व्रत न कीना।
कहे टेऊँ मैं एक आसरा, गोविन्द तेरा लीना।
मेरे पाप ताप परिहारो, मेरा आवागमन निवारो ।।३।।

।। राग पीला भजन ।। ७८ ।। ८००।।

यह पन्थ प्रेम का न्यारा रे,
को जानत हरि का प्यारा रे ।। टेक।।
सो प्रेम पन्थ पग धरता है, जो तीन लजा को हरता है।
कर सुख दुख का जु सहारा रे ।।१।।
इस प्रेम को मूरख क्या जाने, जो माया के हैं मस्ताने।
वह भोगों में मतवारा रे ।।२।।
जो गुरु का शब्द कमाता है, सो प्रेम सचे को पाता है।
वह देखत हरि दीदारा रे ।।३।।
कहे टेऊँ जो विश्वास धरे, तिस हृदय प्रेम प्रकाश करे।
सो पावत मोक्ष द्वारा रे ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। ७९ ।। ८०१।।

जोई अराधे ईश, जपे जगदीश,
कटे दुख भारा, सो पावत सूख अपारा ।। टेक ।।
हरि भजन जो निश दिन करता है, भव सागर से सो तरता है।
हरि भजन बिना नहिं होवे भव से पारा,
सो डूबत भव जल धारा ।।१।।
यह झूठा जगत तमाशा है, अरु मिथ्या भोग विलासा है।
यह पहले लागत सुन्दर बहुत प्यारा,
पुनि पीछा इसका खारा ।।२।।
जो माया से मन लाता है, सो निश्चय नरकहिं जाता है।
फिर चौरासी को भोगत बारम्बारा,
तिहं कोय न देत सहारा ।।३।।
जो सन्त शरन में जाता है, कहे टेऊँ हरि गुन गाता है।
सो सन्त कृपा से पावत मोक्ष द्वारा,
नहिं आवत गर्भ मंझारा ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। ८० ।। ८०२ ।।

मन गावो हरी के गुन गावो,
यह जीवन सफल बनाओ ।। टेक।।
जो हरि के गुन नित गावे, सो भव सिन्धु से तर जावे,
यह वेद पुरान बतावे ।।१।।

जो हरि का नाम भुलावे, सो वृथा जनम गंवावे,

फिर अन्त समय पछतावे ।।२।।

है कलूकाल यह भारी, नहिं और करे रखवारी,

हरी नाम है पाप निवारी ।।३।।

जब जम के दूत सतावे, तब हरि का नाम छुड़ावे,

कहे टेऊँ प्रभू अपनावे ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। ८१ ।। ८०३ ।।

मन करले हरी भजन करले, श्री राम सदा तूं सुमरले ।। टेक।।

तुम मानुष चोला पाया, क्यों विषयों में वृथा गंवाया,

तुझे शर्म जरा नहीं आया ।।१।।

नहिं साथ चले कछु माया, ना थिर ही रहेगी काया,

क्यों मोह जगत से बढ़ाया ।।२।।

तुम दो दिन का महिमाना, क्यों गाफ़िल करत गुमाना,

है तुझको अकेला जाना ।।३।।

कहे टेऊँ जे हित चाहो, जा सत्संग में हरि गुन गाओ,

उर ज्ञान की ज्योति जगाओ ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। ८२ ।। ८०४ ।।

मन सत्गुरु के द्वारे चलिये, सत्गुरू गरीबनिवाज़ है।

जो श्रद्धा से उसकी ओट ले,

तिस जन की वो राखत लाज है ।। टेक।।

सत्गुरु जैसा जग में दाता, और न कोई सूझत है।
उसके संसे सर्व निवारे, भाव से जो जन पूछत है।
भवसिन्धु उतारन के लिये, सत्गुरु ही परम जहाज है ।।१।।
सत्गुरु संगी परलोक का जो, यम की फास छुड़ाता है।
बन्धन उसका काट देत जो, शरन गुरू की आता है।
दुख जन्म मरण का मिटाके, दे सर्व सूख स्वराज है ।।२।।
सत्गुरु शिष्य की करत पालना, मात पिता ज्यों बालक की।
माया तिसको मोह सके ना, मया उसी पर मालिक की।
गुरु राज़ी जिसी पर होत है,कहे टेऊँ करत तिस काज है।।३।।

।। राग पीला भजन ।। ८३ ।। ८०५।।

चालो चालो गुरुमुख सत्गुरु द्वारे,
सत्गुरु द्वारे मन में श्रद्धा धारे रे ।। टेक।।
विषय वासना सर्व त्यागे, मोक्ष हेत जो गुरु पद लागे,
मुक्ति करत तिस भ्रम निवारे रे ।।१।।
वैकुण्ठ की मन में धर आसा, गुरु पद में जो करत निवासा,
हरिपुर भेजे तिस काज संवारे रे ।।२।।
धन सुत आदि की इच्छा धारे, शरन पड़े जो गुरु चरनारे,
ऋद्धि सिद्धि देके तिस दुख दर्द टारे रे ।।३।।
कहे टेऊँ जिस मनसा जैसी, पूरी करे गुरु तांकी तैसी,
गुरु पूरे के दर सब कुछ प्यारे रे ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। ८४ ।। ८०६।।

मेरा मेरा सत्गुरु ज्ञान भण्डारा,
ज्ञान भण्डारा है परम उदारा रे ।। टेक।।
पांच रीति से गुरु गोपाला, अपने शिष्य की करत संभाला,
बादल सम कर पर उपकारा रे ।।१।।
पांच भांति के साधन जोड़े, तारत शिष्य को गुरु ना छोड़े,
लोक उभय का परम सहारा रे ।।२।।
पांच भूतों में गुण है जोई, गुरु पूरे में गुण है सोई,
सूर्य सम तम कर परिहारा रे ।।३।।
पांच तरह गुरु रंग लगावे, कहे टेऊँ सत् शब्द सुनावे,
महिमा गुरु की अपर अपारा रे ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। ८५ ।। ८०७।।

झूठा झूठा जानो यह जगत पसारा,
जगत पसारा यह स्वप्ना है सारा रे ।। टेक।।
जो यहं आता सो चल जाता, ठौर न कोई जग में पाता।
सबके सिर पै बाजे काल नगारा रे ।।१।।
काल गये को जाय रहे अब, जाने वाले जाएंगे सब।
कोई नहीं है यहं रहने हारा रे ।।२।।
तन धन सम्पत्ति मान बड़ाई, तां पर ना कर बांवर भाई।
साथ न चाले कछु अन्त मंझारा रे ।।३।।
कहे टेऊँ तज जग की आसा, सुमर हरी को स्वासों स्वासा।
संगी सच्चा है इक सत्कर्तारा रे ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। ८६ ।। ८०८।।

दीना दीना मैंनूं गुरु प्रेम प्याला,
प्रेम प्याला देके किया मतिवाला रे ।। टेक।।
ले यकतारा हरि गुन गाऊँ, अपने रांवल को मैं राऊँ।
और न भावे मोहि जग जंजाला रे ।।१।।
भेष फकीरी सिर पर धारे, ढूंढूं साजन बन बन प्यारे।
तीन लजा का मैं तोड़कर ताला रे ।।२।।
कहे टेऊँ मम तड़फत जीया, कब पाऊँगा प्रीतम पीया।
नस नस में लागा नेह निराला रे ।।३।।

।। राग पीला भजन ।। ८७ ।। ८०९।।

लागे लागे मैंनूं इक राम प्यारा,
राम प्यारा मेरा है रखवारा रे ।। टेक।।
सो जन मेरा मित्र कहावे, भगवत की जो बात सुनावे।
राम सनेही है प्रान अधारा रे ।।१।।
सोई मेरा दुश्मन भारा, हरि बिन कर जो और उच्चारा।
राम बिना है घर नरक द्वारा रे ।।२।।
जग की बात न मोहि सुनाओ, आप लोक भी निकट न आओ।
राम बिना है जग काल अकारा रे ।।३।।
गुरु कृपा से हरि मन लागा, प्रेम पुरातन आय अब जागा।
कहता टेऊँ गुरु पर बलिहारा रे ।।४।।

॥ राग पीला भजन ॥ ८८ ॥ ८१०॥

ऊठो ऊठो चोर तेरे नगर मंझारा।
नगर मंझारा लूटहिं दाम तुम्हारा रे ॥टेक॥
देह नगर में चोर महाना, काम क्रोध लोभ मोह अभिमाना।
आतम धन को हैं हरने हारा रे ॥१॥
ज्ञान दीप ले चोर निहारो, उपशम लाठी ले तिहं मारो।
ज्ञान वैराग देवे गुरु दातारा रे ॥२॥
कहे टेऊँ गुरु चरने लागो, मोह नींद से जल्दी जागो।
अपने नगर का तुम हो रखवारा रे ॥३॥

॥ राग पीला भजन ॥ ८९ ॥ ८११॥

श्रद्धा से दे कान, हरि की कथा सुनो ॥टेक॥
शंकर हरि की कथा सु गाई, गौरी ने सुन हृदय बसाई।
मिट गया भ्रम गुमान ॥१॥
याज्ञवल्क्य हरि कथा उच्चारी, भारद्वाज सुन भये सुखारी।
किया सुधारस पान ॥२॥
शुकदेव हरि की कथा सुनाई, परीक्षित सुनकर मुक्ती पाई।
जानत सकल जहान ॥३॥
हरी कथा की महिमा भारी, सुनकर जिन ने हृदय धारी।
होया तिन कल्यान ॥४॥
कहे टेऊँ सुन शिक्षा मेरी, नितप्रति कथा सुनो हरि केरी।
पाओ सूख महान ॥५॥

।। राग पीला भजन ।। ९० ।। ८१२।।

मेरी लाज रखो, प्रभू पैज रखो, इहवारी।
मैं आया हूं शरण तुम्हारी ।। टेक।।
शुभ कर्म न मैं को कीना, नहिं नाम तुम्हारा लीना।
किये पाप घने, सके कौन गने, अघहारी ।।१।।
कलीकाल है कठिन कराला, मैं तो देख डरत कृपाला।
तांसे रक्षा करो, सब विघ्न हरो, भयहारी ।।२।।
पांच दुष्टों ने मोहि दुखाया, योनि चौरासी में भ्रमाया।
तांसे राखो हमें, पड़ा द्वार तुमें, हितकारी ।।३।।
कहे टेऊँ ये अर्ज़ हमारा, सुनो साहिब सत्कर्तारा।
देहि भक्ती मुझे, निज मुक्ती मुझे, सुखकारी ।।४।।

।। राग पीला भजन ।। ९१ ।। ८१३।।

निज धर्म धरो, शुभ कर्म करो, नर नारी।
तेरी धर्म करे रखवारी ।। टेक।।
जिस करने को वेद उच्चारे, सो कर्म करो तुम प्यारे।
जान धर्म वही, सत्कर्म वही, गुणकारी ।।१।।
जिस करने से निगम निवारे, सो कर्म करो न गंवारे।
जान पाप वही, सन्ताप वही, भयकारी ।।२।।
तेरी शोभा धर्म बढ़ावे, पुनि कीर्ति सब जन गावे।
तुम जाओ जहां, यश पाओ तहां, सुखकारी ।।३।।
कहे टेऊँ न कीजे बुराई, करो सर्व से आप भलाई।
दुख हो न कदा, सुख होवे सदा, पुण्य भारी ।।४।।

।। राग मांझ भजन ।। १ ।। ८१४।।

ऐ ईश तेरी कुदरत किससे लखी न जाये।
योगी यती ज्ञानी ध्यानी न पार पाये ।। टेक।।
कैसे बनाई धरनी, जल व्योम पवन अग्नी।
अनमोल बन पहाड़ा, करतार किमि उपाये ।।१।।
यह चन्द्र सूर्य तारे, क्यों कर बनाये सारे।
रङ्गा रङ्गी सुन्दर किमि, पंछी पशू बनाये ।।२।।
किमि रक्त बिन्दु को धर, नर तन बनाया सुन्दर।
किस ढंग से उसी में, उज़वे अजब लगाये ।।३।।
हैं जग में जीव जेते, भिन्न भिन्न बनाये तेते।
रंग रूप चिन्ह न्यारे, किस रीति से रचाये ।।४।।
माटी में पवन पाया, चेतन करे चलाया।
किसको फन्दे फसाया, किसके बन्धन छुड़ाये ।।५।।
तुम होय निराकारा, कैसे किया अकारा।
यह देख तेरी लीला, अचरज में सर्व आये ।।६।।
पड़दा सभी उठाओ, ना आप को छिपाओ।
कहे टेऊँ कष्ट हरले, अपना दरस दिखाये ।।७।।

।। राग मांझ भजन ।। २ ।। ८१५।।

सुनो दीनानाथ प्रभू, अरज़ यह हमारा।
अभय दान देहि और, गंग का किनारा ।। टेक।।

चांदनी की यामनी में, चमक रहे तारा।
सुरसरी तट नाम जपूं, चलत ठण्डी धारा ।।१।।
राज की न चाह मुझे, चहूं सुत न दारा।
चहूं जंगल वास करूं, तत्त्व का विचारा ।।२।।
रहे नाहिं पाप ताप, द्वन्द्व दूख सारा।
चिन्त किसी की न रहे, होय दिल बहारा ।।३।।
रैन दिवस चाह यही, दरस हो तुम्हारा।
और मुझे होत रहे, सन्त का दीदारा ।।४।।
कहत टेऊँ टेर यही, सुनो प्राण प्यारा।
आदि मध्य अन्त रहे, तेरा ही सहारा ।।५।।

।। राग मांझ भजन ।। ३ ।। ८१६।।

सत्संग में चलो तुम, श्रद्धा धरे प्यारा।
श्रवण करे वचन को, मन में करो विचारा ।। टेक।।
सत्संग के वचन से, अज्ञान नाश होवे।
पावन अभेद ज्ञाना, उपजे हृदय मंझारा ।।१।।
संसार रोग भारी, सब जीव को लगा है।
सत्संग की दवा से, मिट जात रोग सारा ।।२।।
व्यवहार पुनि परमार्थ, सत्संग माहिं सिद्ध हो।
सुरतरु समान सत्संग, फल देत है अपारा ।।३।।
भव सिन्धु माहिं जानो, सत्संग दृढ नौका।
कहे टेऊँ ताहिं चढ़ कर, पल में तरो उदारा ।।४।।

।। राग मांझ भजन ।। ४ ।। ८१७।।

सबका भला करो तुम, होगा भला तुम्हारा।
तेरे उद्धार का है, साधन यही उदारा ।।टेक।।
लाखों उपाय करके, तेरा बुरा करे को।
तो भी करो सदा तुम, तिसका भला प्यारा ।।१।।
करना भला भले से, करना बुरा बुरे से।
यह है मता जगत का, आगम निगम उच्चारा ।।२।।
माने न कोय माने, शशि सूर्य को जगत में।
तो भी सदा सर्व पर, इक रस करे उजारा ।।३।।
सब कर्म में उत्तम है, करना भला सर्व का।
कहे टेऊँ मनुष चोला, उपकार बिन असारा ।।४।।

।। राग मांझ भजन ।। ५ ।। ८१८।।

भगवान का भजन कर, हर काल में प्यारा।
हरि भजन बिन जगत में, वृथा जन्म तुम्हारा ।।टेक।।
हरि भजन बिन जगत में, जीवन असार तेरा।
बिन पूंछ सींग पशु जिमि, फिरता करे अहारा ।।१।।
संसार धर्मशाला, सब जीव हैं मुसाफिर।
इसमें न थिर रहोगे, ममता तजो गंवारा ।।२।।
हरि भजन बिन तरन का, और न उपाय कोई।
तांते करो भजन तुम, वेदों ने यह उचारा ।।३।।
हरि भजन सत् जगत में, सब काम और झूठे।
कहे टेऊँ भजन करले, मानो वचन हमारा ।।४।।

॥ राग मांझ भजन ॥ ६ ॥ ८१९॥

साक्षात् इस विश्व को, हरि का स्वरूप जानो।
इस बात में ज़रा भी, संशय कभी न आनो ॥टेक॥
जगदीश अरु जगत में, रंचक न भेद कोई।
हरि जगत, जगत हरि है, वेदों ने यह बखानो ॥१॥
तन माहिं अंग नाना, फिर भी शरीर इक है।
त्यों जगत जीव नाना, इक ब्रह्म ही पछानो ॥२॥
किस एक अंग सेवा, समझो शरीर की सा।
तिमि एक जीव सेवा, भगवान सेव मानो ॥३॥
कहे टेऊँ सोय देखे, यह विश्व हरि स्वरूपा।
कृपा करे जिसी को, गुरु ज्ञान दे महानो ॥४॥

॥ राग मांझ भजन ॥ ७ ॥ ८२०॥

वीचार से करो तुम, कारज सभी सुजाना।
कीरत रहे जगत में, होंगे सुखी निदाना ॥टेक॥
धन धाम पुत्र त्रिया, बहु मान में न सुख है।
वीचार में सर्व सुख, देखो धरे ध्याना ॥१॥
झंगल बसो नगर में, अथवा रहो गगन में।
वीचार बिन मिले ना, शान्ती किसी मकाना ॥२॥
वीचारवान सुखिया, सब देश में सर्वदा।
वीचार हीन दुखिया, भावें पढ़े पुराना ॥३॥
वीचारवान का है, दर्जा बड़ा सर्व से।
कहे टेऊँ तिस मनुष को, पूजे सकल जहाना ॥४॥

।। राग मांझ भजन ।। ८ ।। ८२१।।

भगवान पर हमेशा, विश्वास धर प्यारा।
निश्चय भला करेगा, प्रभू सदा तुम्हारा ।। टेक।।
दिलगीर होय दुख में, भगवान ना भुलाओ।
धीरज धरे हृदय में, ले राम का सहारा ।।१।।
समर्थ सर्व व्यापक, कृपा निधान जोई।
जहं तहं रक्षा करे सो, हर काल के मंझारा ।।२।।
विश्वास है जिसीको, बेड़ा डुबे न तिसका।
विश्वास से ज़हर भी, अमृत भया उदारा ।।३।।
प्रह्लाद कर यकीना, प्रकट कीया हरी को।
कहे टेऊँ कष्ट तांके, नरसिंह ने निवारा ।।४।।

।। राग मांझ भजन ।। ९ ।। ८२२।।

भगवान मैं तुम्हारे, मुझ में है तूं पियारे।
पट है कपास का ज्यों, रूई है पट मंझारे ।। क।।
मेरा सम्बन्ध तुमसे, अविचल बना अनादी।
कोई न तोड़ सकता, त्रिलोक में उदारे ।।१।।
जल से सम्बन्ध जल का, ज्यों पवन से पवन का।
तैसा सम्बन्ध तुमसे, मेरा बना मुरारे ।।२।।
तुमसे भया मैं उत्पन्न, जीवित रहूं मैं तुमसे।
फिर लीन आपही में, होंगे जगत अधारे ।।३।।
कहे टेऊँ भिन्न तुम्हारे, मेरी सत्ता नहीं है।
तुम ही बना विश्वमय, तुम से न कछु न्यारे ।।४।।

॥ राग मांझ भजन ॥ १० ॥ ८२३॥

भगवान आप जो हैं, सोई यकीन मैं हूं।
इत्फाक फ़कत इतना, दाता तूं दीन मैं हूं ॥ टेक ॥
सागर जहां में तुम हो, सरवर हूं मैं स्वामी।
जल कर समान दोनों, तुम ऊँच हीन मैं हूं ॥१॥
सूर्य जहां में तुम हो, दीपक हूं मैं स्वामी।
अगि कर समान दोनों, तूं बड़ महीन मैं हूं ॥२॥
राजा जहां में तुम हो, प्रजा हूं मैं स्वामी।
मानुष समान दोनों, तेरे अधीन मैं हूं ॥३॥
मैं सत्य बात कहता, तुम मम स्वरूप इक है।
कहे टेऊँ भेद ना है, तुम नीर फीन मैं हूं ॥४॥

॥ राग मांझ भजन ॥ ११ ॥ ८२४॥

जागो जागो सन्तों के संग से जागो,
अपने स्वरूप में लागो ॥ टेक॥
मनुष जनम दुर्लभ संसारा, देवों को भी है यह प्यारा,
इसमें सुमरो सत् कर्तारा, पावो पूरन मोक्ष द्वारा,
भोग विषय से तुम भागो ॥१॥
अविद्या से तुम गाफिल होया, चौरासी लख जोनि में सोया,
स्वास अमोलक वृथा खोया, अन्त समय तुमने बहु रोया,
अब तो अविद्या त्यागो ॥२॥
अन्तर की अखियां तुम खोलो, देखो आतम राम अमोलो,
कहे टेऊँ ना मन को डोलो, सन्तों से मिल शिवोऽहम् बोलो,
उर में धर अनुरागो ॥३॥

।। राग मांझ भजन ।। १२ ।। ८२५।।

करले करले हरी भजन सुखदाई, होवहिं अन्त सहाई।। टेक।।
हरी भजन उर आनन्द भरता, मन की ममता चिन्ता हरता,
जो जन हरि का सुमरन करता, सो जन भव सागर से तरता,
ग्रन्थों ने महिमा गाई ।।१।।
हरी भजन जम दूत हटावे, जनम जनम के पाप मिटावे,
श्रद्धा से जो हरिगुन गावे, सो जन हरि के हृदय भावे,
सन्तों ने साख सुनाई ।।२।।
हरी भजन हरि साथ मिलावे, कहे टेऊँ दुख द्वन्द्व गलावे,
सुख की सेजा माहिं सुलावे, अन्त में मोक्ष धाम दिलावे,
यह गुरु बात बताई ।।३।।

।। राग मांझ भजन ।। १३ ।। ८२६।।

मेरे लाला आतम पद में जागना, मोह की निद्रा त्यागना ।। टेक।।
निन्द्रा कर ज्यों सुपना भासे, भान्ति भान्ति के रंग तमासे,
नैन खुले कुछ नज़र न आवे, जहां से आये तहां विनासे।
कोई करत तिहं राग ना ।।१।।
अविद्या कर त्यों बहु प्रकारा, मालूम होते जग विस्तारा,
बोध भये कुछ पता न पड़ता, लय हो जावे सब संसारा।
ताहीं में तुम मत लागना ।।२।।
ना तुम तन हो ना तुम मन हो, ना तुम प्रज्ञा इन्द्रियगन हो,
ना तुम माया ना तुम छाया, तुम तो सत् चित् आनन्द घन हो।
अविद्या से उठ भागना ।।३।।

मोह निशा सोवत अज्ञानी, आतम बेमुख तन अभिमानी,
मोह नींद से जागत जोगी, परमार्थ रत ब्रह्मज्ञानी।
जोगी जनों से रागना ।।४।।
कहे टेऊँ गुरु शब्द सुनाये, मोह नींद से सुरति जगाये,
सुरति जगा कर पीव मिलावे, पीव मिला कर ताहिं समावे।
पूरन पद में पागना ।।५।।

।। राग मांझ भजन ।। १४ ।। ८२७।।

प्रभू मुझको अपना दास बनाना, येही अरज़ अघाना ।। टेक।।
प्रभू तेरे बहु फरमाने, वेदों ने हैं जोय बखाने।
जिस आज्ञा के पालन करके, प्रसन्न हो तुम दया निधाने।
मानूं सो मैं फरमाना ।।१।।
जिन सन्तों का मन निर्मल है, भजन करन का नेम अटल है।
माया छल में छलत न कबहूं, ब्रह्म भाव में नित निश्चल है।
तिनका मेल मिलाना ।।२।।
परम पवीत्र सब प्रतिपाला, विनती मेरी सुनो कृपाला।
जिस रहनी से प्रसन्न होके, दरसन देते दीन दयाला।
वैसी रहति रहाना ।।३।।
कहे टेऊँ साहब सुखकारी, पूरण कर ये आस हमारी।
जिस विधि जहं भी रहना होवे, भूले ना कब सुरति तुम्हारी।
अपने चरन लगाना ।।४।।

।। राग मांझ भजन ।। १५ ।। ८२८।।

भैया मेरे राम नाम मुख लीजे,जनम सफल यह कीजे ।। टेक।।

राम नाम का वखर विहाना, राम नाम का समर उठाना।
जांसे सब दुख छीजे ।।१।।

राम नाम सम साधन नाहीं, ऐसे लिखा है वेदों माहीं।
ताहीं में चित्त दीजे ।।२।।

राम नाम सब कर्महिं मूला, जांके सुमरे हरि अनुकूला।
राम अमृत को पीजे ।।३।।

कहे टेऊँ तुम राम उचारे, पाप ताप सन्ताप निवारे।
आवागमन हरीजे ।।४।।

।। राग मांझ भजन ।। १६ ।। ८२९।।

गुरु ज्ञान की गंगा में, गोता बहुत लगाना।
पावन बनाय दिल को, मल द्वैत की मिटाना ।। टेक।।

तन का गुमान तजना, वस्त्र उतारना ये।
निज रूप की स्मृती, जल माहिं पेर पाना ।।१।।

अहं ब्रह्म याद रखना, घट वांग डूबना ये।
जड़ भाव को भुला कर, शुद्ध ब्रह्म होय जाना ।।२।।

ऐसे स्नान वाले, फिर लौट के न आते।
आवागमन मिटाकर, रह ब्रह्म में समाना ।।३।।

पूर्ण से सन्त ज्ञानी, दुर्लभ अहैं जगत में।
कहे टेऊँ हरि दया से, मिल है पुरुष महाना ।।४।।

।। राग मांझ भजन ।। १७ ।। ८३०।।

मैं हूं हरी तुम्हारा, तुम हो हरी हमारा।
तुम हम में भेद ना को, हम तुम हैं एक प्यारा ।।टेक।।
सम्बन्ध यही अनादी, नहिं आज काल का है।
तुम से जुदा न मैं हूं, मुझ से न तुम न्यारा ।।१।।
तेरे बिना न हम हैं, मेरे बिना न तुम हो।
तरु बीज धूप रवि सम, समझो मिसाल सारा ।।२।।
व्यष्टी न बिन समष्टी, समष्टी बिना न व्यष्टी।
व्यष्टी समष्टी केरा, ना और को सहारा ।।३।।
कहे टेऊँ एह जाना, गुरुदेव के वचन से।
नाता न टूट सकता, तव मम दिले दुलारा ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। १ ।। ८३१।।

जब से अपना आप भुलाया,
तब से तुमने बहु दुख पाया ।।टेक।।
अब तक मूरख तुम नहिं जागे, भोग विषय में अहनिश लागे।
मोह लिया तुमको हरि माया ।।१।।
पांच तत्त्व का पहरे चोला, देख इसी को पड़ गया भोला।
निज स्वरूपा नज़र न आया ।।२।।
कहे टेऊँ कर तेरा मेरा, मन में डाला द्वैत अन्धेरा।
अनुभव दीपक नाहिं जगाया ।।३।।

।। राग जोग भजन ।। २ ।। ८३२।।

प्रबल है अति हरि की माया,
जिसने सब जग जीव भुलाया ।। टेक।।
केते शब्द स्पर्श में बांधे, केते रूप रसों में साधे।
केते गन्ध के बीच गलाया ।।१।।
केते काम क्रोध में जारे, केते लाभ मोह में मारे।
केते मद के सिन्धु बहाया ।।२।।
केते योगी पण्डित ज्ञानी, केते त्यागी तपसी ध्यानी।
केते मुनिवर खाक मिलाया ।।३।।
कहे टेऊँ इस सबको लूटा, कोई इससे विरला छूटा।
जिसने गुरु का चरण ध्याया ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। ३ ।। ८३३।।

सद्गुरु सुन यह अरज़ हमारो, मेरे सबहीं दूख निवारो ।। टेक।।
मैं हूं पापी तुम हो पावन, पकड़ी प्रभू तेरी दावन।
पाप हमारे सब परिहारो ।।१।।
चाह न चिन्ता मन में व्यापे, पांच क्लेशा ताप न तापे।
कामादिक सब दैत्य संहारो ।।२।।
बहुते अवगुण हैं मुझ माहीं, जिन्हों की कछु गिनती नाहीं।
सद्गुण दे सब अवगुण टारो ।।३।।
कहे टेऊँ मैं शरण तुम्हारी, प्रभू राखो पैज हमारी।
भुजा पकड़ भव सागर तारो ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। ४ ।। ८३४।।

रे मन मेरा कर होशियारी, राम भजन की है यह वारी ।। टेक।।
मानुष देही पुण्य ते पाई, दुर्लभ मुनिवर वेदनि गाई।
हरि सुमरे कर सफली सारी ।।१।।
जोनि चराचर फिर फिर आया, जन्म मरण का बहु दुख पाया।
अब तो सुमरो हरि सुखकारी ।।२।।
ऐसा वेला नहिं फिर होवहिं, गुज़र जायेगा तब तुम रोवहिं।
तांते जपले नाम मुरारी ।।३।।
कहे टेऊँ गुरु शरणी लीजे, सन्तों के संग नाम जपीजे।
जांते टूटे जम की जारी ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। ५ ।। ८३५।।

रे मन मेरा समझ प्यारा, जग में को नहिं मित्र तुम्हारा ।। टेक।।
स्वार्थ से सबहीं गल लावत, बिन स्वार्थ को निकट न आवत।
मतलब का है सब संसारा ।।१।।
काम दाम हित राखे नाता, तां बिन कोय न किसको भाता।
ऐसा है जग का व्यवहारा ।।२।।
जिन कारण तुम पाप कमाते, देश छोड़ परदेशहिं जाते।
अन्त समय वे करत किनारा ।।३।।
कहे टेऊँ जग प्रीती तजिये, भाव भक्ति से हरि को भजिये।
इस विधि तेरा होय उद्धारा ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। ६ ।। ८३६।।

ना तुम किसका ना कोई तेरा, भूल कहत क्यों मेरा मेरा ।। टेक।।
जनम समय को साथ न लाया, यहां आय बहु मित्र बनाया।
मोह महा तम तुझको घेरा ।।१।।
मात पिता सुत पुनि परिवारा, जान मुसाफिर यह संसारा।
कूच करेंगे सब तज डेरा ।।२।।
हृदय अन्दर उपशम धारे, देखो मेरा वचन विचारे।
दूर करो तुम भ्रम अन्धेरा ।।३।।
कहता टेऊँ तुम अविनाशी, असंग अलेपा है सुखराशी।
सब सन्तों ने ऐसे टेरा ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। ७ ।। ८३७।।

रे मन मेरा भटकत काहीं,
जो सुख चाहत सो तुझ माहीं ।। टेक।।
मृग के नाभी है कस्तूरी, अपने से वह जानत दूरी।
खोजत बन में मिलत न ताहीं ।।१।।
अन्तर्मुख बिन शान्ति न आवत, वेद ज्ञाते मुनि यह गावत।
सो परमानन्द नाहिं पराहीं ।।२।।
मान वचन सत् मेरा भैया, यह जग जानो भूल भुलैया।
जो भूला सो निकसत नाहीं ।।३।।
कहता टेऊँ अबहीं जागो, अपने आतम में अनुरागो।
जनम मरन दुख है नहिं जाहीं ।।४।।

॥ राग जोग भजन ॥ ८ ॥ ८३८॥

रे मन मेरा सत्संग करिये, जिससे तेरा कारज सरिये ॥ टेक॥

सत्संग जानो नाव समाना, तां पर चढ़ले तज अभिमाना।

भव सागर से सहजे तरिये ॥१॥

सत्संग सम को साधन नाहीं, सब साधन हैं सत्संग माहीं।

तांमें जाकर भव दुख हरिये ॥२॥

सत्संग सुरतरु चिन्तामणि सम, सेवन से दे सब फल हरदम।

पूर्ण निश्चय हृदय धरिये ॥३॥

सत्संग कर पाओ सुखरासी, कहे टेऊँ काटो जम फासी।

हो निर्भय किससे ना डरिये ॥४॥

॥ राग जोग भजन ॥ ९ ॥ ८३९॥

रे मन मेरा होय निरासा, छोड़ जगत की झूठी आसा ॥ टेक॥

जग की आसा है दुखदाई, सब संतों ने साख सुनाई।

संत वचन पर धर विश्वासा ॥१॥

सात द्वीप नव खण्डों माहीं, रंचक सुख कहं दीसत नाहीं।

भलि देखो जा धरनि अकासा ॥२॥

सब तज सुमरो अन्तर्यामी, निर्भय निर्मल हो निष्कामी।

जन्म मरन की मेटो त्रासा ॥३॥

कहे टेऊँ गुरु शरनी जाओ, पूरण ब्रह्म ज्ञान को पाओ।

अपने घर में करले वासा ॥४॥

॥ राग जोग भजन ॥ १० ॥ ८४०॥

आत्मज्ञान अमी रस पीओ, जाओगे ना जम के धाम ॥ टेक॥
जांके पीवत मिटे प्यासा, जगे न रंचक जग की आसा।
मिल हैं पूरण सुख विश्राम ॥१॥
सत्गुरु का सत् शब्द उच्चारे, मन का फुरना सर्व निवारे।
देखो अन्तर आतमराम ॥२॥
अहंता ममता मोह मिटाओ, जीवन मुक्ती जग में पाओ।
होवैं पूरण सबहीं काम ॥३॥
कहे टेऊँ लाय सहज समाधी, जीव ईश की छोड़ उपाधी।
करिये अनुभव घर आराम ॥४॥

॥ राग जोग भजन ॥ ११ ॥ ८४१॥

सद्गुरु सागर के सम जानो, रत्न गुणों को धरता है ॥ टेक॥
निर्मल दर्शन चन्द्र विकाशे, मदिरा हरि का प्रेम प्रकाशे।
जिस पीवत रंग चढ़ता है ॥१॥
ओऽम् शब्द शंख पहिचानो, सत्संग कल्प वृक्ष प्रमानो।
जांसे कारज सरता है ॥२॥
प्राणायाम ऐरावत हाथी, धर्मी विद्या लक्ष्मी साथी।
जांसे सब अघ हरता है ॥३॥
कामधेनु हरि भक्ती राजे, अमृत आतम ज्ञान बिराजे।
जो पीवे नहिं मरता है ॥४॥
जो जन इस सागर को सेवे, कहे टेऊँ सो सब फल लेवे।
शरण पड़े भव तरता है ॥५॥

।। राग जोग भजन ।। १२ ।। ८४२।।

जे भव सागर तरना चाहो, सन्तों की लेवो शरना ।।टेक।।
पापों का जो बोझ उठाया, जे तुम चाहो ताहिं गिराया।
सन्त चरन पर शिर धरना ।।१।।
काम क्रोध मद मोह विकारा, जे तुम चाहो सर्व निवारा।
सन्त वचन पर नित चरना ।।२।।
बल विद्या आयू सन्माना, जे तुम चाहो सर्व बढ़ाना ।
सन्तों को वन्दन करना ।।३।।
चार पदार्थ नाम ख़जाना, जे तुम चाहो लेन सुजाना।
सन्त सेव कर उर भरना ।।४।।
कहता टेऊँ सुनले प्यारा, जे तुम चाहो मुक्ति उदारा।
सन्तों संग जीते मरना ।।५।।

।। राग जोग भजन ।। १३ ।। ८४३।।

रचना तेरी राम निराली, अन्त न कोई पावत है।।टेक।।
इक क्षण में बहु जगत पसारा, उपजे बिनसे तोहि मंझारा।
निगमागम बतलावत है ।।१।।
कोटी ब्रह्मा कोटी शंकर, कोटी विष्णू कोटी किंकर।
महिमा कह हट जावत है ।।२।।
कोटी सूर्य कोटी चन्द्र, कोटी सुरगण कोटी इन्द्र।
नेति नेति सब गावत है ।।३।।
कहे टेऊँ सब कह कह हारे, लीला तव अद्‌भुत कर्ता रे।
देख सभी विस्मावत है ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। १४ ।। ८४४।।

वणिज करन को आया जग में, करलो नाम व्यापार रे ।। टेक।।
और पदार्थ जग में जेते, मिथ्या क्षणभंग जानो तेते।
दुख को देवन हारा रे ।।१।।
राम नाम का सौदा जोई, सन्त हाट से मिलता सोई।
उससे ले वणजारा रे ।।२।।
यह सौदा ना कबहूं खूटे, भावें कितना निशदिन लूटे।
दिन दिन होत अपारा रे ।।३।।
जो यह सौदा लेवे प्यारा, कहे टेऊँ सो धन वणजारा ।
अपना कुल तिहं तारा रे ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। १५ ।। ८४५।।

मन मूर्ख क्यों गर्व करत हो, इक दिन तूं मर जावेंगा ।। टेक।।
भूतों से हरि गात बनाया, प्रान कला को पाय चलाया।
प्राण गये गिर जावेंगा ।।१।।
जिस तन को तुम रस से पोषत, रेशम के बहु वस्त्र ओढ़त।
अगि में सो जर जावेंगा ।।२।।
पाप कर्म से माया जोड़ी, अन्त साथ ना चलती कौड़ी।
कर खाली कर जावेंगा ।।३।।
कहे टेऊँ सब सन्त पुकारे, अब भी साध संगति कर प्यारे।
जांसे भव तर जावेंगा ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। १६ ।। ८४६।।

मेरे मन मेरी मति मानो, अपना छोड़ पसारा रे ।। टेक।।

फुरना छोड़ अफुर घर आओ, ब्रह्म भवन तज बहर न जाओ।

बाहर दूख अपारा रे ।।१।।

पारब्रह्म से होकर न्यारे, कलना कल्पी बहु प्रकारे।

जांका आर न पारा रे ।।२।।

भटक भटक बहु कल्प बिताये, अबलौं अपने घर नहिं आये।

शर्म ज़रा नहिं धारा रे ।।३।।

कहे टेऊँ अब शान्ती धारे, अपने घर में आवो प्यारे।

गुरु का ले आधारा रे ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। १७ ।। ८४७।।

मेरे मन नित अपने अन्तर, आत्म दर्शन कीजे रे ।। टेक।।

और दरस हैं जग में जेते, निश्चय जानो मिथ्या तेते।

तामें चित्त ना दीजे रे ।।१।।

माया मय अन दर्शन सारे, जन्म मरन का दुख ना टारे।

तांते तिनहिं तजीजे रे ।।२।।

और दरस की तजले आसा, आतम दर्शन की कर प्यासा।

जांते बन्धन छीजे रे ।।३।।

कहे टेऊँ गुरु शरनी जाकर, निर्मल आत्म दर्शन पाकर।

देख देख रस पीजे रे ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। १८ ।। ८४८।।

मेरे मन कर कपट न कांसे, कपटी का मुंह काला रे।। टेक।।

स्वार्थ हित जिन कपट कमाया, नाम बुरा कर तिन दुख पाया।

अन्त पड़े जमजाला रे ।।१।।

कालनेमि मारीच सुपनखा, कपट किया तिहं फल को देखा।

रावण निज कुल घाला रे ।।२।।

जयन्त पुनि दुर्योधन राहू, कीन कपट फल मिलिया ताहू।

लागा तिन घर ताला रे ।।३।।

कहे टेऊँ तुम कपट त्यागो, सन्त जनों के चरने लागो।

अन्तर हो उज्याला रे ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। १९ ।। ८४९।।

प्रभू मुझ से दूर रहो ना, आवो पास हमारे जी ।। टेक।।

तुझ बिन मेरा जीवन दुखिया, एक पलक नहिं होवत सुखिया।

नैन रोय जल हारे जी ।।१।।

तारे गिन गिन रैन बिताऊँ, दम दम दर पर देखन जाऊँ।

थाके नैन निहारे जी ।।२।।

तुम बिन भावे ना श्रृंगारा, सर्व पदार्थ लागत खारा।

विरह अग्नि तन जारे जी ।।३।।

कहे टेऊँ जे यहां न आओ, कर कृपा निज पास बुलाओ।

वियोग सकूं न सहारे जी ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। २० ।। ८५०।।

पूरन सद्‌गुरु देश अगम की, अद्‌भुत बात बताई रे।। टेक।।
जहां न धरनि अकास न पवना, अग्नि उदक नहिं रवि शशि गवना।
काल न देत दिखाई रे ।।१।।
जहां न ज्ञाता ज्ञेय न ज्ञाना, भूत भविष्यत् ना वर्तमाना।
बन्ध मोक्ष नहिं राई रे ।।२।।
जहाँ न हर्ष शोक पुण्य पापा, योग वियोग न दाप संतापा।
जम की त्रास न काई रे ।। ३ ।।
जहां न मन बुद्धि चित अहंकारा, निर्गुण सगुण नहीं अवतारा।
माया की नहिं छाई रे ।।४।।
और नहीं कछु जामें भासे, स्वयं रूप से सो प्रकाशे।
वेद सके ना गाई रे ।।५।।
कहे टेऊँ सो देश हमारा, तहं पहुंचे को सन्त सचारा।
जिससे गुरू रे सहाई ।।६।।

।। राग जोग भजन ।। २१ ।। ८५१।।

गुरु कृपा से आज भयी है, सुरति शब्द की शादी रे ।। टेक।।
श्रेष्ठ गुणों की चली बराती, बाजे नाद अनादी रे ।।१।।
रिल मिल सखियां मंगल गावे, रोम रोम अहलादी रे ।।२।।
शब्द पती से सुरति दुलहनी, मिल गई छोड़ उपाधी रे ।।३।।
प्राणायाम की डोली चढ़कर, नगर चले निज आदी रे ।।४।।
कहे टेऊँ कुल कारज होया, छूटी वाद विवादी रे ।।५।।

।। राग जोग भजन ।। २२ ।। ८५२।।

बादल अमृत धारा बरसे, पीवत चात्रक प्यारा रे ।। टेक।।
चात्रक जीवन बून्द स्वांती, पीवत और न वारा रे ।।१।।
सागर सर सरिता का पानी, लागे तांको खारा रे ।।२।।
अन्त काल सिर करहिं न नीवां, ऊँचे चोंच पुकारा रे ।।३।।
कहे टेऊँ इस अटल नियम पर, जाऊँ मैं बलिहारा रे ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। २३ ।। ८५३।।

सद्गुरु से तुम जुगती लेकर, भ्रम का पड़दा दूर करो।। टेक।।
सद्गुरु की तुम सेवा करके, अपने मन की मैल हरो ।।१।।
गुरु का नाम उच्चारो अन्तर, गुरु मूरत का ध्यान धरो ।।२।।
गुरु से ब्रह्म ज्ञान को पाये, जग में जीवन मुक्ति चरो ।।३।।
कहे टेऊँ गुरु पूर्ण के संग, भव सागर से पार तरो ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। २४ ।। ८५४।।

सद्गुरु ये मुझ भेद बताओ, जन से माया क्यों लड़ती ।। टेक।।
अपनी सौकन जन को जाने, हरि ढिग आने से डरती ।।१।।
और मुझे शंका है मनमें, आखिर किसकी हो चढ़ती ।।२।।
हाथ पकड़ हरि खींचे जनको, पीछे माया जा पड़ती ।।३।।
हरि कृपा से दासी बनकर, हरिजन के पग सिर धरती ।।४।।
कहे टेऊँ हरि राखा जन का, माया तिहं सेवा करती ।।५।।

।। राग जोग भजन ।। २५ ।। ८५५।।

सत्गुरु मिलिया पड़दा खुलिया,पाया आतम ज्ञाना रे ।। टेक।।
सर्व जगत आतममय भासत, भेद भ्रम सब भाना रे ।।१।।
शत्रु मित्र पुनि कंचन माटी, नीच ऊँच सम जाना रे ।।२।।
हर्ष शोक नहिं सुख दुख व्यापे, नाहिं मान अपमाना रे ।।३।।
कहे टेऊँ गुरु कृपा से हम, पाया पद निर्बाना रे ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। २६ ।। ८५६।।

देख जगत का रंग न भूलो, जान कपट का जाला रे ।। टेक।।
इसी जाल में जोई फसता, तांको मारत काला रे ।।१।।
मर्कट पंछी केहरि फसकर, देखा दूख विशाला रे ।।२।।
मृग करी अलि मीन पतंगे, पाया कष्ट कराला रे ।।३।।
कहे टेऊँ सो कबहुं न भूले, जांका गुरु रखवाला रे ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। २७ ।। ८५७।।

ऊठो ऊठो पंछी भागो, यहां न पांव टिकाना रे ।। टेक।।
चोग देख तुम चूंच पसारे, उलझ न आप फसाना रे ।।१।।
तेरे जैसे कितने फस कर, रो कर तजा प्राना रे ।।२।।
तेरे फसाने कारन फन्दक, रचिया जाल महाना रे ।।३।।
चोग चुगन की आस त्यागे, ऊपर को उड़ जाना रे ।।४।।
कहे टेऊँ जा तरु पर बैठो, अमृत फल तहं खाना रे ।।५।।

॥ राग जोग भजन ॥ २८ ॥ ८५८॥

दीपक पास न जाउ पतंगा, जलकर तुम मर जावेंगे ॥ टेक॥

रूप शमा का देख न भूलो, परसत ही जर जावेंगे ॥१॥

इस पर होवो ना मस्ताना, पंख तेरे गिर जावेंगे ॥२॥

टेऊँ जब इस आस तजोगे, तब सब दुख हर जावेंगे ॥३॥

॥ राग जोग भजन ॥ २९ ॥ ८५९॥

ऊठो ऊठो भंवरा यांसे, नातर तुम पछुतावेंगा ॥ टेक॥

सुन्दर पंकज देख न भूलो, सांझ पड़े मुरझावेंगा ॥१॥

फूलों पर जो बैठ रहोगे, अन्त में तुम दुख पावेंगा ॥२॥

मूर्ख माण न कर फूलों का, बर्फ पड़े गल जावेंगा ॥३॥

कहे टेऊँ ले केवल सुगन्धी, तब सुख माहिं समावेंगा ॥४॥

॥ राग जोग भजन ॥ ३० ॥ ८६०॥

मेरी मति यह मछली मानो, सरवर की तज आसा री ॥ टेक॥

सरवर तज जो सागर जावे, होय न तांका नासा री ॥१॥

सागर तज जो सरवर आवे, ताहिं पड़े गल फासा री ॥२॥

सरवर से हो पंक प्राप्त, पुनि दुखिया हो श्वासा री ॥३॥

कहे टेऊँ ले सागर शरनी, पाओ निर्भय वासा री ॥४॥

॥ राग जोग भजन ॥ ३१ ॥ ८६१॥

हाटो हाटो दूर कुरंगा, नाद शब्द दुखकारी रे ॥टेक॥
नाद सुनन हित नहिं तुम जाओ, हरहैं जान तुम्हारी रे ॥१॥
दुष्ट व्याध ने तव मारन हित, ढीली लकड़ी गारी रे ॥२॥
नाद शब्द सुन मत भूलो तुम, धोखेबाजी सारी रे ॥३॥
कहे टेऊँ इससे बच जाओ, वेग करे हुशियारी रे ॥४॥

॥ राग जोग भजन ॥ ३२ ॥ ८६२॥

ब्रह्मज्ञान सहित ध्यान दयावान सन्त जन।
रहतिवान बिगरमान वे सुजान संत जन ॥टेक॥
उपकार धर्म धार, गहत सार सर्व से।
सत्कार तिरस्कार में, इकसार सन्त जन ॥१॥
भव भोग से अरोग, रहत जोग में सदा।
संयोग पुनि वियोग में, निरोग सन्त जन ॥२॥
जग जाल कटे काल, सदा लाल रहत हैं।
रखपाल सर्वकाल, नित निहाल सन्त जन ॥३॥
निष्काम गुणनि धाम, जपत नाम सर्वदा।
अलिकाम सुन्दर श्याम, टेऊँ राम सन्त जन ॥४॥

॥ राग जोग भजन ॥ ३३ ॥ ८६३॥

गुरु का शब्द कमाना, गुरुमुख गुरु का शब्द कमाना ॥टेक॥
शब्द गुरू का निर्मल मोती, को गुरुमुख हंसा खावे।
जो गुरु की सेव कमावे, तज तन मन का अभिमाना ॥१॥

शब्द गुरू का निशदिन सुमरे, नित निर्मल मन को कीजे।
तुम अमृत रस को पीजे, दुख आवागमन मिटाना ।।२।।
शब्द गुरू का जो वीचारे, सो संसा भ्रम मिटावे।
नहिं चौरासी में जावे, पुनि पावे पद निर्बाना ।।३।।
कहे टेऊँ जग बन्धन तोड़े, गुरु मन्त्र जाप जपीजे।
सब पाप ताप हर लीजे, कर आतम घर स्थाना ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। ३४ ।। ८६४।।

मन में धर सन्तोष, हे प्यारा,
तृष्णा को तज हरि गुण गाओ ।। टेक।।
जितना तेरी किस्मत में है सुख सम्पत्ति धन मान।
उतना तुझको अवश्य मिले यह वेदों का प्रमान।
रोष करो वा तोष ।।१।।
औरन का धन मान देख क्यों जलते हो इन्सान।
जलने से कुछ भी ना होगा धरके देख ध्यान।
जानो अपना दोष ।।२।।
जिसने कर्म किया तिस मिलता और न को पावे।
भोगे बिन ना छूटे भावे कल्प बीत जावे।
कर्म करो धर होश ।।३।।
कहता टेऊँ प्रभू किससे करत वैर नहिं प्यार।
निज निज कर्मों का फल सबको देता है कर्तार।
ना कर किस पर रोष ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। ३५ ।। ८६५।।

मैं हूं शाहनशाह, शाहनशाही सैर हमारा ।। टेक।।
अफुर अनादी वहदत मैं हूं, फुरने करके कसरत मैं हूं।
मेरा सब उत्साह, सूक्ष्म पुनि स्थूल पसारा ।।१।।
मेरे आगे माया नाचे, मम शक्ती ले रचना राचे।
रचिया जग असगाह, देव दनुज नर लहर अपारा ।।२।।
मैं सबमें हूं सबसे निराला, रहत आप में मैं मतिवाला।
मुझको अनन्द अथाह, हर्ष शोक से मैं हूं न्यारा ।।३।।
कहता टेऊँ मैं सब घट हूं, मैं की सूरत में प्रगट हूं।
मैं हूं बेपरवाह, सब पर हुक्म चलावनहारा ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। ३६ ।। ८६६।।

मैं का सब इसरार, मैं बिन और न देत दिखाई ।। टेक।।
मैं भी मैं है तूं भी मैं है, यह भी मैं है वह भी मैं है।
मैं का सब आकार, मैं बिन दूजी रमिज़ न राई ।।१।।
मैं को सब निज पास बिठावे, तूं को दिल से तुरत उठावे।
मैं में अमृत धार, तूं में है विष द्वैत दुआई ।।२।।
मैं का रूप अनादी एका, भासत माया संग अनेका।
मैं का सब दीदार, मैं में तूं की ठौर न काई ।।३।।
मैं से उपजी सृष्टी सारी, मैं में लय हो मैं ने धारी ।
मैं सबका आधार, मैं की महिमा कही न जाई ।।४।।
मैं को कबहूं काल न खावे, मैं को सोधे मैं हो जावे।
कहे टेऊँ गुरु द्वार, मैं की गम किस गुरुमुख पाई ।।५।।

।। राग जोग भजन ।। ३७ ।। ८६७।।

दाता है इक राम, सर्व जीवों को देवनहारा ।। टेक।।
जो कछु मंगना मांगो हरि से, भूल न मंगना दूजे दर से।
प्रभू पूरन काम ।।१।।
सर्व जगत का प्रभू दाता, इतना दे वह अन्त न आता।
देता आठों याम ।।२।।
परमेश्वर के अखुट खज़ाने, बिन मांगे दे मन की जाने।
सर्वज्ञ है सुखधाम ।।३।।
कहे टेऊँ तज दूजी आसा, सुमर हरी को श्वासों श्वासा।
अलख पुरुष अभिराम ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। ३८ ।। ८६८।।

एक तरफ पन्थी हो जाउ, इधर उधर ना मन भ्रमाओ ।। टेक।।
राह बीच जो खड़े रहोगे, ठोकर लगते दूख सहोगे।
वृथा ठोकर ना तुम खाउ,यह शिक्षा मन माहिं हण्डाओ।।१।।
सरिता के हैं उभय किनारे, एक तीर पर चलिये प्यारे।
बीच धार है अति दुखदाउ, तामें पड़कर ना दुख पाओ ।।२।।
दो किश्ती पर जो पग धरता, निश्चय जानो सो डुब मरता।
इक किश्ती पर धरके पांउ, जल्द पार हो जान बचाओ ।।३।।
दो नारी का कन्त दुखारी, दो गज बीच पड़े दुख भारी।
कहे टेऊँ मन धर इक भाउ,विषय भोग तज जोग कमाओ ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। ३९ ।। ८६९।।

मेरे मन अब धीरज धार, प्रभू तेरे काज संवारे ।। टेक ।।
धीरज धार ध्रुव ने मन में, सुमरन कीना जाकर बन में।
निश्चल पद पाया निर्धार, ना घबराया विपत्ति मंझारे ।।१।।
धीरज भक्त प्रह्लाद ने धारा, संकट में भी राम उच्चारा।
धारे हरि नरसिंह अवतार, लीना अपना भक्त उबारे ।।२।।
हरिश्चन्द्र ने धीरज धारे, बेचा आप नारि सुत प्यारे।
अपना धर्म न दीना डार, गाम सहित सुरलोक सिधारे ।।३।।
पाण्डव ने मन धीरज कीना, महा कष्ट बन में सह लीना।
तजा न कबहूं धर्म विचार, विपत्ति हरी तिहं कृष्ण मुरारे।।४।।
कहे टेऊँ जो धीरज धारे, प्रभू तांके दूख निवारे।
तिसकी होवे जय जयकार,यश सुख पावे जगत मंझारे।।५।।

।। राग जोग भजन ।। ४० ।। ८७०।।

भक्ती से रीझे भगवान, भक्ती ही भगवत को भावे।। टेक।।
ना हरि रीझे कर्म करन से, ना हरि रीझे पाठ पढ़न से।
ना हरि रीझे देते दान, भावें बहु विधि यज्ञ रचावे ।।१।।
ना हरि रीझे तीर्थ नाते, ना हरि रीझे फल के खाते।
ना हरि रीझे बन स्थान, भावें पांचों अग्नि तपावे ।।२।।
ना हरि रीझे देव अराधे, ना हरि रीझे मंत्र साधे।
ना हरि रीझे योग ध्यान, भावें ऋद्धि सिद्धि बहुत दिखावे।।३।।
ना हरि रीझे केस बढ़ाए, ना हरि रीझे मूण्ड मुण्डाए।
ना हरि रीझे करत वख्यान,भावें लाखों लोक रिझावे ।।४।।

भक्ति बिना सब साधन फीके,भक्ति सहित लागत हरि नीके।
टेऊँ कहते वेद पुरान, धन धन सो जो भक्ति कमावे ।।५।।

।। राग जोग भजन ।। ४१ ।। ८७१।।

श्वासों से सुमरो गुरु नाम, गुरुमुख अपनी श्रुति लगाके।। टेक।।
ऊठत बैठत आवत जावत, सोवत जागत पीवत खावत।
शब्द गुरू का सुमर ललाम, फुरने का व्यवधान हटाके ।।१।।
सहजे घ्राण में श्वास चरत है, शब्द श्वास में गमन करत है।
तांको सुनले मति अभिराम,अपने मन को अचल बनाके।।२।।
प्राण हिंडोले गुरुमुख झूले, शब्द सुधा ले मन में फूले।
मस्त रहत है आठों याम, तन अपने का भास भुलाके ।।३।।
कहे टेऊँ सो जन बड़भागी, जो सुमरे गुरु मंतर जागी।
पूरन तांके होवहिं काम, पाय अमर घर जन्म मिटाके ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। ४२ ।। ८७२।।

जो कछु करना करले आज, कल ऊपर ना राख सुजाना।। टेक।।
भूत काल को मृतक मानो, भविष्यत् को ना जन्मा जानो।
वर्तमान है तेरा राज, हाथों से ना ताहिं गंवाना ।।१।।
वर्तमान जिन सफला कीना, जग में तिनका सफला जीना।
काल भरोसे तेरा काज, बिगड़ जाएगा ऐ नादाना ।।२।।
काल काल कह रावण मूआ, पूरण काज न तांका हूआ।
कह गये ऊँचा कर आवाज़, काम काल का आज निभाना ।।३।।
भूत भविष्यत् की तज आसा, वर्तमान में करले वासा।
टेऊँ कहता सन्त समाज,आज अन्दर कुल राज़ समाना।।४।।

।। राग जोग भजन ।। ४३ ।। ८७३।।

स्वप्ने सम है यह संसार, मुझको कहा गुरू महराजा ।। टेक ।।
जैसे स्वप्ना मिथ्या भासे, तैसे झूठा जग प्रकाशे।
दोनों को तुम जान असार, उभय स्मृती रूप अकाजा ।।१।।
दृढ़ भावना करके मन में, सुख दुख मानत तूं आपन में।
जीव वासना के अनुसार, देखत हो तुम द्वन्द्व समाजा ।।२।।
जाग्रत स्वप्ने को जो जानत, सुषुप्ति को भी जो पहिचानत।
सो तूं साक्षी चेतन सार, सब घट तेरा बाजत बाजा ।।३।।
कहे टेऊँ सुन गुरु का ज्ञाना, मिटिया मेरा भ्रम अज्ञाना।
जाऊँ सद्गुरु पै बलिहार, जिसने कीना पूर्ण काजा ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। ४४ ।। ८७४।।

अपना अवगुन आप निहार, औरों के अवगुन न निहारो।। टेक।।
अवगुन दृष्टी जब तक होवे, ज्ञान दृष्टि ना तब तक होवे।
मन में ये ही बात विचार, भूल न किसके ऐब निकारो ।।१।।
अवगुन को देखत अज्ञानी, गुन को देखत गुरुमुख ज्ञानी।
भूण्ड मैल का करे अहार, भंवर सुगन्धि का करत अहारो।।२।।
दर्पन में करहैं मुख जैसा, दीसत है अपना मुख तैसा।
दृढ़ भाव ये मन में धार, दर्पन दोष न दोष तुम्हारो ।।३।।
कहे टेऊँ सत् वचन सुनीजे, अवगुन को तज गुन को लीजे।
ऐसे कहते वेद पुकार, गुण ग्राही का होय उद्धारो ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। ४५ ।। ८७५।।

माया का है सब विस्तार, जितना है यह जगत पसारा।। टेक।।
महान शक्ती है यह माया, ब्रह्म अखण्ड में खण्ड दिखलाया।
जीव ईश जग का जिन्सार, ब्रह्मा विष्णू शिव अवतारा ।।१।।
माया मय सब कर्म सुजाना, श्रुती शास्त्र ज्ञान विज्ञाना।
चौरासी लख खानी चार, कारण सूक्ष्म थूल निज़ारा ।।२।।
अद्भुत माया ठाठ बनाया, अनहोता बहु नाच नचाया।
मूण्ढ चतुर कर चतुर गंवार, राव रंक कर रंक भुवारा ।।३।।
वास्तव में कछु रूप न आसे, ब्रह्म सत्ता से कल्पित भासे।
नाम मात्र माया निर्धार, स्वप्ने सम मिथ्या व्यवहारा ।।४।।
माया मिथ्या चेतन सत् है, तूं चेतन यह तन कल्पित है।
कहे टेऊँ यह कर वीचार, स्थित रहिये ब्रह्म मंझारा ।।५।।

।। राग जोग भजन ।। ४६ ।। ८७६।।

पूर्ण गुरु से ले निज ज्ञान, मेट वासना ब्रह्म निहारो ।। टेक।।
मलिन वासना विमल वासना, दुइ विधि शास्त्र कही कामना।
मलिन वासना की कर हानि, विमल वासना को उर धारो ।।१।।
पाप वासना नरक दिखावे, पुण्य वासना देव बनावे।
अमल समल से हो इन्सान,जान वासना मय जग सारो।।२।।
बन्ध वासना सम ना कोई, जांसे बांधा जगत सभोई।
भ्रमावत है तन अभिमान, चौरासी लख जोनि मंझारो ।।३।।

ब्रह्म ज्ञान से मिटे वासना, ताहिं मिटे बिन ब्रह्म भास ना।
बिन वायू ज्यों घन न उड़ान, मेघ गये बिन हो न उजारो।।४।।
तीन वासना जगत जनावे, ब्रह्म भावना ब्रह्म बनावे।
कहे टेऊँ धारे ब्रह्म ध्यान, जन्म मरण का दूख निवारो ।।५।।

।। राग जोग भजन ।। ४७ ।। ८७७।।

मेरे मन अब जपले राम, और जगत के काम बिसारे।। टेक।।
काम जगत के कर कर भारी, खोई अपनी आयू सारी।
नेक न पाया मन विश्राम, रो रोकर बहु जन्म गुज़ारे ।।१।।
काले केस पलट भये श्वेता, अबहूं तुमने मूण्ढ न चेता।
शर्म न तुझको नमकहराम, खात हरी का और चितारे ।।२।।
सात बीस खट चार अठारा, सन्त सभा यह कीन विचारा।
सब से नीका है यह काम, राम भजन कर प्रीतम प्यारे ।।३।।
काम क्रोध मद मोह त्यागो, दैवी सम्पत्ति में नित लागो।
होय कुसंग से तुम उपराम, जन्म सफल कर सन्त द्वारे ।।४।।
भव सिन्धु के तरने का साधन, वेद कहा है नाम अराधन।
तांते सुमरो हरि का नाम, कहे टेऊँ कर जोड़ पुकारे ।।५।।

।। राग जोग भजन ।। ४८ ।। ८७८।।

सत्गुरु पै जाऊँ कुर्बान, अनुभव की जिहँ खिड़की खोली ।। टेक।।
जिस अमृत हित देव प्यासी, राज छोड़ भये भूप उदासी,
सो अमृत गुरु कराया पान, तांके चरनों की मैं गोली ।।१।।

हरदम गुरु दर पानी भरहूं, बर्तन मांजे ऊजल करहूं,
तिहं गुरु का होवूं दर्बान, आतम रंग रंगी जिहं चोली ।।२।।
देखा खोज इसी जग माहीं, उस वस्तू के सम को नाहीं,
जो गुरु दीना मुझको दान,साफ सुनाई शिवोऽहम् बोली।।३।।
कहे टेऊँ त्रिलोक मंझारी, सत्गुरु सम को ना उपकारी,
मेटे मोह ममत अज्ञान, दीनी आतम मणी अमोली ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। ४९ ।। ८७९।।

पार ब्रह्म है तेरे पास, दूर ताहिं ना ढूंढ अजाना ।।टेक।।
ज्यों सुत ले देखन गये मेला, भूला ताहिं देखके खेला।
कन्धे पर है सुत का वास, ढूंढत इधर उधर देवाना ।।१।।
मृग नाभि में ज्यों कस्तूरी, मूण्ढ भ्रम वश ढूंढत दूरी।
कंकण है ज्यों कर में खास, ढूण्ढत आस पास नादाना ।।२।।
हनूमान में ज्यों बल भारा, याद न आता तिहं बल सारा।
खड़ा अन्ध ज्यों निकट निवास, पूछे मेरा कहां मकाना ।।३।।
तैसे प्रभु है पास तुम्हारे, भूल गये सो भ्रम मंझारे।
कहे टेऊँ कर भ्रम विनाश, सत्गुरु से ले ब्रह्मज्ञाना ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। ५० ।। ८८०।।

मन मेरे तूं कर ना शोक, आनन्द में यह समय बिताना।। टेक।।
आनन्द से तुम होत न न्यारा, निश्चय आनन्द रूप तुम्हारा।
आनन्द ही है तेरा ओक, मोह जनित दुख दर्द हटाना ।।१।।

आनन्द से यह सृष्टी होई, आनन्द कर अब स्थित सोई।
लय होसी फिर तामें लोक, कार्य कारण रूप सुजाना ।।२।।
तीन काल में जो दुख नाहीं, सो तूं मानत क्यों निज माहीं।
अपने को सुख रूप विलोक, भ्रम दूर कर ले गुरु ज्ञाना ।।३।।
कहे टेऊँ तुम छोड़ो चिन्ता, सुमरो आतम रूप अनन्ता।
आतम आनन्द का है थोक, सो तो तेरा रूप महाना ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। ५१ ।। ८८१।।

गुरु पूजन का दिन है आज, श्रद्धा से गुरु पूजा करिये ।। टेक।।
गुरु पूजा का उत्तम दिहारा, सफल करो गुरु पूजे सारा,
पावन पूजा का ले साज ।।१।।
गुरु पूजन से बाढ़े ज्ञाना, सुख सम्पत्ति पावे सन्माना,
पुनि प्रसन्न हो श्रीमहाराज ।।२।।
श्रीफल मिश्री भेंट चढ़ाओ, पुष्प सुगन्धी शिर छटकाओ,
सत्‌गुरु सबका है शिरताज ।।३।।
गुरु को पूजा राम कृष्न ने, देव दनुज नर खग पशुगन ने,
गुरु को पूजे सकल समाज ।।४।।
कहे टेऊँ जो गुरु को पूजे, सर्व ज्ञान तिसके मन सूझे,
गुरु से सिद्ध हो सबहीं काज ।।५।।

।। राग जोग भजन ।। ५२ ।। ८८२।।

राज़ी होवत तबहीं राम, प्रेम भाव जब देखत जन में ।। टेक।।
प्रेमी भक्त हरी को भावे, भगवत तांको नाहिं भुलावे,
याद करे तिहं आठों याम, राखत जनको अपने मन में ।।१।।
जाति पाति हरि देखत नाहीं, प्रेम देख रीझत मन माहीं,
प्रेम लगे हरि को अभिराम, बन्ध जाता है प्रेम बंधन में ।।२।।
प्रेम प्रभू से जिन जिन कीया, तिनको हरि ने दर्शन दीया,
कहे टेऊँ कर पूरन काम, दूख मिटाया हरि इक छिन में ।।३।।

।। राग जोग भजन ।। ५३ ।। ८८३।।

मेरे मन जागो रे जागो ।। टेक।।
बहुत जन्म से सोये हो तुम, घोर नींद के माहीं।
अब तो सन्त वचन को सुनके, अविद्या नींद त्यागो।।१।।
जागन से सब भयता भागे, चोर न कोई लूटे।
तन नगरी में निर्भय होके, आतम में अनुरागो ।।२।।
भूल किसीकी आश करो ना, जग झूठा यह सारा।
हृदय अन्दर धर वैरागा, भोग विषय से भागो ।।३।।
कहे टेऊँ सब बन्धन तोड़े, जीवन मुक्ती पाओ।
परमानन्द के प्राप्ति कारण, सद्गुरु के पद लागो ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। ५४ ।। ८८४।।

सजनियां भीनी रे भीनी ।। टेक।।

सार शब्द में श्रुती भीनी, इष्ट रूप में नृती।
ब्रह्म ज्ञान में वृत्ती भीनी, मगन भयी यह तीनी ।।१।।
हरिगुन गावत रसना भीनी, कर इन्द्रिय पद परसे।
श्रवण इन्द्रिय सुनकर भीनी, बुद्धि चेतन को चीनी ।।२।।
पद इन्द्रिय सत्मार्ग भीनी, नासिक निर्गुण नामा।
सब नाड़ी हरि सुमरण करके, राम सुधा रस पीनी ।।३।।
कहे टेऊँ गुरु कृपा करके, सजनी सकल संवारी।
ब्रह्मानन्द भया मन मेरे, विषय वासना खीनी ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। ५५।। ८८५।।

हरी हर बोलो रे बोलो ।। टेक।।

नैन घिसे ना कान घिसे ना, जीभ घिसे ना तेरी।
हरी जपन में श्वास घिसे ना, मन से काढो रोलो ।।१।।
पांवों से ना चलना पड़ता, दाम लगत ना पाई।
हाथों का कछु काम नहीं है, केवल मुख को खोलो ।।२।।
राज दण्ड देना नहिं पड़ता, लोक बुरा ना माने।
हरी जपन में शिर ना दूखे, हृदय में यह तोलो ।।३।।
जो तेरे सब काज संवारे, सो हरि नाहिं बिसारो।
कहे टेऊँ हरिनाम जपे तुम, सफल करो नर चोलो ।।४।।

॥ राग जोग भजन ॥ ५६ ॥ ८८६॥

घमण्डी मान न कर मन में ॥ टेक॥

लोकों से निज महिमा सुन कर, मूर्ख फूल न जाना।
फेर करेंगे निन्दा तेरी, लोक वही क्षन में ॥१॥
महिमा मन को हर्षित करके, बेमुख हरि से करती।
निन्दा सर्व पाप को धोके, भेजत देवन में ॥२॥
महिमा तेरी होवे जबहीं, तब निज अवगुन देखो।
ऐसे करने से तव लागे, चित्त हरि सुमरन में ॥३॥
लोक निन्दा स्तुति के ऊपर, डारो भर भर धूली।
कहे टेऊँ यह गुरु की शिक्षा, धारो मन तन में ॥४॥

॥ राग जोग भजन ॥ ५७ ॥ ८८७॥

घघरिया फूटी रे फूटी ॥ टेक॥

रंग रंगीली घाघर मेरी, लागत थी मुझ प्यारी।
बहुत जन्म से शिर पर धारी, यत्न किये ना छूटी ॥१॥
डोरि बांध कर कूंए भीतर, जल भरने को भेजी।
चलते चलते चोट लगी तिस, घोर शब्द कर टूटी ॥२॥
घाघर फूटी सुन कर सखियां, मिलकर देत बधाई।
वर्ष भया सुन मेरे मन में, भली भयी जो हूटी ॥३॥
सन्तजनों की घाघर फूटी, फूटत आनन्द पाया।
कहे टेऊँ मेरी भी फूटी, फेर कभी ना जूटी ॥४॥

।। राग जोग भजन ।। ५८ ।। ८८८।।

मन्दिर ये ऊंचा है ऊंचा ।।टेक।।

माटी से हरि मन्दिर रचिया, खम्भा दीन सहारा।
दस दर्वाज़े अजब बनाये, देख सुरनि मन रूचा ।।१।।
कोटि भवन पति रहता इसमें, पांच पचास बतावे।
ऊंची ऊपर लगी पताका, सबसे है यह सूचा ।।२।।
बहुत दाम पुनि पुरुषार्थ से, अद्‌भुत है यह बनिया।
मरम जान किस सफला कीना, औरों ने वृथा मूचा ।।३।।
हरिजन मुनिजन राम श्याम भी, इस मन्दिर में बैठे।
कहे टेऊँ मैं बैठ इसी में, पूरन धाम पहूंचा ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। ५९ ।। ८८९।।

बदरिया गाजे रे गाजे ।।टेक।।

इन्द्रदेव की आज्ञा पाकर, जल बरसन को आये।
रिलमिल गरजे बून्दें बरसे, दामिनि दमक बिराजे ।।१।।
धरनी गिर तरु सीप सिन्धु पर, बादल नितहीं बरसे।
जैसा भाव जिसी का होवे, तैसा ताहिं निवाजे ।।२।।
मोर पपीहा मेंढक आदी, देख बदल को हर्षे।
ईख मिठाई अहि में विष हो, नासे आक समाजे ।।३।।
कहे टेऊँ घन गगन निवासी, निर्वैरी निष्कामी।
हरि कृपा से दर्शन देकर, करहिं सर्व के काजे ।।४।।

॥ राग जोग भजन ॥ ६० ॥ ८९०॥

हरी मति साची रे साची ॥टेक॥

सन्तों के संग हरि को सुमरे, सा मति सब से ऊंची।
मूर्ख के संग माया चितवे, सा मति जानो काची ॥१॥
पाप नसावे धर्म बढ़ावे, सा मति सन्त सरावहिं।
गुन को त्यागे अवगुन लेवे, सा मति नरके नाची ॥२॥
अहं ब्रह्म है जिहं मति भासे, सा मति ज्ञानिनि धारी।
अहं और है ब्रह्म और है, मूण्ढनि यह मति माची ॥३॥
जितनी मति है जग के भीतर, ऊंची हरि मति तामें ।
कहे टेऊँ सा मिले न गुरु बिन, ली मैं गुरु से याची ॥४॥

॥ राग जोग भजन ॥ ६१ ॥ ८९१॥

हरीजन जागे रे जागे ॥टेक॥

जागी शंकर लाय समाधी, कामदेव को जीता।
जागी पवन पुत्र हनुमाना, राम चरन में रागे ॥१॥
जागी अर्जुन श्याम सुन्दर को, स्वप्ने आसन दीना।
जागी व्यास पूत जन्मत ही, बन में गये घर त्यागे ॥२॥
जागी रांके बांके जाना, सम कंचन अरु माटी।
जागी नामदेव सब घट में, राम देख अनुरागे ॥३॥
जागी ध्रुव प्रह्लाद भक्त ने, राम भजन नहिं छोड़ा।
जागी पीपा सैन कबीरा, सन्त सेव में लागे ॥४॥
इत्यादिक बहु हरिजन जागे, पाए हरि गुरु कृपा।
कहे टेऊँ तिनके मुख देखत, दूरहुं ते जम भागे ॥५॥

।। राग जोग भजन ।। ६२ ।। ८९२।।

हरी मैं तेरा हूं तेरा ।।टेक।।

तन मन तेरा धन भी तेरा, बल बुद्धि बाणी तेरी।
जो कछु है सो सबहीं तेरा, ना कछु इसमें मेरा ।।१।।
तुम हो मालिक मैं हूं मिलिक्यत, हरदम हूं वश तेरे।
जो जो काज कराओ मुझसे, सोय करूं बन चेरा ।।२।।
तुम हो नटवर मैं हूं पुतली, हुक्म डोर में बांधे।
जैसे नाच नचाना चाहो, तैसे देवूं फेरा ।।३।।
तुम हो चित्र बनाने वाले, मैं हूं चित्र तुम्हारा।
नाम रूप यश रंग ढंग यह, सब कछु हरि तो केरा ।।४।।
आप अंगी मैं अंग हूं तेरा, अलग सत्ता नहिं मेरी।
कहे टेऊँ मैं कहने मात्र, सब तूं है मैं हेरा ।।५।।

।। राग जोग भजन ।। ६३ ।। ८९३।।

बन्दा सो होगा जो होना ।।टेक।।

जो कछु हरि ने रच कर राखा, अवश्य बनेगा सोई।
न्यून अधिक कछु ना होवेगा, वृथा है तव रोना ।।१।।
जोय बना है सोय बनेगा, और नहीं कछु होगा।
इसमें अपनी तर्क चलाना, है अवसर को खोना ।।२।।
हरि इच्छा है प्रबल जैसी, जीव इच्छा ना तैसी।
यह वीचारे राम भरोसे, पांव पसारे सोना ।।३।।
भोगे बिन ना भावी भागे, कितना भी बल लावे।
कहे टेऊँ हरि सुमरो तांते, बैठ सब्र के कोना ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। ६४ ।। ८९४ ।।

हरी रस मीठा है मीठा ।।टेक।।

जो जन चाखे सोई जाने, और न जाने कोई।
तीन लोक में रस ना ऐसा, सन्तों लागे ईठा ।।१।।
आन रसों को जबहीं त्यागे, तबहीं यह रस आवे।
रस छोड़े बिन रस ना आवे, निश्चय कर मैं डीठा ।।२।।
ब्रह्मा पीया विष्णू पीया, शंकर नारद पीया।
सनकादिक जनकादिक पीया, देके विष रस पीठा ।।३।।
पीने से यह रस ना घटता, ना कब फीका होवे।
अद्भुत महिमा है इस रस की, कहते वेद अनीठा ।।४।।
जां पर सद्गुरु कृपा धारे, पीवे हरि रस सोई।
कहे टेऊँ सो पीकर मैंने, तोड़ा जम का चीठा ।।५।।

।। राग जोग भजन ।। ६५ ।। ८९५ ।।

गुरू मग चालो रे चालो ।।टेक।।

जिस मार्ग में गुरू चलावे, तिस मार्ग में चलिये।
सोच समझ के पांव धरो तुम, इधर उधर ना डालो ।।१।।
जेते मार्ग और जगत में, तिन में जम का झगड़ा।
गुरु का मार्ग हरि से मेले, निर्भय करे निरालो ।।२।।
गोपीचन्द भर्थरी राजा, गोरख इस मग चलिया।
पीपा छीपा कबीर चलिया, पीकर प्रेम प्यालो ।।३।।
इस मार्ग में जो जन चलहीं, सो जन है बड़भागी।
कहे टेऊँ सो हरि से मिलता, पाए ज्ञान उजालो ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। ६६ ।। ८९६ ।।

वचन गुरु नीका है नीका ।। टेक।।

नीके मात पिता सुत दारा, बान्धव भाई भैना।
सबसे नीका वचन गुरू का, साचा साथी जी का ।।१।।
नीके रूपा कंचन माणिक, लाल जवाहर मोती।
सब ते गुरू वचन धन नीका, हितकारी सबहीं का ।।२।।
नीके जप तप कर्म धर्म पुनि, सम दम संयम सेवा।
सब साधन से नीका जानो, गुरू वचन सम टीका ।।३।।
नीके दीपक दामिनि बतियां, नीके रवि शशि तारे।
गुरू वचन रोशन के आगे, ये सब लागत फीका ।।४।।
गुरू वचन जो हृदय धारे, काल जाल तिस छूटे।
कहे टेऊँ को जन बड़भागी, पीवे वचन अमी का ।।५।।

।। राग जोग भजन ।। ६७ ।। ८९७ ।।

वचन गुरु मानो रे मानो ।। टेक।।

वचन गुरू का जिसने माना, गुहज भेद तिहं पाया।
बिन माने किस भेद न जाना, वेदनि यही बखानो ।।१।।
वचन गुरू का मानत है जो, तिहं कछु दुर्लभ नाहीं।
ऋद्धि सिद्धि नवनिधि मुक्ती तांके, घर की चेरी जानो ।।२।।
वचन गुरू का माने जो तिस, महिमा कही न जावे।
आप हरी तिहं घर चल आवे, शबरी को प्रमानो ।।३।।

वचन गुरू का नारद माने, मेटी जोनि चुरासी।
वचन गुरू का मान आरुणी, वेद का अर्थ पछानो ।।४।।
वचन गुरू के पालन में कर, तन मन धन कुर्बानी।
कहे टेऊँ परमानन्द पाए, सर्व दुखों को हानो ।।५।।

।। राग जोग भजन ।। ६८ ।। ८९८ ।।

साज ले गावे रे गावे ।।टेक।।

लेकर वीणा नारद गावे, शंकर लेकर डमरू।
लेकर सितार शारद गावे, विष्णू शंख सुनावे ।।१।।
दिव्य साज ले सुरपति गावत, ले पुस्तक शुक व्यासा।
शेषनाग भी सहस्त्र मुख से, सहस नाम धुनि लावे ।।२।।
लेकर मुरली मोहन गाया, गोपी गोप बुलाके।
किन्नर गन्धर्व रिलमिल गावत, मृदंग मेघ बजावे ।।३।।
लेकर खंजरी गोरख गाया, मीरा ले कर्तारा।
लेकर तंबूर कबीर गाया, नामा झांझ झुनावे ।।४।।
सूरदास ले कंझियां गाया, तुलसी माला फेरी।
ले रबाब मर्दाने गाया, नानक नाम जपावे ।।५।।
लेकर ढोलक नरसी गाया, जयदेव ले चौतारा।
ढोल बजाकर पीपे गाया, नाभा नूपर पावे ।।६।।
ऐसे जिन जिन हरिगुन गाया, तां पर मैं बलिहारी।
दास टेऊँ भी ले इकतारा, गावत धूम मचावे ।।७।।

।। राग जोग भजन ।। ६९ ।। ८९९ ।।

शिष्य गुरू का शब्द कमाओ, तुम अन्तर ध्यान लगाओ।। टेक।।
मूल कमल में थिर कर आसन, मन को नाहिं डुलाओ।
अपजा जाप जपे निशवासर, बिन जिह्वा गुण गाओ ।।१।।
नाभि कमल से नाम चलाए, हृदय में ले आओ।
कण्ठ कमल में कर वीचारा, त्रिकुटी ज्योति जगाओ ।।२।।
इड़ा पिङ्गला से ले श्वासा, सुषुम्न में ठहराओ।
गगन मण्डल में अनहद सुनके, तन की सुधि बिसराओ ।।३।।
सुन्न सकड़ में लाय समाधी, दसमें दर्शन पाओ।
कहे टेऊँ यों सुमरण करके, सुख स्वरूप समाओ ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। ७० ।। ९०० ।।

दीन दयालू भो भगवाना,बदला मुझसे नाहिं चुकाना ।। टेक।।
पतित पावन सद्‌बख्शन्दा, कहते तुझको वेद पुराना ।।१।।
केते पापी तुमने तारे, मैंने सुनिया अपने काना ।।२।।
कर्म धर्म को ना मैं कीया, राखो प्रभू अपना बाना ।।३।।
कहे टेऊँ हरि कृपा करके, दीजे मुझको निर्भय दाना ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। ७१ ।। ९०१ ।।

यह घर तेरा प्रीतम नाहीं, भूल पड़ा तुम क्यों इस माहीं ।। टेक।।
इस घर से जाना ही होगा, भावें कितना रहना चाहीं ।।१।।
तेरा तो है घर अविनाशी, जन्म मरण का दूख न जाहीं ।।२।।
निज घर चलने की कर तैयारी, भव में भटकत हो तुम काहीं।।३।।
कहे टेऊँ चल आतम घर में, पूरे गुरु की पकड़े बाहीं ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। ७२ ।। १०२ ।।

ऊठ मुसाफिर क्यों तुम सोया,

जागन का यह अवसर होया ।। टेक ।।

लाख चौरासी जोणिनि सोके, दुख पाए तुम बहुता रोया।।१।।

मानुष तन शुभ अवसर माहीं, शुभ कर्मों का बीज न बोया।।२।।

झूठ कपट प्रपंच करन में, श्वास अमोलक वृथा खोया ।।३।।

कहे टेऊँ तुम गफ्लत करके, अपना आत्मराम न जोया ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। ७३ ।। १०३ ।।

अमरापुर है देश हमारा, तीन लोक से जोई न्यारा ।। टेक।।

जहां न रवि शशि नहिं दिन राती,जहां न दामिनि चमकत तारा ।।१।।

जन्म मरण जहं काल न कोई, जीव ईश नहिं को अवतारा।।२।।

पाप पुण्य जहं कर्म न कर्त्ता, ना सुख दुख ना जग व्यवहारा ।।३।।

कहता टेऊँ गुरु प्रसादे, पहुंचे तहं को गुरुमुख प्यारा ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। ७४ ।। १०४ ।।

आतम धन है अचल हमारा, जांकी महिमा अपर अपारा।। टेक।।

जांको अग्नी जार सके नहिं, ना तिहं शस्त्र छेदनहारा ।।१।।

जांको वायू शोषत नाहीं, डुबा सके ना जल की धारा ।।२।।

जांको तस्कर लूट सके ना, लागत ना को जाहिं विकारा ।।३।।

कहे टेऊँ वह कबहुं न खूटे, खावे खर्चे जे जुग चारा ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। ७५ ।। १०५ ।।

निज आतम का कर दीदारा, जो है सत्चिद आनन्द सारा ।। टेक ।।
जाग्रत स्वप्न सुषोपति का जो, साक्षी चेतन है आधारा ।।१।।
जांके तेज अंश को पाके, प्रकाशत शशि सूर्य तारा ।।२।।
बाहर भीतर है भरपूरा, निर्गुण निर्मल नभ ज्यों न्यारा ।।३।।
कहे टेऊँ यह कर विश्वासा, सो है आनन्द रूप तुम्हारा ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। ७६ ।। १०६ ।।

भरे जाम जोगी, बिरह का पिलाया।
भया देव दर्शन, जहीं मन भुलाया ।। टेक।।
धरे चौ साधन को, हरे भव बन्धन को।
विकारों के बन को, विरह अगि जलाया ।।१।।
धरनि यह बदन है, इन्द्रियगण चिमन है।
देवीगुण सुमन है, सुगन्ध सरिस लाया ।।२।।
खाया ज्ञान फल को, पीया प्रेम जल को।
पाया ब्रह्म बल को, द्वन्द्व को गलाया ।।३।।
टेऊँ ताप जेई, गया सहज सेई।
जो साक्षी सनेही, सो मोहन मिलाया ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। ७७ ।। १०७ ।।

अमरापुर निज धाम हमारा, तीन लोक से है सो न्यारा ।। टेक।।
जिसमें कोई वर्ण न जाती, भेष पंथ की नहिं उत्पाती।
नीच ऊँच का नहिं व्यवहारा ।।१।।

जहां न धरनी पवन अकाशा, सूर्य चन्द्र का नहिं प्रकाशा।
रैन दिवस ना तम उजियारा ।।२।।
देश काल की जहं गम नाहीं, जन्म मरण का दूख न वाहीं।
पाप पुण्य का नहिं वीचारा ।।३।।
कहे टेऊँ तहं जो जन जावत, सो जन वापस कबहुं न आवत।
पहुंचत वां को गुरु का प्यारा ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। ७८ ।। १०८ ।।

साक्षी का मन स्मरण करिये,भव सागर से पार उतरिये।। टेक।।
साक्षी का है सब घट वासा, अन्तर बाहर करत प्रकाशा।
ध्यान उसी का हृदय धरिये ।।१।।
साक्षी चेतन ब्रह्म स्वरूपा, सोई तेरा है निज रूपा।
कर विश्वासा ना कब डरिये ।।२।।
साक्षी का ले गुरु से ज्ञाना, तांको जानो तज अभिमाना।
जिसके जाने फिर ना मरिये ।।३।।
सब देवों का है सो देवा, कहे टेऊँ कर उसकी सेवा।
जन्म मरण के दुख को हरिये ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। ७९ ।। १०९ ।।

इस जग में कहु किन सुख पाया, जे आया से रो रो जाया ।। टेक।।
इन्द्र बाली रावण रोया, कुम्भकर्ण भी बहुत चिल्लाया।।१।।
दशरथ भरत जनक नृप रोया, रोया रघुवर लक्ष्मण घाया ।।२।।
केशी कंस दुर्योधन रोया, रोये पाण्डव दास कहाया ।।३।।
कहता टेऊँ सबने रोया, ऐसे सन्तनि ग्रन्थनि गाया ।।४।।

॥ राग जोग भजन ॥ ८० ॥ ९१० ॥

करो मन साक्षी का स्मरन ॥ टेक ॥

उभय पक्ष से रहत उदासी, समीपवर्ती जोई।
चेतन मय निज पर को जाने, यह साक्षी का लक्षन ॥१॥
साक्षी को निज रूप लखे लख, साक्षी ब्रह्म स्वरूपा।
मैं हूं पूर्ण ब्रह्म व्यापक, नित ऐसा कर चिन्तन ॥२॥
सकल सृष्टि का साक्षी सृष्टा, सकल दृश्य का दृष्टा।
साक्षी का को और न साक्षी, कर अनुभव से दर्शन ॥३॥
कहे टेऊँ ले ज्ञान गुरू से, देह भ्रान्ती छोड़ो।
साक्षी का तुम स्मरन करके, काटो जग के बन्धन ॥४॥

॥ राग जोग भजन ॥ ८१ ॥ ९११ ॥

स्मर मन गुरु का दीया नाम ॥ टेक॥

फलदायक सब नाम हरी के, घट बढ़ है ना कोई।
इतने पर भी जो गुरु देवे, जप तिहं आठों याम ॥१॥
नौका के सम नाम हरी का, केवट सत्गुरु जानो।
केवट के बिन नाव कभी ना, पहुंचे पारग्राम ॥२॥
गुरु बिन मन्त्र मन्त्र ना है, गुरु बिन सिद्ध न साधन।
गुरु बिन कर्म धर्म नहिं फलते, गुरु बिन जन्म निकाम ॥३॥
गुरु के दीये नाम जपन से, हौं मैं मन की जावे।
कहे टेऊँ हौं मैं मिटने से, पावे आत्म धाम ॥४॥

।। राग जोग भजन ।। ८२ ।। ९१२ ।।

भजन कर भगवत का प्यारा ।। टेक।।

जो जन जांका भजन करत है, वैसा ही बन जाता।
तांते भजन करे भगवत का, होवो हरि आकारा ।।१।।
मनुष जन्म में भजन होत है, और योनि ना होवे।
तांते भजन करे इस तन में, अपना कर निस्तारा ।।२।।
पता नहीं कब मृत्यू आवे, दम का नहिं विश्वासा ।
कहे टेऊँ तांते अब हरि भज, पाओ मोक्ष द्वारा ।।३।।

।। राग जोग भजन ।। ८३ ।। ९१३ ।।

सफल कर मानुष तन बन्दा ।। टेक।।

मानुष तन है कंचन बर्तन, हीरा तामें पाओ।
भोग विषय की गंदगी से तुम, गाफिल कर ना गंदा ।। १।।
मानुष तन है मन्दिर के सम, तामें हरि बिठलाओ।
काम क्रोध कूकर बैठाये, मैला कर ना मंदा ।।२।।
मानुष तन है फूलों के सम, हरि चरणों में राखो।
तोड़ फोड़ कर विषयों में तुम, फेंक न देना अन्धा ।।३।।
मानुष तन में सर्व काम तज, भजन करो इक हरि का।
कहे टेऊँ हरि स्मरण करके, काटो यम का फंदा ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। ८४ ।। ९१४ ।।

ऐसे सत्गुरु पर बलिहार, सफल किया जिहं जन्म हमारा ।। टेक।।
श्रद्धा से शुभ कर्म कराया, मल का पर्दा दूर हटाया।
उपजा हृदय सत् वीचार, देवी गुण से भरा भण्डारा ।।१।।
ध्यान हरी का मुझे सिखाया, चंचल मन को अचल बनाया।
अन्तर पाया हरि दीदार, मस्त रहूं उस मौज मंझारा ।।२।।
ब्रह्म ज्ञान दे द्वैत मिटाया, जीव ब्रह्म को एक लखाया।
मिट गया अविद्या का अहंकार, अहं ब्रह्म का बजा नग़ारा ।।३।।
कहे टेऊँ अति आनन्द होया, जन्म मरण का दुख सब खोया।
रिलमिल के होया इकसार, दूर भया सब द्वैत अन्धारा ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। ८५ ।। ९१५ ।।

तुम हो सत् चित् आनन्द रूप, अपने को मत मानुष मानो ।। टेक।।
अष्टावक्र मुनी ने कहिया, जनक भूप के प्रती भैया।
जग मिथ्या तूं सत्स्वरूप ।।१।।
कहा वशिष्ठ ने रघुवर ताईं, तीन काल जग बनिया नाहीं।
जो है त्र्वे तूं ब्रह्म अरूप ।।२।।
वेदों ने बतलाया जैसे, सन्तों ने समझाया तैसे।
गुरु भी कहते तूं सुरभूप ।।३।।
कहे टेऊँ जो होते जिससे, भिन्न न लखिये तांको तिससे।
तूं है अद्भुत रूप अनूप ।।४।।

॥ राग जोग भजन ॥ ८६ ॥ ९१६ ॥

हे रसना ! तूं जप हरि नाम,
स्मरण से हो शोभा तेरी ॥टेक॥
हरि हरि पढ़ले हरि हरि रटले, हरि स्मरे यम फासी कटले।
हरि स्मरण का करले काम ॥१॥
हरी नाम की साची बानी, मङ्गल करणी अमृत खानी।
हरि वाणी कह आठों याम ॥२॥
हरी नाम का भोजन कीजे, जन्म जन्म की भूख हरीजे।
हरि रस का भर पीले जाम ॥३॥
सत्गुरु से हरि मन्त्र लेके, कहे टेऊँ नित ताहिं स्मरके ।
पाओ पूर्ण सुख विश्राम ॥४॥

॥ राग जोग भजन ॥ ८७ ॥ ९१७ ॥

तेरा साहब है तुझ माहिं, बाहर ढूंढत क्यों मस्ताना ॥टेक॥
घर में मिलती घर की खोई, बाहर खोजत मिलत न सोई।
गई वस्तु जहं खोजो ताहिं ॥१॥
जिस मिलने की आसा धारत, सो तुझ में यह वेद उचारत।
वेद वचन मानत नहिं काहिं ॥२॥
साहब बिन घट को ना खाली, सब में दमकत उसकी लाली।
गुर बिन वह मिलती कब नाहिं ॥३॥
लोक जिसी को दूर बतावे, कहे टेऊँ गुरु पास लखावे।
बन्धन टूटे देखत जाहिं ॥४॥

॥ राग जोग भजन ॥ ८८ ॥ ११८ ॥

आनन्द की निधि है तुझ माहिं,
बाहर सुख ना ढूंढ अजाना ॥टेक॥
आनन्द घर से तुम आये हो, आनन्द कर सब को भाये हो।
जाओगे फिर आनन्द माहिं ॥१॥
जैसे अमृत मीठा सारा, तैसे आनन्द रूप तुम्हारा।
रंचक दुख तव परसे नाहिं ॥२॥
आनन्द को तुम चाहत तांते, आनन्द मूर्ति है तुम जांते।
योगी ज्ञानी जानत ताहिं ॥३॥
अन्तर्मुख जब हो जाओगे, कहे टेऊँ तब सुख पाओगे।
वृथा जग में भटकत काहिं ॥४॥

॥ राग जोग भजन ॥ ८९ ॥ ११९ ॥

हरि की माया किस नहिं जानी।
देख देख हम भये हैरानी ॥टेक॥
कब होई यह कहं से आयी, जिसने अद्भुत लीला लायी।
ग्रन्थों ने भी बहुत बखानी ॥१॥
बेरंग बनिया अजब निज़ारा, जिसका कोई आर न पारा।
खोजत हारे पण्डित ज्ञानी ॥२॥
इसका कर्त्ता नज़र न आवत, कहे टेऊँ यह सबको भावत।
मोहे मुनिवर वीर विज्ञानी ॥३॥

।। राग जोग भजन ।। ९० ।। ९२० ।।

जिसको हरि का प्रेम हुआ है, उसने प्रभू पाया है।। टेक।।
गोपीचन्द भरथरी राजा, पीपे प्रेम में छोड़ समाजा।
आत्म देव ध्याया है ।।१।।
नामदेव नरसी रविदासा, प्रेम मगन भये तज जग आसा।
रमता राम रिझाया है ।।२।।
प्रेम प्रह्लाद ध्रुव ने कीना, भगवत तांको दर्शन दीना।
अपने कण्ठ लगाया है ।।३।।
कहे टेऊँ जिन प्रेम करा है, उनका सबहीं काज सरा है।
ऐसे ग्रन्थनि गाया है ।।४।।

।। राग जोग भजन ।। ९१ ।। ९२१ ।।

मन जीतन के साधन चार, सुनो जिज्ञासू तुझे सुनावां।। टेक।।
प्रथम साधन कर सत्संगा, चित्त पर चाढ़ो इक हरि रंगा।
रिलमिल हरि हरि नाम पुकार ।।१।।
दूजा साधन कुम्भक कीजे, चंचल मन को वश कर लीजे।
चित्त राखो स्वरूप मंझार ।।२।।
तीजा साधन आत्म चिन्तन, निशदिन करके जीतो यह मन।
देह भ्रान्ती निपट निवार ।।३।।
चौथा साधन जगत वासना, तज कर धारो ब्रह्म भावना।
सत् असत् को नित वीचार ।।४।।
कहे टेऊँ ये साधन साधो, गुरु मन्त्र से मन को बांधो।
गुरु के चरन कमल उर धार ।।५।।

श्री अमरापुर धुनि

रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीताराम।
जय यदुनन्दन जय घनश्याम, कृष्ण मुरारी राधेश्याम।
अन्तर्यामी तेरा नाम, सबको सुमति दे सुखधाम।
अमरापुर के सुन्दर श्याम, सत्‌गुरु स्वामी टेऊँराम।
ज्ञान गुरु गोविन्द हरे, सत्‌गुरु सर्वानन्द हरे।
सत्‌नाम साक्षी सर्व आधार, जो सुमरे सो उतरे पार।

साक्षी शिवोऽहम् साक्षी शिवोऽहम्
सत् चित् आनन्द साक्षी शिवोऽहम्
स्वयं प्रकाशी साक्षी शिवोऽहम्
चिद् आकाशी साक्षी शिवोऽहम्
घट घट वासी साक्षी शिवोऽहम्
सर्व निवासी साक्षी शिवोऽहम्
प्रेम प्रकाशी साक्षी शिवोऽहम्
अमरापुर वासी साक्षी शिवोऽहम्
कहता टेऊँ साक्षी शिवोऽहम्
कहता स्वामी साक्षी शिवोऽहम्

ॐ शांति! शांति!! शांति!!!

आचार्य सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज की आरती

ॐ जय गुरु टेऊँराम, स्वामी जय गुरु टेऊँराम।।
पर उपकारी जगत उद्धारी, तुम हो पूरन काम ।।ॐ।।
जब जब प्रेमिनि निज हित कारण, तुमको पूकारा ।।स्वामी।।
तब तब गुरु अवतार धरे तुम, सबको निस्तारा ।।ॐ।।
प्रेम प्रकाशी मण्डलाचार्य, मंत्र साक्षी सत्नाम।। स्वामी।।
धर्म सनातन के प्रचारक, नीति निपुण अभिराम ।।ॐ।।
देश विदेश में मण्डली लेकर, पावन दे उपदेश ।।स्वामी।।
आत्म रूप लखाया सबको, हरिया ताप क्लेश।।ॐ।।
पूरण अचल समाधी तेरी, सिद्ध आसन ब्राजे ।।स्वामी।।
रूप मनोहर सुन्दर लोचन, देखत मन गाजे ।।ॐ।।
आत्म स्थित वचन के पूरे, योगी इन्द्रिय जती ।।स्वामी।।
परम उदारी धीरज धारी, परम अगाध मती ।।ॐ।।
धन धन मात पिता कुल तेरा, धन तव साधु सुजान।।स्वामी।।
धन वह देश जहाँ तुम जन्मिया, धन तव शुभ स्थान ।।ॐ।।
सुर नर मुनिजन हरिजन गुनिजन, गावत गुन तुम्हरे।।स्वामी।।
अन्त न पाइ सके नर कोई, महिमा अपर परे ।।ॐ।।
जो जन तुम्हरी आरती गावे, पावे सो मुक्ती ।।स्वामी।।
साध संगति को हरदम दीजे, पूरण गुरु भक्ती ।।ॐ।।

सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज
आरती

ॐ जय गुरु सर्वानन्द, स्वामी जय गुरु सर्वानन्द।
धर्म कर्म का दे उपदेशा, काटे यम के फन्द ।।ॐ।।
तुम हो दाता दीन दयालू, सबके हितकारी ।।स्वामी।।
शेष शारदा नित गुण गावे, महिमा अति भारी ।।ॐ।।
तन पर चोला गेरू रंग का, सिर पे जटाधारी ।।स्वामी।।
कर कमलों में लाठी सोहे, मोहे नर नारी ।।ॐ।।
अपने गुरु के निज वचनों को, घर घर पहुंचाया ।।स्वामी।।
भूले भटके दीन जनों को, सत् मार्ग लाया ।।ॐ।।
अधम उद्धारन कष्ट निवारन, भक्तन भयहारी ।।स्वामी।।
भव जल तारन पार उतारन, कारन देह धारी ।।ॐ।।
देश विदेश में भ्रमण करके, भक्ती फैलाई ।।स्वामी।।
सोऽहम् शब्द का मंत्र दे वह, ज्योती दिखलाई ।।ॐ।।
अजर अमर और अज अविनाशी, घट घट के ज्ञाता।।स्वामी।।
कण कण में तुम सर्व व्यापक, पूरण गुरु दाता।।ॐ।।
परम उदारी पर उपकारी, अमरापुर वासी ।।स्वामी।।
शरण तुम्हारी जो जन आवे, पावे सुख रासी ।।ॐ।।
टेऊँराम के कृपा पात्र, तुम हो भक्ती भण्डार ।।स्वामी।।
गुरू भक्त बन गुरु भक्ती का, खूब किया प्रचार ।।ॐ।।
पूरण गुरु की पूरी आरती, जो जो नर गावे ।।स्वामी।।
पाप ताप सन्ताप मिटाकर, पूरण पद पावे ।।ॐ।।

छन्द

सर्व स्वरूपं आदि अनूपं, भूमि भूपं भयभाना।
अन्त न ऊपं छाय न धूपं, काढत कूपं धर ध्याना।।
रहस्यारामं दायक धामं, नित निष्कामं निर्बानी।
पाद नमामं निशदिन शामं, श्री टेऊँरामं गुरु ज्ञानी।।
चावल चन्दन कुंगूं केसर, फूलों की वरखा बरसाओ।
नृसिंह गोमुख भेरी बाजा, तबला सुरन्दा झांझ बजाओ।।
भर भर दीपक पूर्ण घी से, अगरबत्ती अरु धूप जलाओ।
आरति साज करो बहु सुन्दर, सद्गुरु की जयकार बुलाओ।।

पल्लव

आशवंदी गुर तो दरि आई, तुम बिन ठौर न काई।
तूं हरि दाता तूं हरि माता, मेरी आश पुजाईं।
पाइ पल्लउ मैं पेर पियादी, आयसि हेत मंझाई।
तन मन धन अर्दास करे मैं, मांगत नामु सनेही।
नामु तुम्हारा साबुन करिसां, धोसां पाप सभेई।
कहे टेऊँ गुर लोक तीन में, आवागमन मिटाईं।

पल्लव

पलउ जे पाइन, दाता तुंहिंजे दर ते।
दाता दर आयनि जा, अर्ज ओनाईं।
मिड़ई तिनि जे तन मन जा, दुखड़ा मिटाईं।
आसूं अघाईं, आसू आस वन्दनि जूं।।
जो जन आ गुरु शरण में, बैठ करे अर्दास।
कहे टेऊँ तिस दास की, पूरण करिये आस।
दुख सर्व ही दूर हो, लगे न यम की त्रास।
कारज होवन रास, संशय कोई ना रहे।।

प्रकाशक : श्री अमरापुर स्थान, एम.आई.रोड, जयपुर
फोन : 0141-2372423, 2372424
e-mail : amrapurdarbar@yahoo.com website : premprakashpanth.com
Youtube channel : amrapurdarbarlive.com